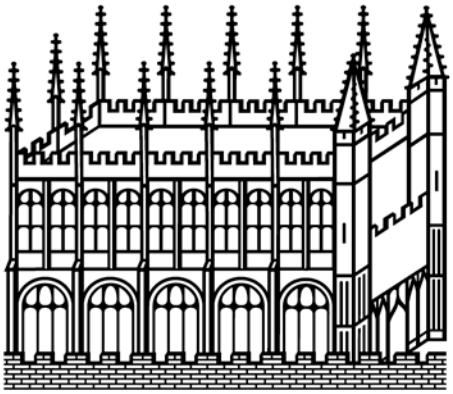

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13 F 26

Hindi Jaisi 3

Padmāvata-bhāṣā 13F26

पद्मावतभाषा

पदमावत बचनिका

यह प्रसिद्ध कहानी राजा रत्नसेन और पद्मावतकी है

जिसको

परम सुजान सकलगुण निधान परमतत्व विलासी सम दृष्टि

प्रकाशी मलिक मुहम्मद जायसी ने देश भाषा में शेरशाह

बादशाह देहली के वक्त में जगतके उपकारार्थ ज्ञान मार्गउप

देश निर्म्माण करके संसार को असत्य और परमेश्वर को सत्य

दिखाया कहने को कहानी है परन्तु महा सुख दानी है

उसी का उल्था लाला रघुबरदयाल ने बड़े गौरसेकूते

देवनागरी में करके गूढ़ शब्दों का अर्थ ठीक २ वास्ते

जानने गुण ग्राहकों के किया

दूसरीबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा॥

सितम्बर सन् १८८१ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् सितम्बर सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय कर लें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा (इतिहास)	हदा भी हैं	मानसदीपिका कोष	रसवृष्टि व रसचंद्रोदय
महाभारत	१-आदिपर्व्व	आदि	सुदामा चरित्र
१-पहिले हिस्सा में	२-सभापर्व्व	तथा जिल्द बन्धी	श्री अनुराग रस
आदिपर्व्व सभापर्व्व	३-बनपर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	कृष्ण गीतावली
बनपर्व्व	४-विराट पर्व्व	मय तसवीर व क्षेपक	**नाटक**
२-दूसरे हिस्सा में	५-उद्योग पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	प्रबोध चन्द्रोदय
विराट पर्व्व उद्योग	६-भीष्म पर्व्व	सातों काण्ड	रामाभिषेक
पर्व्व भीष्म पर्व्व	७-द्रोण पर्व्व	१-बालकाण्ड	आनंद रघुनंदन
द्रोण पर्व्व	८-कर्ण पर्व्व	२-अयोध्याकाण्ड	**वेदान्त**
३-तीसरे हिस्सा में	९-शल्य पर्व्व व	३-आरण्यकाण्ड	योगवाशिष्ठ
कर्ण पर्व्व शल्य प-	गदा पर्व्व सौप्तिक प-	४-किष्किन्धाकाण्ड	आनन्दाऽमृत वर्षिणी
र्व्व गदा पर्व्व सौप्तिक	र्व्व मय योशिक व वि-	५-सुन्दरकाण्ड	सांख्य तत्व कौमुदी
पर्व्व योशिक पर्व्व वि-	शोक व स्त्री पर्व्व	६-लङ्काकाण्ड	**काव्य**
शोक पर्व्व स्त्री पर्व्व	१०-शान्ति पर्व्व रा-	७-उत्तरकाण्ड	सूरसागर
शान्ति पर्व्व में राजध-	ज धर्म्म व आपद्ध-	रामायण शब्दार्थ को-	कृष्ण सागर
र्म्म आपद् धर्म्म मोक्ष	र्म्म व मोक्ष धर्म्म व	रामायण का इतिहास	विश्राम सागर
धर्म्म	दान धर्म्म	रामायण मानसदीपि-	प्रेम सागर
४-चौथे हिस्सा में	११-अश्वमेध आ-	रामायण कवितावली	ब्रजविलास बड़ा व छोटा
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	श्रम वासिक मुशल	रामायण गीतावली	कृष्णप्रिया
अश्वमेध आश्रम वा-	पर्व्व महाप्रस्थान	सटीक	विजय मुक्तावली
सिक पर्व्व व मौसल	स्वर्गारोहण	विनयपत्रिका बा-मो-	अनेकार्थ
पर्व्व व बाण प्रस्थान	१२-हरिवंश पर्व्व	विनयपत्रिका बा-शि-	छन्दोर्णव पिंगल
स्वर्गारोहण पर्व्व	रामायण रामविलास	भाषा विष्णु पुराण	कविकुलकल्पतरु
हरिवंश पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	लिंग पुराण	रसराज
महाभारत पर्व्व अले-	रामायण सटीक मय	ब्रह्मोत्तर खण्ड	सत्सई मूल तथा सटीक

पद्मावतभाषा

पदमावत भाखा

यह प्रसिद्ध कहानी राजा रत्नसेन और पद्मावत की है

जिसको

परम सुजान सकल गुण निधान परमतत्व बिलासी सम दृष्टि प्रकाशी मलिक मुहम्मद जायसी ने देश भाषा में शेरशाह बादशाह देहली के वक्त में जगत के उपकारार्थ ज्ञान मार्ग उपदेश निर्म्माण करके संसार को असत्य और परमेश्वर को सत्य दिखाया कहने को कहानी है परन्तु महा सुख दानी है

उसी का उल्था लाला रघुवरदयाल ने बड़े गौर से उर्दू से देवनागरी में करके गूढ़ शब्दों का अर्थ ठीक २ वास्ते जानने गुण ग्राहकों के किया

दूसरीबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा॥

नवम्बर सन् १८८१ ई०

श्रीगणेशाय नमः

अथ पद्मावत

लिख्यते

अस्तुतिखण्ड

सुमिरों[1] आदि[2] एक करतारू[3] | जेंजिव दीन्ह कीन्ह संसारू।
कीन्हेसि प्रथम[4] ज्योति परकाशू[5] | कीन्हेसि तिनहिं प्रीति कैलाशू[6]
कीन्हेसि अग्नि[7] पवन[8] जल खेहा[9] | कीन्हेसि बहुते रंग औ रेहा[10]
कीन्हेसि धर्ती[11] स्वर्ग[12] पतारू | कीन्हेसि बरन बरन[13] अवतारू[14]
कीन्हेसि दिन दिनेस[15] शशि[16] राती | कीन्हेसि नखत तरायन[17] पाती
कीन्हेसि धूप सेव[18] औ छांहा | कीन्हेसि मेघ[19] बीज[20] तेहि मांहा
कीन्हेसि सप्त[21] मही[22] ब्रह्मंड[23] | कीन्हेसि भवन चौदहों[24] खंडा

कीन्ह सबै अस जाकर दूसर छाजन काहि
पहिले ताकर नाउं लै कथा करों अवगाहि[25]

याद करना १ सबसे पहिले २ परमेश्वर ३ पहिले ४ उजियारा ५ नाम पहाड़ तथा स्वर्गलोक ६ आग ७ हवा ८ माटी ९ चित्रकारी १० ज़मीन ११-२२ आसमान १२-२३ रंग बरंग १३ पैदाइश १४ सूर्य्य १५ चांद १६ छोटे नखत १७ जाड़ा १८ बादल १९ बिजुली २० सात २१ सात परदा आसमान सात परदा ज़मीन २४ शुरू २५ ॥ ॥ ॥ ॥

कीन्हेसि सात समंदर पारा | कीन्हेसि मेर[1] खरंवड[2] पहारा
कीन्हेसि नदी नार औ झरना | कीन्हेसि मगर मच्छ बहु बरना[3]
कीन्हेसि सीप मोति तहं भरे | कीन्हेसि बहुते नग निरमरे[4]॥
कीन्हेसि बनरंवड[5] औ जड़मूरी | कीन्हेसि तरवर तार खजूरी॥
कीन्हेसि सावज[7] आरण[8] रहैं | कीन्हेसि पंख उडैं जहं चहैं
कीन्हेसि बरन[9] स्वेत[10] औ श्यामा | कीन्हेसि भूख नींद बिशरामा[11]
कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू | कीन्हेसि बहु औषधि[12] बहु रोगू

निमिख[13] न लाग करत वह सबै कीन्ह पल एक
गंगन[14] अंतरिक्ष[15] राखा बाज[16] खंभ बिन टेक

कीन्हेसि अगर कस्तूरी[17] बीना[18] | कीन्हेसि भीमसेन[19] औ चीना[20]
कीन्हेसि नाग[21] जो मुख बिषबसा[22] | कीन्हेसि मंत्र हरे जेहि डसा॥
कीन्हेसि अमृत[23] जिये जो पाई | कीन्हेसि बिष[24] मीच[25] जेहि खाई
कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरी। | कीन्हेसि करू बेल बहु फरी।
कीन्हेसि मधु[26] लावे लै माखी | कीन्हेसि भंवर पंख[27] औ पांखी
कीन्हेसि लोवा[28] अंदर चांटी[29]। | कीन्हेसि बहुत रहहिं घन मांटी
कीन्हेसि राक्षस[30] भूत परेता। | कीन्हेसि भूकस[31] देव दयंता[32]

कीन्हेसि सहस[33] अठारह बरन[34] बरन उपराज
भुक्त[34] दिहिस पुनि सबन कह सकल[35] साजना साज।

बीहड़ १ राहमुश्किल २ क़िसिम ३ जवाहिर साफ़ ४ जंगल ५ पेड़ ६ जंगली जानवर ७ जंगल ८ रंग ९ सफ़ेद-सियाह १० आराम ११ इलाज १२ पलक मारने में १३ आसमान १४ बीचो बीच १५ नाम जानवर परिन्द १६ मुश्क १७ क़िसिम काफ़ूर १८-१९-२० सांप २१ ज़हर २२-२४ जिसके पीने से मुरदा जिंदा होजाय २३ मौत २५ शहद २६ उड़नेवाले जानवर २७ लोंबड़ी २८ चींवटी २९ शैतान की क़िसिम ३०-३१-३२ हज़ार ३३ तरह तरह की पैदाइश ३४ सब ३५ ॥ ॥

कीन्हेसि मानुष[1] दिहिसि बड़ाई | कीन्हेसि अन्न भुक्ता[2] तहं पाई
कीन्हेसि राजा भोजहि राजू। | कीन्हेसि हस्ति[3] घोर तहं साजू[4]
कीन्हेसि तेहिं कहं बहुत बिरासू[5] | कीन्हेसि कोइ ठाकुर[6] कोइ दासू[7]
कीन्हेसि द्रव्य[8] गर्ब[9] जेहि होई॥ | कीन्हेसि लोभ[10] अघाइ न कोई
कीन्हेसि जियन[11] सदा सब चहा। | कीन्हेसि मींच[12] न कोई रहा॥
कीन्हेसि सुख औ कोटि अनंदू[13] | कीन्हेसि दुख चिंता[14] औ दंदू[15]॥
कीन्हेसि कोइ भिखारि[16] कोइ धनी[17] | कीन्हेसि संपत[18] बिपत[19] पुनि घनी[20]

कीन्हेसि कोइ निमरोसी[21] कीन्हेसि कोइ बरियार[22]
छारहि[23] ते सब कीन्हेसि पुनि[24] कीन्हेसि सब छार

धनपति[25] वही जेहेक[26] संसारू। | सबै देइ नित[27] घट न भंडारू[28]।
जानवंत[29] जगत[30] हस्ति[31] औ चांटा[32] | सब कहं भुक्त[33] राति दिन बांटा
ताकर दृष्टि[34] जो सब उपराहीं | मित्र[35] शत्रु[36] कोइ बिसरे नाहीं
पंख पतंग न बिसरे कोई॥ | परगट[37] गुप्त[38] जहां लग होई।
भोग भुक्त[39] बहु भांति[40] उपाई | सबै खवाइ आप नहिं खाई
ताकर वही जो खाना पीना। | सब कहं देइ भुक्त औ चैना
सबै आश[41] ताकर हरि खांसा | बहुन काहु की आश निरासा[42]

युग युग देत घटा नहिं उभै[43] हाथ अस कीन्ह
औ जो दीन्ह जगत मंह सो सब ताकर दीन्ह

आदमी १ रोज़ी २ हाथी ३ सामान ४ आराम ५ मालिक ६ गुलाम ७ दौलत ८ ग़रूर ९ लालच १० जीना ११ मौत १२ ख़ुशी १३ फ़िकिर १४ ग़म १५ ग़रीब १६ अमीर १७ दौलत १८ दुख १९ बहुत २० कमज़ोर २१ ज़ोरवाला २२ माटी २३ फिरि २४ दौलतमंद २५ जिसका २६ हमेशा २७ ख़ज़ाना २८ जहांतक २९ दुनियां ३० हाथी ३१ चींवटी ३२ ख़ुराक ३३-३९ निगाह ३४ दोस्त ३५ दुशमन ३६ ज़ाहिर ३७ छिपा ३८ बहुततरह पैदा किया ४० उम्मेद ४१ नाउम्मेद ४२ दोनों ४३ ॥ * ॥

आदि एक बरनौं[1] सो राजा[2] | आदि न अंत राज जेहि छाजा[3]
सदा सरबदा[4] राज सो करै। | और जेहि चहै राज तेहि दै
छत्रहि[5] अछत[6] नि छत्रहि छावा | दूसर नाहिं जो सरबर[7] पावा
परबत[8] ढहि देखत सब लोगू | चाँटहि[9] करहि हस्त[10] सर योगू
बज्रहि[11] तिनकहि मार उड़ाई | तिनै बज्र[12] करि देइ बड़ाई
ताकर कीन्ह न जानै कोई। | करै सोइ जो मन चिन्त न होई
काहू भोग भुक्ति[13] सुख सारा | काहू भूख बहुत दुख मारा

सबै नास्त[14] वह इस्थिर[15] ऐसो साज जेहि केर
एक साजी[16] औ भाजी चहै सवारै फेर॥

अलख[17] अरूप अबरन सो कर्ता | वह सबसों सब वह सो बर्ता[18]
प्रगट[19] गुप्त[20] सो सर्व व्यापी[21] | धर्मी चीन्ह न चीन्है पापी॥
ना वह पूत नहिं पिता न माता | ना वह कुटुम्ब न कोइ संग नाता
जनान[22] काहि न कोइ वै जना[23] | जहं लग सब ताकी सिरजना[24]
वै सब कीन्ह जहां लग कोई | वह नहिं कीन्ह काहु कर होई
हति[25] पहिले औ अबहै सोई | पुनि सो रहै रहै नहिं कोई
और जो होय सो बावर अंधा | दिन दुइ चारि मरै कर धन्धा

जो वह चहा सो कीन्हेसि करै जो चाहै कीन्ह
बरजनहार[26] न कोई सबै चाहि जेउ दीन्ह॥

सबसे पहिले १ बयान करना २ अव्वल ना आख़िर ३ हमेशा ४ छत्रधारी ५ बिदून छत्र ६ बराबरी ७ पहाड़ ८ चूँटी ९ हाथी १० पत्थर ११-१२ रोज़ी १३ नाश होने वाला १४ क़ायम १५ बनाना और बिगाड़ना १६ जिसको काई न देख सके १७ नज़दीक १८ ज़ाहिर १९ छिपा २० सब चीज़ में बिराजमान और सब चीज़ उसमें मौजूद २१ पैदा होना २२-२३ पैदाइश २४ पहिले था २५ मना करनेवाला २६ ॥*॥

बिन बुधि[1] चहि जो करहो ज्ञानू | जस पुराण महिं लिखा बखानू
जीव नाहिं पै जिये गुसाईं ॥ | कर[2] नाहीं पै करै सवाईं[3] ॥
जीभ नाहिं पै सब कुछ बोला | तन नाहीं सब ठाहर[4] डोला ।
श्रवण[5] नाहिं पै सब कुछ सुना | हिया[6] नाहिं पै सब कुछ गुना
नयन[7] नाहिं मै सब कुछ देखा | कौन भांति[8] अस जाय बिशेखा
ना कोइ है वह की रूपा | ना वह सों कोइ आहि अनूपा[9]
ना वह ठाउँ[10] न वह बिन ठाऊँ | रूप रेख बिन निरमल[11] नाऊँ

ना वह मिला न बेहरा[12] ऐसो रहा भरि पूर
दृष्टवन्त[13] कहं नेरे अंधहि मरुख[14] दूर

और जो दीन्हेसि रतन[15] अमोला | ताकर मर्म[16] न जानै भोला ॥
दीन्हेसि रसना[17] औ रस भोगू | दीन्हेसि दशन[18] जो बिहँसै[19] योगू
दीन्हेसि जग देखन कहँ नयना[20] | दीन्हेसि श्रवण[21] सुने कहँ बयना[22]
दीन्हेसि कराठ बोल जेहि माहाँ | दीन्हेसि कर पल्लव[23] बर बाहाँ
दीन्हेसि चरण[24] अनूप[25] चलाहीं | सो जानय जेहि दीन्हेसि नाहीं
योबन मरम[26] जानि पै बूढ़ा ॥ | मिला न तरुना[27] या जग ढूंढ़ा ॥
सुख कर मरम[28] न जानै राजा | दुखी जानि जा कहं दुख बाजा

काया[30] का मरम[31] जानि पै रोगी भोगी रहै निचन्त[32]
सब कर मरम[33] गुसाईं[34] जानै जो घट घट रहै तन्त

अकिल १ हाथ २ सब ३ जगह ४ कान ५ दिल ६ आँख ७ कौन तरह ८ मुक़ाबिल जिसका कोई नहीं ९ जगह १० पाक साफ़ ११ अलग १२ देखनेवाला १३ नादान १४ जवाहिर १५ भेद १६ जीभ १७ दाँत १८ हँसनेके लिये १९ आँख २० कान २१ आवाज़ २२ हाथकी अंगुली वो हथेली २३ पैर २४ जिसकी मिसाल नहो २५ जवानी २६-२८ क़दर २७ भेद २९-३१-३३ बदन ३० बेफ़िकिर ३२ ईश्वर ३४ ॥ ॥

अति अपार[1] कर ताकर करना | बरन[2] न कोई पावय बरना[2] ॥
सात स्वर्ग[3] जो कागद करै ॥ | धर्ती[4] समन्दर मस[5] भरै ॥
जानवन्त जग साखा बन ढाखा | जानवन्त केसर[6] दनों[7] पंख पाखा
जानवन्त खेह[8] रेह[9] दुनयाई ॥ | मेघ[10] बूंद औ गंगन[11] तराई[12] ॥
सब लिखनी की लिख संसारा | लिखि न जाय गति समुद्र अपारा
एतो कीन्ह सब गुण प्रकटा[13] । | अबहुं समुद्र महं बूंद न घटा
ऐसो जानि मन गर्ब[14] न होय । | गर्ब[15] करय मन बावर सोय ॥

बड़ गुणवंत गुसाईं[16] चही सवारी बेरा[17] ।
औ अस गुणी सवारी जो गुण चही अनेरा[18]

कीन्हेसि पुरुष[19] एक निरमरा[20] | नाम मुहम्मद पूनो[21] करा ॥
प्रथम[22] ज्योति बिधि ताकी साजी | औ तेहि प्रीति[23] सृष्टि[24] उपराजी
दीप[25] कलेस जगत कहिं दीन्हा | भा निरमल[26] जग[27] मारग[28] चीन्हा
जो न होत अस पुरुष उज्यारा | सूझि न परत पंथ[29] अंधियारा
दूसरे ठाउं[30] दीबी लिखी ॥ | वही धर्मी जो पाढत सीखी
जेहि न लीन्ह जन्म सो नाउं | ताकहं दीन्ह नरक महं ठाउं[31]
जग[32] बसीट दई वै कीन्ही ॥ | दुई[33] जग तरा नाउं तेहि लीन्ही

गुण[34] अवगुण बिधि[35] पूंछत होय लेखे[36] औ जोख
वेहि बिनवब आगे होय करै जगत[37] कर मोख[38]

जिसका पारा वार न हो १ बयान करना २ आसमान ३ ज़मीन ४ सियाही ५ बाल ६ दांत ७ बालू ८ माटी ९ बादल १० आसमान ११ नरवत १२ ज़ाहिर करना १३ ग़रूर १४-१५ ईश्वर १६ जल्द १७ बहुत १८ शख़्स १९ पाक २० चौदही रातिका चांद २१ पहिले २२ ईश्वर २३ मुहब्बत २४ दुनिया पैदा की २५ चिराग़ २६ दुनिया २७ पाक २८ संसार २९ राह ३०-३१ जगह ३२-३३ दुनियाका क़ासिद ३४ दोनों जहान ३५ पाप और पुन्य ३६ ईश्वर ३७ हिसाब ३८ दुनिया ३९ बन्दसे छोड़ाना ४०

चार मीत[1] जो मुहम्मद ठोउँ | जेहि क दीन्ह जग[2] निरमल[3] नाऊँ
अवाच क सद्दीक़ सयाने। | पहिले सिद्दक़ दीन वहि आने।
पुनि सो उमर ख़िताब सुहाये | भा जग[5] अदल[6] दीन जो आये।
पुनि उसमान बड़ पण्डित गुनी | लिखा पुराण जो आयत सुनी
चौथे अली सिंह[7] बरयारू[8]। | सौंहि[9] ना कोइ रहा जुझारू[10]॥
चारो एक मते[11] एक बाना | एक पंथ[12] औ एक संघाना॥
बचन[13] एक जो सुनायहिं साँचा | वही पुराण दुहूँ जग[14] बाँचा[15]।

जो पुराण बिधि[16] पठवा सोई पढ़ति ग्रंथ[17]।
और जो भूली आवत सो सु न लागै पंथ[18]

शेर शाह देहाली सुलतानू | चारहु खंड[19] तपी जस भानू[20]।
ओही छाज छाति औ पाटा[21] | सब राजै भुइँ धरा लिलाटा[22]
ज़ात शूर[23] औ खाँड़े[24] शूरा॥ | औ बुधवंत सबै गुण पूरा
शूर[25] नेवाई नव[26] खंड बहे॥ | सात दीप[27] दुनी सब नये॥
तहँ लग राज खड्ग[28] करि लीन्हा | रसकन्दर[29] जुलकरनयन जो कीन्हा
हाथ सुलेमान[30] केर अँगूठी॥ | जग[31] कहँ दान[32] दीन्ह भरि मूठी
औ अतिगरू भूमि[33] पति भारी | टेक भूमि[34] सब सृष्टि[35] सँभारी॥

देहि अशीश मुहम्मद करहु युग युग राज।
बादशाह तुम जगत[36] के जग[37] तुम्हार मुहताज

दोस्त १ जगह २ दुनिया ३ पवित्र ४ संसार ५ न्याव ६ शेर ७ ज़बरदस्त ८ सामना करने वाला ९ लड़नेवाला १० एकसलाह ११ राह १२ बात १३ दुनिया १४ पढ़ना १५ ईश्वर १६ किताब १७ राह १८ तरफ़ १९ सूर्य्य २० तख़्त २१ माथा २२ पठान २३ तलवार बहादुर २४ बहादुर २५ सारी दुनिया २६ मुल्क २७ तलवार २८ नाम बादशाह २९ ३० दुनिया ३१ ख़ैरात ३२ बादशाह ३३ ज़मीन ३४ दुनिया ३५-३६-३७ ॥ ॥

बरनौं पूरे भूमि पति राजा। भूमि न भार सहै जो साजा
हयमय सयन चलय जग पूरी। पबँत दूटि उड़हिं होय धूरी।
परी रेनु होय रबि हि गरासा॥ मानुष पंखि लेहिं फिरि बासा
भुइँडड़ अंतरिछ गई ऊनमजा ऊपर होय छावा सिंहलजा॥
डोलै गगन इन्द्र डर काँपा॥ बासुकि जाय पतालहिं चाँपा
मेरु धसकि सो समुद्र सुखाई। बन खँड टूटि खेह मिलि जाई
अगलहि कहँ पानी गहि बाटा पिछलहि कहँ नहिं धूरि न आटा

जोगहि नयन नहिं काहू चलत होय सब चूर॥
जोवहु चढ़ै भूमि पति पूर शाह जग सूर॥

अदल कहौ पहिले जस होय। चाँटी चलत न दुखवै कोय॥
नौपौरी बाजा अदल कहा। शाह अदल सर सोहि न रहा
अदल जो कीन्ह ऊमर की नाईं भई यहौ सगरी दुनियाईं॥
परी नाँद कोइ कुवै न पारा॥ मारा मानुष से उजियारा
एकै सिंह रेंगहिं एक बाटा॥ दोनौं पानि पियैं एक घाटा
नीर खीर छाने दरबारा॥ दूध पानि सब कै निरुवारा।
धर्म न्याव चलै सत भारवा दूबर बरी एक सम सरवा॥

सबै प्रथमी अपनी पौ जोरि जोरि के हाथ॥
गङ्ग जमुन जौलहि जल तौलहि अमर नाथ

तारीफ़ करना १ बहादुर २ चांदशाह ३ ज़मीन ४ घोड़े से भरी हुई ५ फौज ६ दुनियां ७ पहाड़ ८ धूर ९ सूर्य्य १० बीच ११ आसमान १२ १३ ज़मीन १३ नाम राजा सांपों का १५ पहाड़ १६ जंगल १७ राह १८ चहला १९ क़िला २० टूटना २१ बादशाह २२ दुनिया का सूर्य्य २३ न्याव २४ पहिले २५ चूंटी २६ नाम बादशाह २७ न्याव करने वाला २८ न्याव २९ ३१ बराबर ३० नाम ख़लीफ़ा ३२ नायना ३३ राह ३४ ३६ ३५ दूधपानी ४० चलना ३८ सच्चा ३९ अक्षरसत ४० बराबर ४१ इसपानिसा ४२

पुनि रूपवंत[1] बखानौं[2] काहा | जानवन्त जगत[3] सबै मुख जाहा
शशि[4] चौदह जो दई[5] सँवारा | तबहूँ जाहि रूप उजियारा
पापजाय जो दरशन दीसा | जग[6] जुहार के देत अशीशा
जैसो भानु[7] जग[8] ऊपर तपा | सबै रूप वह आगे छिपा ॥
अस भाशूर[9] पुरुष[10] निरमरा[11] | शूर[12] जाहि दश आकर[13] करा
सोहिं दृष्टि[14] की हेर[15] न जाई । | जेहि देखा सो रहा सिरनाई
रूपसवाई दिन दिन चढा ॥ | विधि[16] सुरूप जग[17] ऊपर गढ़ा ॥

रूपवन्त[18] मन माथे चन्द्र घाट वह बाढ़ि
मेदन[19] दरश लुभानी अस्तुति[20] बिनवै ठाढ़ि

पुनि दातार[21] दई[22] जग[23] कीन्हा । | अस जग दान न काहू दीन्हा
बलि[24] औ विक्रम[25] दानि[26] बड़ कहे | हातिम करण[27] बतागी अहे
शेरशाह सरपोच[28] न कोऊ | समुद्र सुमेर[29] भंडारी दोऊ ॥
दान[30] दाग बाजै दरबारा ॥ | कीरत[31] गई समुन्दर पारा ॥
कंचन[32] परशशूर[33] जग[34] भयो । | दारिद भाग दशन्तर[35] गयो ॥
जो कोइ जाय एक बेर माँगा । | जन्म न होय न भूँखा नाँगा
दश अश्वमेध[36] जगत[37] जैं कीन्हा | दान पुन्य सर[38] सोहिं न चीन्हा ॥

ऐसो दानि जग[39] उपना[40] शेरशाह सुलतान ॥
ना अस भयो न होयना कोई दय अरु दान ॥

ख़ूबसूरत १ बयान करना २ दुनियां ३-६-१७-२३-२४-३६-३९-४१ चाँद ४ ईश्वर ५ सूर्य्य १२ संसार ८ बहादुर ९ मर्द १० पाक साफ़ ११ दशगुना १३ सूधीनिगाह १४ देखना १५ ईश्वर १६ ख़ूबसूरत १८ आदमी १९ तारीफ़ २० दान देने वाला २१ ईश्वर २२ नाम राजा २५-२६ दान देने वाला २७ नाम सखी २८-२९ बराबर ३० पहाड़ का नाम ३१ नगाड़ा ३२ नेकनामी ३३ पारसपत्थर ३४ बहादुर ३५ नाम जगह ३७ घोड़ा ३८ बराबर ४० पैदा होना ४२ ॥ ॥

तारीफ़ सय्यद अशरफ़ जहाँगीर की

सय्येद अशरफ़ पीर पियारा | जेहि मोहिं पंथ दीन्ह उजियारा
लेसा हिये प्रेम करि दिया | उठी ज्योति भा निरमल हिया
मारग होत जो अँधेरा सूझा | भाउ जेर सब जाना बूझा ॥
खार समुद्र पाप मोर मेला ॥ | बोहत धर्म लीन्ह कय चेला
उन मोर कर बूड़ि कय गहा ॥ | पायो तीर घाट जो अहा ॥
जाके ऐसो होय कन्धारा ॥ | तुरत बेगि सो पावै पारा ॥
दस्तगीर गाढ़े के साथे ॥ | वह अवगाहि दीन्ह तेहि हाथे

जहाँगीर वय चिष्टी निहकलंक जस चान्द
वय मख दम जगत के हो वह घर की बान्द

तारीफ़ सय्यद अशरफ़ जहाँगीर के बेटे की

उन्ह कर रतन एक निरमरा | हाजी शेख सभा गुण भरा ।
तेहि घर दुइ दीपक उजियारे ॥ | पंथ दये कहँ दई सँवारे ॥
शेख मुहम्मद पून्यों करा ॥ | शेख कमाल जगत निरमरा ।
दोउ अचल ध्रुव डोलैं नाहीं | मेरे खखंड न भवा पराहीं ॥
दीन्ह रूप और ज्योति गुसाईं | कीन्ह खम्भ दुइ जग की ताईं ॥
दोहू खम्भ टेके सब मही ॥ | दोने के भार सृष्टि सब रही ॥
जिन्हि दरशी औ परशी पाया | पाप हरा निरमल भइ काया

मुहम्मद तहाँ निचंत पंथ जिन्ह संग मुरशद पीर
झहिरी नाव औ खेवक बेगि लागि सो तीर

राह १-५-१४-२४ दिल २-४ पाक ३-२ नाव ६ हाथ ७ किनारा ८ मल्लाह ९
२५ ल्द १० दुनिया ११ जवाहिर १२ साफ़ १३ चौदहों का चाँद १५ संसार
१६ पाक साफ़ १७ नाम सितारा १८ बीहड़ १९ दुनियां जहान
२०-२१ बदन २३ जल्द २६ किनारा २७ ॥ ॥

गुरु सुहदी खेवक मैं सेवा । चलीउ नाह लुज हि कर खेवा
अगवा भयो पुरुष बुरहानू पंथै लाय मुहि दीन्हो ज्ञानू
अल्हदाद भल तिन्ह कर गुरू दीन दुनी रोशन सुख रू ॥
रोद गुरु मद के वै चेला ॥ सिद्धि पुरुष संग मिन्ह खेला
दानयाल गुरु पंथ लखवाई हजरत ख्वाजा खिज़र तोहि पाई
भये प्रसन्न वै हजरत ख्वाजे ऐने रे जिय सय्यद राजे ॥ ॥
वै सेवन मैं पाय करैत ॥ अरवी जीभ प्रेम कब बरते

वेसु गुरु हौं चेला निंत विनवौं भा चेर
उनहुत देखी पाउ दरशु गुसाईं केर ॥

एक नैन कवि मुक्ख मझ कने सोई बिमोहा जेइ कवि सुने ।
चान्द जैस जोरा विधि अवतारा दीन्ह कलंक कीन्हि उजियारा
जगत सूझ एकै नैनाहा उहै सूझ जस नखतन्ह माहा
जोलहि अंबहि डोंम न होई तीलहि सुगन्ध बसाय न कोई
कीन्हि समुद्र जो पानी खारा तौ अति भयो असूझ अपारा
जौ सुमेरु तिरशूल बिनासा ॥ भा कंचन गढ़ लंका कासा
जोलहि घरी कलंक न हिं परा काच होय नाहि कंचन करा

एक नैन जस दरपन औ निरमल तेहि भाव
सब रूपवंती पदमिनी पाइ जो दरसन चाव

नाव खेने वाला १ गुरु २ मुर्शिद कामिल ३ सत संगत ४ खुदा ५ हमें या विनती करना ६ ईश्वर ७ चाहें ८ १५ मोक्ष जाना १० दुनिया ११ ईश्वर १२ पैदा किया १३ संसार १४ नाम सितारा १६ आसव १७ राग १८ खुशबू १९ जिसका किनारा नहीं २० नाम पहाड़ जिस को कहते हैं जो नील विद्रुम से सोहता था २१ सोने का किला २२ दाग २३ सोना रुपा सिर २४ चांद २५ चाँदना २६ पाक साफ़ २७ खुद खुदा २८ मुझे देखना २९ ॥ ॥

चार मीत[1] कबि मुहम्मद पाये | जोरि मिताई[2] सर पहुँचाये
यूसुफ़ मलिक पण्डित बहु ज्ञानी | पहिली बात भेद उन्ह जानी
पुनि सलार कादम मति माहाँ | खाँड़े[3] शूर उभनत[4] बाहाँ
मियाँ सलोनी सिंह[5] बर यारू | बीर कहत रण खर्ग[6] जुझारू
शेख़ बड़ी बड़ि सिद्धि[7] बखाना[8] | के अदेश सिद्धि बड़ बाना ॥
चार्यो चतुर[9] दशा गुण पढ़े | औ सिंह[10] योग गुसाईं[11] गढ़े ॥
वृक्ष[12] होय जो चन्दन पासाँ | चन्दन होय बिबिधि तेहिं बासा

मुहम्मद चार्यो मीति[13] मिलि भये जो एकै चित्त
यह जग[14] साथ जो बैठे वह जग[15] बिछुरन कित्त

जायस नगर धर्म अस्थानू[16] | तहाँ जाय कबि कीन्ह बखानू[17]
औ बिनती[18] पण्डितन सो भजा | टूटि सँवार[19] मेर बहु सजा ॥
हौं पण्डितन केर पछलगा | कछु कहि चला तबल[20] डीडगा
हिय[21] भँडारंग अहे जो पूँजी | खोली जीभ तार की कूंजी ॥
रतन[22] पदारथ बोले बोला ॥ | सुरस[23] प्रेम मधु[24] भरी अमोला
जेहि की बोल बिरह की घाया | कहिं तिन्ह भूख कहाँ तेहि माया
फेरैं भेव[25] रहै भा तपा[26] ॥ | धूर लपेटा मानि[27] कछिपा ॥

मुहम्मद कबि जो प्रेम की नातन रक्त[28] न माँस ।
जे सुख देखा सो हँसा सुनी तेहि आये आँस

दोस्त १ दोस्ती २ तलवार बहादुर ३ बलन्द हाथ ४ शेर ज़बरदस्त ५ तलवार ६ मर्द कामिल ७ मशहूर ८ चौदहों विद्या के जानने वाले ९ शेर १० ईश्वर ११ पेड़ १२ यार १३ दुनिया १४-१५ मकान १६ बयान करना १७ आजज़ी १८ सब तरह आरास्ता १९ ढोल बजाय के २० दिल २१ जवाहिर २२ मीठे मुहब्बत के भरे हुये २३ शराब २४ सूरत बदले हुवे २५ तप करने वाले २६ मोती वग़ैरा २७ ख़ून २८ ॥ ॥

सन नवसे सत्ताइस अहे ॥ कथा अरंभ बैन कबि कहे।
सिंगल दीप पद्मिनी रानी ॥ रतनसेन चित्तौरगढ़ आनी।
अलाउदीन दिहली सुलतान राघव चेतन कीन्ह बखान ॥
सुना गुनाहगढ़ छेंका आई। हिन्दू तुरकहिं भई लड़ाई॥
आदि अंत जस कथा अहै लिखब भाखा चौपाई कहै॥
कबि व्यास रस कवला पुरी दूरहिं नेर नेर दूरी ॥ ॥
नेरे दूर फूल जस काँटा ॥ दूर जो नेर जस गुड़ चाँटा

भँवर आय बनखंड सो लेइ कमल की बास
दादुर बास न पावै फूलहि जो आछी पास

सिंगल दीप कथा अब गाऊँ श्री सुपद्मिनी बरन सुनाऊँ
निरमल दरपन भाँति बिसेखा जिन्ह जस रूप सो तैसो देखा॥
धनि सो दीप जिन्ह दीपक बारे श्री सुपद्मिनी जो दीप सँवारे॥
सात दीप बरने सब लोगू ॥ एकौ दीप न बड़ सरि जोगू॥
दया दीन नहिं तस उजियारा। सरन दीप सरि होय न पारा॥
जम्बूदीप कहूँ तस नाहीं ॥ लङ्क दीप सरि पूज न भाई
दीप गुस सहल आरसी परा॥ दीप महँ सिंगल बास हरा॥

सब संसार ओर ग्रंथन्ही आये सातौ दीप॥
एक दीप नहिं आतिम सिंहल दीप समीप

गन्धर्वसेन सुगन्ध नरेसू॥ सो राजा वह ताकर देसू ॥
लंका सुना जो रावन राजू॥ तेहु जाहि बड़ ताकर साजू॥
छप्पन कोटि कटक दल साजा सबै छत्रपति ओ गढ़ राजा

शुरू करना १ नाम भाट २ बयान करना ३ क़िला ४ अव्वल से आख़िर तक ५ चूती ६ जंगल ७ मेढ़क ८ तारीफ़ करना ९ साफ़ १० पीपा की तरह ११ ईश्वर १२ बयान १३ बराबर १४-१५ राजा १६ फ़ौज १७ ॥३-॥

सोरह सहस[1] घोड़ घुड़[2] शारा | श्याम[3] करन जस बाँक तुबारा
सात सहस[4] हस्ती[5] सिंहली | इमि[6] कैलाश[7] ऐरा[8] पति बली
अश्व[9] पतिक शिर मौर कहावे | गज[10] पतीक आँकुश गज[11] नावै
नर[12] पतीक कहुँ और[13] नरिन्दू | भू[14] पतीक जग[15] दूसर इन्दू[16] ॥

ऐसो चक[17] वे राजा चहूँ[18] खंड भू होय ॥
सबै आय शिर नावहीं सरवर[19] करीन कोय

जोहि दीप नेरे भा जाय ॥ | जनु कैलाश[20] तीर भा आय
गहन[21] अम्बराउ[22] लाग बहु पासा | उठी भूमि[23] हति लागि अकासा
तरवर[24] सबै मलय[25] गिर लाये । | भइ जग छांहि रयनि[26] होय आये
मिली सुनेर[27] सुहाई छाहाँ । | जेठ जाड़ लागाय तेहि माहाँ
वही छाहिं रयनि[28] होय आवै । | हरियर सबै अकाश देखावै
पंथक[29] जो पहुँचे सहि घामू | दुख बिसरे मुख होय बिश्रामू[30]
जिन्ह वह पाई छांहि अनूपा[31] | फिरि न आय सही यहि धूपा

अस अम्बराउ[32] सघन घन बरनन[33] पारौं अंत
फरी फूली छयो ऋतु जानहु सदा बसंत ॥

फरे अम्ब अति सघन सुहाये | औ जस फरी अधिक[34] शिर नाये
कटहर दार पेड़ सो पाके | बड़हड़ सो अनूप अति ताके
खिरनी पाकर खाँड़ अस मीठी | यामुन पाक भँवर अस डीठी
नरयर फरे फरे खरहरे ॥ | फरे जानि इन्द्रासन परे ॥

हज़ार १-४ अस्तबल २ घोड़े की ज़ात ३ हाथी ५ बराबर ६ नाम पहाड़ ७ नाम हाथी राजा इन्द्र ८ घोड़े सवार ९ हाथी सवार १० हाथी ११ राजा १२-१३-१४ दुनिया १५ राजा इन्द्र १६ चक्रवर्ती १७ तमाम दुनिया १८ बराबर १९ नाम पहाड़ २० गुंजान २१ बाग़ २२-२३ ज़मीन २३ पेड़ २४ चन्दन २५ रात २६-२८ पहाड़ २७ मुसाफ़िर २९ आराम ३० बेमिसाल ३१ बयान ३३ बहुत ३४ ॥

पुनि मकुवा चुवअंबिकेमिठास[1] | मधुजस मीठ पुहुपजस बास[2][3] ॥
और खजहजा उन्ह कर नाऊँ[4] | देखा सबरानी अम्बराऊँ[5] ॥
लासिसबैजमअम्सतपारवा | रहेलुभायमैंाई जो चारवा ॥

लवंगासुपारीजायफर सबफर फरे अपर ॥
आसपास घनइमली औघँन तार खजूर ॥

बसहिंपंखबोलहिंबहु भाखा | करहिंहुलासदेखकेपाखा
भोरहोत बासहिं चहिंचुही[10] | बोलहिं पांडुक[11] एकै तुही ॥
सोरा सुआ जोरहचहिं करही[12] | करहिं पखेरू[13] और करोरही ॥
पिव पिव कर जोलासपपीहा[14] | तुही तुही कर रंडरू केहा[15] ॥
कुहू कुहू करिकोयल रारवा | औविहंगगन[16] बोलबहु भाखा
दही दही करि महर पुकारा | हारल अपनी बोली हारा ॥
कुहिकुहि मोर सुहावनलागा | होयकुराहर बोलहिं कागा

जानवन्त पक्षी बनके फिरि बैठे अम्बराऊँ[17] ।
अपनी अपनी भाखना लीन्ह देई कर नाऊँ

पैंगपंग[18][19] पर कुवाँ बावरी ॥ | साजी बैठक[20] औ पावरी[21] ॥
और कुंड बहु डाबहिं डाँकै[22] ॥ | सब तीरथ औ तेहिके नाऊ ॥
मठ मंडफ चहुँ पास सवारे ॥ | तपी[23] जपी[24] सब आसन मारे ॥
कोइ सुचयेपुवर[25] कोइ सन्यासी[26] | कोई रामेयती[27] कोई बिरही[28] वासी
कोई ब्रह्म चेर्य्य पंथ[29] लागे[30] ॥ | कोइ सोदिगम्बर[31] अछिन्ह[32] नागे[33]

बहुत १ प्रहद २ फूल ३ नाम मेवा ४ आम ५-१० गुंजान ६-७ चिड़या ८-९ कबूतरी करना ९ नाम चिड़या १०-११ सारस १२ तोता १३ नामचिड़या १५ दहियड़ १६ ईपूवर १७ कदम १८-२० बैठक २१ जीना २२ जगह २३-२४ तप करने वाले २५ जप करने वाले २६ किसिम योगियों की २७-२८-२९-३० ३२-३३ नंगे ३१ ॥५॥

कोइ सु महेश्वर[1] योगी[2] यती[3] | कोइ एक परखै देबी सती
कोइ सरस्वती[4] संत कोइ योगी[5] | कोइ निरास[6] पंथ बैठि बियोगी[7]

सेवरा[8] खेवना[9] बान[10] प्रस्ती शिष[11] साधक अवधूत[12]
आसन मारे बैठि सब पाँच आत्मा भूत ॥

मानसरोवर[13] बरनौं[14] काहा | भरा समुद्र अस अति अवगाहा[15]
पानि मोति अस निरमल[16] तासू | अमृत बरन[17] कपूर सुबासू[18]
लङ्क-दीप की शिला अनाई | बाँधा सरवर[19] घाट बनाई ॥
खराड खराड सीढ़ी भुइंगरेरे। | उतरहिं चढ़हिं लोग चहुँ फेरे
फूला कमल रहा होय राता[20] | सहस[21] सहस पक्षिन[22] के छाता
उलटहिं सीप मोति उतराहीं | चुनहिं हंस और केलि कराहीं
खनि पतार पानी तहिं काढ़ा | क्षीर समुद्र निकसा तहं ठाढ़ा

ऊपर पाल चहूँ दिश[23] अमृत फल सब रूख
देखि रूप सरवर[24] की गइ पियास औ भूख ॥

पानि भरी आवहिं पनहारी | रूप स्वरूप पद्मिनी नारी ॥
पद्मगन्ध[25] तिन्ह अंग[26] बसाहीं | भवँर लागि तिन्ह संग फिराहीं
लंक[27] सिंहनी औ सारंग[28] नयनी[29] | हंस गामिनी[30] कोकिल बयनी[31]
आवहिं झुराड सो पाँतिहि पाँती | गवन[32] सुहाय सुभाँतिहि[33] भाँती
कनक[34] कलश[35] मुख चन्द दिपाहीं[36] | रहस[37] केलि से आवहिं जाहीं

क़िसिम योगी १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२ नाम तालाब १३-२४ तारीफ़ १४ बहुत गहिरा १५ साफ़ १६ रंग १७ ख़ुशबू १८ तालाब १९ सुर्ख़ २० हज़ार २१ चिड़ियां २२ चारों तरफ़ २३ कमल की ख़ुशबू २५ बदन २६ कमर शेरनी की तरह २७ हरिन २८ आँख २९ चाल ३० आवाज़ ३१ चलना ३२ तरह ३३ सोना ३४ घड़ा ३५ चमकना ३६ ख़ुशी से उछलती कूदती ३७ ॥

जासों वै हेरैं[1] चरव[2] नारी ॥ बाँके नयन[3] जनु हनहिं कटारी
केस[4] मेघावर शिरता पाहीं ॥ चमकहिं दशन[5] बीज[6] की नाईं ।

माथे कनक[7] गागरी आवहिं रूप अनूप ॥
जेहि की ये पनिहारी ती रानी केहि रूप ।

ताल तलावा बरन[8] न जाहीं ॥ सूझै वार पार कुछ नाहीं ॥
फूली कुमुदि[10] केति[11] उजियारे । मानहु उये गगन[12] महँ तारे ॥
उतरहिं मेघ चढ़हिं लै पानी चमकहिं मच्छ बीज[13] की बानी
तैरहिं पंख[14] सुसंगहि संगा ॥ सेत[15] पीत[16] राती[17] बहु रंगा ॥
चकई चकवा केल कराहीं । निस[18] बिछोह दिनहिं मिल जाहीं
करलहिं सारस करहिं हुलासा जीवन मरन सुएकहिं पासा
कंपासो[19] डहनक[20] बक[21] लेदी[22] रही अपूर मीन[23] जल भेदी ॥

नग अमोल तेहि तालहि दिनहिं बरहिं जस दीप
जो मरजिया होय तेहि सो पावे वह सीप ॥ ।

आस पास बहु अम्रत बारी[24] फरी अपूर होय रखवारी ॥
नारंग नीबू तुरंज जंभीरा ॥ औ बदाम बहु बेद अंजीरा ॥
गुल गुल तुरंज सदा फर फरे ॥ नारंग अति राती[25] रस भरे ॥
किशमिश सेव फरे मौ बाता डोरयों[26] दाख देखि मन राता[27]
लागा सुहाई हरफ़ा स्योरी ॥ उनय रहीं केला की घोरी ॥
फरी तूत कमरख औ ब्योजी[28] राय करौंदा बेरचिरौंजी ॥

देखना १ आँख २-३ बाल ४ दाँत ५ बिजुली ६-१३ सोना ७ बेमिसाल ८ तारीफ़ करना ९ कोका बेली १० नाम नखत ११ आसमान १२ चिड़या १४ सफ़ेद १५ पीली १६ लाल १७ शति १८ नाम जानवर परिन्द मछली पकड़ कर खा जाने वाले १९-२० २१-२२ मछली २३ बाग़ीचा २४ लाल २५-२७ अनार २६ नाम मेवा २८ ॥

(सुगन्धराव)

सुगन्धराव छुहारा दीठे[1] ॥ और खजूर[2] हजा खाटे मीठे ॥

पानि देहिं खराड़[3] बानी कुर्वाहिं खाँड़नहिं मेल
लागी घरी रहँट की सींचहिं अम्टत बेल ॥

पुनि फुल वारि लाग चहुँ पासा बृक्ष बेदहि चन्दन भइ बासा
बहुत फूल फूली घन बेली क्योंड़ा चम्पा गोंद चमेली ।
सुरंग गुलाल कदम औ गूजा सुगन्ध बकोरी गन्ध्रप पूजा ॥
जाही जूही बगचन लावा ॥ पुहुप[5] सुदरसन लाग सुहावा
नागेसर सदबर्ग[6] हवारी । ॥ औ शिंगारहार फुलवारी ॥
सुवन ज़र्द बहु फूली सेवती रूपमंजरी और मालती ॥
बोलसरी बेली औ करना सबै फूल फूले बहु बरना[7] ॥

तेहि शिर फूल चढ़हिं बैजेहि माथे मन भाग
आछेन्ह सदा सुगन्ध बहै जनु बसंत औ फाग

सिंहल नगर दीख पुनि बसा । धनि राजा अस जाकर दसा ॥
ऊँची पँवरी[8] ऊँच उड़ासा[9] ॥ जनु कैलाश इन्द्र कर बासा ।
राउ राँग सब घर घर सुखी ॥ जो देखे सो हँसता मुखी ॥
रचि रचि साजे चन्दन चूरा पोती अगर[10] मेद और कपूरा ।
सब चौपारहिं चन्दन खाँभा वहिं राजा तब बैठो सभा ॥
जनु सभा देवतहिं की जुरी परी दृष्टि[11] इन्द्रासन पुरी ॥
सबै गुणी औ पण्डित ज्ञाता । संस्कृत[12] सब के मुख राता[13]

अलख[14] पंथ सवारैं जनु शिव लोक अनूप[15] ।
घर घर नारि पद्मिनी मोहहिं सब अप्सरन[16] की रूप

देखना १ खजूर २ माली ३ पेड़ ४ फूल ५ गेंदा ६ रंगबरंग ७ जीना ८ महल ९ केसर १० निगाह ११ संस्कृत ज़बान के सब बोलने वाले १२ लाल १३ ईश्वर की राह १४ बेमिसाल १५ स्वर्ग की औरतें १६ ॥ ÷ ॥

पुनि देखी सिंहल की बाटा[1] | नवो निद्धि[2] लक्ष्मी सब हाटा[3]
कनक[4] हाट[5] सब कुहक[6] हिं लीपी | बैठि महाजन सिंहल दीपी।
रची हँ[7] तोड़ा रूप न ढारे ॥ | चित्र[8] कटाव अनेक[9] सँवारे[10] ॥
सोन रूप भल भयो पसारा | धवल[11] शिरी पोतहिं घरबारा
रतन[12] पदारथ मानिक[13] मोती | हीरा लाल सँवारे जोती ॥
औ कपूर बेना कस्तूरी[14] ॥ | चन्दन अगर रहा भरि पूरी
जिन्ह यह हाट[15] न लीन्ह बिसाहा[16] | ता कहँ आन हाट[17] कित लाहा[18]

कोई करै बिसहना[19] काहू केर बिकाय ॥
कोई चलै लाभ[20] सों कोई मूर गँवाय ॥

पुनि सु शृंगार हाट[21] भल देखा | किये शृंगार बैठि तह बेश्वा[22]
मुख तम्बोल शिर चीर कुसम्भी | कानन कनक[23] जड़ाऊ खुम्भी[24]
हाथ बीन सुनि मिरग[25] भुलाहीं | नर मोहहिं सुनि पैग[26] न जाहीं
भौंह धनुष तेहि नयन[27] अहेरी[28] | मारहिं बान सान सो हेरी[29] ॥
अलक[30] कपोल[31] होल हँस देहीं | लाय कटाक्ष मार जनु लेहीं ॥
कुच[32] कंचुक[33] जानहिं जग[34] सारे | अंचल दीन्ह सुभावहिं ठारे
केते खेलार हारे तेहिं पांसा | हाथ झारि उठि चले निरासा

चेट[35] क लाय हरहिं मन जबलहि होय गँठि फेट
साठ[36] नाट पुनि भई बटाऊ[37] ना पहिंचान न भेट

राह १ दुनिया की दौलत २ बाज़ार ३-५-१२-१५-१७-२१ सोना ४-२३ केसर ६ दसनी ७ मुसव्वरी ८ बहुत ९ आरास्ता १० चूना ११ जावाहिर १२ मूँगा १३ मुश्क १४ मोललेना १६ फ़ायदा १८ २० ख़रीदारी १९ तवायफ़ २२ बाल २४ हिरन २५ क़दम २६ आँख २७ शिकारी २८ देखाना २९ बाल ३० गाल ३१ छाती ३२ अंगिया ३३ संसार ३४ यादू ३५ मुफ़लिस ३६ मुसाफ़िर ३७ ॥ ✝ ॥

ले के फूल बैठि फुलेहारी। पान अपूव धरे सँवारी ॥
साँधो सबै बैठि ले काँधे ॥ भल कपूर खवरी बाँधे ॥
कतहूँ पण्डित पढ़ै पुराना धर्म पंथ कर करहिं बखाना
कतहूँ कथा कहै कुछ कोई कतहूँ नाच कूद भल होई ॥
कतहुँ च हरहटा पंवरी लावा कतहूँ पारवंड नाच नचावा
कतहूँ नाँद पाँड्ह हो भला। कतहूँ नाटक चेटक कला।
कतहुँ काहु ठग विद्यालाय कतहूँ मानुष लीन्ह बोराय

चरपँत चोर दूत गठछोरा मिले रहहिं तेहि पाँव
जो बहु भाँति सजग भा अगमन गँठता कर पै बाँव

पुनि आई सिंहल गढ़ पासा का बरनौं जनु लाग अकासा
तरहिं करहिं बासुक की पीढी ऊपर इन्द्र लोक पर दीढी ॥
पर खँडहि चढ़ुं दिपा सब बाँका काँपै जाँघ जाय नहिं झाँका
अगमे असूझ देखि डर खाये। परै सु सपन पताराहिं जाये ॥
नव पवरी वाँकी नव खंडा ॥ नवो जो चढ़े जाय ब्रह्मंडा ॥
कंचन कोटि जड़े नग पूरी। नरवतहिं भरी बीजै पुनि दूरी
लङ्का जाहि ऊँच गढ़ ताका ॥ निरखि न जाय दृष्टि मन थाका

हिये न समाय दृष्टि नहिं पहुँचै जानहिं गढ़ सुमेर
कहँ लगा कहौं ऊँचाई कहँ लगा बरनौं फेर ॥

तन गढ़ बरनौं चलै जहाँ गुरु नाहिं न होय बोज रय चूरू ॥

साली १ हलवाई २ लड्डू ३ राह ४ बयान करना ५ बाज़ार ६ गाना ७ आवाज़ ८ कारनाटक ९ जादू १० मक्कार ११ चुग़ुल १२ होशियार १३ गाँठी १४ तारीफ़ १५ जड़ १६ नागसाँप १७ देखना १८-२६ खाई १९ चारोंतरफ़ २० सुफ़ैदकिला २१ सीढ़ी २२ सोने का क़िला २३ बिजुली २४ क़िला २५ नज़र २७ दिल २८ निगाह २९ नाम पहाड़ ३० तारीफ़ ३१ सौदागर ३२ घोड़ा ३३

पँवरी[1] नवों बज्र[2] की साजे | सहस[3] सहस[4] तहँ बैठे पाजे[5]।
फिरैं पाँच कुतवार सु भँवरी | कँपै पाउँ चापत वे पँवरी[6]।
पँवरिहिं[7] पँवरि[8] सिंह[9] गढ़ गाढ़े | डरपहिं राय[10] देखि तहँ ठाढ़े।
बहु बनान वे नाहर[11] गढ़े ॥ | जनु गाजहिं चाहहिं शिर चढ़े।
टारहिं पूँछ पसारैं जीहा ॥ | कुंजल[12] डरहिं कि गंजर लीहा
कनक[13] शिला गढ़ सीढ़ी लाई | जगमगाहिं गढ़[14] ऊपर ताई।

नवों खंड नव पँवरीं[15] औ तहँ बज्र[16] केवार।
चार बसेरे[17] सो चढ़ै सत[18] सो उतरै पार ॥

नव[19] पँवरीं पर दसों[20] दुवारा। | तेहि पर बाज रहा घरियारा।
घड़ी सो बैठि गिनै घरियारी | भरी सु अपनी अपनी बारी
जोहि घड़ी पूजे वह मारा ॥ | घड़ी घड़ी घरियार पुकारा
परा जो डाँड़[21] जगत[22] सब डाँड़ा। | का निचिंत[23] माटी[24] करि भाँड़ा
तुम्ह तेहि चाक चढ़े हो काँची | अबहिं न फिरी न थिर होय बाँची
घड़ी जो भरी घटी तुम आऊ[25] | का निचिंत[26] सोवे जो बटाऊ[27]।
पहरहिं पहर गजर नित[28] होई | हिया न सोगा जाग न सोई।

मुहम्मद ज्यों जल भरन रहट घड़ी की रीति
घड़ी जो आई ज्यों भरी ढरी जन्म गा बीति

गढ़ पर नीर[29] क्षीर[30] दुइ नदी | पानि भरैं जैसें दुरपदी ॥
और कुराड एक मोती चूरू | पानी अमृत कीच कपूरू

मकान १-१५ पत्थर २-१६ हज़ार ३-४ पियादा ५ महल ६-७-८ शेर ९-११ मर्द १० हाथी मस्त १२ सोना १३ क़िला १४ मुक़ाम १७ सचाई १८ नव मकान तथा-आँख-नाक-कान-मुंह-गुदा-लिङ्ग-नव इन्द्री बदन की १९ दसवाँ दरवाज़ा तथा ब्रह्माँड २० घाटा २१ दुनिया २२ गाफ़िल २३-२६ आदमी २४ उमर २५ मुसाफ़िर २७ हमेशा २८ पानी २९ दूध ३० ॥ ॐ ॥

वहाँ का पानी राजा पिया। बृद्ध[1] होय नहिं जब लग जिया
कंचन[2] वृक्ष एक तेहि पासा। जस कल्प[3] तरु इन्द्र कैलासा
मूल[4] पतार स्वर्ग[5] वह शाखा अमर बेल को पाव को चाखा
चन्द्र पात[6] औ फूल तराईं[7]॥ होय उजियार नगर जहँ ताईं
वै फल पावै तप करि कोई॥ बृद्ध खाय नव यौ[8] बन होई॥

राजा भये भिखारी सुनि वह अमृत भोग
जें पावा सो अमर[9] भा न कुछ व्याध नहिं रोग

गढ़[10] पर बसहिं चार[11] गढ़ पती। अपूव[12] पति गजपति[13] भुइँपति औ नरपती[14]
सबक धौराहर[15] सोने साजा॥ और अपने अपने घर राजा
रूपवंत[16] धनवन्त[17] सभागी[18]॥ परस[19] परवान पवर[20] तेहि लागी
भोग परास[21] सदा सब माना। दुख चिन्ता कोई नहिं जाना
मंदिर मंदिर सब के चौपारी बैठि कुँवर सब खेलहिं सारी[22]
पाँसा ढरहिं खेल भल होई॥ स्वर्गवान सर पूज[23] न कोई॥
भाट बरन[24] कहिं कीरति[25] भली पावहिं हस्त[26] घोड़ संघली॥

मंदिर मंदिर सब की फुलवारी चोवा चन्दन बास
निस[27] दिन रहै बसंत वहाँ छहि ऋतु बारह मास

पुनि चलि देखा राज दुवारा मानुष फिरहिं पाय नहिं बारा[28]
हस्त[29] संघली बाँधे बारा[30]॥ जनु सजीव[31] सब ठाढ़ि पहारा

बूढ़ा १ सोने का पेड़ २ नामदरख़्त जो स्वर्ग लोक में है ३ जड़ ४ आसमान ५ पत्ता ६ नरवत ७ नवजवान ८ हमेशा ९ क़िला १० घोड़े का सवार ११ हाथी सवार १२ ज़मीन का मालिक १३ राजा १४ महल १५ ख़ूबसूरत १६ दौलतमन्द १७ नसीबवर १८ पारस पत्थर १९ दरवाज़ा २०-३० हँसी ख़ुशी २१ चौसर २२ बराबरी २३ तारीफ़ २४ नेकनामी २५ हाथी २६-२९ रात २७ दख़ल २८ जानदार ३१॥

कवन्यो सेत[1] पीत[2] रतनारे[3] ॥ कवन्योहरी धूम[4] अस कारे।
बरने बरन[5] गँगन[6] जस मेघा। उठहिं गँगन[7] बैदि[8] जनु देघा।
संघल्ल के बरने संघेले[9] ॥ इक इक चाह सो इक इक बेले
गिरि पहाड़[10] परबत कहिपेलाहिं बृक्ष उचारि झारि सुख मेलहिं
मत्ते मतंग[11] मद गरजहिं बाँधे॥ निसि दिन रहहिं महावत काँधे

धरती[12] भार न अगोही पाँव धरत उठ हाल
कुर्महि दृष्टि भुई फाटी[13] तोहि हस्ति[14] की चाल

पुनि बाँधे उजियार तुरंग[15] ॥ का बरनौं जस उनके रंगा।
लेले[16] समन्द[17] चाल जरा जाने हाँसल[18] बोर[19] क्याहि बखाने।
परी कुरंग[20] मँहो बहु भाँती। करैं कोंक[21] लाहबलोहि सुपाती[22]
तीरव तुरंग[23] चान्द[24] अस बाँके तड़पहिं तबहि बोली बिनहाँके
मनते अगासे[25] बडोलहिं बागा दैत उसास गरौन[26] पिरलागा
पावहिं मास समुद्र पर धावहिं बूड़ि न पाव पार होय आवहिं
थिर न रहै रिस लोहू चबाहीं। भाजहि पूछ[27] सीस उपराहीं

अस तुरंग सब देखे जनु मनके रथ[28] वाहि।
नयन पलक पहुँचावहीं जहँ पहुँचा कोइ चाहि[29]

राजसभा सब देखे बैठे ॥ इन्द्र सभा जनु परा डीठे।
धनि राजा अस सभा सँवारी जानहु फूल रही फुलवारी

सफ़ेद १ ज़र्द २ लाल ३ धुवाँ ४ रंग बरंग ५ आसमान ६-७ ३३-पहाड़ ८-१०- बयान करना ९ मस्त ११ रात १२ ज़मीन १३ कछुवा १४ हाथी १५ घोड़ा १६ तारीफ़ १७ नाम ज़ात वा रंग घोड़ों के १८-१९-२०-२१ बयान करना २२ नाम ज़ात वा रंग घोड़ों के २३-२४ २५-२६-२७-२८ मोरव २९ घोड़ा ३०-३१-३५ पहिले ३२ पिर उठाये हुये ३४ गाड़ीवान ३६ आँख ३७ निगाह ३८ ॥*॥

मुकुट बन्द सब बैठे राजा ॥ दर[1] निशान सब जेहिं के साजा
रूप[2] वंत मन दिपै लिलाटा[3] । माथे छात बैठि सब राजा ॥
जानो कमल सरोवर[4] फूले ॥ सभा कि रूप देखि मन भूले
पान कपूर मेद[5] कस्तूरी[6] ॥ सुगन्ध बास भरि रही अपूरी
माँझ[7] ऊँच इन्द्रासन साजा । गन्ध्रप सेन बैठि तहँ राजा ।

छत्र गगन[8] लग ताकर सूर्य दिपै[9] तस आप
सभा कमल जनु बिगसी[10] माथे बड़ परताप

साजा राज मंदिर कैलाशू ॥ सोने का सब भूमि[11] अकाशू
सात खराड धवराहर[12] साजा । वही सँवार सकै अस राजा ॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा ॥ औ नग लाय स्वर्ग[13] लय लावा
जानवंत सबै उरेहे[14] उरेहे ॥ भाँति[15] भाँति नग लाग उबेहे
भा कटाव सब आनहु भाँती[16] । चित्र[17] कटाव सो पाँतहिं पाँती
लाग खम्भ मणि[18] माणिक जड़े । निस[19] दिन रहै दीप जनु बरे ।
देखि धौराहर[20] कर उजियारा । छिप गये चाँद सूर्य्य औ तारा

साजी साज बैकुण्ठ जस तस साजी खंड सात
बीहर[21] बीहर भाव तस खंड खंड ऊपर जात ।

बरनौं[22] राज मंदिर रणिवासू ॥ अप्सरहिं[23] भरा जान कैलासू ॥
सोरह सहस[24] पद्मिनी रानी ॥ एक एक ते रूप बखानी ॥
अति स्वरूप औ अति सुकमारी । पान फूल की रहहिं अधारी[25]
तेहि ऊपर चम्पावत रानी । महा स्वरूप पाट पर धानी[26] ॥

फ़ौज १ खूबसूरत २ माथा ३ तालाब ४ केसर ५ मुश्क ६ बीचोंबीच ७ आसमान ८ - १३ चमकना ९ खिलना १० ज़मीन ११ महल १२ मुसव्वरी १४ तरह बतरह १५ - १६ तसवीर १७ जवाहिरात १८ रात १९ मकान २० अलग २१ बयान करना २२ स्वर्ग की औरत २३ हज़ार २४ सहारा वा खुराक २५ महारानी २६ ॥ ÷ ॥

पाट[1] बैठि रहि किये शिंगारू | सब रानी वह करहिं जुहारू ॥
नित[2] नव रंग अंकम सोई ॥ | प्रथम[3] बयस न शिर पर कोई
संहलदीप महँ जेतीं रानी । | तिन्ह महँ कनिक[4] सुबारह बानी

कुँवर बती सो लक्षणी अस सब माँह अनूप[5]
जानवंत सिंहलदिपी सबै बखानी[6] रूप ॥

चम्पावत जो रूप मन माहां | पद्मावत की जोति की छाहां
भइ चाहै अस कथा जो होनी | मेटि न जाय लिखी जस होनी
सिंहलदीप भयो तब नाऊँ । | जो अस दिया बरा तेहि ठाऊँ
प्रथम[7] सो जोति गगन[8] निरमई | पुनि सु पिता माथे मन भई
पुनि वह जोति माता घट[10] आई | तिनहिं उदर[11] आदर बहु पाई ॥
जस अवधान[12] पूर होय मासू । | दिन दिन हिये होय परकासू[13]
जस अंचल महँ छिपाये दिया | तस उजियार दिखावै हिया[14] ॥

सोने मंदिर सँवारा औ चन्दन सब लीप ॥
दिया जो मन शिवलोक महँ उपना[15] सिंहलदीप

भये दस मास पूरि भइ घड़ी | पद्मावत कन्या अवतरी[16] ॥
जानों सूर्य्य किरन हत गाढ़ी | सूर्य्य किरा घाट वह बाढ़ी ॥
भानिस[17] माहँ दिनक परकाशू[18] | सब उजियार भयो कैलाशू
इतनी रूप मूरत प्रकटी[19] ॥ | पून्यो[20] शशि सुखीन[21] होय घटी
घटतहि घटत अमावस भये | दिन दुइ लाज गाड़ भुइँ गये ।
पुनि जो उठी दुइज होय उये | शशि निकलंक बिधि[22] निरमये

तख्त १ हमेशा २ पहिली उमर ३ सोना खालिस ४ बेमिसाल ५ बयान करना ६ जगह ७ पहिले ८ आसमान ९ पेट १०-११ हमल १२ रोशनी १३ दिल १४ पैदा होना १५-१६ रात्रि १७ उजियारा १८ जाहिर होना १९ पूरनमाशी का चाँद २० पतला २१ ईश्वर २२ ॥ ॥

पद्मगन्ध बेधा जग बासा। भँवर पतंग भवैं चहुँ पासा।

इतनी रूप भई कन्या जेहि स्वरूप नहिं कोय
धनसुदेश रूपवंता जहाँ जन्म अस होय॥

भई छठ रात छठी सुख मानी। रहस कूद सो रयन बिहानी।
भा बिहान पण्डित सब आये काढ़ पुराण जन्म अरथाये॥
उत्तम घड़ी जन्म भा तासू॥ चान्द उआ भुइँ दिपा अकासू
कन्या रास उदय जग किया पद्मावती नाम जस दिया॥
सूर पुरुष सों भयो गुरेरा॥ किरन जाम उपना नगहीरा
तेहि ते अधिक पदारथ करा रतन जोति उपना निरमरा
सिंहल दीप भयो अवतारू जम्बूदीप जाय जम वारू॥

रामा आय अयोध्या उपने लषणावती सो संग
राजा राउ रूप सब भूले दीपक जैसो पतंग।

आय जन्म पत्री जो लिखी॥ दय अशीश फिरे ज्योतषी॥
पाँच बरष महँ भई जो बारी। दीन्ह पुराण पढ़ै वैसारी॥
भई पद्मावत पण्डित गुनी॥ चहूँ खण्ड के राजहिं सुनी॥
सिंहल दीप राज घर बारी॥ जहाँ स्वरूप दई अवतारी।
एक पद्मन औ पण्डित पढ़े वहिं कहँ योग गुसाईं गढ़े॥
जा कहँ लिखी लक्ष अस होनी सो अस पाव पढ़ी औ लोनी॥
सप्त दीप के बर जो आवहिं। उत्तर पावहिं फिर फिर जावहिं।

राजा कहै गर्ब किये हौं इन्द्र शिव लोक॥
कोसर बर है मोसों कासों करों बिरोक॥

कमल की खुशबू १ राति २ अच्छी ३ दुनिया ४ सूर्य्य ५ मुलाकात ६ पैदा होना ७-९-११-१३ बहुत ८ पाक १० मरना १२ ईश्वर १४-१६ पैदा किया १५ रेखा १७ खूब सूरत १८ सातों मुल्क १९ गरूर २० बराबर २१ टीका विवाह का २२ ॥५॥

वारह[12] बरष माहँ भइ रानी ॥ राजैं सुना संयोग सयानी ॥
सात खण्ड धवरा[1]हर तासू । सो पद्मन कहँ दीन्ह उडा[2]सू
औ दीन्ही संग सखी सहेली जो संग करैं रहस रस केली ॥
सबै नवल[3] पी संग न सोई ॥ कमल पास जनु बिगसीं[4] कोई
सुआ एक पद्मावत ठाऊँ[5] ॥ महा पण्डित हीरामन नाऊँ
दई[6] दीन्ह परव[7] अस जोती ॥ नयन[8] रतन मुख माणिक[9] मोती
कंचन[10] बरन सुआ अति लोना[11] मानो मिला सुहागहि सोना ॥

रहहिं एक संग दोऊ पढ़ैं शास्त्र और वेद
पढना सीस[12] दुलावही सुनत लाग तस भेद

भई अतंत पद्मावत बारी ॥ रचि रचि बिधि[13] सब कला सँवारी
जग[14] बेधा तेहि अंग सुबासा । भँवर आय लुब्धे[15] चहुँ पासा ॥
बेनी[16] नाग मलय[17] गिरि पीठी शशि[18] माथे होय दूइज पैठी ॥
भौंहें धनुष साध शर[19] फेरे ॥ नयन[20] कुरंग[21] भूल जनु हेरे ॥
नासक[22] कीर[23] कमल मुख सोहा पद्मन रूप देखि जग[24] मोहा ॥
माणिक[25] अधर[26] दशन[27] जनु हीरा हियेहु लसै[28] कुच[29] कनिक[30] जँभीरा
केहर[31] लंक गवन गज[32] हरी ॥ सुर नर देखि माथ भुइँ धरी ।

जग[33] कोउ दृष्टि[34] न आवै अप्सर[35] न होय अकाश
योगीयती संन्यासी तप साधहिं तेहिं आश

महल १ मकान २ कुआरी ३ फूलना कोका वेली का ४ जगह ५ ईश्वर ६ जानवर ७ आँख ८ मूँगा ९ सोने का रंग १० खूबसूरत ११ शिर १२ ईश्वर १३ दुनिया १४ गूँजना १५ चोटी १६ चन्दन १७ चाँद १८ तीर १९ आँख २० हिरन २१ नाक २२ तोता २३ संसार २४ मूँगा २५ होंट २६ दाँत २७ खुश होना २८ छाती २९ सोना ३० चीता की कमर ३१ चाल हाथी और सिंह की तरह ३२ दुनिया ३३ निगाह ३४ इन्द्रलोक की परी ३५ ॥ ॥

राजैं सुना दृष्टि भइ आना । बुध जो दे संघ सुआ सयाना
भयो रजायस मारहिं सुआ । सवरे सुना चाँद जहँ उआ
शत्रु सुआ के नाऊ बारी ॥ सुनि धाये जस धाय मँजारी
तब लग रानी सुआ छिपावा । जब लग आव मँजारी न पावा
पिता की आयसु माथे मोरे । कहो जाय बिनवै कर जोरे
पंख न कोई होय सुजानू ॥ जाने भुक्ति कि जानि उड़ानू ।
सुआ जो पढ़ै पढ़ाये बयना ॥ तेहि कत बँध जेहि हिये न नयना

माणिक मोती देखावह हिये न ज्ञान कर लेय
डार्यों दाख छाड़िकै आँब ठौर फर लेय ॥

वेतो फिरीं उतर अस पावा । बिनवा सुये हिये डर खावा ।
रानी तुम युग युग सुख पाऊ । हो अज्ञा बन बास कहँ जाऊ ।
मोती जो मलीन होय कला ॥ पुनि सो पानि कहाँ निरमला
ठाकुर अंत चहो जेहि मारा । तेहि सेवक कहि कहाँ उबारा
जेहि घर काल मँजारी नाचा । पंखहि नाँउ जीव नहिं बाँचा
मैं तुम राज बहुत सुख देखा । जो पूँछहि दिये जाय न लेखा
जो इच्छा मन कीन्ह सुजेवाँ । यह पछताव चल्यों बिन सेवाँ

मारै सोई निसोगा डरै न अपनी दोस ॥
केला अकेल करै का जो भयो बैर परोस

जिगाह १ अक़िल २ तोता ३-५-७-९-१० हुक्म ४-१२ दुश्मन ६ बिल्ली ८-१० बाप ११ अरज़ करना १३ हाथ जोड़ना १४ अक़िलमंद १५ खाना १६ बोली १८ मारना १९ आँख २० मोती २१ दिल २२ अनार २३ अंगूर २४ जवाब २५ दिल २६ परवानगी २७ साफ़ २८ बिलार २९ जानवर परिन्दा ३० हिसाब ३१ जो मनने चाहा सो खाना खाया ३२ बेग़म ३३ पाप ३४ बेरी का पेड़ ३५ ॥

रानी उत्तर[1] दीन्ह कै मया[2] ॥ जो जीव जाय रहै किम कया[3]
हीरामन तू प्रान परेवा[4] ॥ धोख न लाग करत तेहि सेवा
तुहिं सेवा बिछुरन नहिं आँखों पीजर हिये[5] घाल कै राखों ॥
हौं मानुष तू पंख[6] पियारा ॥ धर्म प्रीति तहाँ को मारा ॥
का प्रीति तनह माहँ बिलाय सोई प्रीति जिय साथ जो जाय ।
प्रीति भार ली हिये[7] न सोचू ॥ वही पंथ भल होय कि पोचू
प्रीति पहाड़ भार जो काँधा कित तेहि छूट लाय जिव बाँधा

सुआ[8] न रहै खुरक[9] जी अबहुँ काल सो आव
शत्रु[10] अहै जेहि करया[11] कहू सो बूड़ी नाव

खंड तीसरा स्नान खंड पद्मावत

एक दिवस[12] कवन्यों तहँ आय मानसरोवर[13] चली अन्हाय
पद्मावत सब सखी बुलाईं जनु फुलवार सबै चलि आईं
कोइ चंपा[14] कोइ गोंद[15] सहेली । कोइ सुकेत[16] करुना[17] रस बेली[18] ॥
कोइ सुगुलाल[19] सुदरशन[20] राती कोइ बकाउ[21] कोइ बकचन[22] भांती
कोइ सो बोलसर[23] पुहपावती[24] कोइ जाही[25] जूही सेवती[26] ॥
कोइ सुअन[27] जर्द ज्यों केसर[28] ॥ कोइ शिंगार[29] हार नागेसर[30] ॥
कोइ कूजा[31] रातवर्ग[32] चँबेली[33] ॥ कोइ कदम[34] सुरस रस बेली ॥

चली सबै मालती[35] संगहि फूले कमल कुमोद[36] ।
बेध रही गुन गन्धर्व बास बरमला मोद ॥

जवाब १ मेहरबानी २ बदन ३ जानवर परिन्द ४ - ६ दिल ५ - ७ तोता ८ अंदेशा मराहुवा ९ दुशमन १० मल्लाह ११ दिन १२ नाम जालाब १३ नाम फूल १४ - १५ - १६ - १७ - १८ - १९ - २० २१ - २२ - २३ - २४ - २५ - २६ - २७ ज़ाफ़रान २८ नाम फूल २९ - ३० ३१ - ३२ - ३३ - ३४ - ३५ कोकाबेली ३६ ॥ ॥

खेलत मान[1] सरोवर गई ॥ जाय पाल[2] पर ठाढ़ी भई ॥
देखि सरोवर[3] हँसली केली । पद्मावत सों कहहिं सहेली ॥
एरानी मन देख बिचारी ॥ यह नेहर रहना दिन चारी ॥
जब लग अहे पिता[4] कर राजू ॥ खेल लेहु जो खेलहि आजू ॥
पुनि सासुर हम गवनब[5] काले कित हम कित यह सरवर[6] पाले[7]
कित आवन पुनि आपन हाथा कित मिल के आवब एक साथा
सास ननद बोलहि जिय लेहीं दारुन[8] ससुर न निसरे देहीं ॥

पीव पियार सब ऊपर सो पुनि करै वह काहि
तेहि सुख राखहिं की दुख वह कस जन्म निबाह

सरवर[9] तीर पद्मिनी आई ॥ खोपा[10] छोड़ि केस बिखराई
शशि[11] मुख अंग[12] मलीगर[13] रानी नागहँ झाँप लीन्ह अरघानी
उनई घटा परा जग[14] छाहाँ ॥ शशि[15] की सरन लीन्ह जनु राहा
छिपगये दिन भानु[16] की दसा तेहि निसि[17] नखत चाँद प्रगसा[18]
भूल चकोर दृष्टि[19] तेहि लावा मेघ घटा महँ चन्द दिखावा
दशन[20] दामिनी[21] कोकिल भाखै[22] भौंह धनुष[23] गगन[24] लै राखै ॥
नयन[25] खँजन दुइ केल करेहीं कुच[26] नारंग मधुकर[27] रस लेहीं

सरोवर[28] रूप बिमोहा हिये[29] हि लोर कर ले ।
पाउँ छुवे मग[30] पाउँ तन मन लहरैं दे ॥ ॥

धरी तीर सब कंचुक[31] सारी ॥ सरवर[32] महँ पैठीं सब बारी[33] ॥

नाम तालाब १ किनारा २-७ तालाब ३-६-९-२८-३२ वाप ४ गाना ५ मुशकिल ८ चोटी १० चाँद ११-१५ बदन १२ चन्दन १३ दुनिया १४ सूर्य्य १६ राति १७ खिलना १८ निगाह १९ दाँत २० बिजुली २१ कोकिला की सी बोली २२ कमान २३ आसमान २४ आँख २५ छाती २६-३१ भँवर २७ दिल २९ शायद ३० लड़की ३३ ॥ ॥

पानी तीर जानि सब बेलैं। हुलसहिं[1] करहिं काम की केलैं
करल[2] केसे[3] बिषहर[4] बिष भरे लहरें लेहिं कमल मुख धरे
नवल बसंत सँवारे करी[5] ॥ होय प्रगट[6] जानहु रस भरी
उठी कोप जस डाँर्यों[7] दाखा[8] भई अतंत प्रेम की साखा॥
सरवर[9] नहिं समाय संसारा चाँद न्हाय बैठि लिये तारा।
धन सो नीर[10] शशि[11] तरई[12] उई अब कित दृष्टि[13] कमल औ कोई[14]

चकई बिछुर पुकारी कहाँ मिलहो नाँह॥
एक चंद निशि स्वर्ग महँ दिन दूसर जल माँह

लागी केल करैं मँझ[15] नीरा[16] हंस लजाय बैठि होय तीरा[17]
पद्मावत कौतुक[18] कहँ राखे॥ तुमहि शशि[19] होहि तराय[20] नहिं राखे
बाद मेल के खेल पसारा॥ हार देव जो खेलत हारा॥
सँवरहिं साँवर गोरहि गोरी॥ आपन आपन लीन्ह मुजोरी
बूझौ खेल खेलो एक साथा हार न होय पराये हाथा॥
आजहिं खेल बहुर कित होय खेल गई कित खेलै कोइ॥
धनि सो खेल खेल रस प्रेमा। खतोई[23] और कुसल[24] क्षेमा॥

मुहम्मद बार जो प्रेम की ज्यों भावै त्यों खेल
तेलहिं फूलहिं बास ज्यों होय फुलायल तेल

सखी एक तैं खेल न जाना॥ भई अचेत[25] मन हार गँवाना॥
कमल डार गहि भई बिकरारा[26] कासों पुकारों आपन हारा॥
कित खेले आयों एक साथा हार गँवाय चल्यों ले हाथा॥

खुश होना १ मुलायम २ बाल ३ साँप ४ कली ५ ज़ाहिर ६ अनार ७ अंगूर ८ तालाब ९ पानी १०-१८ चाँद ११-२१ नखत १२ निगाह १३ कोका बेली १४ राति १५ आसमान १६ बीच १७ किनारा १९ तमाशा २० नखत २२ ठकुराई २३ खैरयत २४ बेहोश २५ बेक़रार २६ ॥-२-॥

घर पैठत पूँछब यह हारू ॥ कौन उत्तर[1] पावब पैसारू ॥
नयन[2] सीप आँसू तस भरे ॥ जानहु मोति गिरहिं सब ढुरे
सखिन कहा बौरी कोकिला कौन पानी जेहि पवन[3] नहिं हिला
हार गँवाय सो ऐसे रोवा ॥ हरे[4] हेराय लेब जो खोवा ॥

लागी सब मिल हेरी[5] बूड़ बूड़ एक साथ ॥
कोई उठी मोती ले काहू घोंघा हाथ ॥॥

कहा मानसर[6] चहा सु पाई ॥ पारस रूप यहाँ लगि आई ॥
भा निरमल[7] तेहि पायन परसे पावा रूप रूप के दरसे ॥॥
मली[8] समीर बास तन आई भा शीतल[9] तन तपन बुझाई
ना जानों कौन पवन[10] ले आवा पुन्य दशा भइ पाप गँवावा ॥
तन खन हार बेगि[11] उतराना ॥ पावा सखहिं चंद बिहसाना
विकसा[12] कमल देखि शशि[13] रेखा भई तेहि ऊप जहाँ जो देखा ॥
पावा रूप रूप जस चहा ॥ शशि[14] मुख सब दरपन होय रहा

नयन[15] जो देखे कमल भये निरमल[16] नीर[17] शरीर[18]
हरत[19] जो देखे हँस भये दशन[20] जोति नग हीर ।

पद्मावत तहँ खेल दुलारी ॥ सुआ[21] मंदिर महँ देखि मँजारी[22]
कहेसि चलौं जौ लह तन पाँखा जिव ले उड़ा ताक बन ढाँखा
जाय परा बन[23] खंड जिव लीन्हा मिले पंखें[24] बहु आदर कीन्हा
आन धरी आगे फरशाखा भुक्ति[25] न मिटी जब लहि राखा
पाय भुक्ति[26] सुख मन में भयो दुख जो अहा बिसर सब गयो

जवाब १ आँख २-१५ हवा ३-१० ढूंढना ४-५ नाम तालाब ६ पाक ७ चन्दन ८ ठण्ढा ९ जल्द ११ फूलना १२ चाँद १३-१४ पाक १६ पानी १७ बदन १८ हाथ १९ दाँत २० तोता २१ बिल्ली २२ जंगल २३ उड़नेवाले जानवर हमजिन्स २४ खुराक जंगली २५-२६ ॥९॥

ए गुसांई[1] तू ऐसो बिधाता ॥ जानवंत जिव सब का भुक[2] दाता
पाथर महँ नहिं पतँग बिसारा जहँ तहँ सँवर दीन्ह तुइँ चारा

तौ लहि साग बिछोह कर भोजन पड़ा न पेट
पुनि बिसरा भा सँवरना जनु सपने भइ भेंट[3]

पद्मावत पहिं आय भँडारी[4] ॥ कहिसि मँदिर महँ परी मँजारी[5]
सुआ[6] जो उतर[7] देत अहा पूँछा उड़गा पिंजर न बोलै छूँछा ॥
रानी सुना जो सुख सब गयो ॥ जनु निशपरी[8] अस्त दिन भयो
राहु ने गही चन्द की किरा आँसु गँगन[9] जस नखतहिं भरा
टूटि बार सरवँर[10] बह लागे। कमल बूड़ि मधुकर[11] उड़ भागे
यहि बिधि आँसू नखत होचुये गँगन[12] छाँड़ सरवर[13] महँ उये
झरहिं चुवहिं मोतिन की माला अवसकेत[14] बाँधा चहुँ पाला[15]

उड़गा सोटा[16] कहँ बसा खोज सखी सो तास
वह है धर्ती[17] की स्वर्ग[18] का पवन[19] न पावै बास

चहूँ पास सम झावहिं सखी कहाँ सु अब पावेगा परवी ॥
जब लहि पिंजर अहा परेवा[20] अहा बाँध कीन्हेसि नित सेवा
तेहि बन घन जो छूटे पावा। पुनि फिर बाँद[21] होय कित आवा
वै उड़ान फुरहरी खाई ॥ जो भा पंख पाँख तन लाई ॥
पिंजर जेहक सौंपे तेहि गयो जो जा कर सो ताकर भयो ॥
दस बाँटे[22] जेहि पिंजर माहाँ ॥ कैसे बाँच मँजारी[23] पाँहाँ ॥
ये धर्ती अस केत न लीले ॥ अपूव[24] पति गज पति बहु धर कीले

ईश्वर १ रोज़ी देने वाला सब का २ मुलाक़ात ३ रसोई बरदार ४ बिलारी ५ - २३ तोता ६ - १६ जवाब ७ रात्रि ८ आसमान ९ - १८ तालाब १० - १३ भँवर ११ आसमान १२ रंज १४ चारों तरफ़ १५ ज़मीन १७ हवा १९ उड़ने वाले जानवर २० ताबेदार वा क़ैदी २१ दस राह तथा इन्द्री बदन के सूराख़ २२ घोड़े वा हाथी सवार २४ ॥ ॥

जहाँ न राति नहिं दिवस है तहाँ न पान न खान
तेहि बन सोठा होय बसा फेरि मिलावै आन

सुवै तहाँ दिन दस कल काटी
पैग पैग भुइँ चाँपत आवा
देखो कुछ अचरज अन भला
यह बन रहत गये हम आऊ ॥
आज जो तरवर चल भल नाहीं
वै तो उड़ैं और बन ताका ॥
शाखा देखि राज जनु पावा ॥

आयो ब्याध ढका लै ठाटी
पंखहि देखि सबै डर खावा
तरवर एक आवत हो चला
तरवर चलत न देखा काऊ
आवहु यह बन छाँड़ पराहीं
पण्डित सुआ भूल मन थाका
बैठि निचिंति चला वह आवा

पाँच बान कर खोंचा लासा भरे सो पाँच।
पाँख भरा तन उरझा कित मारे बिन बाँच

वन्द भा सुआ करत सुख केली
तहवाँ बहुत पंख खर भरैं
बिष दाना कित होय अँगूरे
जो न होत चारा की आसा
ये बिष चारा सब बिधि ठगी
यहिं झूठी माया मन भूला
यहि मन कठिन मरै नहिं मारा

चूर पाँख मेलेसि घर ठेली ॥
आप आप महँ रोदन करैं ॥
जहँ भा मरन डहन धर चूरे ॥
कित चिड़हार ढकत लै लासा
औ भा काल हाथ ले लगी
चूरी पाँख जैसो तन फूला
काल न देख देखि पै चारा

हम तो बुद्धि गँवाई बिष चारा अस खाय
तू सोठा पण्डित हता तू कित भा निदराय

दिन १ तोता २-३-१३-१७-२८ बहेलिया ४ क़दम वा क़दम ५ उड़ने वाले जानवर ६-२० बुरा ७ पेड़ ८-१०-११ उमर ९ भागना १२ ग़ाफ़िल १४ कंपा १५ क़ैद १६ बाज़ू को तोड़ के १८ झोरी १९ ज़हर २१-२३-२७ बाज़ू २२ परमड़ोर के २४ मौत २५ अक़िल २६ बेदर्द २९ ॥-८॥

सुवै[1] कहा हमहूँ अस भूले। दूटि हिंडोल गर्व[2] जेहि झूले॥
केला के वन लीन्ह बसेरा॥ पड़ा साथ तन बैरी केरा॥
सुख[3] कुरबार फरेरी खाना॥ बिष भा जोहि ब्याध[4] तुलाना
काहेक भोग[5] बृक्ष अस फरा अड़ा लाय पंखहि कह हरा
सखी निचिंत[6] जोख धन करना यह निचिंत[7] आगे है मरना॥
भूले हमहु गर्व[8] तेहि माहाँ॥ सो बिगरा पावा जहँ पाहाँ॥
होय निचिंत[10] बैठि तेहि अड़ा तब जाना खोंचा हिये[11] गड़ा

चरत न खुरक[12] कीन्ह जब तब रे चरा सुख सोय
अब जो फाँद परागै[13] तब रोये का होय॥

सुनि केउतर[14] आँसु पुनि पोंछे कोन पंख बाँधी बुधि[15] ओछे।
पंखिन[16] जो बुधि[17] होय उजियारी पढ़ा सुआकित[18] धरै मँजारी[19]
कित तीतर बन जीभ उघेला सुक्ति हँकार फाँद गये[20] मेला
ता दिन ब्याध[21] भयो जिव लेवा उठी पाँख भा नाउँ परेवा[22]॥
भई ब्याध[23] तृष्णा[24] सुख खाधू। सूझी भुक्ति[25] न सूझै ब्याधू[26]॥
हमहिं लोभ वह मेला जारा हमहिं गर्व[27] वह चाहै मारा॥
हम निचिंत[28] वह आव छिपाना कौन ब्याध[29] है दोष[30] अपाना[31]

सो अब गुणो[32] कित कीजिये जिव दीजे जेहि काज
अब कहना कुछ नाहीं मष्ट[33] भले पक्षराज[34]

तोता १-१८ ग़रूर २ ख़ुशी ३ ज़हर ४ बहेलिया ५ पेड़ खाने का ६ ग़ाफ़िल ७-८-१० अहंकार ९ दिल ११ अंदेशा फ़िकिर १२ गरदन १३ जवाब १४ अक़िल १५-१७ उड़नेवाले जानवर १९ २२ बिल्ली १६ गरदन २० चिड़ीमार २१-२३ दुनियां की हवा हवस २४ रोज़ी २५ बहेलिया २६-२९ ग़रूर २७ ग़ाफ़िल २८ क़सूर ३० नादानी ३१ बुरा काम ३२ चुप ३३ उड़नेवाले जानवरों के राजा ३४ ॥+॥

चित्र सेन चित्तौर गढ़ राजा | कई गढ़ कोटि चित्र[1] सम[2] साजा
तेहि कुल रतन सेन उजियारा | धन जननी जन्मी अस बारा[3]
पण्डित गुण सामुद्रिक देखहिं | देखि रूप औ लगन बिशेषहिं
रतन सेन यहि कुल निरमरा[4] | रतन ज्योति मन माथे परा
पदक[5] पदारथ लिखी सो जोरी | चाँद सूर्य्य जस होय अजोरी[6]
जस मालती कहँ भँवर बियोगी[7] | तस वह लाग होय यह योगी
सिंहल दीप जाय वह पावा | सिद्ध होय चित्तौर लै आवा

भोग भोज[8] जस मानी बिक्रम[9] शाका कीन्ह
परख रतन जो पारखी सबै लिखन लिख दीन्ह

चित्तौर गढ़ कर एक बंजारा ॥ | सिंहल दीप चला ब्योपारा
बाम्हन हुत एक निपट[10] भिखारी | सो पुनि चला चलत ब्योपारी
ऋण[11] काहू कर लीन्हेसि काढ़े | मग[12] तेहि गये होय कुछ बाढ़े
मारग[13] कठिन[14] बहुत दुख भये | नाँघ समुद्र दीप वह गये ॥
देखि हाट[15] कुछ सूझै न ओरा | सबै बहुत कुछ देखि न थोरा
पै सुठ ऊँच नीच तेहि केरा । | धनी[16] पाव निधनी[17] मुख हेरा[18] ॥
लाख करोरहि बस्तु बिकाई | सहसन[19] केर न कोउ ओनाई

सबहिं लीन्ह बिसहना औ घर कीन्ह बहोर[20]
ब्राम्हन तहाँ ले का गाँठ साँठ[21] सुठ थोर ॥

झुरी ठाढ़ हौं काहे क आवा | बनजन[22] मिला रहा पछतावा
लोभ[23] जानि आयो यह हाटा[24] | मूर गँवाय चल्यो यह बाटा[25] ॥

तसवीर १ बराबर २ लड़का ३ पाक ४ लाल जवाहिर ५ रोशनी ६ दुखी ७ नाम राजा ८ राजा बिक्रमाजीत ९ बहुत ग़रीब १० क़र्ज़ ११ शायद वाकदाचित् १२ राह १३-२५ मुशकिल १४ बाज़ार १५-२५ दौलत वाला १६ बेदौलत १७ देखना १८ हज़ार १९ लौटना २० बेपूनी २१ माल २२ फ़ायदा २३ म॰ क॰ ॥

कामैं मरन सिखावन सिखी | आयों मरै मीच[1] हत लिखी ॥
आपन चलत सो कीन्हा ज्ञानी[2] | लाभ[3] न देखि मूर भइ हानी[4]
कामैं बोआ जन्म औ भूजी । | खोय चल्यों घरहू की पूंजी ॥
जेहि ब्योहरिया कर ब्योहारू | काले देव जो छे[5] केहि बारू
घर कैसे पैठब मैं छूंछे ॥ | कौन उत्तर[6] देहों तेहि पूंछे ॥

साथ चला सत[7] बिचला भये बिच समुद्र पहार
आश निराशा हीं फिरों तू बिधि[8] देहि उधार ॥

तबहीं ब्याध[9] सुआ[10] लै आवा | कंचन[11] बरन अनूप[12] सुहावा ॥
बेंचै लाग हाट[13] लै ओही ॥ | मोल रतन माणिक[14] जेहि होई
सुअहिं[15] को पूंछ पतंग[16] मंडारें | चलन देख आछे मन मारें
ब्राह्मण आय सुआ[17] सों पूंछा | वह गुणवन्त कि निरगुण छूंछा
कहु पंखी[18] जो गुण तोहि पाहीं | गुण न छिपाये हृदये[19] माहीं
हम तुम ज़ात ब्राह्मण दोऊ | ज़ात ज़ात पूंछै सब कोऊ ॥
पण्डित हो तों सुनावहु वेदू | बिन पूंछे पाई नहिं भेदू ॥

हों ब्राम्हण औ पण्डित कहि आपन गुण सोय
पढ़े के आगे जो पढ़ै दून लाभ[20] तेहि होय ॥

तब गुण मोहिं अहा हो देवा | जब पिंजर हुत छूट परेवा[21] ॥
अब गुण कौन जो बन्द[22] जजमाना | घाल मंजूसा[23] बेंचै आना ॥
पण्डित होय सो हाट[24] नहिं चढ़ा | चहौं बिकाय भूल गा पढ़ा ॥
दुइ मारग[25] देखौं यह हाटा[26] ॥ | दई चलावै वेहि केहि बाटा[27] ॥

मौत १ होशियारी २ फ़ायदा ३- २० नुक़सान ४ रोकनादर वाज़ा का ५ जवाब ६ ईमान ७ ईश्वर ८ बहेलिया ९ तोता १०-१५-१७ १८ सोने का रंग ११ बेमिसाल १२ बाज़ार १३- २४- २६ जवाहिरात १४ उड़ने वाले जानवर १६ दिल १९ जानवर परिन्द २१ कैद २२ संदूक़ २३ राह २५ २७ ॥ ॥

रोवत रकत[1] भयो मुख राता[2] | तन भा पियर कहौं का बाता
राती[3] प्रयाम[4] कराठ दुइ ग्रीवा[5] | तेहि दुइ फन्द डरौं सठ जीवा ॥
अबहूँ कराठ फन्द के चीन्हा | दुहूँ के फन्द चाहै का कीन्हा

पढ़ि गुण देखा बहुत मैं है आगे डर सोय
धुन्ध जगत[6] सब जान कै भूल रहा बुध[7] खोय

सुनि ब्राम्हन बिनवा[8] चिरहारू[9] | करि पंखहि[10] कहँ मयान[11] मारू
कतये निठुर[12] जिव बधेसि[13] परावा | हत्या केर न तोहि डेरावा ॥
कहेसि पंखेरू[14] का दोष[15] जनावा | निठुर[16] सोई सो परमंस[17] खावा
उनहि रोय जानि के रोना ॥ | तहूँ न तजहिं[18] भोग सुख सोना
औ जानहि तन होय यह नासू | पोढ़ै मांस पराये मांसू ॥
जो न होहिं अस परमंस[19] खाधू | कित पंखन[20] कहँ धरै बियाधू[21]
जोरी व्याध[22] पंखनि[23] नित धरे | सो निचिन्त[24] मन लोभ[25] न करे

ब्राम्हन सुआ[26] बेसाहा सुनि मति वेद गिरंथ[27]
मिला आय सो साथिन कहँ भा चितौर की पंथ[28]

तब लग चित्रसेन शिव साजा[29] | रतनसेन चित्तौर भा राजा ॥
आय बात तेहि आगे चली | राज बणिज[30] आये सिंहली
हैं गज[31] मोती भरी सब सीपी | और बस्तु बहु सिंहल दीपी
बाम्हन एक सुआ लै आवा | कंचन[32] बरन अनूप सुहावा ॥
राती[33] प्रयाम कराठ दुइ काठा | राती दुहन लिखा सब पाठा

खून १ लाल २-३ काला ४ गला ५ दुनियां ६ अक़िल ७ खुशामद ८ चिड़ीमार ९ उड़नेवाले जानवर १०-१४-१७-२०-२३ मेहरबानी ११ बेदर्द १२ मारडालना १३ पाप १५ बेरहम १६ पराया मांस खानेवाले १७-१९ छोड़ना १७ बहेलिया २१-२२ ग़ाफ़िल २४ फ़ायदा २५ तोता २६ पोथी २७ राह २८ मरना २९ सौदागर ३० हाथी ३१ सोना ३२ लाल वा काला ३३ ॥ ॥

औ दुइ नयन सुहावन राता[2] | राती[3] ठोर अमी[4] रस बाता ॥
मस्तक टीका काँध जनेऊ ॥ | कबि ब्यास पण्डित सहदेऊ

बोल अर्थ सो बोली सुनत शीस[5] सब डोल
राज मंदिर महँ चाही अस वह सुआ अमोल

भयो रजाय[6] सु जन[7] दौड़ाये ॥ | ब्राम्हन सुआ बेगि[8] लै आये
बिप्र[9] अशीश बिनत औ धारा | सुआ जीव नहिं करौं निरारा[10]
पै यह पेट महा विश्वासी[11] ॥ | जैं सब नावा तपी[12] संन्यासी ॥
दीरे[13] सेज जहाँ कुछ नाहीं ॥ | भुंइ पर रही लाय गौं बाहीं ॥
अन्धहि रही जो देख न नयना[14] | गूँग रही मुख और न वयना[15]
बहिर रही जो श्रवन[16] नहिं सुना | पै यह पेट न रहै निरगुना[17] ॥
कइ कइ फेरा नित[18] यह दोषै । | बारहिं[19] बार फिरै संतोषै ॥

सो मोहिं लिये मँगावै लावै भूख पियास ।
जो न होत असन[20] बैरी केहि काहू की आस

सुअै अशीस दीन्ह बड़ साजू ॥ | बड़ परताप आखण्डित[21] राजू
भागवन्त विधि[22] बुध[23] अवतारा[24] | जहाँ भाग तहँ रूप जोहारा[25] ॥
कोइ केहि पास आस के गवना[26] | जो निराश दृढ़[27] आसन मवना[28] ।
कोई बिन पूँछे बोल जो बोला | होय बोल माटी के मोला ॥
पढ़ि गुणि जतनि पण्डित मति भेऊ | पूँछे बात कहै सहदेऊ[29] ॥ ॥
गुणी न कोई आपस राहा[30] ॥ | जो सो बिकाय ज्ञान सो जाहा

आँख १-२४ लाल २ लाल चोंच ३ अमृत ४ शिर ५ हुक्म ६ नौकर लोग ७ जल्द ८ ब्राम्हन ९ अलग १० ज़बरदस्त ११ तप करने वाले १२ औरत १३ आवाज़ १५ कान १६ नादान १७ हमेशा १८ दरवाज़ा १९ पेट २० हमेशा राज क़ायम २१ ईश्वर २२ अक़िल २३ पैदा करना २४ देखना २५ जाना २६ मज़बूत २७ चुप २८ राजा युधिष्ठिर के भाई २९ तारीफ़ ३० ॥ ✤ ॥

जब लहिँ गुण प्रकट[1] नहिँ होय | तब लग मर्म[2] न जानै कोय ॥

चतुर[3] वेद हौं पण्डित हीरामन मोहिँ नाउँ
पद्मावत सो मेरदौं[4] सेव करौं तेहि ठाउँ[5] ॥

रतन सेन हीरामन छीना । | एक लाख ब्राम्हन कहँ दीन्हा
बिप्र[6] अशीष जो कीन्ह पयाँना[7] | सुआ जो राज मँदिर महँ आना
बरनो[8] काहि सुआ की भाषा | दीन्ह सुनाउँ हीरामन राखा
जो बोलै राजा मुख जोवा[9] ॥ | जानौ मोतिन हार पिरोवा ॥
जो बोलै सब माणिक मूँगा | नाहित मवन[10] बाँध होय गूँगा
जनुहि मार मुख अमृत मेला | गुरु होय आप कीन्ह जग[11] चेला
सूर्य्य चान्द की कथा कहा | प्रेम की कहन लाय चित गहा

जो जो सुनै धुनै शिर राजा प्रीति होय अगाह
अस गुनवन्त नाहिँ भल सोटा[12] बावर कीजै काह

दिन दस पाँच तहाँ जो भये | राजा कतहुँ अहेरे[13] गये ॥
नागवती रुपवन्ती रानी ॥ | सब रनवास पाट पर[14] धानी ॥
किये शृंगार कर[15] दरपन लीन्हा | दरपन देखि गर्ब[16] जेहि कीन्हा
बोलहु सुआ पियारे नाँहाँ[17] | मोरे रूप कोउ जग[18] माहाँ ॥
हँसत सुआ पुनि आय सुनारी | दीन्ह कसौटी औ पनवारी[19] ।
सुआ बानि[20] तोरी कस सोना ॥ | सिंहल दीप तोर कस लोना[21]
कौन दृष्टि[22] तोरे रुप मनी ॥ | वहिँ हौं लोन[23] कि वै पद्मिनी

जो न कहेसि सत[24] सोटा[25] तोहि राजा की आन[26]
है कोई यह जग महँ मोरे रूप समान[27] ॥

ज़ाहिर १ भेद २ चारोंवेद ३ मुलाक़ात ४ जगह ५ ब्राम्हन ६ कूच ७ तारीफ़ ८ देखना ९ चुप १० दुनियां ११ तोता १२-२५ शिकार १३ महरानी १४ हाथ १५ ग़रूर १६ ख़ाविन्द १७ संसार १८ चुनोटी १९ आवाज़ २० ख़ूबसूरत २१-२३ निगाह २२ सच २४ क़सम २६ बराबर २७

सँवरि रूप पद्मावत केरा | हँसा सुआ रानी सुख हेरा ॥
जेहि सरवर महँ हंस न आवा | बगुला तहँ जलहंस कहावा
दई कीन्ह अस जगत अनूपा | एक एक तें आगर रूपा ॥
को मन गर्ब न छाजा काहू | चान्द घटा और लागेउ राहू
लोनी बिलोन नहीं को कहै | लोनी सोइ कंथ जेहि चहै ॥
काहि पूछ सिंहल की नारी ॥ | दिनहिं न पूजै निसि अँधियारी
कैनिक सुरान्ध सुतहिं की काया | जहाँ माथ का बरनौं पाया ॥

गढ़ी सुसोने सोंधी भरे सुरुपे भाग ॥
सुनत रोय भइ रानी हिये लान अस लाग

जो यह सुआ मँदिर महँ अहै ॥ | को न होय राजा सो कहै ॥
सुनि राजा पुनि होय बियोगी | छाँड़ै राज चलै होय जोगी
बिसरावै नहिं होत अगारू ॥ | पौढ़ि मंदे बहुर कहँ चारू ॥
धाय दामिनी बोली रोकी ॥ | वह सोपा हिय सिसन सँ भारी
देखा यह मोटा हे मुँड चाला ॥ | भयो न ताकर जाकर पाला ॥
सुरत की आनि पेट बस आना | तेहि अवगुन दस हाट बिकाना
परवन रावी होय कुभायी । | लेतहु मारि जहाँ नहिं सोवी

जेहि दिन का मैं डरत हौं रयनि कि पानी गौरे
सोलेदे कमलहि कहु मोकहँ होय सबेरे ॥

धाय सुआ ले मारे गई ॥ ॥ | सुमुखि राजहिय मन्त्र भई ॥
सुआ सुराजा करि बिसरामे ॥ | मार न जाय चहै जेहि स्वामे ॥

देखना १ तालाब २ दुनियां ३ बेमिसाल ४ ग़रूर ५ ख़ूबसूरत या बदसूरत ६ ख़ूबसूरत ७ खाविन्द ८ रात ९-२४ मोना १० बदन ११ गुस्सा १२ दिल १३-२०-२६ दुखी १४ आवाज़ १५ लौंडी १६-२८ बिजुली १७ जल्द १८ बोलाया १९ तोता २१ बदराह २२ गवाह २३ सूर्य्य २५ पद्मावत २६ मोर २७ आराम ३० मालिक ३१ ॥१०॥

यह पण्डित खण्डित बैरागू ॥ दोष[1] ताहि जेहि सूझि न आगू
जो तिरिया[2] के काज न जाना ॥ परै धोख पाछे पछताना ।
नागमती नागिन बुधे[3] ताऊ ॥ सुआ मयूर[4] होय नहिं काऊ ॥
जो नहिं कंथ[5] की आयसु[6] माहाँ[7] कौन भरोस नारि की बाहाँ ॥
मर्ग[8] यहि खोज होय तस आय ॥ तुरी[9] रोग हरि[10] माथे जाय ॥ ५

दुइ सोछि पाये नाछिपे इक हत्या अरु पाप ॥
अंत करहिं बिनाश यह मैं साखी दै आप ॥

राखा सुआ धाय[11] मति साजा ॥ भयो खोज तस आयो राजा ॥
रानी उत्तर मानि[12] सो दीन्हा ॥ पण्डित सुआ मँजारी[13] लीन्हा
मैं पूँछ्यो सिंहल पद्मिनी ॥ उत्तर[14] दीन्ह तुम्ह को नागनी
का तोर पुरुष रयनि[15] कर राऊ उल्लू न जानि दिवस[16] कर भाऊ
बैजस दिन तू निशि[17] अन्धियारी जहाँ बसंत करील को बारी[18] ॥
का वह पंख[19] कूट[20] मुह कूटे ॥ अस बड़ बोल जीभ मुख छोटे
ज़हर चुवै जो जो कहि बाता ॥ अस हत्यार लिये मुख राता[21]

माथे नहिं बैसारी[22] जो सठ सुआ सलोने[23] ॥
कान टूटि जेहि आभरन[24] काले कर बसु सोन

राजा सुनि बियोग[25] तस माना जैसे हिये[26] बिक्रम[27] पछताना
वह हीरामन पण्डित सुआ जो बोलै मुख अमृत चुवा
पण्डित दुख खण्डित निरदोषा पण्डित हिये[28] परै नहिं धोखा
पण्डित केर जीभ मुख सोधे पण्डित बात न कहै बियोधे[29]

पाप १ औरत २-७ अकिल ३ मोर ४ ख़ाविन्द ५ हुक्म ६ शायद ८ घोड़ा ९ बन्दर १० लौंडी ११ जवाब ग़रूरसे १२ बिल्ली १३ जवाब १४ राति १५-१७ दिन १६ बाग़ीचा १८ उड़नेवाले जानवर १९ ज़हर २० लाल २१ बैठालना २२ ख़ूबसूरत २३ ज़ेवर २४ दुख २५ दिल २६-२८ राजा बिक्रमाजीत २७ बेहूदा २९ ॥ + ॥

पंडित सुमति दीन्ह पंथ हिलावा | जो कुपंथ तेहि परिउ न भावा
पंडित राती बदन सरेखा | जो हत्यार रुहर पै देखा ॥
की प्रान घट आनहि मंती | की जलि होहि सुआ संगासती

जन जानहु किये अवगुन मंदिर होय सुखराज
आयसु मेट कन्त के काकर भयन अकाज

चाँद जैस धनि उजेर अहै ॥ | भा पिठ रोस गहन अस गहै।
परम सुहाग निबाह न पारी | भाव धाग सेवा जब हारी॥
इतनक दोख बीज पिव रुठा | जो पिव आपन कहै सुझूठा
ऐसे गर्ब नहि भूले कोई ॥ | जेहि डर ब्रह्म्रुत पियारो सोई॥
रानी आय धाय के पासा॥ | सुआ भवा सेमर की आसा
पर प्रीति कंचन महँ सीसा॥ | बिथरा मिले पूर्यो मपैदीसा
कहाँ सुनार पास जेहि जाऊँ | दे सुहाग करै इक ठाऊँ ॥

मेंपिय प्रीति भरोसे गर्बे कीन्ह जिव माह
तेहि रिस हौं परकेली नागमती रोय की नाँह॥

उतर धाय तब दीन्ह सिखाई | रिस आपहि बुधि अकहि खाई
भैंजो कहा रिस करहु न बाला | को न गयो यहि रिस कर घोला
बिरस बिरोध रसहि पै होई॥ | रिस मारै तेहि मार न कोई॥
तुरी रिस भरी न देखेसि आगू। | रिस महँ काकहँ भयो सुहागू
जेहि रिस तेहि रस जोग न जाई | बे रस हरदि होय पीराई॥
जेहि के रिस मिलाय रस दीजे | सो रस तज रिस कोह न कीजे
कंत सुहाग की पाई साधा॥ | पावै सो जो वही चित बाँधा

शब्द १ बदराह २ लाल सुर्ख ३ खून ४ नागमती रानी ५ हुक्म ६ खाविंद ७-१४-१८-२५ रानी ८ कोड़ना ९ क़सूर १० ग़ुस्सा ११-१६ लोहा १२-२० सोना १३ जगह १५ अहंकार १६ दूर १७ जवाब १९ अक़्ल २१ औरत २२ खराब २३ हलदी २४ ॥*॥

रहै जो पिय की आयसु औ बरती होय हीन।
निरमल देखै चाँद जस जन्म न होय मलीन

जुवा हार मन समुझी रानी॥ सुआ दीन्ह राजा कहँ आनी
नागमती हौं गर्ब न लीन्हा॥ कंथ तुम्हार मर्म पिय लीन्हा
सेवा करै जो बारह मासा॥ अतनकि अवगुण करै निपासा
जो तुम देइ नाय के ग्रीवा॥ छाड़हि नहि बिन मारे जीवा
मिलतहि महँ जन अहो निरारे तुम सो अहो अदेश पियारे
मैं जाना तुम मोहे माहाँ॥ देखो ताक तोहो सब माहाँ॥
कारानी का चेरी कोई॥ जेहँ कहँ मया करै भल सोई

तुम सो कोई न जीता हारा बिक्रम भोजे॥
पहिले आपहिं खोय कर करै तुम्हारा खोज

राजैं कहा सत्य कहु सुआ। बिन सत कस जस सेमर भुआ
हौ सुख राती कहो सत बाता जहाँ सत्य तहँ धर्म सँघाता
बाँधी सृष्टि अहै सत केरी॥ लक्ष्मी अहै सत्य की चेरी॥
सत्य जहाँ साहस सिधि पावा औ सत बादी पुरुष कहावा
सत कहि सती सँवारै सरा॥ आग लाय चहुँ दिश सत जरा
दुइ जग तरा सत्य जे राखा॥ और पियार दीन्ह सत भाखा
सो सत छाड़ि जो धर्म बिनाशा का मति कीन्ह हिये सत नाशा

तुम सयान औ पण्डित असत न भाखौं काउ
सत्य कहो मोसों वह का कर अपनाउ॥

सत्य कहत राजा जिव जाउ पै मुख असत न भाखौं काऊ

हुक्म १ पाकसाफ़ २ मैला ३ ग़रूर ४ ख़ाविन्द ५ भेद ६ ख़राब ७ गरदन ८ अलग ९ सारा जहान १० मुहब्बत ११ राजा बिक्रमाजीत १२ नाम राजा १३ लाल १४ दुनियां १५ कामिल १६ सच बोलने वाला १७ मर्द १८ चारों तरफ़ १९ दोनों जहान २० बोली २१ नाश २२ दिल २३ झूँट २४-२६ कसूर

हौं लिय सत्य निसर्यो यह तें ॥ सिंहल दीप राज घर जेहि तें ॥
पद्मावत राजा की बारी[1] ॥ पद्मगन्ध[2] शशि[3] दई सँवारी ॥
शशि[4] मुख अंग[5] मलय[6] गिरि रानी कनक[7] सुगन्धहि द्वादश[8] बानी
है पद्मिन जो सिंहल माहाँ ॥ सुगन्ध स्वरूप सो वह की छाहाँ
हीरामन हौं तिहके परेवा[9] ॥ काँठा फूटि करत तेहि सेवा ॥
औ पायों मानुष की भाषा[10] ॥ नाहीं तो पंख[11] मूढ भर पाँखा ॥

जबलहि जियों रात दिन सवँरों मरों वही लै नाउँ
मुख रातो[12] तन हरिहर कीन्हा दुहूँ जगत[13] लै जाउँ

हीरामन जो कमल बरवाना[14] ॥ सुनि राजा होय भँवर भुलाना
आगे आव पँख[15] उजियारे ॥ कहै सुदीप पतंग किय मारे ॥
रहा जो कनिक[16] सुबास के ठाउँ[17] कस न होय हीरामन नाउँ ॥
को राजा कस दीप अतंगू ॥ जेहि रे सुनत मन भयो पतंगू
सुनि सुसमुद्र चख[18] भये कलकला[19] कमला चाहि भँवर होय मिला
कहौ सुगन्ध धनि[20] कस निरमली[21] भा अलि[22] संग कि अबहीं कली
औ कहु तहाँ जो पद्मिनी लोनी[23] घर घर सब के होहिं जस होनी

सबै बखान[24] तहाँ कर कहत सो मोसों आव ॥
चहौं दीप वह देखा सुनत उठा तस चाव ॥

का राजा हौं बरनों[25] ताशू ॥ सिंहल दीप अहै कैलाशू ॥
जोगा तहाँ भुलाना सोय । गये युग बीत न बहुरा कोय
घर घर पद्मिन छत्तिस जाती ॥ सदा बसंत दिवस[26] अरु राती ॥
जेहिं जेहिं बरन[27] फूल फुलवारी तेहिं तेहिं बरन[28] सुगन्ध सुनारी

लड़की १ कमल की खुशबू २ चाँद ३-४ बदन ५ चन्दन ६ सोना ७-१६ ख़ालिस ८ उड़नेवाले जानवर ९-११-१५ आवाज़ १० लाल १२ दुनियां १३ बयान करना १४ जगह १७ आँख १८ नाम जानवर १९ पद्मावत २० पाक साफ़ २१ भँवर २२ ख़ूबसूरत २३ तारीफ़ २४-२५ दिन २६ रंग २७-२८

गन्धर्प सेन तहाँ बड़ राजा ॥ अप्सरहिँ माहिँ इन्द्रासन साजा
सो पद्मावत ताकी बारी ॥ औ सब दीप माहिँ उजियारी
चहूँ खंड के बर जो आहीँ ॥ गर्बहिँ राजा बोलहिँ नाहीँ ॥

उदित शूर जस देखी चाँद छिपै जेहि धूप ॥
ऐसे सबै जाहिँ छिप पद्मावत कीरूप ॥

सुनि रबि नाउँ रतन भा राता परिडत वही फेर कहु बाता ॥
तुइ सुरंग मूरत वह कही ॥ चित महँ लाग चित्र होय रही
जनु होय सूर्य्य आय मन बसे सब घट पूर हिये परगसे ॥
अबहूँ सूर्य्य चाँद वह छाया जल बिन मीन रक्त बिन काया
करन करान भा प्रेम अगूरू जो शशि स्वर्ग चढ़ौ होय शूरू
सहस किरान रूप मन भूला जहँ जहँ दृष्टि कमल जनु फूला
तहाँ भँवर जहँ कमला गन्धी भइ शशि राहु केर ऋणबन्धी

तीन लोक खंड चौदह सबै परे मोहिँ सूझ ।
प्रेम छोड़ि कुछ और नहिँ लुना जो देखौँ मन बूझ

प्रेम सुनत मन भूल न राजा कठिन प्रेम शिर दिये तेहि छाजा
प्रेम फन्द जो पड़ा न छूटा ॥ जीव दीन्ह पै फाँद न छूटा ॥
गिरगिट छन्द धरै दुख तीता रवन हो पीत राति रवन सीता
जानि पुछार जो भय बन बासी रोवँ रोवँ परी फाँदन को आसी
पाँख फरेरा सोई फाँदू ॥ ॥ उड़ न सकहिँ उरझे भये बाँदू
मेउँ मेउँ निशदिन चिल्लाय वही रोषे नागिन धर खाय ॥
पाँडुक सुआ कराठ वह चीन्हा ज्यहिँ गैँ परा चाँहि जिव दीन्हा

इन्द्रलोक की परी १ लड़की २ चारों तरफ ३ ग़रूर ४ सूर्य्य ५-६-१७ राजा रतनसेन ७ दीवाना ८ तसवीर ९ दिल १० खिलना ११ मछली १२ बदन १३ नसनस में १४ चाँद १५-२० आसमान १६ हज़ार ज्योति तथा पद्मावत १८ निगाह १९ सा २१ गर्म २२ पीला २३ लाल २४ सफ़ेद २५ मोर २६ प्रेम का फन्दा २७ रात २८ गुस्सा २९ कुमरी ३०

तीतर गयैं जो फाँद है नितहि पुकारै दोष ॥
मुक्ति हँकार फाँद गैं मेले कित मारे पुन मोष

राजा लीन्ह ऊब के स्वासा ॥ ऐसे बोल नहिं बोल निरासा ॥
पहिल प्रेम है कठिन दुहेला दोजग तरा प्रेम जेहि खेला ॥
दुख भीतर प्रेम मधु राखा ॥ किंचन मरन चहै सो चाखा
जेहिं नहिं शीश प्रेम पंथ लावा सो पृथ्वी महँ काहेक आवा ॥
अब मैं पीय प्रेम पंथ मेला ॥ पायन टेल राख कै चेला ॥
प्रेम बार सो कहै जो देखा ॥ जैन देखि का जानि बिशेषा
तब लग दुख प्रीतम नहिं भेटा मिला तो गाजरमक दुख मेटा

जस अनूप तुइ बरणी नख शिख बरन शिंगार
है मोहिं आश मिलन की जो पुरवै करतार ॥

खण्ड सातवाँ शिंगार खण्ड पद्मावत ॥

का शिंगार वह बरनौं राजा वह क शिंगार वही पै छाजा ॥
प्रथम शीश कस्तूरी केशा ॥ बलि बासुक को और नरेशा
भँवर केश वह मालति रानी ॥ बिषहर लरहिं लेहिं अरघानी
बेनी छोरि झार जो बारा ॥ स्वर्ग पताल होय अँधियारा ॥
कोमल कुटिल केश नग कारे लहरे भरी भुअंग बैसारे ॥
बेधी जानि मलैगिरि बासा ॥ शीश चढ़ी लोटहिं चहुँ पासा
घुँघुरवार अलकैं बिष भरे ॥ संकर प्रेम ज्यों गयें परे ॥

गरदन १-५-४६ हमेशा २ चुप ३ बोलाना ४ नजात ६ नाउम्मेद ७ मुशकिल ८ भारी ९ दोनों जहान १० शराब ११ शिर १२-२५-४२ राह १३-१५ ज़मीन १४ दरवाज़ा १६ मुलाक़ात १७ बहुत दिन १८ बयान करना १९ नाख़ून से शिर की चोटी तक २० तारीफ़ २१-२३ ईश्वर २२ पहिले २४ मुश्क २६ बाल २७ ३१-३८-४३ न्योछावर २८ नाम साँप २९ आदमी ३० साँप ३३-३९-४० खुशबू ३३ चोटी ३४ आसमान ३५ मुलायम ३६ पेचदार ३७ चन्दन ४१ ज़हर ४४ जंजीर ४५

असफँदवार केसवैराजा पराशीशेरौं फाँद
अठोकलीनागमरकेभयेकेसवैकेबाँद

बाँनो माँगसीसि उपराहीं ॥ सेंदुर अभेचढ़ा जेहि नाहीं
बिनसेंदुर अस जानहिं दिया उजेरपंथ रैनिमहँ किया ॥
कंचनरेख कसौटी कसी ॥ जनु घनमहँदामिन परगसी
सूर्य्यकिरनजनुगगनबिगोयी यमुनामाँझ सरस्वतीदेखी
खाड़े धारकँधिरजनु भरा ॥ करवटलेबेनी परधरा ॥
तेहिपरपूर धरेजो मोती ॥ यमुन माँझगङ्गा कीसोती
करवट तपोलीन्ह होयचूरू मेरा सुरुँधिरलै देइसेंदूरू

कनकेकेहादसैबानिहोयचहीसुहागदहमाँग
सेवाकरहिंनरवतपूरापिरातेईवैगतैतसभाग

कहोलिलाटदुइजकोजोती दुइजहि न्योतीकहाँजैसोती
सेहसकिरानजोसूर्य्यदिपाये देरिलिलाटसोठिपजनाये
काहिरबनोदिपौमयंकू ॥ चौदकैलंकीचहनिहकलंकू
आवचाँदपुनिराहुगिरासा बहुबिनराहुसदापरकासा
तेहिलिलाटपरतिलकजोदेउ दुइजपासजनुभूदीठा
कनकपाटजनुबैठा राजा ॥ सबैसिंगारअहसैसाजा ॥
बहआगोपिरहैनकोऊ ॥ बहकाकहैअसजुआसँजोऊ

रहुधनुअहीचकबानदुइजगामातेजागु ।
सुनिकेपरासुरुकैराजा मोकहँभयेयकटाँ

बाल १-५ पिरा २-८-२०-३०-३५ गरदन ३ नामसाँप ४ गुलाम ६ नागफ़ ७-३१
राहु ९ रात १० सोना ११-२२-३७ बिजुली १२ चमक १३ आसमान १४-२६
खून १५-२१ लोटके १६ चोटी १७ नामजगहजहाँसिरकटातेहैं १८ फ़क़ीर
१९ फ़ायदा २० एकालिस २३ चाँद २४ नरवत २५ दुनिया २८ हत्या २९ चाँद ३२
सेव ३३ रोपान ३४ नाम नरवत ३६ हथार ३८ क़ायदा ३९ मिलना ४० ॥५४

भौंहैं श्याम[1] धनुष[2] जनु ताना | जासों हेरे[3] मारि बिष बाना ॥
ओहि धनुष वह भौंहैं चढ़ा । | कैं हत्यार काल[4] अस गढ़ा ॥
ओहि धनुष कृशा पै अहा ॥ | ओही धनुष राघव कर[5] गहा
ओहि धनुष रावण संहारा[6] ॥ | ओही धनुष कंसासुर मारा
ओहि धनुष बेधा हत राहू ॥ | मारा वही सहस्रा[7] बाहू ॥
ओहि धनुष मैं उपनहि चीन्हा | धानिक[8] आपपन[9] चजंग[10] कीन्हा
वहि भौंहहिं शर[11] कोइ न जीता | अप्सरहिं[12] छिपी छिपी गोपिता[13]

भौंहैं धनुष धन[14] धानक दूसर सर[15] न कराय
गगन[16] धनुष उगवै लाजहि सो छिप जाय ॥

नयन[17] बान सर[18] पूच न कोऊ | जनु समुद्र अस उलटहिं दोऊ
राती[19] कमल करहिं अल[20] भवाँ | गुंजहिं मात न करहिं अपसवाँ ॥
उठहिं तुरंग[21] लेहिं नहिं बागा ॥ | जानौं उलट गगन[22] कहँ लागा
पवन झकोरे देहिं हिलोरा ॥ | स्वर्ग[23] लाय भुइँ लाय बहोरा ॥
जग[24] डोलै डोलत नयनाहाँ[25] ॥ | उलट औडार च है पल माहाँ
जबहिं फिराये कंगन बूरा ॥ | असवै भौंह भँवर की जोरा ॥
समुन्द्र हिलोर करहिं जनु झूले | खंजन[26] लरहिं मिरग[27] बन भूले

भरै समुद्र अस नयन[28] दुइ माणिक[29] भरे तरंग[30]
आवहिं तीर[31] जाहिं फिर काल भँवर तेहि संग

बरनी[32] का बरनों[33] इमि[34] बनी ॥ | साधे बान जानु वहिं अनी[35]
जुरी राम रावण की सैना[36] ॥ | बीच समुद्र भये वह नयना

सियाह १ कमान २ देखना ३ मौत ४ हाथ ५ मारडालना ६ नाम राजा ७ तीर अंदाज़ ८ निशाना ९ दुनियां १० बान ११ इन्द्रलोक की परी १२ गोपी १३ पद्मावत तीर अंदाज़ १४ बराबर १५ आसमान १६ आँख १७ बराबर १८ लाल १९ भँवर २० घोड़ा २१ आसमान २२-२३ दुनिया २४ आँख २५-२८ ममोला २९ हिरन २७ जवाहिर २९ लहर ३० किनारा ३१ पलक ३२ तारीफ़ ३३ इसतरह ३४ फ़ौज ३५-३६

वारहि पार नयावर साँधे ॥ जा सों हेर[1] लाग बिष बाँधे ॥
उन्ह बानहिं अस कौन न मारा ॥ बेध रहा सगरा संसारा ॥
गगन[2] नखत जस जाहिं न गिने वै सब बान वही के हने ॥
धर्ती बान बेध सब राखे ॥ शाखा ठाढ़ वही सब शाखे ॥
रोवँ रोवँ मानुष तन ढाढ़े ॥ सूतहिं[3] सूत बेध अस गाढ़े ॥

बरनि[4] बान जस उपनहिं बेधी रन बन ढंख ॥
सो जेहि तन सब रोवाँ पंखहि[5] तन सब पंख

नासक[6] खँग[7] देवौं केहि योगू[8] खँग[9] खीन[10] वह बदन सँयोगू
नासक[11] देखि लजान्यो सुआ शूक[12] आय बेसर होय उआ ॥
सुआ जो पियर ही रामन लाजा और भाव का बरनौं[13] राजा ॥
सुआ सुनाक कठोर[14] बनवारी[15] वह कोमल[16] तिल पुहुप[17] सँवारी
पुहुप[18] सुगन्ध करहिं सब आसा गंग[19] हर काय[20] लेइ हम पासा ॥
अधर[21] दशन[22] पर नासक[23] शोभा दाड़िम[24] देखि सुआ मन लोभा
खंजन[25] वेहि दिश[26] केलि कराहीं वेहि वह रस को पाव कोउ नाहीं

देखि अमी[27] रस आधर[28] न्ह भयो नासका[29] कीर[30]
पवन[31] बास पहुँचावे आश्रम छाड़ न तीर[32] ॥

अधर[33] सुरंग अमी रस भरे ॥ बिम्ब[34] सुरंग लाज बन फरे
फूल दुपहरी जानहु रोता[35] फूल झरहिं जो जो कहि बाता
हीरा लीन्ह सु बिद्रुम[36] धारा बिहँसत[37] जगत[38] होय उतियारा

देखना १ आसमान २ सूराख ३ पलक ४ जानवर परिन्द ५ नाक ६ तलवार ७ बराबरी ८ तलवार ९ पतली १० नाक ११ नाम नखत १२ बयान करना १३ सख्त १४ टेढ़ी १५ मुलायम १६ फूल १७ - १८ शायद १९ बोलाना २० होंठ २१ दाँत २२ नाक २३ अनार २४ ममोला २५ तरफ २६ अमृत २७ होंठ २८ नाक २९ तोता ३० हवा ३१ किनारा ३२ होंठ ३३ कुन्दरू ३४ लाल ३५ मूँगा ३६ हँसना ३७ दुनिया ३८ ॥ ÷ ॥

भइ मजीठ बातहिं रंग लागे | कुसुम रंग थिर रहै न आगे
वहि के अधर अमी भरा रावे | अबहिं अछत नि का हूँचावे
मुख बैनन बोल धारन हिं रसा | कोहि सुख योग सो अस्टन बसा
राता जगत देख रंग राती ॥ | रुधिर भरी आछहिं बिहसाती

अमी अधर अस राजा सबजेंगा आस करेइ
कोहि का कमल बिकासा कोमधुकर सलेइ

दरपन चौक बैठ जनु हीरा ॥ | ओ बिच बिच सो पूरा मंगा मोती
जनु भादों निसि दामिन दीसी | चमक उठै तस तही बनीसी
वह सो ज्योति हीरा उपराही | हीरा देहि सो तेहि परछाही
जोहि दिन दरपन ज्योति निरमई | बहुते ज्योति ज्योति दा भई ॥
रवि ससि नखत दीन्ह वह ज्योती | रतन पदारथ मानिक मोती
जेहि तेहि बिहसि सभा महँ हँसी | तहँ तहँ छिटक ज्योति परकसी
दामिन चमक न सरबर पूजा ॥ | पुनि वह ज्योति होय को दूजा

देहँ सन हँसत दरपन तस चमकी पाहन ठाँठी कुंक
दाड़िम सेर जो न कैस का फाट्यो हिया दर्क ॥

प्राना कहौं जो काहि रस बाता | अस्टन बचन सुनत मन राता
हरी पिंजर चाँतिक कोकिला | दीनबंधि बेबैने जेहि मिला
चातक कोकिल रस हिं जोनाही | सुनि बेबयने लाज छिप जाही
भरे प्रेम मधु बोलहिं बोला ॥ | सुनै सो मान घूम को डोला ॥

लाख १ कायम २ होंद ३ अस्टन ४ पान ५ लाल ६ खून ७ हसना ८ होंद ९ दुनिया १० खिलना ११ भँवरा १२ दाँत १३ बहुत काला १४ गति १५ बिजुली १६ देख पड़ना १७ दाँत १८ बनाई गई १९ सूर्य्य २० चाँद २१ जवाहिरात २२ हँसना २३ उजियारा २४ बिजुली २५ बराबर २६ दाँत २७ पत्थर २८ लूक २९ अनार ३० बराबरी ३१ जीभ ३२ दूर करना ३३ धोका ३४ परीक्षा ३५ - ३६ आवाज ३५ - ३७ प्रभाव ३८ ॥ ५ ॥

बतुर[1] वेद मति सब वह पाहाँ | ऋग[1] यजु[2] साम[3] अथर्वण[4] माहाँ
इक इक बोल अर्थ जो गुना। | इन्द्र मोहिं ब्रह्मा शिर धुना॥
भागवत भर्थ[2] पिङ्गल औ गीता | अर्थ जो जेहि पण्डित नहिं जीता

भावसती[3] औ व्याकरन सुनी पिङ्गल पाठ पुराण
वेद भेद सों बात कहि जनु लागैं हिये[4] बाण॥

पुनि बरनों[5] का सुरंग कपोला[6] | इक नारंग के दो किये मोला॥
पुहुप[7] पंखरस अमृत साँधे। | कै अस सुरंग खरोरा[8] बाँधे॥
तेहि कपोल[9] बायें तिल परा॥ | जो तिल देखि सो तिल तिल जरा
जनु घुँघची वह तिल कर मुहाँ[10]॥ | बिरह बान साँधो सा महाँ॥
अगिन बान तिल जानहुँ सूझा | इक कटाक्ष लाख दुइ जूझा॥
सो तिल काल मेट नहिं गयो | अब वह काल काल जग[11] भयो
देखत नयन[12] परी पर छाहीं | तेहि ते रात[13] श्याम[14] उपराहीं॥

सो तिल देखि कपोल[15] पर गगन[16] रहा ध्रुव[17] गाड़
खनहिं उठै खन बूड़ै डोलै नहिं तिल छाड़॥

श्रवण[18] सीप दुइ दीप सँवारे॥ | कुण्डल कनिक[19] रचे उजियारे॥
मणि कुण्डल चमकहिं अति लोने[20] | जनु कँवधा लव कहिं दुइ कोने
दोउ दिश चाँद सूर्य्य चमकाहीं | नखतहँ भरी निरखि[21] नहिं जाहीं
तेहि पर घूँटे[22] दीप दुइ बारे॥ | दुइ ध्रुव[23] दुहूँ खूँट बैसारे॥
पहिरे घूँटी[24] सिंहल दीपी॥ | जानहु भरे कहजही सीपी॥
खन खन जोहि चीर शिर गहा[25]। | काँपत बीज[26] धौल[27] दिश[28] रहा।
डरहिं देव लोक सिंहला॥ | पड़ै न बीजे[26] टूटि तेहि कला॥

चार १ महाभारत पुराण २ पोथी ३ दिल ४ बयान करना ५ गाल ६ फूल ७ लड्डू ८ गाल ९ काला मुंह १० दुनिया ११ आँख १२ लाल १३ सियाह १४ गाल १५ आसमान १६ नाम नखत १७-२३ कान १८ सोना १९ खूबसूरत २० देखना २१ बाली २२-२४ खैंचना २५ बिजुली २६-२९ सफ़ेद २७ तरफ़ २८॥

करहिं नरदत सब सेवा श्रवण[1] दीन्ह अस दोउ
चाँद सूर्य्य अस कहै और जगत[2] का कोउ ॥

बैरनों[3] ग्रीव[4] कोंब[5] की रीसा ॥ कंचन[6] तार जनु लाग्यो सीसा
कूड़े[7] फेर जानु गेयँ[8] गाढ़े ॥ ॥ हरी पुछार[9] ठगे जनु ठाढ़े ॥
जनु हिये[10] काढ़ि परेवा[11] ठाढ़ा ॥ तेहि ते अधिक[12] भाव गये[13] बाढ़ा
चाक चढ़ाय साँच जनु कीन्हा बाग तुरंग[14] जानु गहि लीन्हा ॥
गये मयूर[15] तम[16] चोर जो हारा ॥ उन्हें पुकारे साँझ सकारा ॥
पुनि तेहि ठाउँ[17] परी त्रिय रेखा घूँट जो पीक लीक तस देखा
धन वह ग्रीव[18] दीन्ह बिधि[19] भाउ वहि का कहिं ले करे मिराउ[20] ॥

कराठ[21] श्री मुक्ता[22] वनमाला सोहै आभरन ग्रीव[23]
को होय हार कराठ लागै कै तप साधा जीव ॥

कनक[24] दण्ड दुइ भुजा कलाई जानहु फेर कँडेरे[25] भाई ॥
कदल गाभ की जानौ जोरी ॥ औ रोती[26] वह कमल हथोरी ॥
जानौ रक्त[27] हथोरी बूड़ी ॥ रबि[28] प्रभात[30] तात[31] वै जूड़ी ॥
हियो[32] काढ़ि जनु लीन्हे सिहाथा रुधिर[33] भरी अँगुरी तहि साथा
औ पहिरे नग जड़ी अँगूठी ॥ जग[34] बिन जीव जीव वह मूठी ॥
बाहूँ कङ्गन तोड़[35] सलोने[36] ॥ डोलत बाहु भावगत लोने[37]
जानो गति बेरन[38] देखराय ॥ बाहुँ डुलाय जीव ले जाय ॥

भुज उपमा[39] पानारी[40] न पूजी[41] खीन[42] भई तेहि चिन्त
ठाँव[44] हिं ठाँव बेध[45] भइ हृदय[46] ऊब साँस लेनिन्त ॥

कान १ दुनियां २-३४ तारीफ़ ३ गरदन ४-८-१३-१८-२४ कलंगी ५ सोना ६-२५ ख़रादी ७ मोर ९ दिल १०-३१-४६ कबूतर ११ बहुत १२ घोड़ा १४ मोर १५ मुरग़ा १६ जगह १७ ईश्वर १९ मुलाक़ात २० नामज़ेवर २१ मोती का हार २२ ज़ेवर २३ ख़रादी २४ लाल २७ लोहू २८ सूर्य्य २९ मोर ३० गर्म ३१ ख़ून ३२ नामज़ेवर ३५ ख़ूबसूरत ३६-३७ तबायफ़ ३८ बराबरी ३९-४१ कमल की नाल ४० पतली ४२ शोच ४३ जगह ४४ छेद ४५

हिया[1] थार कुच[2] कंचन[3] लाडू | कनिक[4] कचूर उठे कै चाडू ॥
बेधे[5] भँवर कंट[6] केतकी ॥ | चाहैं बेध[8] कीन्ह कंचुकी[9] ॥
कुन्दन बेल साज जनु गूँदे[10] | अमृत भरे रतन दुइ मूँदे ॥
यौवन बान लेहिं नहिं बागा | चाहहिं हुलस हिये[11] में लागा
अगिन बान दुइ जानों साँधे ॥ | जग[12] बेधे जो होहिं न बाँधे ॥
उतंग जंभीर[13] होय रखवारी ॥ | छुइ कोस के राजा की बारी[14] ॥
दाड़िम[15] दाख[16] फरी अब चाखा | अस नारंग वेहि का कहि राखा

राजा बहुत मुये तप लाय लाय भुइं माथ ॥
काहू छूय न पारी गये मरोरत हाथ ॥

पेट पतरि जनु चन्दन लावा | कहँ[17] कह केसर[18] बरन सुहावा
क्षीर[19] अहार न कर सुकमारा | पान फूल ले रहै अधारा ॥
श्याम[20] भुअंगिन रोमावली | नाभी निकस कमल कहँ चली
आय दोहों नारंग बिच भये | देखि मयूर ठमक रहि गये ॥
आय जुरी भँवरन की पाँती | चन्दन गाभ बास की माती
गइ कालिन्दी[21] बिरह सताई | चल पराग अर बल[22] बिच आई
नाभी कुराड सो बानारसी ॥ | सौंह[23] को होय मींच[24] तेहि लिखी

शिर कँरवट तन काशी लै लै बहुत सीझ तेहि आस
बहुत धूम[25] घूँट मैं देखी उतर[26] न देइ निराश[27] ॥

चोटी[28] पीट लीन्ह वै पाछे | जनु पहिर चली अप्सरा[29] काछे
मलया[30] गिर की पीठि सँवारे | बेनी[31] नाग चढ़ा जनु कारे ॥
लहरैं दैत पीठ जनु चढ़ा ॥ | चीर उढ़ावा केंचुल मढ़ा ॥

छाती १-२ सोना ३-४ सूराख ५ तथा दंडी छाती की ६ नोक छाती के दंड़ी की ७ सूराख ८ अँगिया ९ पोशाक १० दिल ११ दुनियां १२ नीबू १३ बेटी १४ अनार १५ अंगूर १६ खुशबू १७ रंग १८ दूध १९ कालीनागिन २० यमुना २१ नाम सुकाम २२ बराबर २३ मौत २४ धुआँ २५ नवाब २६ नाउम्मेद २७ इन्द्रपरी २८ धोती २९ चन्दन ३० चोटी ३१

वेहिँ का कहँ अस बेनी कीन्हीं | चन्दन बास भुअंगहि लीन्हीं
कृष्ण करा चढ़ा वह माथे ॥ | तब सो छूटि अब छूटन नाथे
कारे कमल राहे मुख देखा | शशि पीछे जनु राहु बिशेषा
को देखै पावै वह नागू ॥ | सो देखै माथे मन भागू ॥

पन्नग जो पंकज मुख गहे खंजन तेहि शिर बैठ।
छात सिंहासन राज धन ता कहँ होइ जो दीठ

लिंक खीन अस आहि न काहू | केहर कहूँ न वह सर ताहू ॥
बसा लंक पर बनी जग झीनी ॥ | तेहि ते अधिक लिंक वह खीनी
परहँस पिवर भये तहँ बसा ॥ | लिये डंख मानुष कहँ डसा ॥
मानहुँ नलिन खंड दुइ भये ॥ | दुहुँ बिच लिंक तार रहि गये ॥
हिये सो मूड़ पर चली वह नागा | पैग देत कित सहसक लागा
छुद्र घराट मोहहिँ नर राजा | इन्द्र अखाड़ आय जनु बाजा
नाभ बीन गहे कामिनी ॥ | लाकहिँ सबै राग रागिनी ॥

सिंह न जीता लंक शर हार लीन्ह बन बास ॥
तेहि रिस रक्त पिये मानुष खाय मारके मांस

नाभी कुण्ड सो मलय समीरू | समुन्द्र भँवर जस भवै गँभीरू
बहुते भँवर बौन्डर भये ॥ | पहुँच न सके स्वर्ग कहँ गये
चन्दन माँझ कुरंगिन खोजू | वेहिँ को पाव को राजा भोजू
को वह लागहि कंचल सीझा | का कहिँ लिखी ऐस को रीझा
सोहै कमल सुगन्ध शरीरू ॥ | समुन्द्र लहर सोहै तन चीरू

टी १ काला नाग २-३ पकड़ना ४ चांद ५ साँप ६ कमल ७ पकड़ना ८ ममोला ९ कमर १० पतली ११ चीता १२ भँवरा १३ कमर १४ बहुत पतली १५ बहुत १६ कमर १७-२२-२९ बारीक १८ डाह १९ भँवरा २० कोकाबेली २१ छाती २३ डर २४ करधनी २५ नामबाजा २६ पकड़े हुये २७ चीता २८ चन्दन की हवा ३० गहिरा ३१ आसमान ३२ हरिन के पावँ का निशान ३३ ॥

झूलहिं रतनपाट के झोंपा[1]॥ साज मदन[2] वहि का कहँ कोपा
अबहिं सो अहै कमल की करी नजनों कौन भँवर कहँ धरी॥

बेध रही जग बासना निरमल[3] मेद[4] सुगन्ध॥
तेहि अरघान भँवर सब लुब्धे तजहिं[5] न दिये बन्ध

बरनौं[6] तम्बलिंक[7] की शोभा॥ औ गज[8] गवन देख सब लोभा
जुरे जंघ शोभा अति पाये॥ केला खंभ फेर जनु लाये॥
कमल चरण अति रात[10] बिशेषी रहै पीट पर भूमि[12] न देखी॥
देवता हाथ हाथ पग[13] लेही॥ जहँ पग परै शीश[14] तहँ देही॥
माथे भाग न कोउ अस पावा चरण कमल लै शीश[15] चढ़ावा
चौरा चाँद सूर्य्य उजियारा॥ पायल बीच करहिं झनकारा
अनवट बिछिया नखत तराई[16] पहुँच सकै को पाइन ताई॥

बरन शिंगार न जान्यो नख शिख जैस अभोग
तस जग[17] कुछू न पायो उपमा[18] देउ वह योग॥

सुनि के राजा गयो मुरझाय॥ जानो लहर सूर्य्य के पाय॥
प्रेम घाव दुख जानि न कोई॥ जेहि लागै जानै पै सोई॥
परा सु प्रेम समुद्र अपारा॥ लहरहिं लहर होय बिसंभारा[19]
बिरह भँवर होय भाँवर देय॥ खन खन जीव हिलोरहिं लेय
कितहिं निसास[20] बूड़ि जिव जाइ कितहिं उठै निसास[21] बौराइ॥
कितहिं पीत[22] खन होमुख सेता[23] कितहिं चेत[24] खन होय अचेता[25]
कठिन मरन ते प्रेम ब्यवस्था नान जिये न जाय अवस्था[26]

लहँगा १ कामदेव २ पाकसाफ़ ३ केसर ४ छोड़ना ५ तारीफ़ करना ६ चूतर ७ कमर ८ हाथी ९ बहुतलाल १० तख़्त ११ ज़मीन १२ क़दम १३ शिर १४-१५ छोटे नखत १६ दुनियाँ १७ मिसाल १८ बेक़रार १९ बेदम २०-२१ पीला २२ सफ़ेद २३ होश २४ बेहोश २५ हाल २६ ॥८॥

जनु लेँहारहिँ लीन्ह जिव हरहिँ त्रासहि ताहि
इतना बोलन आव मुख करैं त्राहि त्राहि ॥

जहँ लग कुटुम्ब लोग औ नेगी
राजा राय आय सब बेगी ॥
जानवन्त गुनी कारणी आये
ओझा वैद्य सयान बुलाये ॥
चरचहिँ चेष्टा परखहिँ नारी
नेर नाहिँ औषधि तहिँ बारी ।
है राजा लक्ष्मण के करा ॥
शक्ती बान मोह है परा ॥
तहँ सो राम हनुमन्त बल दौरी
को लै आव सजीवन मूरी ॥
बिनय करहिँ जे तो गढ़पती
का जीव कीन्ह कौन मतमती
कहो सो पियर काहि पुनि खाँगा
समुद्र सुमेरु और तुमहिँ माँगा

धावन तहाँ पठावैं देहिँ लाख दश रोक ॥
होय सो बेल जेहि बारी आनहि सबै बरोक

जो भा चेत उठा बैरागा ॥
बावर जनो सोय उठि जागा
आय जगत बालक जस रोवा
उठा रोय हा ज्ञान सो खावा
हौं तो अहा अमर पुर जहाँ ॥
यहाँ मरन पुर आयो कहाँ
कै उपकार मरन पर कीन्हा
मुक्ति जगाय जीव हर लीन्हा
सोवत रहा जहाँ मुख साखा
कस न तहाँ सोवत विधि राखा
अब जिव वहाँ यहाँ तन सूना
कब लग रह यहि प्रान बहूना
जो जिव घटै काल के हाथा
कठिन नेक पै जीव न साथा

उठहिँ हाथ तन सरवर हियाँ कमल तेहि माहिँ
नयन नहिँ जानहु नेरे कर पहुँचत अवगाहिँ

सबहिँ कहा मन समझो राजा
काल से तें कुछ जूझ न छाजा
तासों जूझ जात जो जीता
जात न कृष्णात जाहिँ गोपिता

दुख देना १ जल्द २-९ चेहरे की हालत ३ नज़दीक ४ मानिन्द ५ राजा ६ दूत ७ नक़द ८ दुनियां १० बैकुण्ठ ११ अहसान १२ चुपचाप १३ ईश्वर १४ अलग १५ तालाब १६ दिल १७ आँख १८ हाथ १९ गहरा २० मौत २१ लड़ाई २२-२३ छोड़ना २३

उनहिं नेह[1] काहू से कीजे ॥ नाउँ मेटि काहे जिव दीजे ॥
पहिलहिं मुख नेह[2] जब जोरा पुनि हो कठिन[3] निबाहत ओरा
रहत हाथ तन जैसे शरीरू[4] ॥ पहुँच न जाय परा तस फेरू ॥
गगन[5] दृष्टि[6] सो जाई पहुँचा प्रेम अदृष्टि[7] गगन[8] ते ऊँचा ॥
ध्रुव[9] ते ऊँच प्रेम ध्रुव[10] ठआ ॥ शिर दै पाउ दिये सो छुआ ॥

तुम राजा औ सुखिया करो राज सुख भोग
यह रे पंथ[11] सो पहुँचै सहै जो दुःख बियोग[12] ॥

सुवैं कहा मन समझो राजा करत प्रीति कठिन[13] है काजा ।
तुमहिं अबहिं जेई घर पोई कमल न भेटहिं[14] भेटहिं कोई[15]
जानहि भँवर जो तेहि पंथ[16] लूटै जीव देहि औ दिये न छूटै ॥
कठिन[17] आह सिंहल कर साजू पाई नाहिं जू भाँकै[18] साजू ॥
वह पंथ[19] जाय जो होय उदासी[20] योगी यती[21] औ तपी[22] संन्यासी[23]
भोग किये पायत वह भोगू तजै[24] सो भोग कोइ करत न योगू
तुम राजा चाहो सुख पावा ॥ योगहिं भोग करत नहिं भावा

साधन[25] सिद्ध न पाई जो लौ साधि न तप ॥
सो पै जानहिं बापुरो शीश[26] जो कर नहिं कल्प

का भाखे कहानी कथा ॥ निकसै घीव न बिन दधि मथा
जो लह आप हेरायन कोई तौ लहि हेरत पाव न सोई ॥
प्रेम पहाड़ कठिन[27] बिधि[28] गढ़ा सो पै जाय शीश[30] सो चढ़ा ।
पंथ[31] सूरि नगर उठा अगरू चोर चढ़ा कै चढ़ि मंसूरू[32] ॥

मुहब्बत १-२ मुशकिल ३ बदन ४ आसमान ५ निगाह ६ अदेख ७ आसमान ८ नाम नखत ९-१० राह ११ बिरह १२ मुशकिल १३ मुलाक़ात १४ कोकाबेली १५ राह १६ मुशकिल १७ लड़ाई १८ राह १९ किसिम फ़क़ीर २०-२१-२२-२३ छोड़ना २४ फ़क़ीर २५ शिर २६ दूध २७ मुशकिल २८ ईश्वर २९ शिर ३० राह सूरी की ३१ नाम फ़क़ीर ३२ ॥

तुइँ राजा का पहिरेसि कंथा[1] | तोरे घरहिँ माँझ[2] दश[10] पंथा[3] ॥
काम क्रोध[4] तृष्णा[5] मन माया | पाँचौ चोर न छाड़हिँ काया[6]
नव[7] सेंधैं गढ़[8] के मँझियारा[9] | घर मूसहिँ निशि[10] के उजियारा

अबहूँ जागि अयानी[11] होत आव निशि[12] भोर
पुनि कुछ हाथ न लागै मूस जाँय जब चोर

सुनि सो बात राजा मन जागा | पलक न मारि टकटका लागा
नयनहिँ[13] ढुरहिँ मोति औ मूँगा | जस गुड़ खाय रहा होय गूँगा
हिय[14] की ज्योति दीप वह सूझा | यह जो दीप अँधेरा बूझा।
उलटि दृष्टि[15] माया सो रूठी ॥ | पलक न फिरी जान कै झूठी
जोपे नाही इस्थिर दसा ॥ | जग उजारि का कीजे बसा ॥
गुरू बिरह चिनगी पै मेला। | जो सुलगाय लिये सो चेला
अब की पतंग[16] भृंग[17] की करा[18] | भँवर होउँ जेहि कारन जरा

फूल फूल फिर पूँछौं जो पूँछौं वह केत[19] ॥
तन न्यो छावर कै मिलौं ज्यों मधुकर[20] जिव देत

हिन्दू भीत[21] बहुत समझावा | मान न राजा गवन भुलावा
उपजै प्रेम पीर जेहि आये ॥ | पर बुधि[22] होत अधिक[23] सो आये
अमृत बात कहत बिष जाना | प्रेम को बचन[24] मीठ के माना
जो वह बिषे मारि कै खाय | पूँछौ ताही प्रेम मिठाय ॥
पूँछौ बात भरथ[25] रहि जाय | अमृत राज तजो[26] बिष खाय
औ महेश[27] बड़ सिद्ध कहावा | उनहूँ बिषे कराठ पैलावा ॥

गुदड़ी १ कंच २ राह तथा - नाक - कान आँख - मुँह गुदा - लिंग ३ गुस्सा ४ हवस ५ बदन ६ सूराख ७ क़िला ८ दरमियान ९ रात १० - १२ नादान ११ आँख १३ दिल १४ नज़र १५ परवाना १६ नाम कीड़ा १७ मानिन्द १८ केतकी १९ भँवरा २० दोस्त २१ नसीहत २२ बहुत २३ बात २४ राजा भरथरी २५ छोड़ना २६ महादेवजी २७ ॥ ÷ ॥

होत उयो रबि[1] किरन निकासा | हनुमन्त होय को देइ सु आसा

तुम सब सिद्धि मनावहु होय गणेश सिद्ध लेहु
चेला की न चलावै तु लै गुरु जेहि भेहु ॥

तजा[2] राज राजा भा योगी ॥ | कर[3] किंकरी तन कियो बियोगी[4]
तन बिसंभर[5] मन बावर लटा | उरझा प्रेम परी शिर जटा ॥
चन्द्र बदन[6] औ चन्दन देहा | भस्म चढ़ाय कीन्ह तन खेहा[7]
मेखल[8] सिंहे चक्र ढिंढारे ॥ | लीन्ह हाथ तिरशूल सँभारे
कंथा[9] पहिर दंड कर[10] गहा[11] ॥ | सिद्धि[12] होय कहँ गोरख[13] कहा
मुद्रा[14] श्रवण[15] कंठ[16] जप माला | कर[17] उहियाँ काँध सिंह[18] छाला
पावँर[19] पाय लीन्ह शिर छाता | खप्पर लीन्ह भेष[20] कै राता[21] ॥

चला भक्ति[22] माँगने कहँ साज किया तप योग
सिद्धि[23] होय पद्मावत पायँ हृदय[24] जब कि वियोग[25]

गणिक[26] कहहिं कर गवनन आजू | दिन लै चलहिं होय सिध[27] काजू
प्रेम लुब्ध[28] दिन घड़ी न देखा | तब देखी जब होय सरेखा[29] ॥
जेहि तन प्रेम कहाँ तेहि माँसू | काया[30] रक्त न नयनहिं आँसू
पंडित भुलान न जानहिं चालू | जीव लेत दिन पूँछ न कालू ॥
सती कि बौरी पूँछै पाँड़े ॥ | औ घर बैठि न सैंतैं भाँड़े ॥
मरि जो चलै गङ्गा गति लेइ ॥ | तेहि दिन कहाँ घड़ी को देइ ॥
मैं घर बार कहाँ कर पावा ॥ | घर काया[31] पुनि अन्त[32] परावा

होरे परेवरु पंखी जेहि बन मोर निबाहि ॥
खेल चला तेहि बन कहँ तुम अपने घर जाहि ॥

सूर्य्य १ छोड़ना २ हाथ ३ दुखी ४ बेक़रार ५ मुह ६ राख ७ मस्त हाथी ८ गुदड़ी ९ हाथ १० पकड़ना ११ पूरा होना १२ नामफ़क़ीर कामिल १३ बाला १४ कान १५ गरदन १६ सुमिरनी १७ चीते की खाल १८ खड़ाऊँ १९ सूरत २० लाल २१ कामिल २२ २३ दिल २४ दुख २५ नजूमी २६ पूरा २७ दीवाना २८ होशियार २९ बदन ३० ३१ आखिर ३२

चहुँ दिश[1] आन सो डौंड़ी फेरी ॥ भइ कटकाई[2] राजा केरी ॥
जानवन्त अहहि सकल[3] दरकाना[4] सांभर[5] लेहु दूर है जाना ॥
सिंहल दीप जाय सब चाहा ॥ मोल न पाव ब जहाँ बिसाहा ॥
सबनि बहै पुनि आपन साँठी[5] साँठी[6] बिन सो रहँ मुख माठी ॥
राजा चला साज कै योगू ॥ साजो बेग[7] चलै सब लोगू ॥
गर्व[8] जो चढ़ी तुरी[9] के पीठी ॥ अब भुइँ चलहु स्वर्ग[10] सो डीठी[11]
मंत्री[12] लीन्ह होहु संग लागू ॥ गुदर जाय सब हो यह आगू ॥

का निचिन्त[13] रे मनै अपनी चिन्ता[14] आछ ॥
लेह सजग[15] भा आगमन[16] पुनि पछतासन पाछ

बिनवै[17] रतन सेन की माया ॥ माथे छात पाट[18] नित[19] पाया ॥
वर्षहिं नवनिधि[20] लक्ष पियारी राज छाड़ि जन होहिं भिखारी
नित[21] चन्दन लागै जेहि देहा ॥ सो तन देखि भरब अब खेहा[22] ॥
सब दिन रहे करत तुम भोगू ॥ सो कैसे साधब तप योगू ॥
कैसें धूप सहब बिन छाहाँ ॥ कैसे नींद पड़ै भुइँ माहाँ ॥
कैसें ओढ़ब काँथर[23] कंथा ॥ कैसे पाय चलब भुइँ पंथा[24] ॥
कैसें सहब खनहि खन भूखा कैसें खाब करकटा[25] सूखा ॥

राज पाट[26] दर[27] पुरुष सब तुमहीं सो उजियार ॥
बैठि भोग रस माहिं के न चलतेहि अँधियार

मोहिं यह लोभ सुनावन माया काकर सुख काकर यह काया
जो नियान[28] तन होइ यह छारा[29] माटी पोष मरै को भारा ॥
का भूलौं यहि चन्दन चोवा बैरी जहाँ अंग के रोंवा ॥

चारों तरफ़ १ फ़ौज २ सब ३ अरकान दौलत ४ पूँजी ५-६ जल्द ७ ग़रूर ८ घोड़ा ९ आसमान १० निगाह ११ सलाह १२ ग़ाफ़िल १३ फ़िकिर १४ होशियार १५ पहिले १६ अरज़ करना १७ तख़्त १८ हमेशा १९ सब दुनियां की दौलत २० हमेशा २१ शाख २२-२९ गुदड़ी २३ एह २४ टुकड़ा रोटी २५ तख़्त २६ फ़ौज २७ आख़िर २८

हाथ पाँय श्रवण[1] औ आँखी ॥ ये सब भरहिं आय पुनि साखी[2]
सूति[3] सूति तन बोलहिं दोषा[4] कहो कहँ हो यह गति मोखा[5] ॥
जो भल होत राज औ भोगू ॥ गोपिचन्द[6] नहिं साधत योगू ॥
उन्हें सृष्टि[7] जो देख परेवा ॥ तजा[8] राज कजरी बन सेवा ॥

देखि अंत[9] अस होयहि गुरु दीन्ह उपदेश
सिंहल दीप जाब मैं माता तुम सों मोर अँदेश[10]

रोवहिं नागमती रनवासू ॥ कै तुम कंत[11] दीन्ह बनबासू
अब को हमहिं कोहि भोगनी हमहूँ साथ होयहिं योगनी
की हम लावहु आपन साथा ॥ की अब मारचलहु सें हाथा
तुम अस बिछुड़े पीव पिरीता जहवाँ राम तहा संग सीता ॥
जबलहि जिव संग छाँड़िन काया[12] कीरहौं सेव परवारहु[13] पाया ॥
भली पद्मिनी रूप अनूपा[14] हम ते कोइ न आँगर[15] रूपा ॥
भौंहें भली पुरुषन[16] की दीठी[17] जहँ जाना तहँ दीन्ह न पीठी ॥

दीन्ह अशीश सबै मिल तुम माथे नित[18] छात
राज करो चित्तौर गढ़ राखो पिय अहिवात

तुम तिरिया[19] मति हीन तुम्हारी मूरुख सोइ भता घर नारी ॥
राघव जो सीता संग लाई ॥ रावण हरी कौन सिधि[20] पाई
यह संसार स्वप्न जस हेरा[21] ॥ ॥ अंत[22] न आपन को कहि केरा
राजा भरथरिहिं नहिं सुनी अयानी[23] जेहि के घर सो रहसै रानी ॥
कुच[24] लीन्हें नरवा सहराई ॥ भा योगी कोउ संग न लाई ॥
योगी काहि भोग से काजू ॥ चहीन मेहरी चहै न राजू ॥

कान १ गवाही २ सूराख ३ पाप ४ नजात ५ नाम राजा ६ संसार ७ छोड़ना ८ आख़िर ९ सलाम १० खाविन्द ११ बदन १२ धोना १३ बेमिसाल १४ ख़ूबसूरत १५ मर्द १६ देखना १७ हमेशा १८ औरत १९ कामाल २० देखना २१ आख़िर २२ नादान २३ छाती की दंडी २४ ॥ + ॥

जूड़ि कर[1] कटा पै भीखहि चाहा | योगी तात[2] भात सों काहा ॥

कहा न मानी राजा तजी[3] सवाई[4] भीर ॥
चला छाँड़ि कै रोवत फिर के दीन्ह न धीर[5]

रोवत माता फिरै न बारा[6] ॥ | रतन चला जग[7] भा अँधियारा
बार[8] मोर जियावर[9] रता ॥ | सो लै चला सुआ[10] परबता ॥
रोवहिं रानी तजहिं[11] पराना | फोरहिं बरी[12] करहिं खरिहाना
चूरहिं गै अभरन[13] उर[14] हारू ॥ | अब का कहँ हम करब सिंगारू
जाकहँ कहीं रहसि के पीउ | सोई चला काकर यह जीव
मरी चहहिं पै मरै न पावहिं | उठै आग सब लोग बुझावहिं
घड़ी एक सुठ भयो अँडूरा[15] ॥ | पुनि पाछे बीता होय रूरा[16] ।

टूटि मने नव[6] मोती फूट मने दस[10] काँच ॥ ॥
लीन्ह समेट सबै आँभरन होय गा दुख कर नाँच

निकसा राजा सुन के पूरे[18] ॥ | छाँड़ि नगर मेंला होय दूरे ॥
राय[19] राँग सब भये बियोगी[20] | सोरह सहस[21] कुँवर भये योगी
माया मोह हरी सैं हाथा ॥ | देखि न बूझ नियान[22] न साथा
छाँड़हिं लोग कुटुम्ब सब कोऊ | भये निराश दुख सुख तज[23] दोऊ
सँवरहिं राजा सोइ अकेला[24] ॥ | जेहिरे पंथ[25] खेले होय चेला
नगर नगर औ गावहिं गावा ॥ | छाँड़ चला सब ठावहिं[26] ठावा
काकर गढ़ काकर मठ माया | ताकर सब जाकर जिव काया[27]

चला कटक[28] योगिन के करके गेरुवा भेष
कोस बीस[29] चारहुँ[30] दिश जानहुँ फूला टेस[31] ॥

ठंढ़ी रोटी का टुकड़ा १ गर्म २ छोड़ना ३ सब ४ धीरज ५ लड़का ६-८ दुनिया ९ ज़िन्दगी का सबब ९ तोता १० छोड़ना ११ चूड़ी १२ गरदन के ज़ेवर १३ छाती १४ शोर १५-१६ ज़ेवर १७ शोर १८ राजा के भाई १९ दुखी २० हज़ार २१ आखिर २२ छोड़ना २३ परमेश्वर २४ राह २५ जगह २६ बदन २७ फ़ौज २८ चारों तरफ़ २९ टेसू ३०

आगे सगुन सगुन[1] यहिं तका | दही मांझ रूपे[2] कर टका ॥
भरे कलश तरुनी[3] चलि आई | दही लिये ग्वालन गुहराई
मालिन आय मौर ले गाथे | खंजन[4] बैठ नाग के माथे ॥
दाहिन मिरग[5] आय गा धाये | प्रतीहार[6] बोला घर बाये ॥
बिरय[7] सवरिया दाहिन बोला | बाये दिसि[8] गीदर[9] नहिं डोला
बाये अकाशी[10] धूरे आये ॥ | लोबा[11] दरश आय देखराये
बाये कुररी[12] दाहिन कोचा[13] ॥ | पहुंची भुक्ति[14] जैस मन रोचा[15]

जा कहं सगुन होहिं अस औगवनै[16] जेहि आस
अष्टो[17] महा सिद्धि पंथहिं[18] जस कबि कहा ब्यास

भयो पयान[19] चला तब राजा | शंख नाद[20] योगिन कर बाजा
कहिन आज कुछ थोर पयाना[21] | काल्ह पयान[22] दूर है जाना ॥
वह मिलान[23] जो पहुंचै कोई | तब हम कहब पुरुष[24] भल सोई
है आगे परबत की बाटै[25] ॥ | बिषम[26] पहाड़ अगम[27] सठ घाटै
बिच बिच कोह नदी औ नारा | ठांवहिं[28] ठांव बैठि बट पारा[29] ॥
हनुमत[30] केर सुनत पुनि हांका | वहि को पार होय को थाका
अस मन जानि सभारहु आगू | अगवा[31] केर होहु पछलागू ॥

करहिं पयान[32] भोर उठि नितहिं[33] कोस दस जाहिं
पंथी[34] पंथा[35] जो चलहिं ते कित रहैं औ ठाहिं ॥

नजूमी १ रुपिया दही में रख के २ जवान औरत ३ ममोला ४ हिरन ५ तीतर ६ सांड़ ७ तरफ़ ८ सियार ९ चील्ह १० लोंबड़ी ११ कौवा १२ ढल्लू १३ रोज़ी १४ चाहना १५ जाना १६ कामिल १७ राह १८ कूच १९ शंख की आवाज़ २० कूच तथा मौत का दिन २१ कूच दूर तथा क़यामत का दिन २२ मिलना २३ जवांमर्द २४ राह २५ टेढ़ा २६ जहां कोई न पहुंच सके २७ जगह २८ राह लूटने वाले २९ बंदर ३० गुरू ३१ कूच ३२ हरोज़ ३३ राह चलने वाले ३४ राह ३५ ॥ ॥

करहु दृष्टि थिर होय बटाऊ ॥ आगू देखि धरहु भुइँ पाऊ ॥
योगि ओबट भुइँ परी भुलाय कीमरि पंथ वले न जाय ॥
पाँयन पहिर लेहु सब पँवरी काँट न चुभै न गड़ै अँकरोरी
परी आय अब बन खंड माहा डंडा कारन बीच निबाहा ॥
सघन ढाँख बन चहुँ दिश फूला बहु दुख मिलै वहाँ कर भूला
झाँखर जहाँ सु छाँड़हु पंथा ॥ हिलगा मकोय न फारहु कंथा
दहिने बिदर चँदेरी बाये ॥ वहि कह होब बाट दुइ ठाँये

एक बाँट गई सिंहल दूसर लंक समीप ॥
है आगे पंथ दोव नहि गवनब केहि दीप ॥

तत खन बोला सुआ सरेखा अगवा सोई पंथ जेहि देखा ॥
सो काउड़ै न जेहि तन पाखू लै सो पलो सहि बोलै शाखू
जस अंधा आँधी कर संगी ॥ पंथ न पाव होय सहलंगी ॥
सुनि मति काज चहसि जो साजा बीजा नगर बिजै गिर राजा ॥
पूछा जहाँ कुंड औ गोला ॥ तजि बायें अंध्यार खटोला ॥
दखिन दाहिने रहै तिलंगा उत्तर माँझ होय करहो कटंगा
माँझ रतन पुर सौंह दुवारा झार खंड वे बायें पहारा ॥

आगे बाउडी सो बायें देहि सु बाट ॥
दहिना वरत लाय के उत्तर समुद्र की घाट

निगाह १ क़ायम २ मुसाफ़िर ३ राह बतानेवाला ४ राह ५ खड़ाऊँ ६ जंगल ७ नामजगह ८ गुंजान ९ चारोंतरफ़ १० राह ११ गुदड़ी १२ नाममुल्क १३-१४ राह १५ जगह १६ राह १७ नाममुल्क तथा स्वर्ग १८ नाममुल्क तथा नर्क १९ बराबर २० राह २१ जाना २२ तोता होशियार २३ राह बतानेवाला २४ नाम दरख़्त २५ राह २६ झोला माराहुवा २७ सलाह २८ नाममुल्क २९ छोड़ना ३० नाममुकाम तथा योग की क्रिया ३१ ३२-३३ नाममुल्क तथा मुक़ाम मतलब ३४ नाममुल्क ३५ राह ३६ ॥ ॥

होत पयान[1] जाय[2] दिन केरा | मिरगारन[3] महिं कीन्ह बसेरा
कुश साँठर भइ सूरि सँपेती | करवँट[5] आय बनी भुइँ सेती
क्या मिली जस भूमि[6] गली जा | चलि दस कोस ओस तन भीजा
ठाँव[7] ठाँव सब सोवहिं चेला ॥ | राजा[8] जागै आप अकेला ॥
जेहि केहिये[9] प्रेम रंग जामा | का तेहि नींद भूख बिश्रामा[10]
बन अँध्यार रयनि[11] अँध्यारी | भादौं बरन भयो अति भारी
किंगरी[12] गहे हाथ बैरागी ॥ | पाँच तन्त[13] धुनि ओही लागी

नयन[14] लाग तेहि मारग[15] पद्मावत जेहि दीप
जैसे स्वाति बूँद कहँ बन चात्रिक[16] जल सीप

मासक[17] लाग चलत तेहि बाटा[18] | उतरे जाय समुद्र की घाटा ।
रतनसेन भा योगी यती ॥ | सुनि भेटे आवा गजपती[19] ॥
योगी आप कटक[20] सब चेला | कौन दीप कहँ जाहहि खेला[21]
भली आय सब माया[22] कीजै ॥ | पहुनाई[23] कहँ आय[24] सुदीजै ॥
सुनहु गजपती[25] उतर[26] हमारा | हम तुम एकै भाव निरारा ॥
सो तेहि कहँ जेहि महँ यह भावा | जो निराश[27] तेहि लाड़ नसावा[28] ॥
यही बहुत जो बोहित[29] पाऊँ ॥ | तुम ते सिंहल दीप सिधाऊँ

जहाँ मोहिं निज जाना कटक[30] हौं लिये बार[31]
जो रे जियौं तौ लै फिरौं मरौं तो वह की बार[32] ॥

कूच १ शाम के वक़्त २ जंगल तथा क़बरिस्तान ३ तोशक और लिहाफ़ ४ तकिया ५ ज़मीन ६ जगह ७ रतनसेन मुराद परमेश्वर ८ दिल ९ आराम १० रात ११ नाम बाजा १२ पाँच तार १३ आँख १४ राह १५ पपीहा १६ एक महीना १७ रास्ता १८ नाम राजा १९ फ़ौज २० जाना २१ मेहरबानी २२ ज़्याफ़त २३ हुक्म २४ नाम राजा २५ जवाब २६ नाउम्मेद २७ नुक़सान २८ नाव २९ फ़ौज ३० दरवाज़ा ३१-३२ ॥+॥

गजपति कही शीश बर माँगा । एतनी बोल न होइ है खाँगा ॥
यहि सब देउँ आन पै गढ़ी ॥ फूल सोई जो महेश्वर चढ़ी ॥
पै गुसाईं सो एक न बाती ॥ मारग कठिन जाब केहि भाँती
सात समुद्र असूझ अपारा । मारहिं मगर मच्छ घड़ियारा ॥
उठैहि लोर न जाय सँभारी ॥ भागहि कोइ निबहै ब्योपारी
तुम सुखया अपने घर राजा ॥ एते दुख जो सहो केहि काजा
सिंहल दीप जाय सो कोई ॥ हाथ लेहैं आपन जिव होई ॥

खारि क्षीर दधि उदधि सुरा जल पुनि किलकिलाकूत
को चढ़ि नाँघ समुद्र ये सातों है काकर अस पूत

गजपति यहि मन सकती सेवा । पै जेहि प्रेम कहा तेहि जीवा ॥
जो पहिले शिर दे पग धरिये ॥ मुये केर का मीच करीये ॥
सुख संकल्प दुख साँभर लीन्हा । तौ पयान सिंहल कहँ कीन्हा ॥
भँवर जानि पै कमल पिरीती । जेहि महँ बिथा प्रेम की बीती
औजें समुद्र प्रेम कर देखा ॥ तैं यहि समुद्र बूँद बर लेखा
सात समुद्र सत लीन्ह सँभारू । जो धर्ती का गरू पहारू ॥
जो पै जीव बाँध सत बेरा ॥ पर जिव जाय फिरै नहिं फेरा

रंग नाथ हौं जाकर हाथ वही के नाथ ॥
गहै नाथ सो खींचै फिरै न फेरे माथ ॥

प्रेम समुद्र जो अति अवगाहा । जहाँ न वार न पार न थाहा ॥
जो वह समुद्र गाह यहिं परे ॥ जो अवगाह हंस होइ तरे ॥

नाम राजा १ शिर २ महादेवजी ३ अरज़ करना ४ राह ५ मुशकिल ६ किसतरह ७ क़िस्मत ८ खारी ९ दूध १० दही ११ मीठा पानी १२ शराब १३ नामसमुद्र १४-१५ सख़्ती १६ क़दम १७ मौत १८ तोशा १९ कूच २० बराबर २१ खारी-मीठापानी-दही-दूध शराब-किलकिलाकूत ये सात समुद्र हैं २२ ज़मीन २३ पकड़ना २४ गहिरा २५-२६

हौं पद्मावत कर भिख मंगा ॥ दृष्टि न आव समुद्र औ गंगा
जेहि कारन गौ काँथर कंथा ॥ जहाँ सो मिलै जाउँ तेहि पंथा ॥
अब यह समुद्र परो होय मरा प्रेम मोर पानी के करा ॥
मर भा कोइ कतहूँ लै जाऊँ वह की पंथ कोऊ धर खाऊँ
अस मन जान समुद्र महँ पर्यो जो कोइ खाय बेगनि सतर्यो ।

स्वर्ग शीश धर धरती हिया सो प्रेम समुन्द्र ॥
नयन कौड़िया होय रही लैलै उठ तेहि बुन्द

कठिन बियोग योग दुख दाहू जन्म जरत हौं और न पाहू ॥
डर लज्या तहँ दोउ गँवानी ॥ देखै कछू न आग न पानी ॥
आग देखि वह आगे धावा ॥ पानि देखि वह सौंहिं धसावा
जस बावर न बुझाये बूझा ॥ कौन भाँति जाय का सूझा ।
मगर मच्छ डर मने न लेखा ॥ आपहिं चहौं पार भा देखा ॥
औ नहिं खाय वह सिंह सिंदूरा काढ़ै जाहि अधिक यह झूरा
काया माया सघन आथी ॥ जेहि जिव सौंपा सोई साथी ॥

जो कुछ दर्ब अहा संग दान दीन्ह संसार ॥
का जानी केहि की सत दई उतारै पार ॥॥

धन जीवन औ ताकर जिया ऊँच जगत महि जाकर दिया
दिया सो सब जप तप उपराहीं दिया बराबर कुछ जग नाहीं
एक दिया तें दस गुन लाहा ॥ दिया देखि सब को मुख जाहा
दिया करै आगे उजियारा ॥ जहाँ न दिया तहाँ अँधियारा

निगाह १ वास्ते २ गरदन ३ गुदड़ी और कंठा ४ राह ५ मानिन्द ६ रास्ता ७ जल्द ८ छूटजाना ९ आसमान १० शिर ११ ज़मीन १२ दिल १३ आंख १४ नामजानवर १५ मुशकिल १६ जुदाई १७ जलना १८ सामने १९ किस तरह २० शिरलाल २१ ज़्यादा २२ बदन २३ दुनियां दौलत २४ रूपिया २५ ईश्वर २६ ज़िन्दगानी २७ दुनियां २८-३० ऊपर २९ ॥-॥

दिया मंदिर[1] निपा[2] करै उजोरा | दिया नाहिं घर मूसहिं चोरा ॥
हातिम[3] करण[4] दिया जो सिखा | दिया रहा धर्मन महँ लिखा ॥
दिया सो काज दोहूँ जग आवा | यहाँ जो दिया वहाँ सब पावा

निरमल[5] पंथ[6] कीन्ह तेहि जेहि रे दिया कुछ हाथ
कुछ नहिं कोइ लै जाय ही दिया जाय पै साथ ॥

खंड ग्यारहवाँ बोहित खराड

सँत[7] न डोल देखा गजपती[8] ॥ | राजा दत्त[9] सत[10] दोनों सती ॥
आपन नाहिं कया[11] पी कंथा ॥ | जीव दीन्ह अगमन[12] तेहि पंथा[13]
निश्चै चला भर्म डर खोय ॥ | साहस[14] जहाँ सिद्धि[15] तहँ होय ॥
निश्चै चला छाँड़ कै राजू ॥ | बोहित[16] दीन्ह दीन्ह सब साजू[17]
चढ़ा बेग[18] औ बोहित[19] पेली ॥ | धन वह पुरुष[20] प्रेम पंथ[21] खेली
प्रेम पंथ[22] जो पहुँचै पारा ॥ | बहुरे[23] न आय मिलै यहि छोरा[24]
तेहि पावा उत्तम[25] कैलाशू ॥ | जहाँ न मीचे[26] सदा सुख बासू ॥

यहि जीवन की आशा का जैसे स्वप्न तिल आध
मुहम्मद जीतहि जो मुये ते पूरुष[27] सिधि साध ॥

जस दिन रयन[28] चलै गज[29] भाँती | बोहित[30] चली समुद्र की पाँती
धावहिं बोहित[31] मन उपराही ॥ | सहस[32] कोस एक पल महँ जाही
समुद्र अपार स्वर्ग[33] जनु लागा | स्वर्ग[34] न खोल[35] गिने बैरागा ॥
तँतरवन[36] एक चाल्ह[37] देखराये | जनु धौला[38] गिरि परबत आये ॥
उठै हिलोर जो चाल्ह[39] निराजे[40] | लहर अकाश लागि भुइँ बाजे

मकान १ रात २ नाम सखी ३-४ पाक साफ़ ५ राह ६ ईमान ७ नाम राजा ८ सखावत ९ सचाई १० बदन ११ पहिले १२ राह १३ बहादुर १४ कामिल १५ नाव १६ सामान १७ जल्द १८ जहाज़ १९ मर्द २० राह २१-२२ लौटना २३ मीटी २४ बैकुण्ठ २५ मौत २६ मर्द २७ रात २८ हाथी २९ नाव ३०-३१ हज़ार ३२ आसमान ३३ ऊँचा ३४ नीचा ३५ यकायक ३६ नाम जानवर ३७-३९ नाम पहाड़ ३८ हिलना ४०

राजा सितें कुँवर सब कहैं ॥ अस अस मच्छ समुद्र महँ अहैं
तेहिरे पंथ[1] हम चाहत गवना[2] होहु सजोत[3] बहुर[4] नहिं अवना

गुरु हमार तुम राजा हम चेला तुम नाथ ॥
जहाँ पाउँ गुरु राखै चेला राखै माथ ॥

केवट[5] हँसे सुनत को बंजा[6] ॥ समुद्र न जानि कुवाँ कर मंजा[7]
यहि तो चाल्ह[8] न लागै कोहू का कहियो जब देखब रोहू
सो अबहीं तुम देखे नाहीं ॥ जेहि मुख ऐसे सहस[9] समाहीं
राज[10] पंख तेहि पर मँडराहीं सहस[11] कोस तिन की परछाहीं
तेवै मच्छ ठौर गहि[12] लेहीं ॥ सीवक[13] मुख चारा ले देहीं ॥
गरजें गगन[14] पंख जो खोलहिं डोले समुद्र डहन जो डोलहिं
तहाँ[15] न सूर्य्य न चान्द असूझा चढ़ै सोई जेहि अगमन[16] बूझा

दस महँ इक जाय कोइ कर्म धर्म सत नेम ॥
बोहित[17] पार होय जो तौ हो कुशल[18] औ खेम ॥

बात कहत भइ देश गुहारी ॥ केवटहि[19] चाल्ह[20] समुद्र महँ मारी
हस्ती[21] लाय सिष्ट[22] सब ढीला ॥ दौड़ आय इक चालहि[23] लीला ॥
केवट[24] लागि लागि सब बेली[25] ॥ फिरै न चाल्ह[26] जाय बहि चली
बोहित[27] सहस[28] जाहिं चहुँ ओरा ॥ होय कलोल[29] जाहिं तरि[30] बोरा ॥
सुनि के आप चढ़ा सै राजा ॥ औ सब लोग देश मिल बाजा[32] ॥
भाल बास खोड़े[33] बहु परहीं ॥ जान परवाल[34] बाज के चढ़हीं ॥
चारा लील जो माछर बाझी ॥ कहाँ जाय जो जाकर खाझी[35] ॥

राह १ जाना २ होशियार ३ लौटना ४ मल्लाह ५ बातचीत ६ मेढक ७ नामजानवर ८ हज़ार ९-११-२८ सीमुर्ग १० पकड़ना १२ बच्चा १३ आसमान १४ तथा परमेश्वर की राह १५ दूर अंदेशी १६ नाव १७ खैरियत १८ नाखुदा अर्थात मल्लाह १९-२४ नामजानवर २०-२३-२६ हाथी २१ ज़ंजीर २२ ज़बरदस्त २५ नाव २७ शेर २९ पानी के नीचे ३० फ़ौज ३१ पहुँचना ३२ तलवार ३३ नाखुजानना ३४ खुराक ३५

माछर कर भूखहि हृदय तेहि साधे बिष बान
सबहिं पहुँच कै मारा चालहि तजा परान॥

जस धौलागिरि परबत होई॥ तेही भाँति उतरान्यो सोई॥
सबै देश मिलि तैरहिं आना॥ लिये कुल्हाड़ी लोग जहाना
जनु परबत कहँ लागहि चाँटी लेगये मास रहीं सब काँटी
माँजर परी कोस दस बेंड़ी॥ माँजरि कस जस स्वेत बरेंड़ी॥
नयन सो जानि कोटि की पँवरे। कित अस गहे फिरे तेहि भँवरे
रतनसेन से संघी कहैं॥ अस अस मच्छ समुद्र महँ अहैं
राजा तुम चाहो तहिं गवना होहि संयोग बहुरि नहिं अवना

तुम राजा औ गुरु हम सेवक औ चेर॥
कीन्ह चहैं सब आयसु अब गवनी तहिं फेर

राजै कहा कीन्ह मो प्रेमा॥ जहाँ प्रेम तहँ कुशल क्षेमा॥
तुम खेवो जो खेवहि पारहिं जैसे आप तरहिं मोहिं तारहिं
मोहिं कुशल कर शोचन ओता कुशल होत जो जन्म न होता॥
धर्ती स्वर्ग जाँट पर दोऊ॥ जो यहि बिच जिव राखन कोऊ॥
हौं अब कुशल एक पै माँगौं॥ प्रेम पंथ सत बाँधि न खाँगौं॥
जो सत हिये तो पंथहि दिया समुद्र न डरै देखि मरजिया॥
तहँ लग हेरौं समुद्र ढिढोरौं जहँ लग रतन पदारथ जोरौं॥

सप्त पताल खोज क काढौं वेद गरंथ॥
सात समुद्र चढ़ि धावौं पद्मावत जेहि पंथ॥

पेट १ ज़हर २ नाम जानवर ३ छोड़ना ४ नाम पहाड़ ५ चूँटी ६ सफ़ेद ७ आँख ८ क़िले का दरवाज़ा ९ पकड़ना १० जाना ११ होशियार १२ लौटना १३ गुलाम १४ हुक्म १५ जाना १६ ख़ैरियत १७ १८ १९ ज़मीन २० आसमान २१ चक्की कापिल २२ राह २३-२६ कमी २४ दिल २५ देखना २७ लाल जवाहिर तथा पद्मावत २८ सात पाताल २९ पोथी ३० राह ३१॥ ✝॥

खण्ड बारहवाँ सात समुद्र खण्ड

सायर[1] तरे हिये[2] सत पूरा ॥ जोजी सत कायर[3] पुनि सूरा ॥
तहँ सब बोहित[4] पूर चलाई ॥ जहँ सत पवन पंख जनु लाई
सत साथी सत गुरु हम[5] वारू सत गहीले लावे पारू ॥
सती नाक सब आगू पाछू ॥ जहँ जहँ मगर मच्छ औ काछू
उठै लहर जनु उठै पहाड़ा ॥ चढ़ै स्वर्ग[6] औ परै पतारा ॥
डोलहिं बोहित[7] लहरें खाई ॥ सहस[10] कोस इक पल महँ जाई
राजैं सो सत हिरदय[11] बाँधा ॥ जेहि सत टेक कर गुर काँधा

खारि समुद्र सब नाँघा आये समुद्र जहँ क्षीर[12] ।
मिले समुद्र वै सातौं बेहर[13] बेहर नीर[14] ॥

क्षीर समुद्र का बरनौं[15] नीरू ॥ स्वेत[16] स्वरूप पियत जस क्षीरू[17]
उलटहिं माणिक मोती हीरा दर्ब देखि मन होय न धीरा
मनो अन चाह दर्ब औ भोगू ॥ पंथ[18] भुलाय बिनाशै योगू ॥
योगी मनहिं उही रिस मारहिं दर्ब हाथ कै समुद्र पयारहिं[19] ॥
दर्ब लेइ जो इस्थिर[20] राजा ॥ जो योगी तेहि के केहि काजा
पंथी[21] पंथ[22] दर्ब रिपु होई ॥ ठग बटपार[23] चोर सग सोई ॥
पंथी[24] सोई दर्ब[25] सो रूसे ॥ दर्ब समेट बहुत अस मूसे ॥

क्षीर समुद्र सब नाँघा आये समुद्र दधि[26] माहिं ॥
जो है पंथ[27] के बावर[28] ना तेहिं धूप न छाहिं ॥

दधि समुद्र देखत तस दहा[29] ॥ प्रेमक लुब्ध[30] दग्ध[31] पै सहा ॥

बहादुर १ दिल २ सचाई ३ नामर्द ४ नाव ५ हवा ६ मददगार ७ आसमान ८ जहाज़ ९ हज़ार १० दिल ११ दूध १२ अलग १३ पानी १४ तारीफ़ १५ सफ़ेद १६ दूध १७ राह १८ तैरना १९ क़ायम २० मुसाफ़िर २१ रास्ता २२ राहलूटने वाले २३ राह चलने वाले २४ अर्थात मालवा दौलत पास अपने न राख २५ दही २६ राह २७ दीवाने २८ जलता हुवा २९ आशिक़ ३० आँच ३१ ॥ ९ ॥

प्रेम जो डाढ़ा[1] धन वह जीव ॥ दधि[2] जमाय मथि काढ़ै घीव ॥
दधि[3] इक बूंद जामि सब क्षीरू[4] कांजी[5] बूंद बिनसि होय नीरू[6]
स्वांस डाढ़[7] मन मथनी गाढ़ी ॥ हिये[8] ज्योति बिन फूटि न साढ़ी[9]
जेहि जिय प्रेम चंदन तेहि आगे प्रेम भवन[10] फिर डर नहिं भागे
प्रेम की आग जरै जो कोय ॥ ताकर दुख न अमित्थ्या[11] होय
जो जानहि सत आपहिं जारा नास्त[12] हिये[13] सत करे न पारा

दधि[14] समुद्र पुनि पार भे प्रेमहि कहां सँभार ॥
भावै पानी शिर परै भादे परहिं अगार ॥

आय उदधि[15] जल समुद्र अपारा धर्ती[16] स्वर्ग[17] जरै तेहि झारा ॥
आग जो उपनी[18] ओही समुन्दा लंका जरी वही एक बुन्दा ॥
बिरह जो उपना[19] ओही काढ़ा खन न बुझाय जाय तन बाढ़ा
जेहि सो बिरह तेहि आग न डीठी[20] सौहिं[21] जरै फिर देहि न पीठी ॥
जग[22] महं कठिन[23] खड्ग[24] की धारा तेहि ते अधिक[25] बिरह की झारा
अगम[26] पंथ[27] जो ऐस न होई ॥ साधु कहैं पावै सब कोई ॥
तेहि समुद्र महं राजा परा ॥ जरा चहै पै रोवं न जरा ॥

तलफै तेल कराह जिमि[28] इमि[29] तलफै सब नीर[30] ॥
वहि जो मलय[31] गिरि प्रेम का सुबुन्द समुद्र शरीर

सुरा[32] समुद्र पुनि राजा आवा महुवा मधु[33] छाती देखरावा
जो तेहि पिये सो भांवर लेय शीश[34] फिरै पंथ[35] पैग[36] न देय ॥

अवटा हुवा १ दही २-३ दूध ४ खटाई ५ पानी ६ रस्सी ७ दिल ८ बालाई ९ मकान १० खराब ११ कमहिम्मत १२ दिल १३ दही १४ नामसमुद्र १५ ज़मीन १६ आसमान १७ पैदाहोना १८-१९ देखना २० सामने २१ दुनियां २२ मुशकिल २३ तलवार २४ ज़्यादा २५ जहां कोई न पहुंच सकै २६ राह २७ जिसतरह २८ इसतरह २९ पानी ३० चन्दन ३१ शराब ३२-३३ शिर ३४ राह ३५ क़दम ३६ ॥ ॥

प्रेम सुरा जेहि के जिय माहां | किंत बैठे महुवा की छाहां
गुड़ की पास दारु बरु रसा | बैरी बेर मार मन गाँसा ॥ ॥
बिरहिन दूध कींन्ह तन भाठे | हाड़ जराय दीन्ह जस काठे ॥
नयन नीर सों पोतै कया ॥ | तस मधु चुवै बरै जस दिया
बिरह सुरा सो भूजै मासू ॥ | गिर गिर पड़ै रकत के आसू ॥

मुहम्मद जो प्रेम का हिये दीप तेहि रात्र ॥
पूनिउँ न देइ पैतु राजा तब लगा चाखन बात्र ॥

पुनि किलकिला समुद्र महँ आई | गाधि न जेरवत डर खाई ॥ ॥
भा किलकिल असउँठे हिलोरा | जनु अकाश टूटे चहुँ ओरा ॥
उठैं लहर परबत की नाईं ॥ | फिर आवैं जोजन लख ताईं ॥
धर्ती सेत स्वर्ग लहि बाढ़ा ॥ | सकल समुद्र जानो भा ठाढ़ा
नीर होय तरि ऊपर सोई ॥ | महा अरम्भ समुद्र महँ होई ॥
फिरत नीर योजन लख ताका | जैसे फिरै कुम्हार का चाका
भा परलो नेराना जबहीं ॥ | मरै सो ताकहँ परलो तबहीं ॥

गये औसान सबन के देखत समुद्र की बाढ़ ॥
नेरि होत जनु लीलै रहा नयन अस काढ़ ॥

हीरामन राजा सों बोला ॥ | यही समुद्र आय सेतु डोला ॥
सिंहल दीप जो नाहिं निबाहू ॥ | यही ठाउँ साकर सब काहू ॥
यहि किलकिल अस समुद्र गँभीरू | जेहि गुन होय सो पावै तीरू ॥
यही समुद्र पथ मंझ धारा ॥ | खाँड़े की अस रेख हजारा ॥

१ राव २ क्योंकर ३ अंगूर ३ बेर नाम मेवा फ़सली ४ लेना ५ गमे ६ भट्ठी ७ आव ८ आपूरे बदन १० पुराव ११ सीरव १२ खून १३ दिल १४ शिर १५ पांखी १६ नाम समुद्र १७ आसमान १८ सब १९ पानी २० पूरा २१ चालीस कोस २२ क़यामत २३-२४ हवास २५ आव २६ नाम नौता २७ बदहवास २८ जगह २९ मुँह किरख ३० नाम समुद्र ३१ गहरा ३२ किनारा ३३ एक ३४ धार ३५

तीस सहस कोसन की बाटा[1] | अस सांकर चलिस कैन चाँटा
खाँडे[2] चाहि[3] पैन पैनाई ॥ | बार[4] चाहि पातर पतराई ॥
वही पंथ[5] सब काहू जाना | होय दुसरे बिश्वास निदाना[6]

मरन जियन यहि पंथहि येही आशी निराश[7] ॥
पड़ा सो गयो पतालहि तरा सो गा कैलाश[10] ॥

राजै दीन्ह कटक[11] कहँ बीरा ॥ | सपुरुष[12] होहु करहु मन धीरा
ठाकुर जेहिक शूर[13] भा कोई ॥ | कटक शूर[14] पुनि आपहिँ होई
जौ लहि सती न जिय सत बाँधा | तौ लहि देइ कहार न काँधा ॥
प्रेम समुद्र महँ बाँधा बेरा ॥ | यहि सब समुद्र बुन्द जेहि केरा
नाहीं स्वर्ग[15] न चाहौं राजू ॥ | ना मोहिँ नरक सिते कुछ काजू
चाहौं वह कर दरशन पावा ॥ | जेहि मो आन प्रेम पंथ[16] लावा ॥
काठ काहि गाढ़ काढ़ीला ॥ | बूड़ न समुद्र मगर नहिँ लीला ॥

कान्ह[17] समुद्र धस लीन्हेंसि भा पाछे सब कोय
कोइ काहू न सँभारे आपन आपन होय ॥

कोइ बोहित[18] जस पवन[19] उड़ाहीँ | कोई चमक बीज[20] पर जाहीँ ॥
कोई भल जस धाव तुषारू[21] ॥ | कोई जैस बैल गरियारू[22] ॥
कोई हरू[23] जानि रथ हाँका ॥ | कोई गरू पहाड़ भा थाका ॥
कोई रेंगहिँ जानहु चाँटी[24] ॥ | कोई टूटि होहिँ सर माटी ॥
कोई खाय पवन[25] कर झोला ॥ | कोई गिरहिँ पात ज्यों डोला ॥
कोई परहिँ भँवर जल माहीँ ॥ | फिरत रहहिँ कोइ दिये न बाहीँ
राजा कर भा अगम[26] न खेवा ॥ | खेवक[27] आगे सुवा परेवा ॥

राह १-५-१६ तलवार २ ज़्यादा ३ पानी ४ नादान ६ रास्ता ७ उम्मेद ८ नाउम्मेद ९ नाम बैकुण्ठ १० फ़ौज ११ कायम १२ बहादुर १३-१६ बैकुण्ठ १५ श्री कृष्णचन्द्र जी १७ नाव १८ हवा १९ बिजुली २० घोड़ा २१ भारी २२ हलकी २३ चूंटी २४ हवा २५ आगे २६ मल्लाह २७ ॥ ✣ ॥

कोइ दिन मिलासवैं कोइ आवा पकु रात ॥
जाकर हुत जसमाजू सोउ सराहेहि भांत ॥

सतें समुद्र मानसर आये ॥ सतजो कौन्ह महेसहि साधि पाये
दीठि मानसर रूप सुहावा ॥ हिये हुलास पुरइनि होय छावा
भा अंधियार रैन ससि छूटी ॥ भा भिनसार किरन रवि फूटी ॥
बसे बसन्त सबै सत्थी बोले ॥ अन्धजो अहे नयन विधि खोले
कमल विकस मनसवेहि सी देही ॥ भँवर दरश होय होय रस लेहीं
हंसहि हंस ओ करहि कुरेरा ॥ चुनहि रतन मुक्ता हल हेरा ॥
जो अस आव साधि तप योगू ॥ पूजी आस मानरस भोगू ॥

भँवर जो मन्सा मानसर लीन्ह कमल रस आय
घुन जो हिये वन केसका कर काढत सरवाय

रंउ तेरहवाँ मात समुद्र पार भा सिंहल दीप रवराउ ॥

पूछा राजे कहु गुरु सुवा ॥ जनजनो आजु कहाँ दिन उवा
पवन बास पूँजी तस लेले आवा ॥ कयो दहन चन्दन जनु लावा
कबहुँ न ऐसो जुड़ान पौरी रु ॥ पड़ा अगिन मह जानहु नीरू ॥
निकसत आव किरन रवि बेरवा तिमिर गई निरमल जग देरवा
उठेउ धन्य सब जानहु आगी ॥ चमके बीज गगन पर लागी
तेहि ऊपर जनु पूरनि परकासा ओ सो रंग चीचहु भयो गिरासा

सामान १ नाम तालाब जिसमें हंस रहते हैं २-४ हजार तरह की आराम ३ दिल ५ खुश ६ कमल ७ रात ८ सियाही ९ सूर्य १०-२८ वाह वाह ११ आंख १२ ईश्वर १३ खिलना १४-१५ कुलेल करना १६ जवाहिर जिसकी पैदाइश खान में होती है १७ मोती १८ हिम्मत बांधना १९ नाम तालाब २० दिलेरी करना २१ हवा २२ ठंढी २३ चंदन २४-२१ जलना २५ पानी २७ अंधियारा २८ वाह वाह साफ़ ३० दुनियां ३१ बिजुली ३२ आसमान ३३ चान्द ३४ गोलाई ३५ छोटे नखत ३६ ॥ ८ ॥

और नखत चहुं दिश[1] उजियारी | ठावहिं ठावँ दीप अस बारी ॥

और दखिन दिश नेरें कंचन[3] मेरु[4] दिखाउ ॥
जैसे बसंत ऋतु आवे तैसि बास जग[5] आउ ॥

तुइँ राजा जस बिक्रम[6] आदी ॥ | तुइँ हरिचन्द[7] बैन[8] सत बादी ॥
गोपिचन्द[9] तुइँ जीता योगा ॥ | औ भरथरी[10] न पूज बियोगा[11] ॥
गोरख[12] सिद्धि दीन्ह तुहि हाथू | तारी गुरु मुछन्दर[13] नाथू ॥
जीति प्रेम तुइँ भूमि[14] अकाशू | दृष्टि[15] परा सिंहल कैलाशू ॥
वैजो मेघ गढ़[16] लागि अकासा ॥ | बजरी[17] कटी कोटि[18] चहुँ पासा
और नखत वेहि के चहुं पासा ॥ | सब रानिन की अहें उडासा[19] ॥
तेहि पर शशि[20] जोग चंह चहि[21] भरा | राज मंदिर सोने नग जरा ॥

गंगन[22] सरोवर[23] सहस[24] कमल कुमद[25] तराई[26] पास
तुइँ रबि[27] उवा भंवर होय पवन[28] मिलाले बास

सो गढ़ देखि गंगन[29] ते ऊंचा | नयन[30] देखि कर ज्ञान न पहुंचा
बिजरी[31] चक्र फिरें चहुँ फेरे ॥ | औ जम[32] कात फिरहिं यम[33] घेरे
धाय[34] जो बाजा[35] किय मन साधा ॥ | मारा चक्र भयो दुइ आधा ॥
चांद सूर्य्य औ नखत तराई ॥ | तेहि डर अंतरिक्ष[36] फिरें सबाई[37] ॥
पवन जाय तहँ पहुँचा चहा ॥ | मारा तैसो लोटि भुइँ रहा ॥
अगिन उठै जरि बुझे नियाना[38] | धुवां उठा उठि बीच मिलाना
पानि उठा उठि जाय न छुवा ॥ | फिरा रोय आय भुइँ चुवा ॥

चारों तरफ़ १ हरजगह २ सोना ३ नाम पहाड़ ४ दुनियां ५ राजा बिक्रमाजीत ६ नाम राजा ७ सच बोलने वाला ८ नाम राजा ९-१० दुखी ११ नाम योगी १२ १३ ज़मीन १४ निगाह १५ क़िला १६-१८ बुर्ज १७ महल १९ चांद २० छोटे नखत २१ आसमान २२ तालाब २३ हज़ार २४ कोकाबेली २५ नखत २६ सूर्य्य २७ हवा २८ आसमान २९ आंख ३० बिजुली ३१ गेंद ३२ यमराज ३३ दौड़ना ३४ पहुंचना ३५ बीचो बीच ३६ सब ३७ आख़िर ३८ ॥+॥

रावन चहा सौंहि[1] के हेरों[2] उतर दशो गये माथ
शंकर धरा ललाट[3] भुइँ और को योगी नाथ ॥

तहां देख पद्मावत रामा ॥ भँवर न जाय न परवै[4] नामा ॥
अब शिय[5] एक देउं तुहि योगी पहिले दरशन होय तो भोगी
कंचन[6] मेरु दिखावे जहाँ ॥ महादेव कर मंडफ तहाँ ॥
वह खरंवड[7] जस परबत मेरू[8] ॥ मेरुहि[9] लाग होय तस फेरू ॥
माघ मास पाछल पख लागें श्री पंचमी होय यहि आगें ॥
उघरै महादेव कर बारू[10] ॥ पूजन जाय सकल[11] संसारू ॥
पद्मावत पुनि पूजन आई ॥ ह्वै है वह दिन दृष्टि[12] मिलाई ॥

तुम गवनो[13] वह मंडफ कह हौं पद्मावत पास ॥
पूजे आय बसंत जो पूजे मन की आस ॥

राजैं कहा दरश जो पाऊं ॥ पर्बत काहि गगन[14] कहं धाऊं
जेहि परबत पर दरशन लीन्हा शिर सों चढ़ो पाँय का कीन्हा ॥
मोहिं सो भावै ऊंचे ठाऊँ[15] ॥ ऊंचे लेवों प्रीतम नाऊं ॥
पुरुष[16] चाहिये ऊंच हियाऊँ[17] दिन दिन ऊंचे राखे पाँऊ ॥
सदा ऊंच पैसे ये बारू[18] ॥ ऊंचे से कीजै ब्योहारू ॥
ऊंचे चढ़ै ऊंच खंड सूझा ॥ ऊंचे पास ऊंच मति बूझा ॥
ऊंच संग संगत नित[19] कीजे ॥ ऊंचे लाय जीव बलि[20] दीजे ॥

दिन दिन ऊंच होय सो जेहि ऊंचे पर जाव ॥
ऊंच चढ़े जो खसि पड़े ऊंच न छाड़े काव

नीच संग नित[21] होय निचाई ॥ जैसे हंस काग की नाई ॥
नीच सेक बहुँ न होय भलाई ॥ नीचहि सों पर होय मुड़ाई[22] ॥

सामने १ देखना २ शिर ३ उड़ने वाले जानवर ४ सलाह ५ सोने का पहाड़ ६-८-९ बीहड़ ७ दरवाज़ा १० सब ११ दीदार १२ जाना १३ आसमान १४ जगह १५ मर्द १६ हिम्मत १७ दरवाज़ा १८ हमेशा १९-२१ कुर्बान २१ गुमनामी २२

नीच न कबहूं जिय महँ तोके ॥ नीच नहीं कबहूँ मुख भाये
नीच न कबहूं आवे काजा ॥ नीचहि अहै न एको लाजा ॥
नीचे का संग कबहुं न कीजे ॥ नीचे पंथ पाउं नहिं दीजे ॥
नीचे नहिं कीजे ब्योहारू ॥ नीच न कबहूं दीजे भारू ॥
नीचे केर न कीजे साथा ॥ नीच गहे कुछ आव न हाथा

होय नीच नहिं कबहूं जेहि ऊंचे मन भाव ॥
नीच ऊंचते हँसी नीचे केर स्वभाव ॥ ॥

हीरामन दे बचा कहानी ॥ चला जहां पद्मावत रानी ॥
राजा चला सँवरि सो लता ॥ परबत कहँ जो चला परबता
का परबत चढ़ि देखै राजा ॥ ऊंच मंडफ़ सोने सब साँजा
अमृत फर सब लागि अपूरे ॥ औ तहँ लागि सजीवन मूरे ॥
चौमुख मंडफ़ चहूँ केवारा ॥ बैठे देवता चहूँ दुवारा ॥
भीतर मंडफ़ चार खम्भ लागे ॥ जेहि वे छुवे पाप तेहि भागे ॥
शंख घंट नित बाजहिं सोई ॥ औ बहु होम जाप तहँ होई ॥

महादेव कर मंडफ़ सकल यात्रा आव ॥
जस इच्छा मन जेहि की सो तैसो फल पाव ॥

खराड चौदह बांगवन मंडफ खराड राजा रतनसेन

राजा बावर बिरह बियोगी ॥ चेला सहस तीस संग योगी ॥
पद्मावत की दरशन आशा ॥ दंडवत कीन्ह मंडफ चहुं पासा
पूर्ब द्वार होय के शिर नावा ॥ नावत शीश देव पुनि आवा
नमो नमो नारायण देवा ॥ का मैं योग सकों के सेवा ॥
तुइं दयालु सबके उपराहीं ॥ सेवा केर आश तुहि नाहीं ॥

ख़याल करना १ मुंहसे बोलना २ राह ३ बोझा ४ पकड़ना ५ नाम तोता ६ कौल ७ बन ८ तोता ९ सामान १० नाम बूटी ११ चार १२ हमेशा १३ सब १४ दुखी १५ हज़ार १६ दरवाज़ा १७ शिर १८ ख़िदमत १९ दया करनेवाला २० ऊपर २१ उम्मेद २२

ना मोहिं गुन[1] न जीभ रस बाता | तुइं दया[2] लु गुन[3] निरगुन[4] दाता
पुरवहु मोर दरश की आशा ॥ | हौं मारग[5] जो पारौं स्वासा ॥

तेहि बिधि बिनय[6] न जान्यो जेहि बिधि अस्तुति तोर
कर सुदृष्टि[7] औ कृपा इच्छा पूजै मोर ॥ ॥

कै अस्तुति जो बहुत मनावा ॥ | शब्दा[8] कोटि मडफ[9] महँ आवा
मानुष प्रेम भयो बैकुण्ठी ॥ | नाहत काहि छार[10] एक मूठी ॥
प्रेमहि माहिं बिरह रस रसा ॥ | प्रेम के घर मधु[11] अमृत बसा ॥
नष्ट[12] धाय जो मरै तो काहा ॥ | सत जो करै बैठि तेहि लाहा[13] ॥
एक बार जो मन दै सेवा ॥ ॥ | सेवहि फल प्रसन्न ह्वै देवा ॥
सुनि कै शब्द[14] मडफ झंकारा | बैठो आय पुरब के द्वारा ॥
पिंड[15] चढ़ाय छार[16] चित आंटी | माटी होय अंत जो माटी ॥

माटी मोल न कछु लहै औ माटी सब मोल ॥
दृष्टि[17] जो माटी सो करै माटी होय अमोल ॥

बैठि सिंह छाला होय तपा ॥ | पद्मावत पद्मावत जपा ॥
दृष्टि[18] समाधि वही सों लागी | जेहि दरशन कारन[19] बैरागी ॥
किंगरी गहे[20] बजावे झूरी ॥ | भोर सांझ सुनि के नित[21] पूरी ॥
कथा[22] जरै अगिन जनु लाये ॥ | बिरह ढेढोर[23] जरत न बुझाये
नयन[24] राति निशि[25] मारग[26] जागे ॥ | चख[27] चकोर जानु शशि[28] लागे
कुण्डल गहे[29] शीश[30] भुइं लावा | पांवर[31] होउं जहां वै पावा ॥
जटा छोर के बारे[32] बहारों ॥ | जेहि पंथ[33] आव शीश तहँ वारों[34]

हुनर १ दया करने वाला २ दाना ३ नादान ४ अर्थात् उसी राह का दम बदम ढूंढ़ने वाला हूं ५ तारीफ़ ६ निगाह अच्छी ७ आवाज़ ८ माटी ९ शराब १० बदराह ११ फ़ायदा १२ खुश १३ आवाज़ १४ बदन १५ बिभूत १६ निगाह १७-१८ वास्ते १९ पकड़ना २०-२९ हररोज़ २१ गदड़ी २२ जंगल २३ आंख लाल २४ रात २५ राह २६ आंख २७ चांद २८ शिर ३०-३४ खड़ाऊं ३१ दरवाज़ा ३२ राह ३३ न्योछावर ३४

चारहु[1] चक्र फिरे मन खोजत डंड[2] न रहूं थिर[3] बार ॥
होय के भस्म पवन[4] संग धाऊं जहां सो प्रान अधार

पद्मावत तहं योग[5] संयोगा ॥ परी प्रेम बश गहे[6] बियोगा[7] ॥
नींद न परी रयन[8] जो आवे ॥ सेज केवांच जानु कोइ लावे ॥
दहै[9] चन्द औ चन्दन चीरू[10] ॥ दग्ध[11] करै तन बिरह गंभीरू[12]
कल्प समान[13] रयन ही बाढ़ी ॥ तिल[14] तिल मरु युग युग पर गाढ़ी
गहे[15] बीन मग[16] रयन बिहाये[17] ॥ शशि[18] बाहन नित[19] रहै उनाये ॥
पुनि धुन[20] संग औरही लागे ॥ ऐसी बिथा रयन सब जागे ॥
कहां सो भंवर कमल रस लेवा आय परी होय घरन[21] परेवा ॥

सो धन[22] बिरह पतंग भइ जरा चहै तेहि दीप ॥
कंत[23] न आव भृंग होय को चन्दन तन लीप

परी बिरह बन जानौ घेरी ॥ अगम[24] असूझ जहां लग हेरी[25]
चतुर दिशा चितवे जनु भूले ॥ सो बन कौन जो मालति फूले
कमल भँवर[26] ओही बन पावे को मिलाय तन तपन बुझावे
अंग अंग अस कमल शरीरा ॥ हिय[26] भा पियर प्रेम की पीरा ॥
चही दरश रबि[27] कीन्ह बिकासू[28] भंवर दृष्टि[29] मन लाग अकासू ॥
पूंछे धाय[30] बारि[31] कहु बाता ॥ तुइं जस कमल करी रंग राता[32]
केसर[33] बरन रंग भा तोरा ॥ मानहुं मनहि भयो कुछ फोरा

पवन न पावै संचरी भँवर तेहों नहिं बैठि ॥
भूल कुरंगिन[34] कस भई जानु सिंह[35] तुइ डीठ ॥

चारों तरफ़ १ घड़ी २ क़ायम ३ हवा ४ अर्थात् फ़क़ीरी का हाल ५ लेना ६ दुख ७ रात ८ जलना ९-११ कपड़ा १० भारी १२ बराबर १३ तिल के बराबर कम और क़रन से ज़्यादा १४ पकड़ना १५ शायद १६ आख़िर १७ हिरन चाँद के रथ का १८ हमेशा १९ आवाज़ २० कबूतर २१ पद्मावत २२ ख़ाविन्द २३ मुश्किल २४ देखना २५ दिल २६ सूर्य्य २७ खिलना २८ निगाह २९ लौंडी ३० लड़की ३१ लाल ३२ पीला ३३ हिरनी ३४ शेर ३५ ॥

धाय सिंह[6] धर खात्यों भारी ॥ कीतस[2] रहत अहे जस बारी ॥
जोबन सुनो कि नवल[3] बसंता ॥ तेहि बन परा हस्त[4] मैमंता ॥
अब जोबन बारी[5] को राखा ॥ कुंजल[6] बिरह बिधा से शाखा
मैं जानो जातन रस भोगू ॥ जोबन कठिन[7] सताप बियोगू ॥
जोबन गरुवा पेल पहारू ॥ सहि न जाय जोबन कर भारू[8]
जोबन अस मनमत्त[10] न कोई ॥ नवे हस्त[11] जो आकुश होई ॥
जोबन भरि भादों जस गंगा ॥ लहरें देइ समाय न अंगा ॥

पर्यो अथाह धाय हौं जोबन उदधि[12] गंभीर ॥
तहं चितवों चारहुं[13] दिश को गहि[14] लावे तीर[15] ॥

पद्मावत तुइ समुद्र सयानी ॥ तुइ सर[16] समुद्र नपूजी रानी ॥
नदी समाय समुद्र महँ आई ॥ समुद्र डोल कहु कहां समाई
अबहीं कमल करी हिय[17] तोरा ॥ अइ है भँवर जो तो कहँ जोरा
जोबन तुरी[18] हाथ गहि लीजे ॥ जहां जाय तहँ जाय न दीजे ॥
जोबन[19] जोर माते[20] गज अहे ॥ गहहु ज्ञान अंकुश जिमि रहे ॥
अबहिं बार[21] तुइ प्रेम न खेला ॥ का जानिस कस होय दहेला[22] ॥
गगन[23] दृष्टि[24] कर पाय तराहीं ॥ सूर्य्य देखकर आवत नाहीं ॥

जब लगि पीउ मिले तुहि साधि प्रेम की पीर ॥
जैसे सीप स्वाति कहँ तपै समुद्र मँझ[25] नीर[26] ॥

दहत[27] धाय[28] जोबन औ जीव ॥ जानहु परा अगिन महँ घीव ॥
करवट सहों होत दुइ आधा ॥ सही न जाय बिरह की दाहा ॥
बिरह समुद्र बिषहर अस भारा ॥ भँवर मेल जिव लहर न भारा ॥

शेरने क्या मारा है १ अर्थात् लड़काई में कैसी थी २ मया ३ हाथी मस्त ४-६-२० बा ५ मुशकिल ७ दुख ८ बोझ ९ मस्त १० हाथी ११ समुद्र गहरा १२ चारों तरफ़ १३ पकड़ना १४ किनारा १५ बराबर १६ दिल १७ घोड़ा १८ जवानी १९ लड़की २१ मारी २२ आसमान २३ नज़र २४ बीच २५ पानी २६ जलना २७ दाया २८ ॥+॥

बिरह नाग होय शिर चढ़ डसा
जोबन परंवी[1] बिरह बियाधू[2] ॥
कनक[6] पानि[7] कित जोबन कीन्हा
जोबन जलहि बिरह मसि[8] छुवा ॥

वही अगिन चन्दन महँ ब[illegible]
केहरे[3] भयो कुरंगिन[4] खाधू[5]
औटन कठिन[8] बिरह वह दी[illegible]
भूलहिं भवर[7] फिरहिं भा सुवं[illegible]

जोबन चन्द उवा जस बिरह भयो संग राहु ॥
घटतहि घटत रवीन[11] भय कहे न पारों[12] काहु

नयन[13] जो चक्र फिरे चहुं ओरा
कहेसि प्रेम उपना[15] जो बारी[16] ॥
जेहि जिय मनहिं सत्त होय भारू
सती जो जरी प्रेम पै लागी ॥
जोबन चांद जो चौदस[18] करा ॥
पवन[20] बन्ध सो योगी यती ॥
आव बसंत फूल फुल वारी ॥

चरची धाय[14] समाय न कोरा
बांधि सत्त मन डोल न भारी
परे पहार नहिं बांके बारू ॥
जो सत हिये[10] तो शीतल[18] आगी ॥
बिरह की चिनगी सो पुनि जरा ॥
काम बन्ध सो कामिन[21] सती ॥
देव बार[22] सब जोहहिं बारी[23] ॥

तुम पुनि जाहु बसंत लै पूज मनावहु देव ॥
जीव पाय जग जन्म है पिय पाई कै सेव[24] ॥

जब लग अवध[22] आय नियराई
नींद भूख निशि[26] दिन गइ दोऊ
रोम रोम जनु लागहिं चांटे[27] ॥
दग्ध[28] कराह जरे जस घीव ॥
कौन देव कहं जाय परासों[32] ॥

दिन युग युग बिरहिन कहं जाई
हिये माझ जस कल पै कोऊ
सूत[28] सूत जनु बेधे कांटे ॥
बेगन[30] आव मली[31] गिरि पीव ॥
जेहि सुमेरु[33] हिये[34] लाय गिरासों

परदार जानवर १ बहेलिया २ शेर ३ हिरन ४ खाना ५ सोना ६ पाजी ७ मुशकिल ८ सियाही ९ तोता १० बारीक ११ कहि नहीं सकता १२ आंख १३ दाया १४ पैदा होना १५ लड़की १६ दिल १७ ठंढ़ा १८ चांद चौदहीं के बराबर १९ हवा २० औरत २१ दरवाजा २२ लड़की २३ खिदमत २४ हद २५ रात २६ बीज २७ सूराख २८ गर्म २९ जल्द ३० चन्दन ३१ पूजन ३२ नाम पहाड़ ३३ दिल ३४ ॥

पुत्र जो फल मासहि परगटें ॥ | अब होय सुभ चहहिं हम घटें
भइ संयोग जुरा अस मरना ॥ | भरवहि गई भोग का करना ॥

यौवन चंचल ढीठ है कहे न कीजै काज ॥
धन कुलवन्त जो कुल धरै कौ जीवन मन लाज

होहिं बियोगी हीरामन आवा ॥ | पद्मावत जानहु जिव पावा ॥
कंठ लगाय सुआ सो रोई ॥ | अधिक मोह जेहि मिलै बिछोई
आगि उठी दुख हिये गंभीरे ॥ | नयन नहि आय चुवा होय नीरे
रही रोय जब पद्मिन रानी ॥ | हँसि पूँछहि सब सखी सयानी
मिले रहस भा चाहे दूना ॥ | किन रोई जो मिले बिछोना ॥
तेहि कउतर पद्मावन कहा ॥ | बिछुरन दुख जो हिय भरहा
मिलत हिये आये सुख भरा ॥ | वह दुख नयन नीर होय ढरा

बिछुरन्ता जब भेंट सो जाने जेहि नेह ॥ ॥
सुखक सुहेला उगवे दुःख झरे जिमि मेह ॥

खण्ड पन्द्रहवाँ मुला क़ात खण्ड पद्मावत औ हीरामन

पुनि रानी हँसि कुँवरि ले पूछा ॥ | किंत गवनेहि के पिंजर छूछा ॥
रानी तुम युग युग सुख पाटू ॥ ॥ | छोजन परवी पिंजर ठाटू ॥ ॥
जो भा परब कहाँ थिर रहना ॥ | चाहे उड़ा परब जो डेहैना
पिंजर महँ जो परवौं घेरा ॥ ॥ | आय मजारे कीन्ह तहँ फेरा ॥
दिवस क आय हाथ पै मेला ॥ | तेहि डर बनोबास कहँ रेवला ॥
तहाँ जाय ब्याध नर साँधा ॥ | छूट न जाय मींच कर बाँधा ॥
बेध धर बेचा ब्राह्मन हाथा | जम्बूदीप गयो तेहि साथा ॥

१ ज़ाहिर २ हरारत मे मराहे किदमबदम घट तीह ३ मुला क़ात ४ कामवाला ५ दुख ६ ना मतोता ७ ८ बछुरन पियारा ९ बिछुड़ा दुखा १० दिल ११ १० १२ माँस १३ आंत १४ रानी १५ खुश १६ जवाब १७ आँसू १८ मुहब्बत १९ रसतह २० बादल २१ रेवरियत २२ कहा २३ नाखू २४ सोहना २५ जानवर परिंद २७ ३० क़ायम २८ बाज़ २९ बिल्ली ३१ एक दिन ३२ जाना ३३

तहां चित्र चित्तौर गढ़ चित्रसेन कर राज ॥
टीका दीन्ह पुत्र कहँ आप लीन्ह शिवसाज

बैठि जो राज पिता कर ठाऊं ॥ राजा रतन सेन तेहि नाऊं
का बरनो धन देश दुवारा ॥ जहँ अस नग उपनो उजिया
धन माता औ पिता बखाना जेहि के वंश अंश अस आना
लक्षन बतीसों कुल निरमला बरणि न जाय रूप औ कला
वेहौं लीन्ह अहा अस भागू ॥ चाहै सोने मिला सुहागू ॥
सु नग देख इच्छा भइ मोरी है यह रतन पदारथ जोरी ॥
है शशि योग यही पै भानू ॥ तहँ तुम्हार मैं कीन्ह बखानू

कहां रतन रतना गढ़ कंचन कहां सुमेर ॥
दैव जो जोरी दुहुं लिखी मिली सो कौनहि फेर

सुनि के बिरह चिनग वह परी रतन पाव जो कंचन करी ॥
कठिन प्रेम बिरहा दुख भारी राज छाँड़ि भा योगि भिखारी
मालति लागि भँवर जस होय होय बावर निसरा बुध खोय
कहेसि पतंग होय रस लेऊं ॥ सिंहल द्वीप जाय पग देऊं ॥
पुनि वह कोउ न छाँड़ अकेला सोरह सहस कुंवर भय चेला
और गिनै को संग सहाई ॥ महादेव मढ़ मेला जाई ॥
सूर्य्य पुरुष दरशन की ताईं चितवे चन्द चकोर की नाईं ॥

तुम बारी रस जोग जेहि कमलहि जस अरघान
तस सूरज पर कोश कै भँवर मिलायो आन ॥

हीरामन जो कही यहि बाता सुनि के रतन पदारथ राता ॥

तसवीर १ राजतिलक २ मरना ३ बाप ४ जगह ५ तारीफ़ ६ पैदा होना ७ अक़वाल वाला ८ पाक साफ़ ९ बयान करना १० - १५ उसका मोल लिया हुवा ११ जवाहिर लाल १२ चांद १३ सूर्य्य १४ सोना १६ सोने की अँगूठी १७ मुशकिल १८ दीवाना १९ क़दम २० हज़ार २१ फ़ौज २२ मर्द २३ लड़की २४ उजियारा २५ नाम तोता २६ ॥

जैसे सूर्य्य देखहै ओपा[1] ॥ तस भा बिरह काम दल कोपा[2]
सुनि के योगी केर बखानू[3] ॥ पद्मावत मन भा अभिमानू[4] ॥
कंचन करी[5] न कांचहि लोभा जो नग जड़े होय तस शोभा ॥
कंचन जो कसिये कै ताता ॥ तब जाने वह पीत[6] कि रांता[7] ॥
नग कर मर्म[8] सो जड़िया जाना ॥ जड़े जो अस नग देख[9] बखाना[10] ॥
को अस हाथ सिंह[11] मुख घालै को यह बात पिता[12] सों चालै ॥

स्वर्ग[13] इन्द्र डर कांपै बासुक[14] डरै पतार ॥ ॥
कहं ऐसो बर[15] पृथ्वी[16] मोहिं योग संसार ॥

तुइं रानी शशि[17] कंचन कला वह नगर तन सूर निरमला[18] ॥
बिरह बिजोग[20] बीज गा कोई ॥ आग जो छुवै जाय जर सोई ॥
आग बुझाय धोय जल गाढ़े वह न बुझाय आग अति बाढ़े
बिरह की आग सूर[21] जर कपा रातहि दिवस[22] जरै औ तपा ॥
खनहि[23] स्वर्ग खन जाय पतारा थिर[24] न रहै यहि आग अपारा
धनि सुजीव दग्ध[25] इमि[26] सहा ॥ ऐसो जरे दूसर नहिं कहा ॥
सुलग सुलग भीतर होय श्यामा[27] प्रगट[28] होय नहिं काढ़ै नामा

काह कहौं ओही सों जो दुख कीन्ह निमेट ॥
तेहि दिन आग करों यह बाहर जेहि दिन होय सुभेट

सुना जो अस धन[29] जारा कया[30] तन भा सांच[31] नयन[32] भा मया[33] ॥
देखौं जाय जरै जस भानू[34] ॥ कंचन[35] जरै अधिक[36] होय बानू[37]

उदय होना १ गुस्सा करना २ तारीफ़ ३-१० गरूर ४ सोने की अंगूठी ५ पीला ६ लाल ७ भेद ८ देखना ९ शेर ११ बाप १२ आसमान १३ नाम राजा सांपों का १४ ख़ाविंद १५ ज़मीन १६ चांद १७ सूर्य्य १८-२१ पाक साफ़ १९ आग २० दिन २२ कभी २३ क़ायम २४ जलन २५ इसतरह २६ सियाह २७ ज़ाहिर २८ औरत तथा पद्मावत २९ बदन ३० सांचा ३१ आंख ३२ मोम ३३ सूर्य्य ३४ सोना ३५ बहुत ३६ खरा ३७ ॥ ३ ॥

अब जो जरै सुप्रे बियोगी[1]॥ हत्या मोहिं जेहि कारन[2] योगी
हीरामन सो कही रस बाता॥ सुनि के रतन[3] पदारथ राता॥
योगी योग सँभारहि छाला॥ देहों भुक्त[4] देहों जैमाला[5]॥
आव बसंत कुशल सो पाऊं॥ पूजा मिस[6] मंडफ कहं आऊं॥
गुरु के बचन फूल हिय[7] गाथे॥ देखों नयन[8] चढ़ाऊं माथे॥

कमल बरन[9] तुम बरना मैं माना पुनि सोय॥
चांद सूर्य्य कहं चाही जोरी सूर्य्य वह होय॥

हीरामन[10] जो कही रस बाता॥ पाय पान भयो मुख राता[11]॥
चला सुवा तब रानी कहा॥ भा जो पराउ सो कैसे रहा॥
जो नित[12] चलै सँवारहि पाखा॥ आज जो रहा काल्ह को राखा
ना जनो आज कहां दिन उआ॥ आयहि मिलै चलहि मिल सुवा[13]॥
मिल के बिछुर मरन की आना[14] कत[15] आयहु जो चलहि निदाना[16]
अन[17] रानी जो रहतों रांधा[18]॥ कैसे रहों बचन[19] करे बांधा॥
ताकर दृष्टि[20] ऐसो तुम्ह सेवा जैसे कुंज[21] मन सेज परेवा॥

बसै मीन[22] जल धरती[23] अम्बा[24] बर्ष अकाश॥
जो प्रीति पै दोउ महं अंत[25] होहिं एक पास॥

आवा सुवा बैठि जहं योगी॥ मारग[26] नयन[27] बियोग[28] बियोगी
आय प्रेम रस कहा संदेशू॥ गोरख[30] मिला मिला उपदेशू[31]॥
तुम कहं गुरु मया[32] बहु कीन्हा कीन्ह अदेस[33] आव कहं दीन्हा
शब्द[34] एक होय कहा अकेला गुरु जस बंग[35] पतंग[36] जस चेला॥

दुखी १ सबब २ जवाहिर ३ सुख ४ जिसके गले में पड़े ठसी के साथ शादी हो ५ बहाना ६ दिल ७ आंख ८ रंग ९ नाम तोता १० लाल ११ हररोज़ १२ तोता १३ बराबर १४ कहां १५ जल्द १६ रानी १७ नज़दीक १८ कौल १९ निगाह २० नाम जानवर परिंद २१ मछली २२ ज़मीन २३ पानी २४ आख़िर २५ राह २६ आख २७ जुदाई २८ दुखी २९ नाम फ़क़ीर ३० नसीहत ३१ मेहरबानी ३२ सलाम ३३ बात ३४ नाम कीड़ा ३५ ३६

दूती[2] ओही[3] पंवे[4] पै लेइ ॥ | एकहि[5] बार चहै जिव देइ ॥
ताकहँ[6] गुरु[7] मंया[8] भल कीन्हा | नव[9] अवतार[10] जौन बहु दीन्हा ॥
होय अमर[11] असमर[12] के जिया | भँवर कमल मिलके मधु पिया

आवै ऋतु बसंत जब तबमधुकर तब बास ॥
योगी योग जोड़ी मैं[13] सहे सिद्ध[14] समापत नास ॥

खराड[15] सोलहवाँ[16] बसंत खराड

दई दई कर सुरत गँवाई ॥ | श्री पंचमी पूजि तब आई ॥
भयो कुलाँस[17] नवल ऋतु माहाँ | सगुन सुहाय धूप औ छाहाँ
पद्मावत सब सखी हँकारी[18] ॥ | जानवन्त[19] सिंहल की बारी[20] ॥
आज बसंत नवल ऋतु राजा | पंचमि होय[21] जरीत सब साजा
नवल[22] सिंगार बनाहत[23] कीन्हा | पुहुपन्ह[24] परासहिं सेंदुर[25] दीन्हा
बिकसे[26] कमल फूल बहु बासा | भँवर आय[27] लुब्धे[28] चहुँ पासा
पियर पात दुरुव झरे नि पाते[29] ॥ | सुरुव पल्हा उपनी[30] होय राते[31]

अवधे[32] आय सो पूजे जो इच्छा मन कीन्ह
चलइ देव मढ़ गाहन[33] चहो सो पूजा दीन्ह

फिरे आन ऋतु बाजन बाजे | औ सिंगार बारन्हि सब साजे ॥
कमल कली पद्मावत रानी ॥ | होय मालती[34] जानो बिरासानी
तारा[35] मन्द्र पहिर भल चोला | भरी पुहुपन्ह[36] सबन रतन अमोला
सखी कुमोद[37] सहस[38] दस संगा | सब सुगन्ध चढ़ाये अंगा[39] ॥
सब राजा रायन की बारी ॥ | बरन बरन पहिरैं सब सारी ॥
सबै स्वरूप पद्मिनी जाती ॥ | पान फूल सेंदुर सब राती[40] ॥

नाम कीड़ा १ पांखी २ सेहरबानी ३ नया जन्म ४ अकिल ५ हुमसाज़िन्दा ६ भँवर ७ सतरह ८ कामिल ९ खुशी १० नया ११-२६ बुलाना १२ जहांतक १३ लड़की १४-२०-२४ पुनिया १५ पेड़ १७ पिया १८ ठांव १९ खिलना २१-२८ लपिटना २१ झरना २३ पेदा २३ लाल २५-३५ हद २७ साथ २९ नाम कपड़ा ३१ पीर ३० कोकाबेली ३१ हज़ार ३२ बदल ३३ रंग बरंग ३४

करैं कलोल सुरंग रंगीली ॥ औ चोवा चन्दन सब खेली

चहुँ दिशि रही बासना फुलवारी असफूल ॥
वे बसंत सों फूली गा बसंत वहिं भूल ॥ ॥

भई अहा पद्मावत चली ॥ छत्तिस करि भइ गोहन भली
भई गौरि संग पहिर पटोरा ॥ ब्रह्मनि आय सहस अंग मोरा
अग्रवारि गज गवन करेई ॥ बैसि पाँव हंसगत देई ॥ ॥
चन्देलिन ठमकहिं पग ढारा ॥ चल चौहान होय झनकारा ॥
चली सुनारि सुहाग सुहाती ॥ औ कलवारि प्रेम मधु माती ॥
बानिन चली सिंदुर दिये मांगा ॥ कैथिन चली समायन आंगा
पटयनि पहिर सुरंग तन चोला ॥ औ बरइन मुख खात तमोला

चली पवन सँग गोहन फूल डार लिये हाथ
बिष्वनाथ की पूजा पद्मावत के साथ ॥

ठाठेरिन बहु ठाठर कीन्हा ॥ चली अहीरिन काजर दीन्हा
गूजरि चली गोरस की माती ॥ बढ़यनि चली भाग की ताती
चली लुहारिन बाँके नयना ॥ भाटिन चली मधुर अति बयना
गन्धिन चली सुगन्ध लगाये ॥ छीपिन चली सो चीर रंगाये ॥
रंगरेज़िन बहु राती सारी ॥ चली युक्ति सों नाउनि बारी ॥
मालिन चली हार लिये गाथे ॥ तेलिन चली फुलायल माथे ॥
किये शिंगार बहु बिस्वा चली ॥ जहँ लग मूंदी बिकसी कली ॥

नटनी डोमिन ढारिन सहनायन परकार ॥
निरतत नाद बिनोद सो बिहँसत खेलत नार

कमल सुभाय चली फुलवारी फर फूलन की इच्छा बारी ॥

खुशी १ चारों तरफ़ २ छत्तीस क़ौम ३ साथ ४ गौर ब्राह्मन ५ हज़ार ६ बदन ७ हाथी की चाल ८ कदम ९ शराब १० बदन ११ हवा १२ साथ १३ ईश्वर १४ मीठी १५ बोल १६ लाल १७ खिलना १८ नाचना १९ गाना २० खुशी २१

प आप महँ करहिं जोहारू | यह बसन्त सब कहँ त्योहारू
ही मनोरो झूमक होई ॥ | फर औ फूल लियो सब कोई
ग खेल पुनि दाहब होली | सेतत खेह उड़ावब झोली ॥
ज छाँड़ पुनि दिवस न दूजा | खेल बसन्त लेहु के पूजा ॥
आयसु पद्मावत केरा ॥ | फेर न आय करब हम फेरा ॥
स हम कहँ होय है रखवारी | पुनि हम कहाँ कहाँ यह बारी

पुनि रे चलब घर आपने पूज बिशेषबर देव
जेहि को होय खेलना आज खेल हँस लेव

काहू गही अम्ब की डारा ॥ | कोई बिरह जाम्ब अति छारा
कोइ नारंग कोइ झार चिरौंजी | कोइ कटहर बड़हर कोइ न्योंजी
कोइ दाड़िम कोइ दाख खरी | कोइ सदाफर तुरंज जँभीरी ॥
कोइ जेफर कोइ लौंग सुपारी | कोइ कमरख कोइ कोबा छारी
कोइ बिजोर कोइ नरियर चूरी ॥ | कोइ अमली कोइ महुवा खजूरी
कोइ हरफा कोइ चोर करोंदा | कोइ अनार कोइ बेरि कसौंदा
काहू गही केला की घौंरी ॥ | काहू हाथ पड़ी निम कौरी

काहू पाई नेरे काहू कहँ गये दूर ॥
काहू खेल भयो बिष काहू अमृत मूर ॥

पुनि बीनहिं सब फूल सहेली | जो जेहि आस पास सब बेली
कोइ क्योंड़ा कोइ चम्पनेवारी | कोइ केतकि मालति फुलवारी
कोइ सतबर्ग गोंद औ करना ॥ | कोइ चमेलि नागेसर बरना ॥
कोइ सुगुलाब सुदरशन कूजा | कोई सोनजर्द भल पूजा ॥

साहेब सलामत १ रस्म गाने औ बजाने की २ जलाना ३ राख-धूर ४ दिन ५ हुक्म ६ बागीचा ७ नाम देवता ८ लेना ९ आंब १० यामुन ११ नाम मेवा फ़सली १२-१३-१४-१५-१६ अनार १७ अंगूर १८ खिरनी १९ नाम मेवा २०-२१-२२ २३-२४ टुकड़ा २५ ज़हर २६ नाम फूल २७-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४

कोइ सो बोलसर[1] पुहुप बकोरी[2] | कोई रूप[3] मँजरी औ गोरी ।
कोइ शिंगार[4] हार तेहि पाहां | कोइ सेवती[5] कदम[6] की छाहां
कोइ चन्दन फूलहिं जनु फूली | कोइ अजान[7] बिरवा तर भूली

कोइ फूल पाव कोइ पाती जेहि कहा थ जेहिं आंट
कोइ हार चीर[8] उर झानी जहां छुवे तहँ कांट

फर फूलन सब डार भिराई ।। | झुराड बांध के पंचम गाई ।
बाजत ढोल द्वंद[9] औ भेरें[10] ।। | मन्दिर[11] तूर झांझ[12] चहुँ फेरें ।।
सींगी[13] शंख[14] डफ़ संगम बाजे ।। | बंसकार[15] महुर[16] सुर साजे ।।
और कहा जित बाजन भले ।। | भाँति भाँति सब बाजत चले
रथहिं चढ़ी सब रूप सुहाई ।। | लिये बसन्त मड़मँड़फ सिधाई
नवल[17] बसन्त नवल वै बारी[18] ।। | सेंदुर बूका करैं धमारी ।।
खनहिं[19] चलहिं खन चाँचर होई | नाच कूद भूला सब कोई ।।

सेंदुर खेह[20] उठी तस गगन[21] भयो तस रात[22] ।।
राति सकल[23] महि[24] धर्ती राति वृक्ष बन पात

यहि बिधि खेलत सिंहल रानी | महादेव मठ जाय तुलानी[25]
सकल[26] देवता देखन लागे ।। | दृष्टि[27] पाप सब उनके भागे
ये कैलाश सुनैं अप्सरी ।। | कहां ते आय दूटि भुइँ परी
कोई कहै पद्मिनी आईं ।। | कोइ कह शशि[28] औ नखत तराई[29]
कोई कहै फूल फुल वारी ।। | फूली सबै देख के बारी[30] ।।
एक सुरूप औ सेंदुर सारी ।। | जानहु दिया सकल महि[31] बारी
मुरछ परै जोई मुख जोहे ।। | मानहु मिरग[32] दवारहिं मोहे

नाम फूल १-२-३-४-५-६-७ कपड़ा ८ नाम बाजा ९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६ नया १७ लड़की १८ कभी १९ धूर २० असमान २१ लाल २२ सब २३ ज़मीन २४ पहुँचना २५ सब २६ निगाह २७ चांद २८ छोटे नखत २९ लड़की ३० ज़मीन ३१ हिरन ३२ ।। ॥

कोई परा भँवर होय बास लीन्ह जनु चाँप[1] ॥
कोइ पतंग[2] भा दीपक कोइ अधजर तन काँप

पद्मावत गइ देव दुवारा ॥ भीतर मंडफ कीन्ह पैसारा
वै संशय भा जिय केरा । भागों केहि दिश मंडफ घेरा
एक जुहार[3] कीन्ह औ दूजा ॥ तिसरे आय चढ़ायसि पूजा ॥
कर फूलन सब मंडफ भरावा चन्दन अगर देव अन्हवावा
भरि सेंदुर आगे भइ खड़ी ॥ परसि देव पुनि पाँयन परी
और सहेली सबै बिवाही ॥ मोकहँ देव कितुहुं बर[4] नाहीं
हों निरगुन[5] जें कीन्ह न सेवा ॥ गुन[6] निरगुन[7] दाता[8] तुम देवा

बर[9] संयोग मोहिं मिरवहु कलश जात हौं मान
जा दिन इच्छा[10] पूजै बेग[11] चढ़ाऊं आन ॥

इच्छ[12] इच्छ बिन्ती जस जानी पुनि करे[13] जोर ठाढ़ भइ रानी
उतर[14] को देय देव सो गायो ॥ शब्दा[15] कोट मंडफ महँ भयो
काटि पयारा[16] जैसे परेवा ॥ सो गायो ईश[17] उतर[18] को देवा ॥
भये जीव बिन नाउत ओझा ॥ बिष भइ पूरि कालि भये गोझा
जो देखे जनु बिष[19] हर डसा ॥ देख चरित पद्मावत हँसा ॥
भल हम आय मनावा देवा ॥ गा जन सोय को मानै सेवा[20] ॥
को इच्छा पुरवै दुख खोवा ॥ जहिं मन आय सो तन तन सोवा

चहुँ दिश[21] सखी उठावहिं शीश[22] बिकल नहिं डोल
धर कोइ जीव न जानो मरवरे बकत कुबोल ॥

ततखन[23] आय सखी बेहँसानी कौतुक एक न देखहु रानी ॥
पूर्ब द्वार[24] मठ योगी छाये ॥ नाजनो कौन देश ते आये ॥

चम्पा १ पाँखी २ सलाम ३ खाविन्द ४ बेहुनर ५-७ हुनर ६ देनेवाला ८ खाविन्द लायक ९ आरज़ू १०-१२ जल्द ११ हाथ १३ जवाब १४ आवाज़ १५ छोड़ देना १६ देवता १७ जवाब १८ साँप १९ ख़िदमत २० चारों तरफ़ २१ शिर २२ यकायक २३ दरवाज़ा २४ ॥

जनु उन्ह योग तन्त अब खेला । सिद्ध[1] होय निसरे सब चेला ।
उन्ह महँ जो एक गुरू कहावा । जस गुड़ दे काहू बौरावा ॥
कुँवर बतीसो[2] लक्षण राता ॥ दशयें[3] लषन कहे एक बात
जानो आहि गोपचन्द[4] योगी । कीसु आहि भरथरी[5] बियोगी
वै पिंगल[6] गये कजरी आरन[7] ॥ ये सिंहल सो वहिं केहि कारन

यह मूरत यह मुद्रा हम न देख अव धूत ॥
जानहुं होहिं न योगी कोइ राजा के पूत ॥

सुनि सु बात रानी रथ चढ़ी । कहं अस योगि जो दरवों मढ़ी
लै संग[8] सखी कीन्ह तहँ फेरा । योगि आय जनु अपछर नहिं घेरा
नयन[9] कचूर प्रेम मधु[10] भरे ॥ भइ सुदृष्टि[11] योगी सो ढुरे ॥
योगी दृष्टि[12] दृष्टि सों लीन्हा ॥ नयन[13] रूप नयनहिं जिव दीन्हा
जो मधु[14] छकत परा तेहि पाले । सुध न रही वह एक पियाले
पड़ा मांत गोरख[15] कर चेला ॥ जिव तन छाँड़ि स्वर्ग[16] कहँ खेला[17]
किंगरी[18] गही[19] जो हुत बैरागी ॥ मरती बार वही धुन लागी ॥

जेहि धन्ध जाकर मन बसे सपने सूझ सुधन्ध
तेहि कारन[20] तपसी तप साधहिं करहिं प्रेम चित वन्ध

पद्मावत जस सुना बखानू[21] ॥ सहस[22] किरा देखे तस भानू[23] ॥
मेलिस[24] चन्दन मग[25] खन जागा । अधिको[26] सोत सीर[27] तन लागा
तब चन्दन आखर[28] हिय[29] लिखी । भीख[30] लई तुम योग न सिखी ॥
बार[31] आय तब गा तुइं सोई ॥ कैसे भुक्ति[32] परापत होई ॥

कामिल १ बत्तीस हुनर जानने वाला २ अंदाज़ से बात करता है ३ नाम योगी ४-५ नाम रानी ६ जंगल ७ इन्द्र लोक की परयां ८ आँख पियाले की तरह ९ शराब १० निगाह ११-१२ आँख १३ शराब १४ नाम योगी १५ आसमान १६ जाना १७ नाम बाजा १८ पकड़ना १९ वास्ते २० तारीफ़ २१ हज़ार २२ सूर्य्य २३ छिड़कना २४ शाय २५ बहुत २६ ठंढ़ा २७ हर्फ़ २८ दिल २९ भीख मांगना ३० दरवाज़ा ३१ रोज़ी ३२

अब जो सूर[1] अहे शशि[2] राता | आये चढ़ सुगगन[3] पुनि साता
लिख सो बात सखिन सो कही | यही ठाउँ[4] हों बरित[5] रही ॥
परगट[6] हों तो होय अस भंगू[7] | जगत[8] दिया कर होय पतंगू[9]

जासों चख[10] हेरों सोई ठाव जिव देय ॥
यह दुख कतहुँ न निसरों को हत्या अस लेय

कीन्ह पयान[11] सबहिं रथ हाँका | पर्बत छाँड़ सिंहल गढ़ ताका
बलि[12] भये सबै देवता बली[13] | हत्यारिन हत्या लै चली
को अस हितू[14] मुवे गहि[15] बाहीं | जो पैजिय आपन तन नाहीं
जौ लह जिव आपन सब कोई ॥ | बिन जिव कोइ न आपन होई
भाई बन्धु औ मीत[16] पियारा | बिन जिव घड़ी न राखै पारा[17]
बिन जिव पिंड[18] छार[19] कर कूरा | छार मिलावै सो हित[20] पूरा ॥
तेहि जिव बिना अमर भा राजा | को उठि बैठि करब सो काजा

परि काया[21] भुइँ लोटै कहाँ रे जिव बलि भीव
को उठाय बैठारे बाजे[22] पियारे जीव ॥

पद्मावत सो मन्दिर पैठी ॥ | हँसत जाय सिंहासन बैठी।
निशि[23] सोती सुनि कथा बहारी | भा बिहान सब सखी हँकारी[24]
देव पूज जस आयों काली ॥ | स्वप्न एक निशि देख्यों आली
जनु शशि[25] उदय पूर्ब दिश लीन्हा | औ रबि[26] उदय पश्चिम दिश कीन्हा
पुनि चलि सूर चाँद पहँ आवा | चाँद सूर्य्य दुहुँ भयो मिरावा[27]
दिन औ रात जानहु भय एका | राम आय रावन गढ़ छेका ॥
तस कुछ कहा न जाय निवेदा | अर्जुन बान राहु को बेधा ॥

सूर्य्य १-६ चांद अर्थात रात को आवै २ आसमान अर्थात क़िला ३ जगह ४ बर्त ५ ज़ाहिर ६ नुक़सान ७ दुनियां ८ पाँखी ९ आंख से देखें १० कूच ११ क़ुर्बान १२ जबरदस्त १३ दोस्त १४-१६-२० मेरे की बाँह पकड़े १५ रख नहीं सक्ता १७ बदन १८ २१ राख १९ पहुँचना २२ रात २३ बुलाया २४ चांद २५ सूर्य्य २६ मुलाक़ात २७

जनहुँ लङ्क सब लूँसी[1] हनू[2] बिधाँसी[3] बार ॥
जाग उठ्यों अस देखत कहु सखि स्वप्न बिचार

सखी सो बोली स्वप्न बिचारी
काल्ह जो गई देव[4] कर बारी

पूजि मनायो बहुत बिनाती[5]
परशन[6] आय भयो तुम्ह राती

सूर्य्य पुरुष[7] चांद तुम रानी ॥
अस बर[8] देव मिलावै आनी

पछों खराड कर राजा कोई
सो आवै बर[9] तुम कहँ होई ॥

कुछ पुनि जूझ लाग तुम रामा
रावन सेते होय संग्रामा[10] ॥

चांद सूर्य्य सों होय बिवाहू ॥
बार[11] बिधाँ सब बेधै राहू ॥

जस ऊषा[12] कहँ अनरुध मिला
मेट न जाय लिखा परबला[13] ॥

सुख सुहाग है तुम कहँ पान फूल रस भोग
आज काल्ह भाचा है अस सपने का संयोग[14]

खराड सत्तरहवां सती खराड राजा रतन सेन

किये बसन्त पद्मावत गई ॥
राजा तब बसन्त सुध भई ॥

जो जागा न बसन्त न बारी[15] ॥
ना सो खेल न खेलन हारी ॥

ना वहँ की वह रूप सुहाई ॥
गइ हिराइ पुनि दृष्टि[16] न आई

फूल झड़ी सूखी फुलवारी ॥
दृष्टि[17] परी उकटी सब छारी[18] ॥

कैं यह बसत बसन्त उजारा ॥
गा सो चांद अथवा ले तारा ॥

अब तेहि बिन जग[19] भा अँधि कूपा[20]
वह सुख छाँह जरा दुख धूपा

बिरह देवाँ[21] को जरत सिरावा ॥
को पीतम सो करै मिलावा ॥

हिये[22] देख जो चन्दन मिल के लिखा बिछोहे[23]
हाथ मींज शिर धुन रोवे जो निचिन्त अस सोय

जस बिछोह[24] जल मीन[25] दुहेला[26]
जल हति काढ़ अगिन महँ मेला

लूटना १ हनूमानजी २ दरवाज़ा तोड़ा ३ ११ महादेव के मँडफ़ ४ आजज़ी ५ खुश ६ मर्द ७ ख़ाविन्द ८ ९ लड़ाई १० नाम लड़की १२ ज़बर्दस्त १३ ताबीर १४ बाग़ १५ निगाह १६ १७ जलजाना १८ दुनियां १९ कुवां २० आग २१ २७ दिल २२ जुदाई २३ २४ मछली २५ भारी २

चन्दन अंक[1] दाग होय परे ॥ बुझहिं न ते आरेवर[2] परजरे ॥
तेहि शिर आगे होय होय लागी सब तन दाग सिंह[3] बन दागी
जरै मृग[4] बन खंड वह ज्वाला औ ती जरहिं बैठि तेहि छाला
कित ते अंक लिखे जहँ सोवा मरो[5] अंकित तेहि करत बिछोहा
जैसे दुखित कंसा[6] कोतला ॥ माधो नल[7] हि काम कन्दला
भयो अंक नल[8] जैसो दमावत नयना[9] मूंद छिपी पद्मावत ॥

आय बसन्ता छिप रहा होय फूलन की भेश
केहि बिधि पाऊं भँवर होय कवन सो करौं उपदेश[11]

रोवत रतन माल जनु चूरा[11] ॥ जहँ होय ठाढ़ होय तहँ कूरा
कहाँ बसन्त सो कोकिल बैना[12] कहाँ कुसुम अलि[13] बेधी नयना
कहाँ सुमूरत परी जो डीठी[14] ॥ काढ़ि लिहेसि जिव हृदये[15] पैठी
कहँ सो दरश परश[16] जेहि लहा जो सो बसन्त करी लहि[17] कहा
पात बिछोह रूख जो फूला ॥ सो महुवा रोवै अस भूला ॥
टपकहिं महुव आँसु तस परहीं होय महुवा बसन्त ज्यों झरहीं
मोर बसन्त सो पद्मिन नारी ॥ जेहि बिन भयो बसन्त उजारी ॥

पावा न वल[18] बसन्त पुनि बहु आरत[19] बहु चोप ॥
एसो न जाना अंत[20] होय पात झरहिं होय कोप

अहो महा बिश्वासी देवा ॥ कित मैं आय कीन्ह तू सेवा ॥
आपन नाव चढ़ै जो देइ ॥ सो तो पार उतारै खेइ ॥
सुफल जानि पग[21] टेंक्यों तोरा ॥ सुवा[22] का सेमर तू भा मोरा ॥
पाहन[23] चढ़ि जो चहि भा पारा ॥ सो ऐसे बूड़ै मँझ धारा ॥

हर्फ़ १-२ शेर ३ हिरन ४ शायद मुलाक़ात न हो ५ राजा कंस रानी कोतला लिये ६ माधो नल रानी कामकन्दला के लिये ७ राजा नल रानी दमन के लिये दुखी ८ आँख ९ तदबीर १० टूटना ११ आवाज़ १२ भँवर १३ नज़र १४ दिल १५ दीदार वा क़दम बोसी १६ जिसका उलटा काँटा होता है १७ नया १८ दुःख १९ आख़िर २० पैर २१ तोता २२ पत्थर २३

पाहन[1] सेवा[2] कहां पसीजा ॥ जन्म न पलवै जो जल भीजा ।
बावर सोई सुपाहन पूजा ॥ सकत[3] की मार लई शिर दूजा ।
काहे न पूजै सोई निराशा[4] ॥ मुये[5] जीत मन जाकर आशा ॥

सिंह[6] तरेंदा जेहिं गहा[7] पार भये ते साथ ॥
तेपै बूड़े बारहिं भेंड़ पूछ जेहि हाथ ॥ ॥

देव कहा सुनि बौरे राजा ॥ देवहि अगमन[8] मारा गाजा[9] ॥
जो पहिले अपने शिर परी ॥ सो का काहुक धरधर[10] करी ॥
पद्मावत राजा की बारी[11] ॥ आय सखिन सो मंडफ़ उघारी
जैस चान्द गोहन[12] सब तारा ॥ पर्यो भुलाय देख उजियारा ॥
चमके दशन[13] बीज[14] की नाईं ॥ नयन[15] चक्र चमकात भवाईं[16] ॥
हों तेहि दीप पतंग होय परा जिव जिमे[17] काढ़ स्वर्ग[18] ले अरा ॥
फेर न जाना वहँ का भई ॥ वहँ कैलाश कि कहँ अपसई[19]

अबहूँ मरों निसासी[20] हियेन[21] आवै साँस ॥ ॥
रुगिया की को चालै बैदहि जहाँ उपास ॥

अनहों दोष देउँ का काहू ॥ सुनि के कया[22] मया[23] नहिं ताहू ॥
हितू[24] पियारा मीत[25] बिछोई[26] ॥ साथ न लाग आपगा सोई ॥
कामैं कीन्ह जो काया[27] पोषी ॥ दोषन[28] मोहिं आप निरदोषी
फाग बसन्त खेल गइ गोरी ॥ मोहिं तन लाग आग जस होरी
अब अस काहि छार[29] शिर मेलों छारे हुनों फाग तस खेलों ॥
कित तप कीन्ह छाँड़ि के राजू आहुर[30] गयों न भा सिधि काजू ॥
पायों न होय योगी यती ॥ अब सर[31] चढ़ों जगैं जस सती ॥

पत्थर १ ख़िदमत २ मुशकिल समय का बोझ कौन दूसरा उठाता है ३ नाउम्मेद ४ मरना ५ शेर ६ पकड़ना ७ पहिले ८ बिजुली ९-१४ दस्त गीरी १० लड़की ११ साथ १२ दांत १३ आँख १५ घूमना १६ जिस तरह १७ आसमान १८ छिपना १९ बेदम २० दिल २१ बदन २२ मेहरबानी २३ दोस्त २४-२५ जुदाई २६ तनपालना २७ क़सूर २८ राख २९ उमर ३० चिता ३१

आय पीतम फिर गया मिलान आय बसन्त
अब तन होरी लाय के जार करौं भसमन्त

कुकनों[1] पंख जैसो सरि[2] साजा | तस सरि बैठि जरा चहि राजा
सकल[3] देवता आय तुलाने[4] ॥ | वहिं कस होय देव अस्थाने[5] ॥
बिरह अगिन बज्रांग[6] असूझा | जरै शूर[7] न बुझाये बूझा ॥
तेहि के जरत जो उठै बिजागी[8] | तीनों लोक जरहिं तेहि लागी
अब की घड़ी चिनग तेहिं छूटे | जरहिं पहाड़ पहन[9] सब फूटे
देवता सबै भस्म होय जाहीं ॥ | छार समेटे पावत नाहीं ॥
धर्ती[10] स्वर्ग[11] होय सब ताता[12] ॥ | है कोई यहि राखि बिधाता[13] ॥

मुहम्मद चिनग प्रेम सुनि गगन[14] औ मही[15] डिराय ॥
धन बिरहिन औ धन हिया[16] जहँ यह अगिन समाय

हनुमत बीर लंक जे जारी ॥ | पर्बत उही अहा रखवारी ॥
बैठि तहाँ भा लंका ताका | छठये मास[17] वही उठ हाँका ॥
तेहि की आग वहू पुनि जरा | लंका छाँड़ि पलंका[18] परा ॥
तहाँ जाय यह कहा सँदेशू | पार्बती औ जहाँ महेशू[19] ॥
योगी आय बियोगी[20] कोई ॥ | तुम्हरे मँडफ़ आग तेहि वोई
जरी लँगूर सुरोती[21] उहाँ ॥ | निकस जो भाग भये कर मुहाँ
तेहि बज्रांग जरे हों लागा ॥ | बजरंगी[22] जर उठा तो भागा ॥

रावन लंका मैं दही[23] वै मोहिं डाढ़ी[24] आय ॥
गगन पहाड़ होत है रावट[25] को राखे गहि[26] पाँय

खराड़ अठारहवाँ पार्बती महेश खराड़

तत खन पहुँचे आय महेशू | बाहन बैल कुट्टि कर भेशू

नाम चिड़या १ चिता २ सब ३ पहुँचना ४ मकान ५ सख़ ६ बहादुर ७ लूक ८ पत्थर ९ ज़मीन १०-१४ आसमान ११-१५ गर्म १२ ईश्वर १३ दिल १६ महीना १७ कहाँ १८ महादेवजी १९ दुखी २० लाल २१ पत्थर सा बदन २२ जलाना २३-२४ राख २५ पकड़ना २६

काँथेर[1] कैया[2] हडावर[3] बाँधे ॥ मुंड माल औ जनेऊ काँधे ॥
पोपा[4] नाग सोहै कंठ[5] माला तन बिभूत हस्ती[6] कर छाल
पहुँची रुद्र कमल की कटा पूँपि[7] माथे औ शिर पर जटा
चवर[8] घंट औ डमरू हाथा ॥ गौरा पार्बती धनि साथा ॥
औ हनुमन्त बीर संग आवा धरे भेष जनु बन्दर छावा ॥
औ तेहि कहिन न लावहु आगी ताकर सप्त[9] जरहिं जेहिं लागी

की तप करेन पारहिं[10] कीन्हि[11] सो यहि योग ॥
जियत जीव कस काढेसि कहो सो मोसों बियोग[12]

कहेसि को मोहिं बातहिं बिलभावा हत्या केर न तोहि डिरावा ॥
जरे देहु दुख जरों अपारा निसि तिर[13] परों जाय यक बारा
जस भरथरी[14] लाग पिंगला[15] मो कहँ पद्मावत सिंहला ॥
मैं पुनि तजा[16] राज औ भोगू मुनि सुनाउ कीन्हों तप योगू
यहि मठ सेयों[17] आय निराशा की सु पूज मन पूजन आशा
ते यह जिव डाढ़े[18] पर डाढ़ा ॥ आधा निकस रहा घट आधा
जो अधिजर सो बिलंब न लावा करत बिलम्ब बहुत दुख पावा

एतना बोल कहत मुख उठी बिरह की आंग ॥
जो महेश[19] नहिं अमी[20] बुझावत सकल[21] जगत हत लाग

पार्बती मन उपनो चाऊ[22] ॥ देखो कुँवर केर सत भाऊ ॥
वहिं यह बीच कि प्रेम हि पूजा तन मन एक कि मारग[24] दूजा
भई स्वरूप जानहु अप्सरा[25] बिहँसि[26] कुँवर कर आँचर धरा
सुनो कुँवर मोसों एक बाता जस रंग मोर न दूसर राता[27]

गुदड़ी १ बदन २ हाड़ों की माला ३ साँप ४ गरदन ५ हाथी ६ चाँद ७ घंटी ८ क़सम ९ निबाहना १० बरबाद ११ दुःख १२ रिहाई १३ नाम योगी १४ नाम रानी १५ छोड़ना १६ ख़िदमत १७ जलाना १८ महादेवजी १९ अमृत २० सब २१ पैदा होना २२ चाहना २३ राह २४ इन्द्र लोक की परी २५ हँसना २६ लाल २७

जो बिधि[1] रूप दीन्ह है तोका | उठा सु शब्द[2] जाय शिव लोका
अब हों तो कहँ इन्द्र[3] पठाई ॥ | की पद्मिन तुइँ अप्सर[4] पाई
अब तजि[5] जरन भरन तप योगू | मो सो मानि जन्म भर भोगू ॥

हौं अप्सर[6] कैलाश की जेहि सर[7] पूजन कोय
मो तजि[8] सँवर जो वह मरिस कौन लाभ[9] तेहि होय

भलहिं रंग तुहि अप्सर राता[10] | मोहिं दूसर सों भाव न बाता
मोहिं वह सँवरि मुये अस लहा[11] | नयन[12] जो देखिवसि पूँछसि कहा
अबहिं ताहि जिव दिये न पावा | तेहि अस अप्सर ठाढ़ मनावा
जो जिव देहों वह की आशा | न जनो काह होय कैलाशा ।
हों कैलाश काहि लै करों ॥ | सो कैलाश लाग जेहि मरों
वह की बार[13] जीव निरवारों[14] ॥ | शिर उतार न्योछावर डारों
ताकर चाँह[15] कहै जो आई ॥ | दोउ जगत[16] तेहि देउँ बड़ाई

वह न मोर कुछ आशा हों वह आश करेउं ॥
तेहि निराश प्रीतम कहँ जिव न देउं का देउं ॥

गौरी हँसि महेश[17] सों कहा ॥ | निश्चै यहि बिरहानल[18] दहा[19]
निश्चै यहि वह कारन[20] तपा ॥ | प्रबल[21] प्रेम न आछे छिपा ॥
निश्चै प्रेम पीर यहि जागा ॥ | कसें कसौटी कंचन[22] लागा
बदन पियर जल टपकै नयना | प्रगट[23] दोउ प्रेम के बयना[24] ॥
यहि वह जन्म लाग के सीझा | चहीन औरहि ओही रीझा ॥
महादेव देवन के पिता ॥ | तुम्हरे शरण राम रण जिता
यहूँ कहँ तस मया[25] करेहू ॥ | पुर वहु आश कि हत्या लेहू ॥

ईश्वर १ आवाज़ २ इन्द्र तक भेजोंगी ३ इन्द्रलोक की परी ४-६ छोड़ना ५-८ बराबर ७ फ़ायदा ९-११ लाल १० आँख १२ दरवाज़ा १३ न्योछावर १४ ख़बर १५ जहान १६ महादेवजी १७ बिरह की आग १८ जलना १९ सबब २० ज़बर्दस्त २१ सोना २२ ज़ाहिर २३ आवाज़ २४ मेहरबानी २५ ॥

हत्या चढ़ायहि काँध दुइ औ तिनके अपराध
तिसरे लेहु कि माथे जोगिलि ये किये साध ॥

सुनि के महादेव की भारवा ॥ सिद्धि पुरुष राजैं मन लाखा
सिद्धहि अंग न बैठे माखी ॥ सिद्धि पलक नहिं लावहिं आँखी
सिद्धहि अंग होय नहिं छाया सिद्ध होय नहिं भूखन माया
जो जग सिद्धि गुसाईं कीन्हा ॥ प्रगट गुप्त रहै को चीन्हा ॥
बैल चढ़ा कुष्टी कर भेषू ॥ कहि राजा सत आहि महेषू
चीन्हे सोइ रहै तेहि खोजा ॥ जस बिक्रम औ राजा भोजा
के जिव तन्त मन्त सों हेरा ॥ गयो हिराय जो वह भा मेरा

बिन गुरु पंथ न पावै भूला सोइ जो मेट ॥
योगी सिद्ध होय तब जब गोरख सों भेट ॥

तत खन रतन सेन घाबरा ॥ छाँड़िड़ फार पाँय लै परा ॥
माता पिता जन्म कित पाला जो अस फाँद प्रेम गै घाला ॥
धर्ती स्वर्ग मिले हत दोऊ कित निरार कर दीन्ह बिछोऊ
पदक पदारथ कर हुत खोवा टूटहिं रतन रतन तस रोवा ॥
गगन मेघ जस बर्षहिं भली धर्ती पूर शलिल होय चली ॥
सायर उबट शिखिर की पाटी चढ़ी पानि पाहन हिय फाटी ॥
बूँद पानि होय होय सब गिरे प्रेम फन्द कोऊ जन परे ॥

तस रोवै जस जिव जरै गिरै रक्त औ माँस ॥
रोम रोम सब रोवहिं सूत सूत भर आँस ॥

बातचीत १ मर्द कामिल २ बदन ३ दुनियां दौलत ४ दुनियां ५ ज़ाहिर ६ छिपा हुवा ७ सूरत ८ महादेवजी ९ राजा बिक्रमाजीत १० तलाश ११ देखना वा ढूँढ़ना १२ राह १३ नाम योगी १४ यकायक १५ गर्दन १६ ज़मीन १७ आसमान १८-२३ अलग १९ लाल वा जवाहिर २० हाथ २१ आँसू २२ पानी २४ तालाब २५ धोबी का पाटा २६ पत्थर २७ छाती २८ ख़ून २९ सूराख़ ३०

वत बूड़ उठा संसारू ॥ ॥ महादेव तब भयो मयारू ॥
कहसि न रोव बहुत तैं रोवा ॥ अब ईश्वर भा दारिद खोवा ॥
जो दुःख सहै होय सुख ओका दुःख बिन सुख न जाय शिवलोका
अब तू सिद्धि भया सुख पाई ॥ दर्पन कया छूटि गइ काई ॥
कहूं बात अबहूं उपदेशी ॥ लाग पंथ भूले परदेशी ॥
जौ लहि चोर सेंध नहिं देई ॥ राजा केर न मूसै पेई ॥
चढ़ै तो जाय पार वह खूंदी ॥ परै तो सेंध शीश सों मूंदी ॥

कहूं तोहिं सिंहल गढ़हि है खराड सात चढ़ाव
फिरा न कोई जीते जिय स्वर्ग पंथ दे पांव ॥

गढ़ तस बांक जैस तोर काया पुरुष देखि ओही की छाया
पाई नाहिं जूझ हठ कीन्हे ॥ जे पावा ते आपहिं चीन्हे ॥
नौ पवरी तें गढ़ मझियारा औ तह फिरहिं पांच कुतवारा
दशौं द्वार गुप्त एक नाके ॥ अगम चढ़ाव बाट सुठ बांके
भेदी जाय कोई वह घांटी ॥ जौ लहि भेद चढ़ै होय चांटी
गढ़ तरि कुराड सुरंग तेहि माहां ते वै पंथ कहौं तोहि पाहां ॥
चोर पैठि जस सेंध सवारी ॥ जुवा पैंत जस लाय जुवारी ॥

जस मरजिया समुद्र धस मारे हाथ आव तस सीप
ढूंढ़ि लेहु जो स्वर्ग द्वारे चढ़ै सो सिंहल दीप ॥

मेहरबानी करने वाले १ कामिल २ आईना ३ बदन ४ नसीहत ५ राह ६ पूंजी ७ खाई ८ शिर ९ आसमान १० क़िला तथा बदन आदमी ११ पेंचदार १२ बदन १३ मर्द १४ नौ दरवाज़ा तथा नौ सूराख बदन के आंख २ कान २ मुंह १ नथुना २ गुदा १ लिंग १-१५ दरमियान १६ पांच कोतवाल यहां मुराद-काम-क्रोध-अहंकार-लोभ वग़ैरा से हैं १७ दश इन्द्री बदन की-कर्म इन्द्री ५-ज्ञान इन्द्री ५-१८ छिपा हुवा १९ जहां किसी का दख़ल न हो २० राह २१ बहुत टेढ़ा २२ चींटी २३ दांव २४ ॥

दशौं[1] दुवार ताल का लेखा ॥ उलट दृष्टि[2] जो लाव सो देखा ॥
जाय सो जाय स्वास[3] मन बन्दी जस धसि लीन्ह कान्ह[4] कालि[5]
तू मन माथ मार के स्वासा ॥ जो पै मरहि आप कर नासा
प्रगट[6] लोक चार कहुँ बाता ॥ गुप्त लाव मन जासों राता[8] ॥
होहूँ कहत सबै मति[10] खोई ॥ जो तू नाहिं आहि सब कोई ॥
जीतहि जुरी मरै इक बारा ॥ पुनि को मीचै[11] मरै को पारा
आपहिं गुरु सो आपहिं चेला ॥ आपहिं सब औ आप अकेला

आपहिं जीवन[12] मरन पुनि आपै तन मन सोय
आपहिं आप करै जो चाहै कहाँ सो दूसर कोय

खण्ड उन्नीसहवाँ राजा गढ़ छेंका खण्ड

सिधि गुटका राजै जो पावा ॥ औ भइ सिद्धि गणेश मनावा
जब शंकर सिधि दीन्ह कुटेका परीहूल योगिन गढ़ छेका ॥
सबै पद्मिनी देखहिं चढ़ी ॥ सिंहल घेर गई उठि मढ़ी ॥
जस घर फिरा चोर मत कीन्हा तेहि बिधि सेंध चाहि गढ़ दीन्हा
गुप्त चोर जो रहै सो साँचा ॥ परगट होय जीव नहिं बाँचा ॥
पँवर पँवर[13] गढ़ लाग केवारा ॥ औ राजा सों भई पुकारा ॥
योगी आय छेंक गढ़ मेली ॥ न जनों कौन देश कहँ खेली

भयो रजाँय[14] सु देखौ को भिखार अस ढीठ ॥
बेगि[15] बरज तेहि आवहिं जन दुइ चार बसीठ[16] ॥

तथा दशदरवाज़े बदन आदमी के १ निगाह २ योग की क्रिया बायें पैर की रग दहने पैर से पकड़ स्वास को तोंदी के नीचे से रोक दो अँगुली से होंठ बीच की अँगुली से दोनों नथुने दोनों शहादत की अँगुली से आँख दो अँगुली से कान के सूराख बन्द करई प्रवर का नाम तोंदी से खींच कर ब्रह्माण्ड के स्वास चढ़ाये ३ श्रीकृष्णजी ४ यमुना ५ ज़ाहिर ६ छिपा ७ लाल ८ मैं-मैं ९ अक़िल १० मौत ११ ज़ीना १२ दरवाज़ा १३ हुक्म १४ जल्द १५ वकील १६ ॥

तर बसीठ दुइ आय जुहारी[2] | की तुम योगी की बनजारी
भयो रजायसु[3] आगें रेवलहिं[4] | गढ़ तरु छाँड़ि अंत होय मेलहिं
अस लागहि केहि के शिष दीन्हें | आयहि मरहि हाथ जिव लीन्हें
हाँ इन्द्रासन राजा तपा ॥ | जाहि रिसाय सूर डर छिपा
हो बनजार तो बनज बिसाहो | भर व्योपार लेहु जो चाहो ।
योगी होहु तो युक्ति सों मांगहु | भुक्ति लेहु लै मारग लागहु
यहाँ देवता आश के हारी ॥ | तुम पतंग को आहि भिखारी

तुम योगी बैरागी कहत न मानी कोह ॥
लेहु माँग कुछ भिक्षा खेल अंत कहँ होह

आन जो भीख हों आयों लिये | कस न लेवों जो राजा दिये ॥
पद्मावत राजा की बारी ॥ | हों योगी वह लाग भिखारी
खप्पर लिये बार भा मागों ॥ | भुक्ति देइ लै मारग लागों ॥
सोई भुक्ति परापत पूजा ॥ | कहाँ जाउँ अस बार न दूजा ॥
अब धर यहाँ जीव वह ठाऊँ ॥ | भस्म होहुँ पैतजों न नाऊँ ॥
जस बिन प्रान पिंड है छूँछा | धर्म लाग कहिये जो पूँछा ॥
तुम सो बसीठ राजा की ओरा | शाख होहु यह भीख निहोरा

योगी बार आव सो जेहि भिक्षा की आश
जो निराश दृढ़ आसन कित गवने केहि पास

सुनि बसीठ मन अपने रिसा | यव पीसत घुन जायहि पिसा
योगी ऐस कहै नहिं कोई ॥ | सो कहु बात योगी तेहि होई ॥
वह बड़ राज इन्द्र कर पाटा ॥ | धर्ती परे स्वर्ग को चाटा ॥

वकील १ सलाम २ हुक्म ३ जाना ४ क़िला ५ और जगह ६ सिखाना ७ सूर्य्य ८ माल ९ तदबीर १० रोज़ी ११ राह १२ पाँखी १३ चले जाउ और कहीं १४ भीख के वास्ते १५ लड़की १६ दरवाज़ा १७ भीख १८ रास्ता १९ जगह २० छोड़ना २१ बदन २२ शाख मेवा भरी २३ कहाँ जाउँ २४ लायक़ २५ तख़्त २६ आसमान २७ ॥

जो यह बात जाय तहँ चली ॥ छूटहिं अबहिं हस्ति सिंहल
औ छूटहिं तहँ बज्र के कूटा ॥ बिसरे भुक्त होय सब खूटा ॥
जहँ लग दृष्टि न जाय पसारी तहाँ पसारसि हाथ भिखारी
आगे देखि पाँव धरि नाथा ॥ तहाँ न देखि दूटि जहँ माथा

वह रानी जेहि जुगत महँ तेही राज औ पाट ॥
सुन्दर जाय राज घर योगिहि बन्दर काट ॥

जो योगी सत बन्दर काटा ॥ एके योग न दूसर बाटा ॥
और साधना आवै साधे ॥ योग साधना आपहिं दाधे ॥
सर पहुँचाउ योग कर साथू ॥ दृष्टि चाहि अगमन होय हाथू
तुम्हरे जोर सिंहल के हाथी हमरे हस्ति गुरु है साथी ॥
हस्त नेस्ते वह करत न बारा पर बल करै पाँव की छारा
जोर गिरे गढ़ जानवन्त भये जो गढ़ गर्ब करहिं ते नये ॥
अंत जो चलना कोउ न चीन्हा जो आवा सो आपन कीन्हा ॥

योगिहि कोहै न चाही तबन मोहि रिस लाग
योग तंत ज्यों पानी काहि करै तेहि आग ॥

बैसीठहिं जाय कही सब बाता राजा सुनत कोह भा राता ॥
ठाँवहिं ठाँव कुँवर सब मोखे ॥ वो अबलहिं ये योगी राखे ॥
अबहूँ बेगहि करो सँयोऊ ॥ तस मारहु हत्या किन होऊ ॥
मंत्रिन कहा रहो मन बूझे ॥ पतिन होय योगिहि सों जूझे
वै मारे तौ काह भिखारी ॥ लाज होय जो मानी हारी ॥

हाथी १ पत्थर के गोले २ भीख माँगना ३ चारों तरफ़ ४ निगाह ५ तख़्त ६ राह ७ जलाना ८ आख़िर ९ नज़र से ज़्यादा १० पहिले ११ हाथी १२ मास १३ देर १४ राख १५ पहाड़ १६ महाँतक १७ ग़रूर १८ मरना १९ ख़ुदबीनी की २० गुस्सा २१ वकील २२ लाल २३ जगह २४ बुलाया २५ जल्द २६ तदबीर २७ सलाहकार २८ बड़ाई २९ लड़ाई ३० ॥ ✤ ॥

ा भल मुयेँ न मारे मोषू ॥ दुहूँ बात तुम्ह लागहि दोषू ॥
हे देहु जो गढ़ तर मेली ॥ योगी कित आछे पुनि खेली ॥

आछे देहु जो गढ़ तरे जनि चालहु यह बात
नितहिँ जो पाहन भख करहिँ अस केहि के मुख दाँत

ाये बसीठ पुनि बहुर न आये ॥ राजैँ कहा बहुत दिन लाये ॥
नजनो स्वर्ग बात धौँ काहा ॥ काहु न आय कही फिर चाहा
पंख न काया पवन न पाया केहि बिधि मिलौँ होउँ केहि छाया
सँवर रक्त नयनहि भर चुवा ॥ रोयहँ कारेसि माँझी सुवा ॥
परी जो आँसू रक्त की टूटी ॥ रेँग चली जस बीर बहूटी ॥
वही रक्त लिख दीन्हीं पाती सुवा जो लीन्ह चोँच भइ राती
बाँधी कंठ पड़ा जस काँथा ॥ बिरहि के जरा जाय कहँ नाथा

मसि नयना लिखनी बरनै रोय रोय लिखा अकत्थ
आँखर दहै न कोई छुवै दीन्ह परेवा हत्थ ॥

औ मुख बचन सो कहेसि परेवा पहिले मोर बहुत के सेवा ॥
पुनि रे सँवार कहेसि अस दूजी जेउ बल दीन्ह देवतन पूजी ॥
सो अबही तुब से बल लागा बल जिब रहा न तन सो जागा
भलहि ईशहू तुम्ह बल दीन्हा जहँ तुम्ह तहाँ भाव बल कीन्हा
जो तुम मयाँ कीन्ह पग धारा दृष्टि दिखाय बान बिष मारा
जो अस जाकर आशा मुखी ॥ दुःख महँ एस न मारै दुखी ॥
नयन भिखार न मानहिँ सीखा अगमन दौरे लीन्ह पै भीखा

मरना १ नजात २ पाप ३ क़िले के नीचे ४ कितने आये औ चले गये ५ रहने दो ६ हरोज़ ७ पत्थर ८ वकील ९ आसमान तथा क़िला १० ख़बर ११ पदन १२ हवा अर्थात् ज़ोर १३ बुलाया १४ दरमियानी १५ तोता १६ ख़ून १७ लाल १८ गरदन १९ निशान २० आशिक़ २१ काजल आँख का २२ पलक २३ हाल २४ हर्फ़ २५ जलना २६ ज़ोर २७ मौजूद २८ ईश्वर २९ मेहरबानी ३० नज़र ३१ आँख ३२ आगे ३३

नयन[1] नहि नयन जो बेध गये नहिं निकसैं वै बान[2]
हिये[3] जो आखर[4] तुम लिखी ते सठ घटहिं परान

ते बिष बान लिखू कहँ ताईं ॥ रक्त[5] जो चुवा भीज दुनियाईं
जान सुकारी[6] रक्त पसेऊ[7] ॥ सुखी न जान दुखी कर भेऊ[8] ॥
जिन न पीर तिन का कर चिन्ता[9] प्रीतम निदुर[10] होहिं अस निन्ता[11]
कासो कहूँ बिरह की भाषा ॥ जासों कहौं होय जर राखा ॥
बिरह आग तन जर मैं जरै ॥ नयन[12] नीर सायर[13] सब भरै ॥
पाती लिखी सँवर तुम नामा रक्त लिखे आखर भय श्याम[14]
आखर जरहिं न कोई छुवा ॥ तब दुख देख चला लै सुवा ॥

अयसठ मरौं छूँछि[15] गइ पाती प्रेम पियारे हाथ ॥
भेंट होत दुख रोय सुनावत जीव जात जो साथ

कंचन[16] तार बाँध गये[17] पाती ॥ लैगा सुवा जहाँ धन[18] राती ॥
जैसे कमल सूर्य्य की आशा तोर कंथ[19] बहु मरै पियासा ॥
बिसरा भोग सेज सुख बासू जहाँ भँवर सब तहाँ हुलासू[20] ॥
तब लगि धीर सुना नहिं पीउ सुना तो घडी रहै नहिं जीउ ॥
तब लग सुख हिये[21] प्रेम न जाना जहाँ प्रेम का सुख बिश्रामा[22]
अगर चंदन दुख दहै[23] शरीरू[24] औ भा अगिन कयाँ[25] कर चीरू[26]
कथा कहानी सुनि सुठ जरा ॥ जानो घीव बसन्दर[27] परा ॥

बिरहन आप सँभारे मैल चीर[28] शिर रूख ॥
पिउ पिउ करत रात दिन पपिहा मुख भै सूख

आँख १ तीर २ छाती ३ हर्फ़ ४ ख़ून ५ कालासाँप ६ लाल पसीना ७ भेद ८ अंदेशा ९ बेदर्द १० अर्थात् हमेशा से होते आये हैं ११ आँख का पानी तथा आँसू १२ तालाब १३ अर्थात् काले हर्फ़ १४ ख़ाली १५ सोने का तार १६ गरदन १७ अर्थात् पद्मावत १८ ख़ाविन्द १९ ख़ुशी २० दिल २१ आराम २२ जलना २३ बदन २४-२५ कपड़ा २६-२८ आग २७ ॥ ॥

ततखन गा हीरामन आई ॥ मरन पियास छाँह जनु पाई
भल तुम सुआ कीन्ह है फेरा गाढ़ न जानहु प्रीतम केरा ॥
बातहिं जानो बियम पहारा हृदय मिला न होय निरारा
मर्म पानि कर जानि पियासा जो जल महँ ताकहँ का आशा
कारानी यहि पूँछहु बाता ॥ जन कोइ होय प्रेम कर राता
तुम्हरे दरशन लागा बियोगी अहा सो महादेव मठ योगी
तुम बसंत लै तहाँ सिधाई देव पूज पुनि औ फिर आई

दृष्टि बान तस मारेहु खाय रहा तेहि ठाँव
दूसर बार न बोलहि लै पद्मावत नाँव ॥

रोम रोम बान वै फूटी ॥ सूतहिं सूत रुधिर मुख छूटी
नयनहि चली रक्त की धारा ॥ कंथा भीज भयो रतनारा ॥
सूरय बूड़ उठा पर भाता ॥ औ मजीठ टेसू बन राता ॥
भयो बसंत राती बन पती ॥ औ जतने सब योगी यती ॥
भूमि जो भीज भयो सब गेरू ॥ औ राती तहँ परेव परेवरू ॥
राती सती अगिन सब काया गगन मेघ राती तहँ छाया
ईंगुर भा पहाड़ जो भीजा ॥ पै तुम्हार नहिं रोम पसीजा ॥

तहाँ चकोर औ कोकिला मर्यो हिये तेहि पैठ ॥
नयनन रक्त भरायहि तुम फिर कीन्ह न डीठ

ऐसो बसंत तुम्हीं पै खेलहु ॥ रक्त पराये सेंदुर मेलहु ॥
तुम तो खेल मन्दिर कहँ आई वह का मर्म जस जान गुसाईं
कहेसि मरै को बारहि बारा ॥ एकहि बार होहुँ जर छारा ॥

उसी वक्त १ नाम तोता २ मुशकिल ३ टेढ़ा ५ दिल ५ अलग ६ भेद ७ पानी ८ अर्थात् दीवाना ९ दुखी ११ निगाह ११ जगह १२ सूराख १३ खून १४ आँख १५ गुदड़ी १६ लाल १७-२० भार १८ लाख १९ जंगल की बूटी २१ ज़मीन २२ परिन्द जानवर २३ बदन २४ आसमान २५ मेहरबानी २६ खून २७ भेद २८ ईश्वर २९ धाख ३०

सेर रच चहा आग जो लाई ॥ महादेव गौरी सुध पाई ॥
आय बुझाय दीन्ह पंथ[2] तहाँ ॥ मरन खेल कर आगम[3] जहाँ
उलटा पंथ प्रेम की बारा[4] ॥ चढ़ै स्वर्ग[5] जो परै पतारा ॥
अब धस लीन्ह चही तेहि आशा पावै स्वास किमरै निराशा ॥

पाती लिख सो पठाई लिखा सबै दुख रोय
धौ जिव रहै कि निसरै कहा रजाय[6] सु होय

कहि के सुवा छोड़ दइ पाती जानहु दब्ब[7] छूट तस ताती[8] ॥
गेउँ[9] जो बाँधा कंचन[10] तागा रातीं[11] श्याम कंठ जर लागा ॥
अगिन स्वास मुख निसरै ताती तरवर[12] जरहिं तहाँ को पाती ॥
रोय रोय सुवे कही सो बाता ॥ रक्त कि आँसु भयो मुख राता
देख कराठ जर लाग सो केरा ॥ सो कस जरै बिरह अस घेरा ॥
जर जर हाड़ भये सब चूना ॥ तहाँ मांस को रक्त बहूना ॥
वैं तोहि लाग कया[13] सब जारो ॥ तपत मीन[14] जल रहै न पारो[15] ॥

तुहि कारन[16] वह योगी भस्म कीन्ह तन दाँह[17]
तू अस निठुर[18] निछोही[19] बात न पूँछी ताह ॥

कहेसि सुवा मोसो सुनि बाता चहौं तो आज मिलौं जस राता
पै सो मर्म[20] न जानै भोरा[21] ॥ जानै मर्म जो मर[22] के होरा ॥
हौं जानत हूँ अबहूँ काँचा ॥ ना जेहि प्रीति रंग थिर[23] राँचा ॥
ना जेहि भयो मलय[24] गिरि बासा ना जेहि रबि[25] होय चढ़ेउ अकाशा
ना जेहिं होय भँवर कर रंगू ॥ ना जेहि दीपक भयो पतंगू ॥
ना जेहि किरा भृंग[26] की होई ॥ ना जेहि आप जिये मर सोई ॥
ना जेहि प्रेम औटइक भयो ॥ ना जेहि हिये माँझ डर गयो ॥

चिता १ राह २ पहिले ३ दरवाज़ा ४ आसमान ५ हुक्म ६ निहाई ७ गर्म ८ गरदन ९ सोना १० लाल वा काला ११ पेड़ १२ बदन १३ मछली १४ बेकरार १५ वास्ते १६ जलाना १७ बेदर्द १८-१९ मेद २० नादान २१ मरके जलना २२ कायम २३ चन्दन २४ सूर्य्य २५ नाग कीड़ा २६

तेहिं[1] का का कहिये रहन जो है प्रीतम लाग ॥
जो वह सुने लेइ धस का पानी का आग ॥

पुनि धन[2] कनक[3] बान मसि[4] मांगी
उत्तर[5] लिखत भीजि तन आंगी
तस कंचन[6] कहँ चही सुहागा
जो निरमल[7] नग होय सुलागा
हौं योगी मठ मंडफ बहोरी ॥
तहवाँ कस न गाँठ तुम जोरी ॥
गा बिष[8] भार देख के नयना ॥
सखिन लाज का बोलौं बयना[10]
खेल मिसे[11] मैं चन्दन घाला ॥
मगे[12] जागेसि तो देवौं जै माला
तबहुँ न जागा गा तू सोई ॥
जागे भेट न सोये होई ॥
अब शशि[13] होय चढ़ै अकाशा
जो जिव देय सो आवै पासा

तब लग भुक्ति[14] न लैस का रावन सिय इक साथ
कौन भरोसे अब कहौं जीव पराये हाथ ॥

अब जो सूर[15] गगन[16] चढ़ आवै
राहु होय तौ शशि[17] कहँ पावै
बहु तेहिं ऐसो जीव पर खेला
तू योगी किन माहँ अकेला
बिक्रम[18] धसा प्रेम के बारा[19] ॥
सम्पावत[20] कहँ गयो पतारा ॥
सुदी पच्छ[21] खण्ड[22] रावत लागी
गगन[23] पूर होय गा बैरागी ॥
राजकुँवर[24] कंचन[25] पुर गयो ॥
मिरगावत[26] कहँ योगी भयो
साधु कुँवर[27] खंडावन योगू ॥
मधु[28] मालति कहँ कीन्ह बियोगू[30]
प्रेमावत[31] कै सुरसर[32] साधा ॥
ऊषा[33] लगि अनुरुध[34] बर बाँधा ॥

हौं रानी पद्मावत सात स्वर्ग पर बास ॥
हाथ चढ़ौं सो तेहिं के प्रथम[35] करै अपनाश

तिसको रहने के वास्ते क्या कहूँ १ पद्मावत २ क़लम ३ सियाही ४ जवाब पूसोना ६ पाक साफ़ ७ जाना ८ बेहोश ९ आवाज़ १० बहाना ११ पूरा पद १२ चाँद १३-१७ भीख १४ सूर्य्य १५ आसमान १६ राजा बिक्रमाजीत १८ दरवाज़ा १९ नाम रानी २०-२२ २६ २८-३१ राजा भोज २१ नाम जगह २३-२५ नाम राजा २४-२७-३२ भँवर २९ दुखी ३० बेटी बानासुर ३३ बेटा श्री कृष्ण चन्द्रजी ३४ पहिले ३५ ॥

हौं पुनि अहौं ऐस तुम राती | आधी भेट पिरीतम पाती ।
तोहूँ जो प्रीति निबाहै आँटा | भँवर न देख केत महँ काँटा
होहु पतंग आव गहु दिया ॥ | लेह समुद्र धस होय मरि जिया
रात रंग जिमि दीपक बाती ॥ | नयन लाव होय सीप सेवाती
चात्रिक होहु पुकार पियासा | पियो न पानि स्वात की आशा
सारस हो बिछुरी जस जोरी ॥ | रयनि होय जल चकइ चकोरी
होहु चकोर दृष्टि शशि पाहाँ | औ रवि होहु कमल वह माहाँ

होहुँ ऐस तुहि राती सकेसि तो प्रीति निबाह
राहु बेध अर्जुन होय जीत दुरपदी ब्याह ॥

राजा यहाँ तैसे तप झूरा ॥ | भा जर बिरह छार कर कूरा ॥
जिव गँवाय सो गयो बिमोही | भा बिन जिव जिव दीन्हेसि ओही
कहाँ पिंगला सुख मन नारी | सुन्न समाध लाग गइ तारी ॥
बूँद समुद्र जैसो हो मेरा ॥ | गा हेराय तस मिलै न हेरा
रंगहि पान मिला जस होय ॥ | आपहिं खोय रहा होय सोय
सुवे आय देखा भा नाशू ॥ | नयन रक्त भर आये आँशू ॥
सदा प्रीतम गाढ़ करेई ॥ | वह न भूल भूला जिव देई

मूरे सजीवन आन के औ मुख छिड़का नीर
गरुड़ पंख जस झारै अमृत बरसा कीर

मुवा जिया अस बास जो पावा | लीन्हेसि स्वास पेट जिव आवा
देखि बसि जाग सुवा शिर नावा ॥ | पाति दीन्ह मुख बचन सुनावा
शब्द सुनाय अमी मुख मेला ॥ | गुरू बुलाय बेगि चल चेला ॥
तोहि अलि कीन्ह आप भा केवा | हौं पठवा गुर बीच परेवा ॥

लाल तथा खुश १ निबाह करना २ पकड़ना ३ सुर्ख ४ जिस तरह ५ आँख ६ पपीहा ७ रात ८ निगाह ९ चाँद १० सूर्य्य ११ नाम भाई राजा युधिष्ठिर १२ रंग १३ १४ गुल्म १५ नाम बूटी १६ पानी १७ तोता १८ बोल १९ जल्द २० भँवर २१ केतकी २२ बिचपती २३

वन[1] स्वास तोसों मन लाई | जो[2] वै मारग[3] दृष्टि[4] बिछाई ॥
जस तुम काया कीन्हों दाहू[5] | सो सब गुरु कहँ भयो अगाहू[6]
पांवन्त छाला लिख दीन्हा | बेग[7] चलाव चहूँ सिधि[8] कीन्हा

बेग चल आवो अस कहेउ जीव बसे तुम नाउँ
नयन[11] नहि भीतर पंथ[12] है हिरदय[13] भीतर ठाउँ[14]

सुनि पद्मावत की अस मैया[15] | भा बसंत उपनी[16] नइ कैया[17] ॥
सुवा का बोल पवन होय लागा | उठा सोय हनुमत होय जागा
चाँद मिलन कहँ दीन्हेंसि आशा | सहँस[18] किरान सूर्य्य परकाशा
पाति लीन्ह लै शीश[19] चढ़ावा | दृष्टि चकोर चाँद जस पावा
आश पियासा जो जेहि केरा ॥ | जो झिझकार वही सो हेरा[20] ॥
अब यहि कौन पानि मैं पिया ॥ | भैतन पाँख पतंग मरजिया ॥
उठा फूल हिरदय न समाना ॥ | कंथा[21] दूक दूक भर आना ॥

जहाँ प्रीतम वै बसहिं यहि जिव बैल[22] तेहि बाट[23]
जो सो बुलावै पाँव सों हम तहँ चलैं ललाट[24] ॥

जो पंथ मिला महेश[25] हि सेई ॥ | गयो समुद्र ओही धस लेई ॥
जहँ वह कुंड बिषम[26] औ गाहा[27] ॥ | जाय परा तहँ पावन थाहा ॥
बावर अन्ध प्रेम कर लागू ॥ | सौंह[28] धसा कुछ सूझन आगू
लीन्हेसि धस जो स्वास मन मारा | गुरु मुछन्दर नाथ सँभारा ॥
चेला परी न छाँड़हि पाछू ॥ | चेला मच्छ गुरु जस काछू
जस धस लीन्ह समुद्र मरजिया | उघरे नयन बरै जस दिया ॥
खोज लीन्ह सो स्वर्ग[29] दुवारा ॥ | बज्र[30] जो मूँदे जाय उघारा ॥

हवा १ ढूँढना २ राह ३ निगाह ४ जलाना ५ खबर ६ दिन मिला ७ खत ८ जल्द ९ कामपूरा १० आँख ११ राह १२-२३ दिल १३ जगह १४ मेहर बानी १५ पैदा होना १६ बदन १७ हज़ार १८ शिर १९ देखना २० गुदड़ी २१ न्योछावर २२ माथा २४ महादेवजी २५ टेढ़ा २६ खबर २७ सामने २८ आसमान २९ पत्थर ३० ॥

बाँक चढ़ाव स्वर्ग गढ़ चढ़त गयो होय भोर
भइ पुकार गढ़ ऊपर चढ़े सेंध दै चोर ॥

राजै सुनि योगी गढ़ चढ़े ॥
योगी गढ़ जो सेंध दै आवहिं ॥
कहहिं वेद पंडित पढ़ बेदी ॥
जैसे चोर सेंध पिर मेलहिं ॥
पंथ नहिं चलहिं वेद जस लिखी
चोर होय सूली पर माँसू ॥
चोर पुकार बेध घर मूसा ॥

पूँछी पास पाँडित जो पढ़े
बोलहु शब्द मुहँ जस पावहिं
योग भँवर जस मालति भेंटा
तस ये देहु जीव पर खेलहिं
स्वर्ग जाय सूली चढ़ सिरवी ॥
दे जो शूरी तेहि नहिं दोसू ॥
खोलो राज भँडार मँजूसा ॥

जस यहि राज मँदिर कहँ दीन्ह रयन होय सेंध ॥
तेसो इन्ह कहँ मोय होय मार हु शूली बेध ॥
खराड बीसवाँ मंची खराड गन्धर्वसेन ॥

सेंध जो मंची बोले सोई ॥
सिद्ध निपाक रयन दिन भोंही
सिद्ध निडरपै अपने जीवा ॥
सिद्ध जाय पैजिव बध तहाँ ॥
सिद्ध अमर काया जस पारा
चढ़ा जो कोप गरान उपराही
जम्बुक जूझ चढ़े जो राजा ॥

एसो जो चोर सिद्ध ये कोई
ताका जहाँ तहाँ अपसोंही ॥
स्वर्ग देख वो नावहिं गीवाँ ॥
औरहि मरन परा अस कहाँ
जरहिं मरहिं पर जाय न मारा
थोरे साज मरे ते नाहीं ॥
सिंह साज के चढ़े सो छाजा

छरहिं काज कृपा कर साजा राजा चढ़े रिसाय ॥
सिद्ध गिद्ध जहँ दृष्टि गगन महँ बिन छरकुछ न बिसाय

आवहु करहु कदेर मस साजू
चढ़हिं बजाय जहाँ लगि राजू

आसमान १ कहो क्या दंड २ राह ३ नजात ४ पाप ५ सन्दूक ६ मर्द कामिल ७ फिर
ना ८ देखना ९ पहुँचना १० गरदन ११ हमेशा ज़िन्दा १२ बदन १३ आसमान १४
सिवा १५ शेर १६ फ़रेब १७ निगाह १८ लश्कर तय्यार हो १९ ॥

ह सँजो वेल कुँवर जो भोगी | सब दल छेंक धरहु अब योगी ॥
बिसलाख छत्रपति साजे ॥ | छपन कोटि दर बाजन बाजे ॥
इस सहँस सिंहली चाले ॥ | गिरि पहाड़ पेई सब हाले ॥
गात बराबर वै सब चाँपा ॥ | डरा इन्द्र बासुक हिय काँपा
दस कोटि रथ साजे आवहिं | गढ़ होय खेह गगन कहँ धावहिं
नु भौचाल जगत महँ परा | कुर्महि पीठ दूटि हिय डरा

छत्रहि स्वर्ग छायगा सूरय भयो अलोप
दिनहि रात अस देखी चढ़ा इन्द्र होय कोप

देख कटक औ मन मत हाथी | बोले रतनसेन के साथी ॥
होत आव दल बहुत असूझा | अस जानव कुछ होय है जूझा
राजा तुइँ योगी होय खेला | यही दिवस कहँ हम भये चेला
जहाँ गाढ़ ठाकुर कर होई ॥ | संग न छाड़े सेवक सोई ॥
जो हम मरन दिवस मन ताका | आज आय पूजी वह साका
परजिव जाय जाय नहिं बोला | राजा सत सुमेरु नहिं डोला
गुरु केर जो आयसु पावहिं | सौंह होहिं औ चक्र चलावहिं

आज करहिं रण भारथ सत बाचा दै राख
सत्त गुरु सत कौतुक सत्त भरैं पुनि शाख

गुरु कहा चेला सिध होहू ॥ | प्रेम बार होय करो न कोहू ॥
जा कहँ शीश नाय के दीजे ॥ | रंग न होय जूझ जो कीजे ॥
जेहिं जिय प्रेम पानि भा सोई | जेहि रंग मिलै वही रंग होई
जो पै जाय प्रेम सों जूझा ॥ | कित तप मरहिं सिद्ध जेहि बूझा

मुक़ाबिला १ राजा २ फ़ौज ३- १२ हज़ार ४ पहाड़ ५ नाम राजा सापों का ६ दिल ७ राख ८ आसमान ९-११ कछुवा १० मस्त १३ दिन १४ मुसीबत १५ मालिक १६ हुक्म १७ सामने १८ नाम हथियार १९ तमाशा २० दरवाज़ा २१ गुस्सा २२ शिर २३ पानी २४ लड़ाई २५ ॥

यहि सत बहुत जूझ[1] नहिं करिये
पानी कहा खड्ग की धारा
पानी सेते आग का करई ॥

खड्ग[2] देख पानी होय दुरि
लौट पानि सोई जो मार
आय बुझाय पानी जो पर

पीछे[3] दीन्ह मैं आगमन[4] प्रेम पानि शिर मेल
अब सो प्रीति निबाहूँ चलौं सिद्ध होय खेल

राजै छेंक धरा सब योगी ॥
नाजिय धड़क हिये[5] डर कोई
नाग फाँस उन्ह मेली गीवाँ[7] ॥
जो जिव दीन्ह सो लेव निराशा
कर[10] किंगरी तेहि तन्त बजावा
भलहिं आन गये[11] मेली फाँसी
मैं गये फाँद वही दिन मेला ॥

दुख ऊपर दुख सहै बियोग[5]
नाजिय मरन जिवन कस होई
हर्ष[8] न बिसमो[9] अब को जीवाँ
बिसरे नहिं जो लह तन स्वासा
यही गीत वैरागी गावा ॥
हिये[12] न शोच ऐसी रिस नासी
जेहि दिन प्रेम पंथ होय खेला

प्रगट[13] गुप्त[14] सकल[15] महँ पूर रहा सो नाउँ ॥
जहँ देखौं वह देखौं दूसर नहिं कहुँ जाउँ

जब लग गुरु मैं अहा न चीन्हा
जो चीन्हा तौ और न कोई ॥
होंहों कहत धोख अंतराही
मारै गुरू कि गुरू जियावा
सूरी मेल हस्ति[17] गुरु परू ॥
गुरू हस्ति पर चढ़े सो पेखा[18]
अंधि मीन[21] जस जल महँ धावा

कोटि अंतर पट[16] बिच हुत दीन्हा
तन मन जिव यौबन सब सोई
जो भा सिद्ध कहाँ परछाहीं
और को मार मरै सब आवा
हौं नहिं जानौं जानै गुरू ॥
जगत[19] जो नास्त[20] नास्त सब देखा
जल जीवन[22] जल दृष्टि[23] न आवा

लड़ाई १ तलवार २ शिर ३ पहिले ४ दुखी ५ दिल ६-१२ गरदन ७-११ खुशी ८ दुःख ९ हाथ १० ज़ाहिर १३ छिपा हुवा १४ सब १५ करोरों परदा का बीच १६ हाथी १७ देखना १८ दुनियाँ १९ नाश होने वाला २० मछली २१ ज़िन्दगी २२ निगाह २३ ॥ ५ ॥

गुरु मोर मोरे हिये दिये तुरंगहि[1] ढाठ ॥
भीतर करहि डुलावै बाहर नाचै काठ

सौं पद्मावत गुरु हौं चेला
तज[3] वह बार[4] न जानौं दूजा ॥
जीव काढ भुइँ धरौं ललाँदू[5]
को मोहिं लै सो छुवावै पाया
जीव चाहि[10] सो अधिक[11] पियारी
माँगौ शीश[12] देउँ मैं गीवाँ[13] ॥
अपने जिव कर लोभ न मोहीं

योग तन्त जेहि कारन[2] खेला
जेहि दिन मिलै यात्रा पूजा
वहि कहँ देउँ हिया[6] महँ पाँदू[7]
नौ अवतार[8] देइ नइ काया[9]
माँगौ जीव देउँ बलहारी ॥
अधिक तेरे जो मारै जीवाँ
प्रेम बार होय माँगौ ओहीं ॥

दरशन बह का दिया जस हौं सुभिखारी पतंग
जो करवट[14] शिर सारी मरत न मोरौं अंग ॥

पद्मावत कमला शशि[15] ज्योती
परजापतें[16] हँसी औ रोजूँ[17] ॥
जबहिं सूर्य्य[18] कहँ लागा राहू
विरह अगस्त[22] जो बिसमो[23] भयउ
परगट[26] ढार सकै नहिं आँसू
जस दिन माँझ रयनि होय आई
राता[28] बदन गयो होय सेता[26] ॥

हँसै फूल रोवै तब मोती ॥
लाये दूत होय नित[19] खोजू ॥
तबहिं कमल[20] मन भयो अगाहू[21]
सरवर[24] हरख[25] सूख सब गयउ ॥
घुट घुट मास गुप्त[27] होय नाशू
बिगसत कमल गयो मुरझाई
भवँत भँवर रहि गई अचेता

चितहि[30] जो चित्र[31] कीन्ह धन[32] रोरौं अग समीप
सहस[33] साल दुख आह भर मुरछ[34] परी कामीप

घोड़े की बाग १ वास्ते २ छोड़ना ३ दरवाज़ा ४ शिर ५-१२ दिल ६ तख़्त ७ नया जन्म ८ बदन ९ ज़्यादा १०-११ गरदन १३ सिर ठतारना १४ चाँद १५ बाप पद्मावत १६ रोना १७ हररोज़ तलाश १८ तथा राजा रतनसेन १९ तथा पद्मावत २० खबर २१ आग २२ तेज़ २३ तालाब २४ खुशी २५ ज़ाहिर २६ छिपा २७ लाल २८ सफ़ेद २९ याद ३० तसवीर ३१ पद्मावत ३२ हज़ार ३३ बेहोशी दूर होती ३४ ॥

पद्मावत संग सखी सयानी ॥ गन के नखत पीर शीश[1] जानी
जानेहु मर्म[2] कमल कर कोई[3] ॥ देख बिथा बिरहिन की रोई
बिरहा कठिन काल की कला बिरह न सही काल पर भला
काल काढ़ लै जीव सिधारा बिरह काल मारे पर मारा ॥
बिरह आग पर मेलै आगी बिरह घाव पर घाव बिजागी[4]
बिरह बान पर बान पसारा बिरह रोग पर रोग सँचारा ॥
बिरह साल[5] पर साल नवेला बिरह काल पर काल दहेला[6]

तन रावन होय शिर चढ़ा बिरह भयो हनुमन्त
जारे ऊपर जारै तजै[7] न कै भसमन्त ॥

कोइ कुमोद[8] परसहिं कर पाया कोइ मलया[9] गिरि छिड़कहिं काया
कोइ मुख शीतल[10] नीर चुवावै कोइ अँचल सों पवन डुलावै
कोइ मुख अम्दत आन निचोवा जनु बिष दीन्ह अधिक[11] धन[12] सोवा
जोवहिं स्वास खनहिं[13] खन सखी कब जिव फिरै पवन औ पँखी
बिरह काल होय हिये[14] जो पैठा जीव काढ़ लै हाथे बैठा ॥
खनक मवन बाँध खन खोला गहे सिं[15] जीभ मुख जाय न बोला
खनहि बीज[16] की बानन मारा कँप कँप नारि मरै बिकरारा[17]

कतहूँ बिरह न छाड़ै भा शशि[18] गहन गिराश
नखत चहूँ दिश रोवहिं अँधरे धरत अकाश

घड़ी चार इमि[19] गहन गिराशी पुनि बिधि[20] हिये[21] ज्योति परकाशी[22]
निससे[23] ऊभ भर लीन्हे स्वासा भइ अँधार[24] जीवन की आशा
बिनवहिं सखी छूट शशि[25] राहू तुम्हरी जीति ज्योति सब काहू

चाँद तथा पद्मावत १ भेद २ कोकाबेली ३-८ आग ४ सूराख ५ भारी ६ छोड़ना ७ चन्दन ९ ठंडापानी १० बहुत ११ पद्मावत १२ हर घड़ी १३ दिल १४ रुकना १५ बिजुली १६ बेकरार १७ चाँद गहन १८ इस तरह १९ ईश्वर २० दिल २१ रोशनी २२ बेहोश २३ कछु खाया २४ चाँद २५ ॥

तूँ[1] शशि बदन जगत[2] उजियारी | कै हर लीन्ह कीन्ह अँधियारी
तू गज गामिन[3] गर्ब[4] गहेली ॥ | अब कस अस सत छाँड़ दहेली[5]
तू हर लंक[6] हेराई केहर[7] ॥ | अब कस हार कंरसि है हर ॥
तू कोकिल बैनी[8] गज मोहा | कौन ब्याध होय गही निछोहा[9]

कमल करी तू पद्मिन गइ निशि[10] भयो बिहान
अबहुँ न सँपुट खोलि सजोरि उठा जग भान[11]

भान नाउँ सुनि कमल बिकासा | फिर कै भँवर लीन्ह मधु बासा
शरद[12] चन्द मुख जीभ उघेली | खंजन[13] नयन उठी कर केली ॥
बिरह न बोल आव मुख माई | मरमर बोल जीव बर याई[14] ॥
डोल बिरह दारुन[15] हिय[16] काँपा | खोल न जाय बिरह दुख झाँपा
उदधि[17] समुद्र जस तरंग[18] देखावा | चष[19] घूमहिं मुख बात न आवा
यह सठ लहर लहर पर धावा | भँवर पराजिव थाह न पावा
सखी आन बिष देव तो मरनू | जीव न पेट मरन का डरनू ॥

खनै[20] उठै खन बूड़ै अस हिय कमल सकेत[21]
हीरामनहिं बुलावहि सखी कहन जिव लेत

चेरी धाय सुनत खन धाई | हीरामन लै आय बोलाई
जनहु बैद्य औषधि लै आवा | रोगिये रोग मरत जिव पावा
सुनत अशीश नयन धन खोली | बिरह बैन कोकिल जिमि[22] बोली
कमलहि बिरह बिथा जस बाढ़ी | केसर[23] बरन पीर हिय काढ़ी
कित कमलहि भा प्रेम अँगूरू | जो पै गहन लेह दिन सूरू[24] ॥
पुरयन छाहिं कमल की करी | सकल[25] बिथा सुनि अस तुम हरी

चाँद कैसा मुँह १ दुनियां २ हाथी की चाल ३ ग़रूर ४ भारी ५ कमर ६ चीता ७ आवाज़ ८ बेदर्द ९ रात १० सूर्य्य ११ कातिक की पूरनमासी का चाँद १२ ममोला की आँख १३ भारी १४ मुशकिल १५ दिल १६ नाम समुद्र १७ लहर १८ आँख १९ कभूँ २० बन्द २१ जिस तरह २२ पीला २३ सूर्य्य २४ सब २५

पुरुषगंभीर न बोलहिं काहू | जो बोलहिं तौ और निबाहू

एतना बोल कहत मुख पुनि होइ गई अचेत
पुनि कै चेत सँभारी यही बकत मुख लेत

और दग्ध का कहौं अपारा | सती जो जरे कठिन अस झा
होय हनुमन्त पैठ है कोई ॥ | लंका दाह लाग तन सोई
लंका बुझी आग जो लागी | यहि न बुझै तस आँच बिजा
जनहु अगिन के उठहिं पहरा | वै सब लागहिं अंग अंगारा
कट कट मांस सराग पुरोवा | रक्त की आँसु मांस सब रोवा
खन कै बार मांस अस भूँजा | खनहिं चपाय सिंह अस गूँजा
यहरी दग्ध हत अतम मरीजे | दग्ध न सही जीव पर दीजे ॥

जहँ लग चंदन मलयागिर औ सायर सब नीर ॥
सब मिल आय बुझावहिं बुझहिं न आग शरीर

हीरामन जो देखेसि नारी ॥ | प्रीति बेल उपनी हिय बारी
कहेसि न तुम कस होहु दहेली | उरझी प्रेम प्रीति की बेली
प्रीति बेल जन उरझै कोई ॥ | उरझा मुयें न छूटै सोई ॥
प्रीति बेल ऐसे तन डाढ़ा ॥ | पलहत सुख बाढ़त दुःख बाढ़
प्रीति बेल की अमर को बोई | दिन दिन बढ़ै छीन नहिं होई
प्रीति बेल संग बिरह अपारा | स्वर्ग पतार जरै तेहि झारा
प्रीति अकेल बेल जहँ छावा | दूसर बेल न सरवर पावा ॥

प्रीति बेल उरझाय जब तब सुजान सुख साख
मिले प्रीतम आय के दाख बेल रस चाख

पद्मावत उठि टेके पाया ॥ | तुमहुँ तौ देखौ प्रीतम छाया

अच्छे लोग १ जलन २ मुश्किल ३ जलाना ४ आग ५ सीख ६ कभी ७ शेर ८ चन्दन ९ तालाब १० पानी ११ पैदा १२ दिल १३ भारी १४ घटना १५ आसमान १६ बराबरी १७ अंगूर १८ ॥+॥

कहत लाज औरहियेन जीव | इक दिश आग दुसा दिश पीव
तुमसो मोर खेवेक गुर देवा ॥ | उतरों पार तेही बिधि खेवा ॥
सूर उदय गढ़ चढ़त भुलाना | गहने गहा कमल कुंभलाना
औहत होय मरों नहिं भूरी ॥ | यह सठ मरों जो नेरहि दूरी
घट महँ बकत बकत भा मेरू | मिलहिं न मिलहिं परा तस फेरू
हमनहिं नलहिं जो हंस मिलावा | तब हीरामन नाउं कहावा ॥

सूर सजीवन दूर है सालै शक्ती बान ॥
प्रान मुक्ति अब होत है बेग देखावहि आन

हीरामन भुइं धरा ललादू | तुम रानी युग युग सुख पादू
जेहि के हाथ जरी औ भूरी ॥ | सों योगी अब नाही दूरी ॥
पिता तुम्हार राज कर भागी | पूजे बिप्र मरावै योगी ॥
पवर पवर कुतवाल सो बैठा | प्रेम कलुब्ध सुरंग होय पैठा
चढ़त रयनि गढ़ होयगा भोरू | आवत वार धरा कै चोरू ॥
अब लै गये देय वह शूरी ॥ | तेहि सो अगाह बिथा तुम पूरी
अब जिव तुम काया वह योगी | काया रोग जान पै रोगी ॥

रूप तुम्हार योगी आपन पिंड कमावा फेर
रहा हेराय खंड तेहि आपै काल न पावत हेर

हीरामन जो बात यहि कही | सूर्य्य की गहन चांद पुनि गही
सूर्य्य की दुख जो शशि होय दुखी | सो कित दुख मानै कर मुखी ॥
अब जो योगि मरै मोहिं नेहा ॥ | मोहिं वह साथ धर्त गगनेहा
रहै तो करों जन्म भर सेवा | चलै तो यह जिव साथ परेवा

छाती १ इक तरफ़ २ मल्लाह ३ सूर्य्य ४ मुलाक़ात ५ रानी दमन ६ नाम राजा ७ नाम बूटी ८ सूराख़ ९ आख़िर १० जल्द ११ शिर १२ हमेशा १३ तख़्त १४ जड़ १५ ब्राह्मन १६ ड्योढ़ी १७ प्रेम का भरा हुवा १८ दरवाज़ा १९ ख़बर २० बदन २१ चांद २२ मुहब्बत २३ ज़मीन- आसमान २४ ॥ २ ॥

कौन सो करै लै गोहि गुरु सोई | पर काया प्रवेस जो होई ॥
पलट सो कौन पंथ बिधि खेला | चेला गुरू गुरू होय चेला ॥
कौन खराड अस रहा लुकाई | आवै काल हेर फिर जाई ॥

चेला सिद्ध सो पावै गुरु सो करै अछेद ॥
गुरु करै जो कृपा कहै सो चेला भेद ॥

अन रानी तुम गुरु वह चेला | मोहि पूछहु कै सिद्ध न वेला ॥
तुम चेला कहँ परगान भई | दरगन देय मंडफ चल गई ॥
रूप गुरु कर चेला हि डीठा ॥ | जित समाय होय बिंब सो पैठा ॥
जीव काढ़ि लै तुम अपसई ॥ | वह भा काया जिव तुम भई ॥
कया जो लाग धूप औ सेऊ ॥ | कया न जान जानि पै जीऊ ॥
भोग तुम्हार मिला वह जाई ॥ | जो वह बिथा सो तुम कहँ आई
तुम वह की घट वह तुम माहाँ | काल कहा पावै वह छाहाँ

अस वह योगी अमर भा पर काया पर वेस
आव काल गुरु तन देखी फिर सो करै अदेस

सुनि योगी की आमर करनी | न्योरी बिरह बिथा की मरनी
कमल करी होय बिकस जीव | जनु रवि उदय छूटगा सीव ॥
जो भामिद्ध को मारै पारा ॥ | नीबू रसते होय जो छारा ॥
कहो जाय अब मार सदेसू ॥ | तजो याग अब होहु नरेसू ॥
जन जानहु हौं तुम सों दूरी ॥ | नयन हि माझ गड़ी वह मूरी
तुम प्रसेन घट घट केरा ॥ | मोहि घट जीव घटन नहि बेरा
तुम कहँ पोटे हिये मँ साजा ॥ | अब तुम मोर दुहू जग राजा ॥

हाथ १ पकड़ना २ बदन ३ राह ४ देखना ५ कमाल ६ दुई न रावै ७ नया देखना ८ तसबीर १० छिपना ११ जाड़ा १२ हमेशा ज़िन्दा १३ सलाम १४ आखिर १५ खिलना १६ सूर्य्य के उदय जाड़ा जाय १७ राख १८ छोड़ना १९ बहादुर २० पसीना २१ देर २२ तरफ़ २३ दिल २४ ॥ ॥

जोरी जियहिं मिल गल रहै मरहिं तो एकहिं दोउ
तुम पै जिय जन होय कुछ मो जिय होय सो होउ

खण्ड इक्कीसवाँ शूली खण्ड रतन सेन

बाँध तपा आनी जहँ शूरी ॥ जुरे आय सब सिंहल पूरी ॥
पहिले गुरु देय कहँ आना ॥ देख रूप सब कोउ पछताना
लोग कहैं यहि होय न योगी राज कुँवर कोउ अहै बियोगी
काहू लाग भयो है तपा ॥ हिये सुमाल केर मुख जपा
जस मारे कहँ बाजा तूरू ॥ शूरी देख हँसा मन्सूरू ॥
चमके दर्शन भयो उजियारा जो जहँ तहाँ बीज अस मारा
योगी केर करो पै खोजू ॥ मर्ग यहि होय न राजा भोजू

सब पूछहिं कहु योगी जात जन्म औ नाउ
जहाँ ठाँव रावँ कर हँसा सो कहु केह भाउ

का पूछौ अब ज़ात हमारी ॥ हम योगी औ तपा भिखारी
योगी ज़ात कौन हो राजा ॥ गारिन कोंह मार नहिं लाजा
निलज भिखार लाज जेहिं खोई तेहि की खोज परै जन कोई
जाकर जीव मरे पर बसा ॥ शूरी देख सो कस नहिं हँसा
आज नेह सों होय निबेरा आज भूमि तजि गगन बसेरा
आज कैया पिंजर बन्द टूटा आजहिं प्रान परेवा छूटा ॥
आज नेह सों होय नियारा आज प्रेम सँग चला पियारा

आज अवध सर पहुँची गये जाउँ सुख रात
बेग होहु मोहिं मारहु जन चालहु यह बात

कहहिं सवरि जेहि चाहेसि सँवरा हम तुम करहिं केति कर भँवरा

योगी १ दुखी २ दिल ३ नाम बाजा ४ नाम मर्द कामिल ५ दाँत ६ बिजुली ७ तलाश ८ शायद ९ गुस्सा १० जुदाई ११-१७ ज़मीन १२ छोड़ना १३ आसमान १४ बदन १५ उड़नेवाला १६ हद १८ बराबर १९ लाल २० जल्द २१ ॥ ॥

कहेसि वही सँवरों हर फेरा | मुये जीत आहौं जेहि केरा
औ सुमिरों पद्मावत रामा | यहि जिव न्योछावर तेहि नामा
रक्त की बूँद कया जब परहीं ॥ | पद्मावत पद्मावत कहहीं
रहै तो बूँद बूँद महँ ठाऊँ ॥ | परहुँ तो सोई लैलै नाऊँ
रोम रोम तन तासो ओधा | सूतहि सूत बेध जिव सोधा
हाड़हि हाड़ शब्द सो होई | नस नस माँह उठै धुन सोई

खाय बिरह गाता कर गूद माँस किये हान
हो पुनि साँचा होय रहा वह की रूप समान

योगिहि जबहिं गाढ़ अस परा | महादेव कर आसन टरा ॥
औ हँसि पार्बती सो कहा ॥ | जानहु सूर गहन अस गहा
आज चढ़े गढ़ ऊपर तपा ॥ | राज गहा सूर तब छिपा ॥
जग देखैगा कौतुक आजू ॥ | कीन्ह तपा मारे कहँ साजू ॥
पार्बती सुनि पायन परी ॥ | चलो महेश देखैं इक घरी
भेष भाट भाटिन कर कीन्हा | औ हनुमन्त बीर संग लीन्हा
आय गुप्त होय देखन लागे | वह मूरत कस सती सँभागे

कटक असूझ देख के आपन राजा गर्ब करेय
दई की दिशा न देखै वह का कहँ जय देय ॥

आसन लिये रहा हो तपा ॥ | पद्मावत पद्मावत जपा ॥
मन समाध तासों धुन लागी | जेहि दरशन कारन बैरागी
रहा समाय रूप वह नाऊँ | और न सूझ बार जहँ जाऊँ ॥
औ महेश कहँ करो अदेशू | जेहि यह पंथ दीन्ह उपदेशू
पार्बती पुनि सत्य सराहा ॥ | औ फिर मुख महेश कर जाहा

वदन १ जगह २ बेधना ३ सूराख ४ आवाज़ ५ समाना ६ मुशकिल ७ सूर्य्य ८ योगी ९ तमाशा १० महादेवजी ११-१९ छिपकर १२ सती की तरह क़ायम १३ फ़ौज १४ ग़रूर १५ ईश्वर की तरफ़ १६ जीत १७ दरवाज़ा १८ सलाम १९ राह २१ देखना २२

ये मह्हे[2] पिउ भई जो महे[3] पीऊ | कित पिउ नावहिं ये परदेपीऊ
तहु स्वीन्ह तुम्हारा नाऊ | तुम चित कीन्ह रहीय हहु ठाऊ

मारतही परदेपीऊ रोवत लेहु यहि बीर ॥
कोइ काहु कर नाही जो हो चलैन नीर ॥

सँदेसु पिउ सौंटा गा तहाँ ॥ | भूली देहि रतन को जहाँ ॥
रोवत रतन हीरामन रोवा ॥ | राजा जिव लोगन हठ खोवा
रोवहिं सबै राजा मुख हेरा ॥ | रोवहिं सबै राजा मुख हेरा ॥
रोवत रोदन हीरामन केरा | कीउ पुकार छुड़ावै कोई ॥
रोवहिं सबै बिधिना सों रोई | बिकल बहुत कुछ कही न जाई
कहि सँदेसु सब बिपत सुनाई | मरै तो मरौं जिय इक साथा
काढ़ प्रान बैठलिये हाथा | प्रान प्रान घट घट महु बसा
सुनि सँदेसु राजा तब हँसा ॥

हीरामन औ भाट दसौंधी भये जिव परइ कठाऊ
चलसो जाय अबदेखत तहँ जहँ बैठो रहि राऊ

राजा रहा दृष्टि के औंधी ॥ | रहि न सका तब भाट दसौंधी
कहेसि मेल के हाथ कटारी | पुरुष न आछे बैठि पिटारी
कान्ह कोप कै सारा कसू ॥ | गोकुल माझ बजावा बंसू ॥
गन्धर्वसेन जहाँ सिर बाढ़ा | जाय भाट आगे भा ठाढ़ा ॥
काढ़ देख सब राजा राऊ ॥ | बाये हाथ दीन्ह बर भाऊ ॥
बोला गन्धर्वसेन रिसाई ॥ | कैस योगी कस भाट असाई
योगी पानि आगनू राजा ॥ | आगहि पानि जूझ नहिं छाजा

आरा बुझाई पानि सो जूझ न राजा बूझ
लीन्हे खप्पर बीर तुहि भिक्षा देहि न जूझ

योगि नहोय आहि सो भाजू | जानहु भेद करो सो खोजू ॥

दिल १ महादेवजी २ मेहरबानी ३ जगह ४ तोता ५ रोना ६ देखना ७ ईश्वर ८ कोपित्रा ९ निगाह १० आशिरवाद ११ बे अदब १२ लड़ाई १३ दरवाज़ा १४

भारथ[1] होय जूझ[2] जो ओधा | होहिं सहाय[3] आय सब जोधा
महादेव रन घंट बजावा | सुनि कै शब्द[4] ब्रह्म चलि आवा
बासुकि[5] फण पतार सों काढ़ा | अष्टो कली[6] नाग भा ठाढ़ा
छप्पन कोटि बसन्दर[7] बरा | सवा लाख पर्बत फुरहरा[8] ॥
चढ़े अस्त्र[9] लै कृष्ण मुरारी | इन्द्र लोग सब लाग गुहारी
तैंतिस कोट देवता साजा | औ छान्बे मेघ दल गाजा

नब्बे नाथ चलि आवहिं औ चौरासी सिद्ध
आज महा भारथ चलै गगन[10] गरुड़[11] औ गिद्ध

भइ अज्ञा[12] को भाट औ भाऊ[13] | बाये हाथ दिये बर भाऊ[14] ॥
को योगी अस नगरी मोरे ॥ | जो दै सेंध चढ़े गढ़ चोरे ॥
इन्द्र डरै नित नावै माथा ॥ | जानत कृष्ण शेष जे नाथा
ब्रह्मा डरैं चतुर[15] मुख जासू ॥ | औ पाताल डरै बल[16] बासू[17] ॥
धर्ति डरै औ मंडफ मेरू[18] ॥ | चन्द्र सूर्य्य औ गगन[19] गंभीरू
मेघ डरहिं बिजुली जेहिं डीठी[20] | कूर्म[21] डरै धर्ती जेहिं पीठी ॥
चहौं तो सब मा[22] कों धर केशा | और को गिनत[23] अनेग नरेशा[24]

बोला भाट नरेश सुनि गर्ब[25] न छाजा जीव ॥
कुंभ करन की खोपड़ी बूड़त बाचा[26] भीव[27]

रावन गर्ब बिरोधा[28] रामू ॥ | ओही गर्ब भयो संग्रामू[29] ॥
तस रावन अस को बर[30] वंडा | जेहिं दश शीश[31] बीस भुज दंडा
सूरज जेहि की तपै रसोई ॥ | निज बसन्दर धोती धोई ॥

भारी लड़ाई १ मारना २ मदद ३ आवाज़ ४ नाम राजा सांपों का ५ १७ नाम हाथी ६ आग ७ मोजूद ८ हथियार ९ आसमान १० - १९ नाम राजा पक्षी ११ हुक्म १२ बे अदब १३ सलाम १४ चारमुंह १५ राजा दैत्य १६ नाम पहाड़ १८ निगाह २० कछुवा २१ फेंक वा देना २२ गिनती २३ राजा २४ ग़रूर २५ बचना २६ नाम पहेलवान २७ सज़ा देना २८ लड़ाई २९ ज़बरदस्त ३० शिर ३१

सूक[1] सुनेटा[2] पाशि[3] मसयारा | पवन[4] करै नित बार[5] बोहारा
मीच[6] लाय कै पादी बाँधा ॥ | रहा न दूसर सपने काँधा ॥
जो अस बज्र टरहि नहिं टारा | सोउ मर दोउ तपसी[7] कर मारा
नाती पूत कोटि दश अहा ॥ | रोवन हार न एको रहा ॥

ओछ जान के काहू जन कोइ गर्ब[8] करेय
ओछी पार[9] दई है जीत पत्र जो देय ॥

अब जो भाट तहाँ हत आगे | बिनय[10] उठा राजा रिस लागे
भाट अहै ईश्वर की कला ॥ | राजा सब राकहँ[11] अरकला
भाट मीच पै आपन दीसा | ताकहँ कौन करै रिस रीसा
भयो रजाय[12] सु गन्ध्रप सेनी ॥ | काहि मीच के चढ़ा न सेनी[13]
कह आनी बानी अस पढ़ै ॥ | करसि न बुद्ध[14] भेंट जो कढ़ै ॥
ज्ञात भाट कित औगुन[15] लावस | बायें हाथ राज बर भावस[16]
भाट नाउँ का मारों जीवाँ ॥ | अब हूँ बोल नाय के ग्रीवाँ[17]

तुइरे भाट वै योगी तोहि यह कहाँ क संग
कहाँ चढ़ै अस पावा कहाँ भयो चित भंग

जो सत पूँछेसि गन्ध्रप राजा | सत पै कहूँ परै नहिं गाजा[18] ॥
भाटहि काहि मीच सों डरना | हाथ कटार पेट हुन मरना
जम्बूदीप चितावर देशू ॥ | चित्रसेन बड़ तहाँ नरेशू[19] ॥
रतनसेन यहि ताकर बेटा ॥ | कुल चौहान जाय नहिं मेटा
खाँड़े अचल[20] सुमेरु सुभारू | टरै न जो लागै संसारू ॥
दान सुमेरु देत नहिं खाँगा[21] | जो यह माँग न औरहि माँगा
दाहिन हाथ उठायौं ताही ॥ | और को अस बर भावो जाही

नाम गुरू राक्षसों का १ चोपदार २ चाँद मशालची ३ हवा ४ दरवाज़ा ५ मौत ६ श्रीराम लखनरा ७ ग़रूर ८ कमज़ोर की तरफ़ ९ अर्ज़ १० मुक़ाबिला न चाही ११ हुक्म १२ राजा १३ अक़िल १४ बेहुनर १५ सलाम १६ गर्दन १७ बिजुली १८ राजा १९ तलवार बहादुर २० कमी २१

नाउँ महापात्र मुहिँ तेहे कि भिखारी डीठ[1]
रिस लागे खरि बात कहि खरि पै कहै बसीठ[2]

ततखन[3] सुनि महेश[4] मन लाजा
भाट किरनि होय बिनवा राजा
गन्धर्प सेन तू राजा महा ॥
हौं महेश मूरत सुनि कहा
पै जो बात होय भल आगे ॥
कहा चही का भा रिस लागे
राजकुँवर यहि होहिँ न योगी
सुनि पद्मावत भयो बियोगी[8]
जम्बूदीप राज घर बेटा ॥
जो है लिखा सो जाय न मेटा
तूरे सुवे जाय वह आना ॥
औ जाकर बिरोक तें माना
पुनि यह बात सुनी शिव लोका
कर सुबिवाह धर्म है तोका

माँग भीख खप्पर लिये मुये न छाड़ै बार[10] ॥
बूझ देख जो कनक कचूरी[11] भीख देहु नहिँ मार

औ हट[12] हो हरे भाट भिखारी
का तू मोहिँ देय असगारी ॥
को मोहिँ योग[13] जगत होइ पारा
जा सों हरौं जाय पतारा ॥
योगी यती आव जित कोई
सुनत त्रास[15] मान भा सोई
भीख लेहु फिर माँगौ आगे
यहि सब रयनि[16] रहै गढ़ लागे
जस चहि इच्छ[17] चहूँ तेहि दीन्हा
नाहिँ बेध शूली जिव लीन्हा ॥
जेहि अस साध होय जिव खोवा
सो पतंग दीपक तस रोवा ॥
सुर नर मुनि गुनि गन्धर्प देवा
तेहि को गिने करहिँ नित सेवा

मोसों को सरवर[18] करै अरे सुनि झूँठे भाठ ॥
छार[19] होय जो चालौं गज[20] हस्तिन[21] के ठा ॥ ॥

योगी धर मेले सब पछि ॥
उरये माले[22] आये रन काछे ॥
मंत्रिन[23] कहा सुनो हो राजा ॥
देखहु अब योगिन कर काजा

शोख़ १ वकील २ उसीवक़्त ३ महादेवजी ४ मानिन्द ५ तारीफ़ ६ कहा मान ७ दुखी ८ ग़ुस्सा ९ दरवाज़ा १० सोने की कटोरी ११ दूरहो १२ लायक़ १३ देखना १४ डर १५ रात १६ चाहना १७ बराबरी १८ राख १९ हाथी मस्त २० हाथी २१ पहलवान २२ सलाहकार २३ ॥

म जो कहा तुम करहु न जूझा[1] | होत आव दरे[2] जगत असूझा
वने[3] इक महँ झुरमट हो बीता | दर महँ चढ़ै जो रहै सो जीता ॥
के धीरज राजा तब कोपा ॥ | अंगद[4] आय पाँव रण रोपा ॥
हस्ति[5] पाँच जो अगमन[6] धाये | ते अंगद धर सूँड़ि फिराये ॥
दीन्ह उड़ाय स्वर्ग[7] कहँ गये ॥ | लौट न फिरैं तहहिं के भये ॥

देखत रहै अचंभो योगी हस्ती बहुर न आय
योगी कर अस जूझब भूमि[8] न लागत पाँय

कहहिं बात योगी हम पाये | छिन इक माँह चहत हैं धाये
जौ लहि धावहिं अस का खेलहु | हस्तिहिं केर जूह[9] सब पेलहु
जो गज[10] पेल होय रन आगे ॥ | तस बग मेल करहु सँग लागे
हस्ति की जूह आय अगसारी[11] | हनुमत तबै लँगूर पसारी ॥
जोहि सो सेन[12] बीच रन आई ॥ | सबै लपेट लँगूर चलाई ॥
बहुतक टूट भये नौ खंडा | बहुतक जाय परे ब्रह्मंडा[13] ॥
बहुतक भुवान[14] सोह अत्रीखा[15] | रहे जो लाख भये ते लेखा ॥

बहुतक परे समुद्र महँ परत न पावा खोज
जहाँ गर्ब[16] तहँ पीरा जहाँ हँसी तहँ रोज[17] ॥

फिर आगे का देखै राजा ॥ | ईश्वर[18] केर घंट रण बाजा ॥
सुनाशंख जो विष्णु अपूरा ॥ | आगे हनुमत केर लँगूरा ॥
लीन्हे फिरैं लोक ब्रह्मंडा । | स्वर्ग पतार लोवा मृत[19] मंडा ॥
बलि[20] बासुक[21] औ इन्द्र नरेन्द्र[22] ॥ | राहु नखत सूरय औ चन्द्र ॥
जानवन्त दानव राक्षस पुरे ॥ | अहतो बज्र[23] आय रण जुरे ॥

लड़ाई १ फ़ौज २ पल ३ बालि का बेटा ४ हाथी ५ पहिले ६ आसमान ७-१३ ज़मीन ८ हलक़ा ९ मस्त हाथी १० मुक़ाबिला ११ फ़ौज १२ फिरना १४ बीच १५ ग़रूर १६ रोना १७ महादेव जी १८ ज़मीन १९ नाम राजा दैत्य २० नाम राजा साँप २१ राजा २२ पत्थर २३ ॥ ॥

जेहि कर गर्ब[1] करत हत राजा | सो सब फिर बैरी होइ साजा
जहवाँ महादेव रण खड़ा ॥ | शीश नाय न्टेप[2] पायन परा

कोहि कारण[3] रिस कीजये हौ सेवक औ चेर
जेहि चाही तेहि दीजिये बारि[4] गुसाईं केर ॥

जब महेश[5] उठ कीन्ह बसीठी | पहिले कड़ू अंत होय मीठी ॥
तू गन्धर्व राजा जग पूजा ॥ | गुण चौदह शिख देइ को दूजा
हीरामन जो तुम्हार परेवा[7] ॥ | गाचि तौर औ कीन्हेसि सेवा
तेहि बोलाय पूँछौ वह देशू | औ पूँछो योगिहि जस भेशू ॥
हमरे कहत रोष नहिं मानो ॥ | जो वह कहै सोई परमानो[8] ॥
जहाँ बारि तहँ आव बर ओका | करबिवाह धर्म बड़ तोका ॥
जो पहिले मन मान न काँधे | पररवै रतन गाँठ तब बाँधे ॥

रतन छिपाये ना छिपै पारख होय सो पेख
घाल कसौटी दीजियो कनक[9] कचोरी भेष

हीरामन जो राजैं सुना ॥ | रोष[10] बुझाय हियें[11] महँ गुना
अज्ञा भई बोलावहु सोई ॥ | पण्डित हते दोष[12] नहिं होई
एक कहत सहँ[13] सक दश धाये | हीरामन हि बेग लै आये ॥
खोला आगे आन मंजूसा[14] ॥ | मिला निकसि बहु दिन कर रूसा
अस्तुति करत मिला बहु[15] भाँती | राजैं सुना हिये भइ शाँती[16] ॥
जानो जरत अगिन जल परा ॥ | होय फुलवार रहस हिय भरा
राजैं मिल पूँछी हँस बाता ॥ | कस तन पियर बरन मुख राता[17]

चतुर[18] वेद तुम्ह पण्डित पढ़े शास्त्र वो वेद ॥
कहाँ चढ़े योगी गढ़ आन कीन्ह घर भेद ॥

ग़रूर १ राजा २ वास्ते ३ लड़की ४ महादेव जी ५ वकालत ६ जानवर परिन्द ७ यक़ीन ८ सोने की कटोरी ९ गुस्सा १० दिल ११ क़सूर १२ हज़ार १३ पिंजरा १४ बहुत तरह १५ तसल्ली १६ लाल १७ चार १८ ॥

रामन रशना[1] रस खोला ॥ दै अशीश औ अस्तुत बोला
न्द्र राज राजेश्वर महा ॥ सुनि हिय[2] रिस कुछ जाय न कहा
जो बात होय भल आगे ॥ सेवक निडर कहै रिस लागे
सुवा सुफल अमृत पै खोजा होय न बिक्रम[3] राजा भोजा ॥
हौं सेवक तुम आदि गुशाईं ॥ सेवा करों जियों जब ताईं ॥
जो जिव दीन्ह देखावा देशू सो पै जिय महँ बसै नरेशू[5] ॥
जो वह सँवरै एकै तोहीं ॥ सोई परंव जगत रति[6] मोहीं

नयन[7] बैन औ श्रवन सबही तोर प्रशाद
सेवा मोर यही नित बोलों आशिर बाद

जो अस सेवक जेहि तप[8] कसा तेहि कजीभ पै अमृत बसा
तेहिं सेवक कै करमहिं दोषू[9] सेवा करत करै पति रोषू[10] ॥
औ जेहि दोष निदोषहि[11] लागा सेवक डरा जीव लै भागा ॥
जो पक्षी कहवाँ थिर[12] रहना ॥ ताकै जहाँ जाय जो डहना[13] ॥
सप्त[14] दीप फिर देखेउँ राजा ॥ जम्बू दीप जाय तब बाजा[15] ॥
तहँ चितौर देखा गढ़ ऊँचा ऊँच राज शिर तो पहँ पहुँचा
रतन सेन यह तहाँ नरेशू ॥ सो आन्यो योगी कर भेशू ॥

सुवा सुफल लै आनी है तेहि गुन मुख राति[16]
कयाँ[17] पीत सो तासों सँवरों बिक्रम बात ॥

पहिले भयो भाट सत भाखी पुनि बोला हीरामन साखी
राजा भा निश्चय[18] मन माना ॥ बाँधा रतन छोड़ कै आना
कुल पूँछा चौहान कुलीना रतन न बाँधे होय मलीना ॥
हीरा दशन पान रंग पागी विहँसत बदन बीज बर तागी

ज़बान १ दिल २ राजा बिक्रमाजीत ३ सबसे पहिले ४ राजा ५ लाल मुँह ६ आँख - ज़बान - कान - ७ मेहनत की ८ क़सूर ९ ग़ुस्सा १० बेक़सूर ११ क़ायम १२ बाज़ू १३ सातों मुल्क १४ पहुँचना १५ लाल १६ बदन १७ यक़ीन १८

मुन्द्रा[1] श्रवन बीन सों चाँपे | राज बैन[2] उघरे सब झाँपे ॥
आना काटर एक तुखारू[3] | कहा सु फेरि भयो असवारू
फेरा तुरी[4] छतीसो खुरी ॥ | सबहिं बखानी[5] सिंहल पुरी

कुँवर बतीसो लक्षना सहस[6] किरान जस भान[7]
काह कसौटी कसिये कंचन[8] बारह बान

देख सूर्य्य[9] कर कमल[10] संयोगू | अस्त[11] अस्त बोला सब लोगू
मिला सो बंश अंश उजियारा | भा बिरोक[12] औ तिलक सँवारा
अनुरुद्ध को जो लिख जय मारा | को मेटै बाना सुर हारा ॥
आज मिली अनुरुध कहँ ऊखा | देव इन्द्र दीन्ह शिर दूखा ॥
खर्ग सूर[13] भुइँ सर वर[14] केवा ॥ | बन खराड भँवर होय रस लेवा
पच्छम का बार[15] पूर्ब की बारी[16] ॥ | लिखी जो जोरी होय न न्यारी[17]
मानुष साज लाख मन साजा | सोई होय जो बिधि[18] उपराजा ॥

गये बाजन जो बाजत जिय मारन रण माहँ ॥
फिर बाजन ते बाजे मंगल चार उनाहँ ॥

बोल गुसाईं कर मैं माना ॥ | कहि सो जगत उत्तर[19] कहँ आना
माना बोल हरष[20] जिव बाढ़ा | औ बिरोक[21] भा टीका गाढ़ा ॥
दोनों मिले मनावा भला ॥ | पुरुष आप आप कहँ चला ॥
लीन्ह उतारी जो हत योगू ॥ | जो तप करै सो पावै भोगू ॥
वह मन चित जो एके अहा ॥ | मार लीन्ह न दूसर कहा ॥
जो अस कोई जिव पर छेवा[22] | देवता आय करहिं तेहि सेवा
दिन दश जीवन जो दुख देखा | भा युग युग सुख जहाँ न लेखा

कान की बाली १ सरदारी की बातें २ घोड़ा ३-४ तारीफ़ ५ हज़ार ६ सूर्य्य ७ सोना ख़ालिस ८ तथा रतनसेन ९ तथा पद्मावत के लायक़ १० वाह वाह ११ टीका १२-२१ सूर्य्य १३ तालाब १४ लड़का १५ लड़की १६ अलग १७ ईश्वर ने पैदा किया १८ जवाब १९ खुशी २० ख़ेलना २२ ॥

रतनसेन का बरनौं[1] पद्मावत कर ब्याह ॥
मन्दिर बेग[2] सँवारो मन्दिर तोरा छाह

वराड बाइसवां ब्याह राजा रतनसेन और पद्मावत

गान धरी औ रचा बिवाहू ॥ सिंहल निवत फिरा सब काहू
ाजन बाजे कोटि पचासा ॥ भा आनन्द सगरे कैलासा ॥
हि दिन का नित देव मनावा सोइ दिवस[3] पद्मावत पावा ॥
चाँद सूर्य्य मन माथे भागू ॥ औ गावहिं सब नखत[4] सुहागू
रचरच माणिक[5] माडौ छावहिं औ भुइं राति[6] बिछाव बिछावहिं
चन्दन खंभ रचे चहुँ पाँती ॥ माणिक दिया बरहिं दिन राती
घर घर मन्दिर रचे दुवारा ॥ जहँ तक नगर गीत झंकारा

हाट बाट सब सिंहल जहँ देखी तहँ राति[7] ॥
धन रानी पद्मावत जा कर ऐसि बरात ॥

रतनसेन कहँ कपड़ा आये हीरा मोति पदारथ लाये ॥
कुँवर सहस[8] संग अहेस भागे बिनय[9] करै राजा पहँ लागे
जेहि लग तुम साधा तप योगू लेहु राज मानो सुख भोगू ॥
मज्जन[10] करहु बिभूत उतारो ॥ करो अस्नान चित्र[11] मम सारो
काढ़हु मुन्द्रा[12] फटक अभाऊ पहिरो कुण्डल कनक[13] जड़ाऊ
छोरहु जटा फुलायल लेहू ॥ झारहु केश मुकट सिर देहू ॥
काढ़हु कंथा[14] चिरकुट लावा ॥ पहिरो राता दगला सुहावा ॥

पाँवर[15] तजहु देहु पग पैरी आवा बाँक तुरवार[16]
बाँध मौर धरि छत्र शिर बेग[17] होहु असवार ॥

साजा राजा बाजन बाजे । मदन सहाय दोउ दल गाजे

तारीफ़ करना १ जल्द २-१७ दिन ३ तथा सहेलियां ४ जवाहिर ५ लाल ६-७ हज़ार ८ अर्ज़ ९ नहाना १० तसवीर ११ बाली नाचीज़ १२ सोना १३ गुदड़ी १४ खड़ाऊं १५ घोड़ा १६ ॥

औ राता[1] सोने रथ साजा ॥ भइ बरात गोहन[2] सब राज
बाजत गाजत भा असवारा ॥ सब सिंहल ने कीन्ह जुहार[3]
चहुँ दिश यश अल नखत तराईं[4] सूरय चढ़ा चाँद की ताईं ॥
सब दिन तपै जैस हिय[5] माहाँ ॥ तैसि रात पाई सुख छाहाँ ॥
ऊपर छत्र राति[6] तस छावा ॥ इन्द्र लोक सब सेवा आवा ॥
आज इन्द्र अप्सर[7] सो मिला ॥ सब कैलाश होहिं सिंहला ॥

धर्ती स्वर्ग[8] चहूँ दिश पूर रही मशायार ॥
बाजत आवै मंदिर कहँ होहिं मंगलाचार

पद्मावत धौराहर[9] चढ़ी ॥ धौं कस रबि[10] जा कहँ शशि[11] कर
देख बरात सखिन सो कहा ॥ यह महँ कौन सो योगी अहा
कैसो योग लै ओर[12] निबाहा भयो सूर[13] चढ़ चाँद बिवाहा ॥
कौन सिद्ध सो एसो अकेला जेशिर लाय प्रेम सो खेला ॥
कासों पिता बचन असहारी उतर[14] न दीन्ह दीन्ह तेहि बारी[15]
का कहँ दई एसो जिव दीन्हा ॥ जे जिह मार जीत रन लीन्हा ॥
धन पूरुष अस न वैन नाये ॥ औस[16] परस हो देश पराये ॥

को बर बन्द[17] बीर अस मोहिं देखे कर चाव[18] ॥
पुनि जायहि जनवासहि सखी री बेग[19] देखाव

सखी देखावहिं चम कहि बाहू तू जस चाँद सूर्य्य तोर नाहू[20] ॥
छिपा न रहै सूर्य्य पर काशू ॥ देख कमल मन भयो बिकाशू[21]
वह उजियार जगत उपराही ॥ जग उजियार सो तेहि पर छाही
जस रबि[22] देख उठै पर भाता[23] ॥ उठा छत्र देखहिं सब राता ॥
वही माँझ भा दूलह सोई ॥ और बरात संग सब कोई ॥

लाल १-६-२४ साथ २ सलाम ३ छोटे सितारे ४ दिल ५ इन्द्र लोक की परी ७ आसमान ८ महल ९ सूर्य्य १०-१३-२२ चाँद ११ आखिर तक १२ जवाब १४ लड़की १५ इतमीनान १६ ज़बर्दस्त १७ चाह १८ जल्द १९ खाविंद २० खिलाना २१ भोर २

हसहिं[1] किरन रूप बिधि[2] गढ़ा | सोने के रथ आवै चढ़ा ॥
न माथे दरपान उजियारा | सौंह[3] निरख नहिं जाय निहारा

रूपवन्त जस दरपन धन तू जा कर कन्त ॥
चाही जैसो मनोहरा मिला सो मन भावन्त

रवा चाँद सूर्य्य जस साजा | सहसहिं[4] भाव मदन[5] तन गाजा
हुलसे नयन दरपामद माते | हुलसे अधर[6] रंग रस राते ॥
हुलसा बदन[7] उपर रबि[8] आई ॥ | हुलसा हिया[9] कंचुक[10] न समाई
हुलसे कुंच[11] कसनी बंद टूटी | हुलसे भुज बलिया[12] कर फूटी
हुलसी लंक कि रावन राजू ॥ | राम लषण दरसाज[13] हिं साजू
आज चाँद घर आवा सूरू[14] ॥ | आज सिंगार होय सब चूरू ॥
आज कटक[15] जो राहत कामू ॥ | आज बिरह कर होय संग्रामू[16]

अंग अंग सब हुलसै कोइ कतहूँ न समाय
ठाँवहिं ठाँव बिमोही गइ मुरछा गत आय

सखी सँभार पियावहिं पानी | राजकुँवर काहे कुंभिलानी
हम तो तोहि देखावा पीव ॥ | तू मुरझान कैस भा जीव ॥
सुनहु सखी सब कहै बिवाहू | मो कहँ जैसो चाँद कहँ राहू ॥
तुम जानहु आवै पिउ साजा ॥ | यह धम धम मो कहँ सब बाजा
जते बराती औ असवारा ॥ | यह सब मोरे चालन हारा ॥
सो आगम[17] देखत हौं झखी ॥ | आपन रहन न देखौं सखी ॥
होय बिवाह पुनि होय है गौना | गवनब तहाँ बहुर[18] नहिं अवना

अब सो मिलन कित है सखी पराबि छोवा टूट
तैसि गाँठ पिउ जोर व जन्म न होय है छूट ॥

हजार १-४ ईश्वर २ सामने देखना ३ काम पैदा हुवा ५ होंठ ६ मुँह ७ सूर्य्य ८-१४ दिल ९ अँगिया १० छाती ११ चूड़ी १२ फौज १३-१५ लड़ाई १६ दूर अंदेशी १७ लौटके १८ ॥ ~ ॥

आय बजावत बैठ बराता ॥ पान फूल सेन्दुर सब राता[1] ॥
जहँ सोने कर चित्र[2] सँवारी ॥ आन बरात तहाँ बैठारी ॥
माँझ[3] सिंहासन पाट[4] सँवारा दूलह आन तहाँ बैठारा ॥
कनक[5] खंभ लागे बहु पाती मानिक दिया बरहिं दिन राती
भयो अचल ध्रुव[7] योग परेवरू फूल बैठ थिर[8] जैस सुमेरू[6] ॥
आज दई हौं कीन्ह सुभागा जस दुख कीन्ह नेग सब लागा
आज सूर[9] पुष्पि[11] के घर आवा चाँद सूर्य्य दोहुँ भयो मिलावा

आज इन्द्र होय आयो सैं बरात कैलाश ॥
आज मिली मोहिं अप्सरा[12] पूजी मन की आश

होय लाग ज्योनार पसारा ॥ कनक[13] पत्र परसे पनवारा ॥
सोन थार मणि माणिक जरे राय[14] रंक सब आगे धरे ॥
रतन जड़ाऊ खोरी[15] खोरी ॥ जन जन आगे सौसौ जोरी ॥
गड़वन हीर पदारथ लागे ॥ देख बिमोहे पुरुष सभागे ॥
जानहुँ नखत करहिं उजियारा छिप गये दीपक औ मसयारा
भइ मिल चाँद सूर्य्य की कला भाउ दोत[16] तैसी निरमला[17] ॥
जेहिं मानुष कहँ ज्योति[18] न होती तेहि भइ ज्योति देख वह ज्योती ॥

पाँति पाँति सब बैठी भाँति भाँति ज्योनार ॥
कनक[19] पत्र दोने तरे कनक पत्र पनवार ॥

पहिले भात परोसे आना ॥ जनहुँ सुबास कपूर बसाना ॥
छोलहिं[20] माड़ा औ घी पोई ॥ उजियर देख पाप गयो धोई ॥
लुचई पुरी सुहारी पूरी ॥ इक तो ताती औ सुठ कँवरी ॥
खंडरा खाड़ जो खराडे खराडे बैरी[21] अकोतर सो कहँ हंडे ॥

लाल १ तसवीर २ बीचो बीच ३ तख़्त ४ सोना ५-१३-१६ जवाहिरात ६ नाम नखत जिसे कुतुब कहते हैं ७ क़ायम ८ नाम पहाड़ ९ सूर्य्य १० चाँद ११ इन्द्रपरी १२ राजा को भाई १४ कटोरा कटोरी १५ रोशनी १६ साफ़ १७ रोनक़ १८ बारीक माड़ी २० एक क़िस्म का खाना २१

पुनि सँधान[1] आने बहु साँधी | दूध दही कि मुरन्दा[2] बाँधी ॥
पुनि बावन प्रकार जो आये | नहिं अस देखन कबहुँ खाये
पुनि जावर[3] पी झावर[4] आई ॥ | घृत खाँड़ का कहौं मिठाई

जेवँत अधिक सुबासिक मुँह महँ परत बिलाय
सहस[5] स्वाद सों पावै एक कौर जो खाय ॥

जेवन आवा बीन न बाजा | बिन बाजहिं नहिं जेवैं राजा
सब कुँवरन पुनि खैंचा हाथू | ठाकुर जेवँ तो जेवैं साथू ॥
बिनय करहिं पारोडत बिचवाना | काहे नहिं जेवहिं यजमाना ॥
वह कैलाश इन्द्र कर बासू | जहाँ न अन्न न माँछर मांसू ॥
पान फूल आँछी[6] सब कोई | तुम कारन[7] यह कीन्ह रसोई
भूख तजन[8] अमृत है सूखा | धूप तो सीरक[9] नीबी रूखा ॥
नींद तो भुइं जनु सेज सँपेती[10] | छाड़ो का चतुराई येती ॥

कौन काज कहि कारण बिकल भयो यजमान
होय रजायसु[11] सोई बेगी[12] देहिं हम आन ॥

तुम परिडत जानहुँ सब भेदू | पहिले नाद भयो तब वेदू
आदि पिता[13] जो बिधि[14] अवतारा | नाद संग जिव[15] ज्ञान सँचारा ॥
सो तुम बरज[16] नेक का कीन्हा | जेवन संग भोग बिधि दीन्हा
नयन[17] बैन नासक दुइ श्रवना | यहि चारहुँ संग जेवन अवना
जेवन देखा नयन सिरानी ॥ | जी भहि स्वाद भुक्त[18] रस जानी
नासक सबै बासना पाई ॥ | श्रवनहिं कासँ बरत पहुनाई
तेहिं का होय नाद पै पोषा[19] ॥ | तब चारहुँ कर होय संतोषा[20]

अचार बहुत तरह का १ लड़ुवा २ खीर ३ मुरब्बा ४ हज़ार ५ ख़ुराक ६ वास्ते ७ छोड़ना ८ ठंडा रहै धूप लगने पर भी ९ सफ़ेद बिछौना १० हुक्म ११ जल्द १२ ब्रह्मा १३ ईश्वर १४ बदन में जान आई १५ रोक १६ आँख-मुँह-नाक-कान १७ ख़ुराक १८ आसूदगी १९ क़रार २० ॥

औ सब सुनहुँ शब्द[1] इक जिनहिं पड़ा कुछ सूझ
नाद सुननि पण्डित बरज कहो सो तुम का बूझ

राजा उतर[2] सुनहु अब सोई ॥ महि[3] डोलै जो वेद न होई ॥
नाद वेद मद[4] पैंड़[5] जो चारी ॥ काया[6] महँ ते लेहु बिचारी ॥
नाद हिये मन उपजी काया[8] ॥ जहँ मद तहाँ पैंड़[9] नहिं छाया ॥
होय अनमद जूझ सो करिये जान वेद आँकुश शिर धरिये
योगी होय नाद सो सुना ॥ जेहि सुनि काम जरै चौगुना ॥
किये जो परमतन्त[10] मन लावा घूम मांत सुनि और न भावा ॥
गये जो धर्म पंथ[11] होय राजा ॥ ताकहँ पुनि जो सुनै तो छाजा[12]

जस मद पियें घूम कोउ नाद सुनै पै घूम ॥
तेहि ते बरजे नेक है चढ़ै रहस[13] के दूम ॥

भई ज्योनार फिरा खड़वानी[14] फिरा अरगजा[15] कुह कहँ बानी
फेरे पान फिरा सब कोई ॥ लाग्यो ब्याह चार सब होई ॥
माड़ो सोनकि गगन[16] सँवारा बन्दन वार लाग सब बारा[17] ॥
सजा पाट[18] छत्र के छाहाँ ॥ रतन[19] चौक पूरी तेहि माहाँ ॥
कंचन[20] कलश नीर[21] भरि धरा इन्द्र[22] पास आनी अप्सरा[23] ॥
गाँठ दुलहिन दूलह की जोरी दुहू जग तजो जाय न छोरी ॥
वेद पढ़ैं पण्डित तेहि ठाऊँ ॥ कन्या तुला राश लै नाऊँ ॥

चाँद सूर्य्य दोउ निरमल[24] दोउ सेयोग[25] अनूप ॥
सूर्य्य[26] चाँद[27] सो भूला चाँद सूर्य्य के रूप ॥

दोहूँ नाउँ लै गावहिं बारा[28] करहिं सो पद्मिन मंगलचारा

बात १ जवाब २ ज़मीन ३ मस्ती ४ शरीयत ५-९ बदन ६-८ दिल ७ मेहनत ११ राह ११ तारीफ़ १२ रागसुन्नेमे दूनी कैफ़ियत होतीहै १३ शरबत १४ अतर १५ आसमान १६ दरवाज़ा १७ तख़्त १८ जवाहिरात १९ सोना २० पानी २१ तथा राजा २२-२६ तथा पद्मावत २३-२७ पाक साफ़ २४ मिलना २५ लड़की २८

[1]चाँद के हाथ दीन्ह जयमाला | चाँद आन सूरय[2] गये[3] घाला
सूरज लीन्ह चाँद पहिराई ॥ | हार नरवत[4] नेरहिं सो पाई ॥
पुनि धन[5] भर अंजुल जल लीन्हा | यौवन जन्म कंत कहँ दीन्हा
कंत लीन्ह दीन्हों धन हाथा | जोरी गाँठ दुहूँ इक साथा ॥
चाँद सूर्य्य दुइ भाँवर लीन्ही | नरवत मोत न्योछावर कीन्ही
फिरहिं दोउ सत फेर गुते[6] के | सातहिं फेर गाँठ सो एके ॥

भइ भाँवर न्योछावर राज चार सब कीन्ह
दायज कहूँ कहाँ लग लिखन जाय तत दीन्ह

रतनसेन जो दायज पावा ॥ | गन्ध्रपसेन आय कंठ लावा
मानुष चिन्त आन कुछ निंता | करै गुसाइन मन महँ चिन्ता
अब तुम सिंहल दीप गुसाईं | हम सेवक आहैं सेवकाईं ॥
जस चितोर गढ़ तुम्हरो देसू ॥ | तस तुम यहाँ हमार नरेसू[7] ॥
जम्बूदीप दूर का काजू ॥ | सिंहल दीप करहु नित राजू
रतनसेन बिनवा[8] कर जोरी | अस्तुति योग जीभ कहँ मोरी
तुम गुसाइं जे छार[9] छुड़ाई ॥ | की मानुष अति दीन्ह बड़ाई

जो तुम दीन्ह सो पावा जिवौं जन्म सुख भोग
नाहत खेह[10] पाय की हौं योगी केहि योग

धौराहर[11] पर दीन्हां बासू ॥ | सात खण्ड जहँवाँ कैलासू
सखी सहस[12] दश सेवा पाई | जनहुँ चाँद संग नरवत तराई[13]
होय मण्डल शशि[14] के चहुँ पासा | शशि सूरहि[15] लै चढ़ी अकाशा
चल सूरज दिन अथवै जहाँ | शशि निरमल[16] तू पावसि तहाँ
गन्ध्रपसेन धौराहर[17] कीन्हा | दीन्ह न राजहि योगिहि दीन्हा

तथा पद्मावत १-५-१४ सूरय तथा रतन सेन २-१५ गरदन ३ तथा सहेलियाँ ४ गोत वाले ६ राजा ७ अर्ज़ करना हाथ जोड़ के ८ धूर ९-१० महल ११-१७ हज़ार १२ छोटे सितारे १३ साफ़ १६ ॥ ४ ॥

मिली जाहिं शशि के चहुँ पाहाँ | सूर्य्य न चापै पावै छाहाँ ॥
अब योगी गुरु पायो सोई | उतरा योग भस्म गा धोई

सात खराड धौराहर सात रंग नग लाग
देखत का कैलाशहिं दृष्टि पाप सब भाग

सात खराड सातों कैलाशा | का बरनौं जस उत्तम बासा ॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा ॥ | मलयागिरि चन्दन सब लावा
चूना कीन्ह औट गज मोती | मोतिहि चाह अधिक तेहि ज्योती
बिश्वकर्महिं सैं हाथ सँवारा | सात खराड सातहिं चौपारा ॥
अति निरमल नहिं जाय बिशेषा | जस दरपन महँ दरशन देखा
भुइंगच जनहुँ समुद्र हिलोरा | कनक खंभ जनु रचो हिंडोरा
रतन पदारथ होय उजियारा | भूले दीपक औ मसियारा ॥

तहँ अप्सर पद्मावत रतन सेन के पास ॥
सात स्वर्ग हाथ जनु आये औ सातों कैलाश

पुनि तहँ रतन सेन पग धारा | जहाँ रतन नौ सेज सँवारा
पुतरी गढ़ गढ़ खंभन काढ़ी | जनु सजीव सेवा सब ठाढ़ी
काहू हाथ चंदन की खोरी | कोइ सेंदुर कोइ गहै सिंधौरी
कोइ कुंकहि केसर लिये रहैं | लावै अंग रहस जनु चहैं
कोई लिये कुमकुमा चोवा | धन कब चहै ठाढ़ मुख जोवा
कोइ बीरा कोइ लीन्हें बीरी | कोइ परमल अति सुगंध समीरी
काहु हाथ कस्तूरी मेदू ॥ | भाँतिहि भाँति लाग सब भेदू

पाँतिहि पाँति चहूँ दिश सब सोंधी कर हाट
माँझ रचा इन्द्रासन पद्मावत कह पाट

चाँद तथा पद्मावत १ तथा राजा खिलवत न करसका २ महल ३ निगाह ४ तारीफ़ ५ चन्दन ६ ज़्यादा ७ पाकसाफ़ ८ सोना ९ जवाहिरात १० आसमान ११ कटोरी १२ बदन १३ देखना १४ हवा १५ मुश्क १६ अंबर १७ बीचों बीच १८ ताव १९

...राड तेइसवाँ मुलाक़ात पद्मावत वा राजा रतनसेन

...त खराड ऊपर कै लाप्रू | तहवाँ नार सेज सुख साजू ॥
...रखंभ चारहुँ दिप्र धरे ॥ | हीरा रतन पदारथ जरे ॥
...णिक दिया जड़े औ मोती | होय उजियार रहा तेहि ज्योती
...पर राता चन्दवा छावा | औ भुइँ सुरंग बिछाव बिछावा
...हि मह पलंग सेज सुख दासी | कीन्ह बिछावन फूलहि बासी
...हुँ दिप्र गेंदवा औ गल सोई | काची पाट भरी धुन रोई ॥
फूलहिं भरे ऐसो केहि योगू | को तह पौढ मान रस भोगू

अति सुकुमार सेज सो डाँसी छुवै न पावै कोय
देखत न वेखन हिं खन पाँव धरत कस होय

राजै तपत सेज जो पाई ॥ | गाँठ छोरि धन सखिन छिपाई
अहै कुँवर हमरे अस चारू | आज कुँवर कर करब सिंगारू
हरद उतारि चढ़ावब रंगू ॥ | तब निपूँ चाँद सूर्य्य सो संगू
जनु चाहक मुख बूँद सेवाती | राजा चक चौहत तेहि भाँती
योग छूटि जनु अप्सर साथा | योग हाथ कर भयो बिहाथा
वै चतुरा कर लै अपसई ॥ | मित्र अमोल छीन लै गई ॥
बैठा खाय जरी औ बूटी ॥ | लाभ न पाव मूल भइ टूटी ॥

खाय रहा ठग लाडू तन्त मन्त बुधि खोय
धौराहर बन खराड भयो ना हँसि आव न रोय

अस तप करत भयो दिन भारी | चार पहर बीते युग चारी ॥
परी साँझ पुनि सखी सो आई | चाँद रहा अपनी जो तराई ॥
पूँछहि गुरू कहाँ रे चेला ॥ | बिन पूँपिरे कस सूर अकेला

चारों तरफ़ १ जवाहिरात २ ३ लाल ४ तकिया ५ रेशम ६ बिछौना ७ पद्मावत ८ रस्म ९ रात १० पपीहा ११ होशयारी १२ छिपजाना १३ महल १४ मंगल १५ छोटे नखत १६ चाँद १७ सूर्य्य १८ ॥ ॥

धात कमाय सिखे तूँ योगी | अब कस जस निरधात बियो
कहाँ सो खोयहु बिरवा लोना | जेहि तेहो य रूप औ सोना
कस हर्तार पार नहिं पावा | गन्धक कहाँ कर[2]कटा खा
कहाँ छिपायहु चन्द हमारा | जेहि बिन रयनि[3] जगत अँधि

नयन कौड़िया हिय[4] समुद्र गुरु सो तेहि महँ ज्योति
मन मरजिया न होय परे हाथ न आवै मोति ॥

का पूँछौ तुम धात निछोही[5] | गुरु जो कीन्ह अंतर[6]पट ओह
सिधि गुटका जो मोसों कहा ॥ | भयो राग सत हिये न रहा ॥
सो न रूप जासों दुख खोलों ॥ | गयो भरोस तहाँ का बोलों
जहँ लोना बिरवा की जाती ॥ | कहि को सँदेश आन को पात
कि जो पार हरतार करेजे[7] ॥ | गन्धक देख अभहिं जिव दीं
तुम जोरा की सूर[8] मयंकू[9] ॥ | पुनि बिछोय सो लीन्ह कलंकू
जो यहि घड़ी मिलावै मोही ॥ | शीश देउँ बलिहारी ओही

होय अबरक ईंगुर हुवा फेर अगिन महँ दीन्ह
काया[10] पीतर होय कनक[11] जो तुम चाहो कीन्ह

का बिसाय जो गुरु अस बूझा | चका[12] ब्यूह अभिमन[13] ज्यों जूझा
बिष जो दीन्ह अमृत देखराई | तेहि रे निछोहे[14] को पतियाई
मरै सुजान होय तन सूना ॥ | पीर न जानै पीर बहूना[15] ॥
पार न पाव जो गंधक पिया | सो हरतार कहो किमजिया ॥
हम सिधि गुटका जानहिं नाहीं | कौन धात पूँछहु तेहि पाहीं
अब तेहि बाज[16] राग भा डोलों ॥ | होय सार[17] तो बरगी[18] बोलों ॥
अबरक कै तन ईंगुर कीन्हा | सो तन फेर अगिन महँ दीन्हा

दुखी १ जोड़ना २ रात ३ दिल ४ बेदर्द ५-१४ छिपाना ६ कलेजा ७ सूर्य्य ८ चाँद ९ बदन १० सोना ११ नाम क़िला १२ बेटा अर्जुन १३ अलग १५ यिदन ठसके १६ फ़ौलाद १७ तिपतया १८ ॥ ÷ ॥

मिल जो प्रीतम बिछुरहि काया[1] अगिन जराय
कै सु मिलै तन तप बुझै कै अब मोहिं बुझाय

[illegible]नि के बात सखी सब हँसी | जानहुँ रयनि तरइँ परगसी[2] ॥
[illegible]ब सो चाँद गगन[5] महँ छिपा | लालच कै कित पावस तपा[6]
[illegible]मह्नु न जाने धौं सो कहाँ ॥ | कर बखोज औ बिनवब तहाँ[7]
[illegible]ो अस कहब आहि परदेशी | कर माया[8] हत्या जन लेशी ॥
[illegible]ीर तुम्हार सुनत भा छोहू[9] ॥ | देव मनाय होय अस ओहू ॥
[illegible]ू योगी तप कर मन जिता ॥ | योगिहि कौन राज की कथा
[illegible]हरानी जहवाँ सुख राजू ॥ | बारह अभरन[10] करै सो साजू

योगी दृढ़[11] आसन कर इस्थिर[12] धरमन ठाँव ॥
जो न सुने तौ अब सुनि बारह अभरन नाँव

प्रथमै[13] मज्ज[14] न होय शरीरू ॥ | पुनि पहिरै तन चन्दन चीरू
साज माँग शिर सेन्दुर सारा ॥ | पुनि ललाट रचि तिलक सँवारा
पुनि अंजन दोउ नयनहि करे | पुनि सो कानन कुण्डल पहरे
पुनि नासक भल फूल अमोला | पुनि राता[15] मुख खाय तमोला
गये[16] अभरन पहिरे जहँ ताई ॥ | औ पहिरे कर[17] कँगन कलाई
कटि[18] छुद्रावल[19] अभरन पूरा | पाँयन पहिरे पायल[20] चूरा ॥
बारह अभरन यही बखाने ॥ | ते पहिरे बारहुँ अस्थाने ॥

पुनि सोरहों शिंगार जस चारहुँ योग कुलीन
दीरघ[21] चार चार लघु[22] चार सुभ्र[23] चहुँ खीन[24] ॥

पद्मावत जो संवारी लीन्हा | पून्यो[25] रात दई शशि कीन्ही

बदन १ रात २ छोटे नखत ३ खिलना ४ आसमान ५ योगी ६ अर्ज़ करना ७ मेहरबानी ८-९ ज़ेवर १० मज़बूत ११ क़ायम १२ पहिले १३ नहाना १४ लाल १५ गरदन १६ हाथ १७ कमर १८ कर धनी १९ पायज़ेब वा छड़े २० बड़े २१ छोटे २२ मोटे २३ पतला २४ पूरनमासी २५ ॥

करि मज्जन[1] तन कीन्ह नहानू | पहिर्‌यो चीर गयो छिप भानू
रचि[2] पत्रावल[3] मँगा सेँ दूरी ॥ | भरि मोतिन औ माणिक[4] पूरी
चन्दन चीर पहिर बहु भाँती | मेघ घटा जानहुँ बक[5] पाँती
श्री[6] जो रतन माँग बैठारा ॥ | जानहुँ गगन[7] टूटि निश[8] तारा
तिलक ललाट[9] धरा तस दीठा | जनहुँ दुइज पर नखतन बैठा
कानन कुण्डल खूँट[10] औ खूँटी[11] | जानहुँ परी कचीची[12] टूटी ॥

पहिर जड़ाऊ ठाढ़ भइ कहि न जाय तस भाव
मानहुँ दरपन गगन[13] भा तो शशि[14] तार देखाव

बाँक नयन औ अंजन रेखा | खंजन[15] जानु शरद ऋतु देखा
जो जो हेर[16] फेर चष[17] मोरी ॥ | लरै शरद महँ खंजन जोरी ॥
भौंहैं धनुष धनुष पैहारा ॥ | नयन साँध जनु बानन मारा
करन फूल नासक अति शोभा | शशि[18] मुख आय सूक जनु लोभा
सुरंग अधर[19] औ लीन्ह तँबोरा | सोहै पान फूल कर जोरा ॥
कुसुम गेंद अस सुरंग कपोला[20] | तेहि पर अलक[21] भुवंगिन[22] डोला
तिल कपोल अल पंकज बैठा | बेधा सोई जो वह तिल दीठा

देख शिंगार अनूप[23] बिधि बिरह चला तब भाग
काल कष्ट वह उनवा सब मोरे जिय लाग ॥

का बरनौं अभरन[24] औ हारा | शशि पहिरे नखतन की मारा
चीर चार औ चन्दन चोला | हीरहार नग लाग अमोला
तेहिं झाँपी रोमावल कारी | नागिन रूप डसी हत्यारी ॥
कुच[25] कंचुकी[26] श्री फल उभे | हुलसहिं चहहिं कंत हिय चुभे

उबटन १ सूर्य्य २ नाम दाया ३ जवाहिर ४ बगुला ५ टीका ६ आसमान ७ रात ८ माथा ९ बाली १० करन फूल ११ नाम छोटे नखत १२ चाँद १४-१८ ममोला १५ देखना १६ आँख १७ होंठ १९ गाल २० बाल २१ नागिन २२ बेनिसाल २३ जेवर २४ छाती २५ आँगिया २६ ॥ ३५ ॥

[1]हहि [2]बाहू [3]तोड़ सलोनी ॥ डोलत बाँह भाव गत लोनी ॥
[4]स बन कमल कली जनु बाँधे [5]बसी लंक जानहु दुइ आधे ॥
[6]दुइ घट कांटि कंचन तागा ॥ चलते उठहि छतीसो रागा

चूरा पायल अनवट बिछिया पाँयन परी बियोगँ
हिये [11]लाय दुख कहस कहस [12]समंद नहिं तुम जान चौभोग

अस बारह सोरह [13]धनि साजी ॥ छाजन [14]और वही पै छाजी ॥
बिन वहि सरवर [15]गहिर का कीजे जेंजि वदीन्ह ताहि जिव दीजे
सवरि सेज धन मन भइ प्राका ढाढ़ते वान [16]टेक कर लंका ॥
अनचिन्हा पिय काँपे मन माहाँ का मैं कहब [17]राहब जो बाहाँ ॥
बारि बैस गइ प्रीति न जानी ॥ [18]तरुन भई [19]मैमंत भुलानी ॥
[20]यौवन गर्ब न कुछ मैं चेता ॥ [21]नेह न जानु प्रयास के सेता ॥
अब जो कंत पूछहि सब बाता कस मुख होय पीत के राता

हौं सुबारि औ दुलहिन पिय सो तरुन औ तेज
ना जानौं कस होयहै चढ़त कन्त की सेज ॥

सुनि धन डर हिरदय तब ताईं जौ लहि रहस मिलान हिं साईं
कौन कली जो भँवर न राहू ॥ डार न टूटि पुहुप [22]पै गरुवाई ॥
मातपिता जो ब्याहै सोई ॥ जन्म निबाह कंत सँग होई ॥
भरे [23]यौवन वार चहै जहँ रहा ॥ जाय न मेटा ताकर कहा ॥
ताकहँ बिलम्ब न कीजे बारी जो पिय [24]आय सुसोइ पियारी
चलहु बेगि आयसु भा जैसे ॥ कंत बोलावे रहै सो कैसे ॥
मानन कर थोरा कर लाडू ॥ मान करत रस माने [25]चोडू ॥

[1]हहि १-२-८-९ खूब सूरत ३ भँवर ४ कमर ५-७-११ करधनी ६ दुखी १० दिल ११ मुलाक़ात १२ पद्मावत १३ सोहना १४ देर १५ पकड़ना १६ जवान १८-२३ मस्त १९ जवानी का ग़रूर २० काला या सफ़ेद २१ लाल २२ फूल २४ मरने के दमलक २५ झुकना २६ जल्द २७ ग़ुस्सा २८

साजन लिये पठाई आयसु[1] जाय न मेट ॥
तन मन यौबन साज सब देइ चली लै भेट ॥

पद्मिन गवन[2] हंस गये दूरी ॥ हस्ति[3] लाज मेलहि शिर धूरी
बदन[4] देख घट चन्द छिपाना दशन[5] देख के बीज[6] लजाना
खंजन[7] छिपे देख कै नयना ॥ कोकिल छिपी सुनत मधु[8] बैना
ग्रीव[9] देख कर छिपा मयूरू ॥ लंक[10] देख कर छिपा सेंदूरू[11] ॥
भौंह धनुष जो छिपा अकारा[12] बेनी[13] बासुक[14] छिपा पतारा ॥
खड्ग[15] छिपी नशिका बिशेषी अमृत छिपा अधर[16] रस देखी
पहुँचिहिं छिपा कमल पौनारी जंघ छिपा कदली[17] होय बारी

अप्सर रूप छिपाई जोहि चलै धन[18] साज ॥
जहँ लग गर्ब गहेल जग सबै छिपी मन लाज

मिली सो गोहन[19] सखी तराईं[20] लीन्ह चाँद सूर्य्य[21] पहँ आईं ॥
परशा रूप चाँद देखराई ॥ देखत सूर्य्य गयो मुरझाई ॥
सोरह किरन दृष्टि[22] शशि[23] कीन्हा सहस[24] किरन सूर्य्य कहँ लीन्हा
भा रवि अस्त तराईं[25] हँसी ॥ सूर्य्य न रहा चाँद परगसी[26] ॥
योगी आहि न भोगी कोई ॥ खाय कर कटा[27] गयो पर सोई
पद्मावत निरमल[28] जस गंगा ॥ नाहिं युक्ति योगी भिख मंगा
आय जगावहिं चेला जागहु ॥ आवा गुरू पाँय उठ लागहु ॥

बोलहिं शब्द[30] सहेली कान लाग गहि माथ
गोरख[31] आय ठाढ़ भा उठरे चेला नाथ ॥

गोरख शब्द शुद्ध भा राजा ॥ रामा सुनि रावन होय गाजा ॥

हुक्म १ चाल २ हाथी ३ मुँह ४ दाँत ५ बिजुली ६ ममोला ७ मीठी बोली ८ गर्दन ९ कमर १० चीता ११ आसमान १२ चोंटी १३ नाम राजा साँपों का १४ तलवार १५ होंठ १६ केला १७ पद्मावत १८ साथ १९ छोटे नखत २०-२१ सूर्य्य २१ २५ निगाह २२ चाँद २३ हज़ार २४ खिलना २७ टुकड़ा रोटी २८ पाक २९ आवाज़ ३०

गही[1] बाँह धन[2] सेजवाँ आनी | अँचल ओट रही छिपरानी ॥
सकुची डरी मुरी मन बारी ॥ | गहुन बाँहरे योगि भिखारी ॥
ओहट[3] हो योगी तोर चेरी ॥ | आवे बास कर[4] कटा केरी ॥
देखि बिभूत छूत मुहिँ लागा | कापै चाँद राहु सो भागा ॥
योगी तोर तपसी कै कया[5] ॥ | लागी चहै अँग[6] मोर छया[7] ॥
बार[8] भिखार न माँगेसि भीखा | माँगे आय स्वर्ग[9] चढ़ पीखा

योगी भिखारी कोई मन्दिर न पैसे पार[10]
माँग लेहु कुछ भिक्षा जाय ठाढ़ हो बार

अन तुम कारन[11] प्रेम पियारी | राज छाँड़ि के भयो भिखारी
नेह तुम्हार जो हिये[12] समाना | चितौर सो निसर्यो होय आना
जस मालति महँ भँवर बियोगी[13] | चढ़ा बियोग चल्यो होय योगी
भँवर खोज जस पावै केवा[14] | तुम कारन मैं जिव पर छेवा[15]
भयो भिखार नारि तुम लागी | दीप पतंग होय अँगयो आगी
एक बार मरि मिलै जो आये | दूसर बार मरै कित जाये ॥
कित तेहि मीचै[16] जो मरके जिया | भँवर कमल मिल कै रस पिया

भँवर जो पावै कमल कहँ बहु आरत[17] बहु आस
भँवर होय न्योछावर कमल देय हस बास

अपने मुँह न बड़ाई छाजा | योगी कतहु होहिँ नहिँ राजा
हौं रानी तू योगि भिखारी ॥ | योगिहि भोगिहि कौन चिन्हारी
योगी सबै छन्द अस खेला | तू भिखार केहि माह अकेला
पवन बाँध[18] अपसवहिँ[19] अकाशा | मन्सहिँ जहाँ जाहिँ तहँ बासा
येही भाँति सृष्टि[20] बहु छरी ॥ | यही भेष रावन सिय[21] हरी ॥

पकड़ना १ पद्मावत २ दूर हो ३ सूखा टुकड़ा रोटी ४ बदन ५-६ छाया ७ दरवाज़ा ८ आसमान ९ पैठ न सकै ११ वास्ते ११ दिल १२ दुखी १३ कमल १४ दुख १५-१७ मौत १६ साँस रोक कै १८ छिपना १९ दुनियां २० सीताजी २१

भँवरहिँ मीचे[1] नेर जो आवा | केतकि बास लेय कहँ धावा
दीपक ज्योति देखि उजियारी | आय पंख होय परा भिखारी

रयनि[2] जो देखे चंदमुख मसि[3] तन होय अलोप
तुह योग अस भूला होय राजा के रूप ॥

अन[4] धन तू पूँ[5] पूँर निशि[6] माहाँ | हो दिनेर[7] जेहि के तू छाहाँ ॥
चाँदहि कहाँ ज्योति औ कला | सूर्य्य की ज्योति चाँद निरमला[8]
भँवर बास चम्पा नहिँ लेई ॥ | मालति जहाँ तहाँ जिव देई ॥
तुम हुत भयो पतंग की किरा[10] | सिंहल दीप आय उड़ परा
सेयो महादेव कर बारू[11] ॥ | तजा[12] अन्न भा पवन अहारू
तुम सो प्रीति गाँठ मैं जोरी | कटै न काटै छुटै न छोरी
सिया[13] भीख रावन कहँ दीन्ही | तू अस निठुर अंतरपट[14] दीन्ही

रंग तुम्हारे रात्यो चढ्यो गगन[15] होय सूर[16]
जहँ शशि सीतल कहँ तपो मन इच्छा धनपूर

योगि भिखार करेसि बहु बाता | कहेसि रंग देखो तुहि राता[17]
कपरा रँगे रंग नहिँ होई ॥ | हिये[18] औट उपजै रंग सोई ॥
चाँद की रंग सूर्य्य जो राता ॥ | देखी जगत साँझ परभाता[19]
दग्ध[20] बिरह नित होय अँगारू | दहक आँच दग्धे संसारू ॥
जो मजीठ औटै बहु आँचा ॥ | सो रंग जन्म न डोलै राँचा ॥
जरै बिरह जो दीपक बाती ॥ | भीतर जरि ऊपर होय राती
जरपलास कोइला के भेषू ॥ | तब फूला राता होय टेसू ॥

पान सुपारी खैर तहँ मिलै करै चकसून[21] ॥
तब लग रंग न राची जब लग होय न चून ॥

मौत १ रात २-७ सियाही ३ ग़ायब ४ औ पद्मावत ५ चाँद ६ सूर्य्य ८-१६ पाक साफ़ ९ मानिंद १० दरवाज़ा ११ छोड़ना १२ श्री सीताजी १३ ओट १४ आसमान १५ लाल १७ दिल १८ भोर १९ जलाना २० रेज़ा २१

धनया[1] का सुरंग का चूना ॥ जेहि तन नेह दग्ध[2] तेहि दूना
हौं तुम नेह पियर भा पानू ॥ पेड़ी हुत सन रास बखानू ॥
सुनि तुम्हार संसार बड़ौना[3] योग लीन्ह तन कीन्ह गड़ौना[4]
करहिं[5] जो किंगरी लै बैरागी ने वती[6] होय बिरह की आंगी
फेर फेर तन कीन्ह भुजौना[7] औटरक्त रंग हिरदय अवना ॥
सूख सुपारी भा मन मारा ॥ शिर सरोत जनु करवट[8] सारा ॥
हाड़ चून भै बिरहैं दही ॥ जानै सोइ जो दग्ध[9] इमि[10] सही ॥

कै सुजानि कहु पीरा जेहिं दुख ऐसो शरीर ॥
रक्ति पियासे जे अहहिं का जानै परपीर ॥

योगिहि बहुत छन्द औराहीं[11] बूंद सेवाती जैसे पराहीं ॥
पड़हिं भूमि[12] पर होय कचूरू[13] ॥ पड़हिं कदल[14] पर होय कपूरू
पड़हि समुद्र खार जल ओहीं पड़हिं सीप सब मोती होहीं
पड़हिं मेरु[15] पर अमृत होई ॥ पड़हि नाग मुख बिष होय सोई
योगी भँवर निठुर ये दोऊ ॥ केहि आपन भे कहो सो कोऊ
एक ठाँव[16] यहि थिर[17] न रहाहीं रसलै खैल[18] अंत कहँ जाहीं ॥
होय ग्रही पुनि होय उदासी ॥ अंत काल दोनो बिश्वासी[19] ॥

तासों नेह जो दृढ़[20] करहिं थिर आछहि सह देश
योगी भँवर भिखारी दूर रहहिं आदेश[21] ॥

थल थल नग न होहिं जेहि ज्योती जल जल सीप न उपनहिं मोती
बन बन ब्रक्ष न चन्दन होई । तन तन बिरह न उपनै[22] सोई
जहँ उपना सो औट मर गयो जन्म निरार[23] न कबहूँ भयो ॥

पद्मावत १ जलन २-९ बड़ाई ३ गड़ौता ४ हाथ ५ मेहिमान ६ भूजना ७ शिर कटाना ८ इसतरह १० मकर करना ११ ज़मीन १२ नर कचूर १३ केला १४ पहाड़ १५ जगह १६ क़ायम १७ जाना १८ बेसबर १९ मज़बूत २० सलाम २१ पैदा २२ अलग २३ ॥ ÷ ॥

जल अम्बुज रवि रहै अकासा
जो प्रीति जानहु इक पासा ॥
योगी भँवर जोथिर नरहाहीं
जेहि खोजहि तह पावै नाहीं
मैं तो पावा आपन जीव ॥
छाड़ि सेवात जाय नहि पीव ॥
भँवर मालती मिलै जो आई
सो तजै आन फूल कित जाई

चम्पा प्रीति जो तेलहै दिन दिन आकर बास
राल राल आपहेराय जो मुयहि न छाड़ै पास

ऐसै राज कुवर नहि मानौ ॥
खेलसार पासा तब जानौ ॥
कच्ची बारहि बार फिरासी ॥
पक्की तौ फिर थिर न रहासी ॥
रहै न आठ अठारह भारवा ॥
सोरह सतह रहै सो रारवा ॥
सतये धरे सो खेलन हारा
ढारा रयारा जासुन मारा ॥
तू लीन्हेसि आछे मन दुवा ॥
औ यग सार चहेसि पुनि छुवा
हौं तुनेह रच्यो तोहि पाहीं
दसौं दाँव तोरे हिय माहीं ॥
तब चौपर खेलौं कै मया ॥
जो तरहेल होय सो तिया ॥

जेहि मिल बिछुरन औ तपन अंत तंत तेहि नंत
तेहि मिल कंचन को सहै पर बिन मिलै न चंत

बोलौं बचन नारि सुनि साँचा
पुरुष का बोल सपथ औ बाँचा
यहि मन लाग्यो तुहि अस नारी
दिन तोहि पास और निपारी
मैं पर बारहि बार मनायौं ॥
पिय सो खेल निपट जिय लायौं
भल भाँती मैं रचना राची ॥
सारेसि तोहि सबै कै काँची
पाक उठायौं आपु करीता ॥
हौं जीतहि हारा तू जीता ॥
मिलके पुरा नहिं हाहु निरारी
कहाँ बीच दो तौ दिन हारा
अब जिव जन्म जन्म तुहि पासा
चल्यौं योग आयौं कैलासा

कमल १ सूर्य्य २ कायम ३ छोड़ना ४ चौपर ५ दिल ६ मेहरबानी ७ जो मेरे साथ बाज़ी हार जाय ८ आख़िर को सुख ९ सोना १० रात ११ अलग १२ दो तीन का क्या काम है १३ ॥ ॥

जाकर जिव बसि जेहि से तेहि पुनि ताकर टेक[1] ॥
कनक[2] सुहारा न बिछुड़हि औट मिलहिं जो एक

बेहँसी धन[3] सुनि के सत बाता
निश्चै[4] तू मोरे रंग राता[5] ॥
निश्चै भँवर कमल रस रसा
जो जेहि मन सो तेहि मन बसा
जब हीरामन भयो सँदेशी ॥
तूहुत मँडफ गयो परदेशी ॥
तोर रूप तस देखेउँ लोना[6] ॥
जनु योगी तू मेली टोना ॥
सिधि गुटका जो दृष्टि[7] कमाई
पारे मेल रूप बसयाई[8] ॥
भुक्ति[9] देन कहँ मैं तुहि डीठा[10]
कमल नयन होय भँवर
नयन पुहुप[11] तू अलि[12] भा सो भी
रहा बेध तस ठड़सि न ले

जाकर आपु होय जे कहँ तहँ पुनि ताकर आपु
भँवर जो दाढ़ा[13] कमल का कस न पाव रस बास

कौन मोहनी धौं हुत तोही ॥
जो तोहि बिथा सो उपनी[14] मो
बिन जल मीन[15] तपै जस जीउ
चात्रिक[16] भयो कहत पिउ पी
जर्यो बिरह जस दीपक बाती
मग[17] जोवत भइ सीप सेवाती
डार डार ज्यों कोयल भई ॥
भयो चकोर नींद निपा[18] गई
मोरे प्रेम प्रेम तुहँ भयो ॥
राता[19] हेम अगिन ज्यों तयो ॥
हीरा दिपहिं[20] जो सूर[21] उदोती
नाहत कित पाहन[22] कहँ योती
रबि पर काँपो कमल बिकासा
नाहत कित मधुकर कित बासा

तासों कौन अंतरपट[23] जो अस प्रीतम पीव
न्योछावर करि आपहू तन मन यौवन जीव

हँसि पद्मावत मानी बाता ॥
निश्चै तू मोरे रंग राता ॥
तू राजा धनि कुल उजियारा ॥
अस कै चरच्यो मर्म[24] तुम्हारा

मददगार १ सोना २ पद्मावत हँसी ३ यकीन ४ मस्त ५ खूबसूरत ६ निगाह ७ पारा मिला के चाँदी किया ८ भीख ९ देखना १० फूल ११ भँवरा १२ आशिक १३ पैदा होना १४ मछली १५ पपीहा १६ राह १७ रात १८ लाल सोना १९ चमक २० सूर्य्य २१ पत्थर २२ औट २३ मेद २४

पैं तू जम्बू दीप बसेरा ॥ का जानेसि कस सिंहल मेरा
का जानेसि सुमानसर[1] केवा[2] सुनि सुभँवर भा जिव परछेवा[3]
ना तू सुनी न कोई डीठी[4] ॥ कैसें चित्र[5] होय चित पैठी ॥
जौलहि अगिन करै नहिं भेंटू[6] तौलहि औट चुवहि नहिं मेंटू[7]
कहँ पांकर तू ऐसो लखावा मिला अलख[8] तस प्रेम चखावा

जेहि के सत संघाती ता कर डर सो अमेंट
सो सत कहु कैसे भा दुहूँ भाँत सो भेंट

सत्य कहूँ सुनि पद्मावती ॥ जहँ सत पुरुष तहाँ सरस्वती
पायों सुवा कहे वह बाता ॥ भा निश्चै देखत मुख राता[9] ॥
रूप तुम्हार सुन्यों अस नीका ना जेहिं चढ़ा काहु कहँ टीका
चित्र कियों पुनि लैलै नाऊँ नयन हि लाग हिये[10] भा ठाऊँ
हौं भा साँच सुनत वह घड़ी ॥ तुम होय रूप आय चित चढ़ी
हौं भा काठ मूर्ति मन मारें ॥ जहँ जहँ कर सब हाथ तुम्हारे
तुम जो डोलावहु सोई डोला मवन सास जो दीन्ह तो बोला

कोइ सोवै कोइ जागै अस हौं गयो बिमोह[11] ।
परगट गुप्त[12] न दूसर जहँ देखौं तहँ तोहि ॥

बिहँसी[13] धन सुन के सत भाऊ हौं रामा तू रावन राऊ ॥
रहि जो भँवर कमल की आसा कस न भोग मानै रस बासा
जस सत कहा कुँवर तू मोही तस मन मोर लाग पुनि तोही
जब हुत कहिगा पंख सँदेशी सुन्यों कि आवा है परदेशी ॥
तब हुत तुम बिन रहै न जीउ ॥ चात्रिक[14] भयों कहत पिउ पीउ
भयों चकोर सो पंथ[15] तिहारे ॥ समुद्र सीप जस नयन पसारे ॥
बिरह भयों दहि[16] कोयल कारी ॥ डार डार जिमि पीउ पुकारी ॥

नाम तालाब १ कमल २ जान पर खेला ३ देखना ४ तसवीर ५ शोला ६ अतर ७ ईश्वर ८ लाल ९ दिल १० दीवाना ११ ज़ाहिर बाछिपा १२ हँसी १३ पपीहा १४ राह १५ जलना १६

कौन सो दिन जब पिउ मिलै बहु मन राता[1] जासु
वह दुख देखै मोर सब हौं दुख देखौं तासु

कहि सत भाव भई कंठ लागू | जनु कंचन औ मिला सुहागू
चौरासी आसन पर योगी ॥ | खट रस बन्दक चतुर सो भोगी
कुसुम माल असमालति पाई | जनु चम्पा गहि डार नवाई ॥
कली बेध[5] जनु भँवर लुभाना | हना[6] राहु अर्जुन के बाना
कंचन कली जड़ी नग ज्योती | बरमा सों बेधा जनु मोती ॥
नारंग जानि कीर[8] नख दिये | अधर आम्ब रस जानहु लिये
कौतुक केल करहिं दुख नसा | कंदहि[10] कुरलहि जनु सर[11] हंसा

रही बसाय बासना चोवा चन्दन मेद ॥
जो अस पद्मिन रावी[12] सो जानै यह भेद ॥

रतनसेन सो कंत सुजानू ॥ | खट रस पण्डित सो रह बानू
तस होय मिले पुरुष औ गोरी | जैसी बिछुड़ी सारस जोरी
रची सार[14] दोनो इक पासा ॥ | होय युग युग आवहिं कैलासा
पिय धन गहि दीन्ही गलबाहाँ | धन बिछुड़ी लागी उर माहाँ
तेछक रस नव केल करेहीं | चोकैलाय[15] अधर नरस लेहीं
धन[16] नव सात सात औ पाँचा | पूरुष[17] दश तेरह किम बाँचा
लीन्ह बिधास[18] बिरह धन साजा | औ सब रचन जीत हत राजा

जनहुँ औट कै मिल गये तस दोनो भये एक
कंचन[19] कसत कसौटी हाथ न कोऊ टेक[20]

चतुर नारि चित अधिक चहूँटी | जहाँ प्रेम बाढ़ी किम छूटी ॥

दीवाना १ सोना २-१६ कुसुम की बोढ़ी की तरह छाती ३ पकड़ना ४ कली में भँवरा ने सूराख किया ५ तीर निशाने पर मारा ६ सोने की कली सा बदन मोती की तरह बरमा से बेधा ७ तोता ८ होंठ ९ कुलेल १० तालाब ११ अतर १२ भोगना १३ चौपड़ १४ होंठ चूसना १५ पद्मावतहारी १६ राजा जीता १७ लूटना १८ पकड़ना २० बहुत २१

कुरला[1] काम कीर मनुहारी | कुरला[2] जहँ तहँ सोन सुनारी
कुरला[3] होय कंत कर तोखू ॥ | कुरला[4] गहै पाव धन मोखू ॥
तेहि कुरला[5] सो सुहागस भागी | चन्दन जैस श्याम कंठ लागी
गेंद[6] गोंद कै जानहु लिये ॥ | गेंद[7] चाहि धन कोमल भये ॥
दाड़िम[8] दाख[9] बेल रस चाखा | पिय के खेल धन जीव न राखा
भयो बसंत कली मुख खोली | बैन[10] सुहावन कोकिल बोली

पिउ पिउ करत जीभ धन सूखी बोली चातृक[11] भाँति
परी सो बूँद सीप जनु मोती हिय[12] पेरी सुख शाँति ॥

भयो जूझ जस रावन रामा ॥ | सेज बिधाँस[13] बिरह संग्रामा[14] ॥
लीन्ह लंक[15] कंचन गढ़[16] टूटा ॥ | कीन्ह शिंगार अहा सब लूटा
औ यौबन मेमन्त[17] बिधाँसा | बिचला बिरह जीव लै नासा
टूटी अङ्ग अङ्ग सब भेशा ॥ | छूटी माँग भंग भये केशा
कंचुक[18] चूर चूर भइ तानी ॥ | टूटि हार मोती छहरानी ॥
बारीं[19] ताड़ सलोनी टूटी ॥ | बाँहू कगन कलाई फूटी ॥
चन्दन अङ्ग छूट तस भेटी[20] | बेसर टूटि तिलक गा मेटी

पुहुप[21] शिंगार सँवार सब यौबन नवल बसंत
अरगज[22] ज्यों हिय लाय के मरगज[23] कीन्हो कंत

बिनय करै पद्मावत बाला | सुधन[24] सुराही पियो पियाला
पिय आयसु[25] माथे पर लेऊँ | जो माँगै नय नय शिर देऊँ

मस्ती में काम का तोता आया १ जोश में सोना सुनार के हाथ से आया २ ग़लबा किया खाविन्द ने ३ ग़लबा करके पैर औरत का वास्ते फ़राग़त के पकड़ा ४ ग़लबा ५ जैसे गेंदे ने गोंद के फूल को गोद में लिया ६ गेंदा से नर्म ७ अनार ८ अंगूर ९ आवाज़ १० पपीहा ११ दिल १२ लूटना १३ लड़ाई १४ कमर १५ सोने का क़िला तथा बदन १६ मस्त १७ अँगिया १८ नाम ज़ेवर १९ राजा के मुलाक़ात से २० फूल २१ खुशबू २२ दलमल २३ शराब मुहब्बत सुराही से कम कम पियो २४ हुक्म २५

पै पिय बचन[1] एक सुनि मोरा | चाखौ पिय मधु[2] थोरा थोरा ॥
प्रेम सुरा सोई पै पिया ॥ | लखै न कोऊ कि काहूँ दिया
चुवा दाख[3] मधु जो इक बारा | दूसर बार लेत बेसँभारा ॥
एक बार जो पीके रहा ॥ | सुख जीवन सुख भोजन लहा
पान फूल रस रंग करीजे ॥ | अधर[4] अधर सों चाखा कीजे

जो तुम चाहो सो करो ना जानों भल मन्द
जो भावै सो होय मोंहि तुम पिय चहुँ अनन्द

सुनि धन[5] प्रेम सुरा के पिये ॥ | मरन जिवन डर रहि नहिं हिये[6]
जहँ मधु तहाँ कहाँ निसतारा | की सुधुम रहा की मतवारा
सो पी जानि पिये जो कोई ॥ | पै न अघाय जाय पर सोई ॥
जा कहँ होय बार इक लाहा | रहै न वह बिन ओही चाहा ॥
अर्ब दर्ब सब देइ बहाई ॥ | कै सब जाव न जाय पियाई
रातहि दिवस रहै सब भीजा | लाम[9] न देख न देखी छीजा[10] ॥
भोर होत तब पलहु पारीरू | पाय धुम[11] रहा पीतल[12] नीरू ॥

एक बार भर देहु पियाला बार बार को माँग
मुहम्मद किम न पुकारे ऐसो दाँव जेहि खाँग[13]

भयो बिहान उठा रबि[14] साईं | चहुँ दिस आईं नखत तराईं[15]
सब निसि[16] सेज मिला शशि[17] सूरू[18] | हार चीर बलियाँ[19] भइ चूरू ॥
सुधन[20] पान चून भइ चोली | रंग रंगील निरंग[21] भइ डोली ॥
जागत रयनि[22] भयो भिनसारा | भइ बेसँभार[23] सोत बेकरारा
अलक[24] तुरंगिन हिरदय[25] परी | नारंग[26] छुइ नागिन बिष भरी

बात १ शराब २ अंगूर ३ होंठ ४ पद्मावत ५-२० दिल ६ फ़ायदा ७-९ दिन ८ नुक़सान १० नशा ११ ठंढा पानी १२ कमी १३ सूर्य्य तथा राजा १४ १८ सहेली १५ रात १६ चाँद १७ चूड़ी १९ बेरौनक़ २१ रात २२ बेहोश २३ बाल की लटैं २४ छाती २५ तथा छातियाँ २६ ॥ ३-॥

लरी[1] मुरी हिये[2] हार लपेटे | सुर[3] सरि जनु कालिन्दी[4] भेंटे
जनु प्रयाग[5] आरयल[6] बिच मिली | बेनी[7] भइ सो रोमावली ॥

नाभी लाभे[8] ते गये काशी कुराड[9] कहाव ॥
देवता मरहिं कलप[10] शिर आपहिं दोय[11] न लाव

बिहँस जगावहिं सखी सयानी | सूर[12] उठा उठि पद्मिन रानी ॥
सुनत सूर[13] जनु कमल बिकास[14] | मधुकर[15] आय लीन्ह मधु बासा
जनहुँ मात[16] बसयानी बरसी । | अति बिस भर फूली जनु अरसी
नयन कमल जानहु दुइ खोले | चितवन मृग[17] सो अति जनु भूले
तन बेसँ भार केश औ चोली ॥ | चित अचेत जनु बाली भोली
कमल माँझ जनु केसर[18] दीठी | यौबन हुत सो गंवाई बैठी ॥
भये शशि गहे[19] गहन अस गहे | बिथरे नरवत[20] सेज भर रहे ॥

बेल जो राखी इन्द्र कहँ पवन बास नहिं देहि
लाग्यो आय भँवर तेहि कली बेध रस लेहि

हँसि हँसि पूँछैं सखी सरेखी[21] | जनहु कुमुद[22] चन्दन मुख देखी
रानी तुम ऐसी सुकुमारा ॥ | बास फूल तन जीव तुम्हारा ॥
सहि नहिं सको हृदय[23] परहारू | कैसें सहो कंत कर भारू ॥
बदन[24] कमल बिकसत[25] दिन राती | सो कुँभलात कहो केहि भाँती
अधर[26] कमल जो सहत न पानू | कैसे सहा लाग मुख भानू[27] ॥
लंक[28] जो पैग देत मुरझाई ॥ | कैसें रही जो रावन[29] राई ॥
चन्दन चोंप पवन अस पीव | भयो चित्र[30] सम कस भा जीव

पँचलरी वासतलरी १ छाती २ गंगाजी तथा छाती ३ यमुना तथा छाती के बाल ४ नामतीरथ ५ नाम मुकाम ६ त्रिबेनी ७ लालच ८ मणिकर्णिका कुंड ९ शिर कटाना १० गुनाह ११ सूर्य्य १२ १३ खिलना १४-१५ भँवर १५ मस्ताबसी १६ हिरन १७ ज़र्दरंग १८ चाँद १९ तथा हार के मोती २० होशयार २१ केकाबेली २२ छाती २३ मुँह २४ होंठ २६ सूर्य्य तथा राजा २७ कमर २८ तथा राज की सुहबत २९ तसवीर ३०

सब अरगज[1] मरगज[2] भयो लोचन[3] बिंब[4] सरोज[5]
सत्य कहो पद्मावत सखी परीं सब खोज ॥

कहौं सखी आपन सत भाऊ
हौं जो कहत कस रावन[6] राऊ
कापौं भँवर पुहुप[7] पर देखे ॥
जनु शशि[8] गहन तैसि मोहिं लेखे
आज मर्म[9] मैं जाना सोई ॥
जस पियार पिय और न कोई
डर तब लग अहमिलान पीव
भानु[10] की दृष्टि[11] छूटगा सीव[12] ॥
जत रवन भानु लीन्ह परकासू[13]
कमल कली मन कीन्ह बिकासू[14]
हिये[15] छोह[16] उपना[17] औ सीव[18] ॥
पिय न रिसाय लेव पर जीव ॥
हत जो अपार बिरह दुख दूखा
जनहु अगस्त उदधि[19] जल सूखा

हमहु रंग बहु जानब लहरें जेत समुंद
पिय लै गये चतुराई सक्यों न एको बूंद[20] ॥

करि शिंगार तापन कहँ जाऊँ
औही देखौं ठावहिं ठाऊँ[21] ॥
जो जिय महँ तो वही पियारा ॥
तन महँ सोइ न होय निरारा[22] ॥
नयनहि महँ तो वही समाना
देखौं जहाँ न देखौं आना ॥
आपहिं रस आपहि पै लेई ॥
अधर[23] सहस लागे रस देई ॥
हिया[24] थार कुच कंचन[25] लाडू
अगमन[26] भेट दीन्ह कै चाडू[27] ॥
हुलसी[28] लंक लंक[29] सोलसी
रावन[30] रहस कसौटी कसी
यौबन सभै मिला वह जाई ॥
हौंरी बिच हुत गयो हेराई ॥

जस कुछ दीजे धरन[31] कहँ आपन लेहस भार
तस शिंगार सब लीन्हेसि कीन्हेसि मोहिं ठठार[32]

खुशबू १ दलमल २ आँख ३ कुँदरू की तरह लाल ४ कमल ५ तथा औरत मर्द की सुहबत ६ फूल ७ चाँद ८ भेद ९ सूर्य्य १० निगाह ११ जाड़ा १२ रोशनी १३ खिलना १४ दिल १५ मेहरबानी १६ पैदा १७ खिदमत १८ समुद्र १९ दाँव २० जगह २१ अलग २२ हाँड २३ छाती २४ सोने के लड़ुवा सी छातियां २५ पहिले २६ पियार २७ खुश होना २८ कमर २९ तथा राजा ३० धरोहर ३१ खाली ३२ ॥

स्री छबीली नहिं छब लागी | नेत्र गुलाल कंज[1] संग जागी
चम्पसुदरसन अस भा सोई[2] | सोन जर्द जस केसर होई ॥
बैठि भवर कुच नारंग बारी[3] | लागी नेरव अछरे रंग धारी॥
अधर[4] अधर सों भीजन बोरी | अलक[5] कावल मुरमुरहु मोरी
रायमुनी मुख औ रँग मुही[6] ॥ | अलि[7] सुरबल्लरा भई फुल चुही[8]
जैसे पिंगार हार सों मिल्ली | मालति ऐसि सदा रहि खिल्ली
पुनि पिंगार रस किरीं[9] नेवारी | कदम सवनी पिय हिय पियारी

गोंद[10] कली सँग[11] बिकसी ऋतु बसंत औ फाग
फूलहु फरहु सदा सुख औ सुख सुफल सुहाग

कहियहु बात सखी उठ धाई[12] | चम्पावत कहँ जाय सुनाई
आजु निरंग[13] पद्मावत बारी | जीवन जान पवन अधारी ॥
तड़क तड़क गा चन्दन चोला | धड़क धड़क डर उठै न बोला
अहे जो कली कमल रस पूरी | चूर चूर होय गई सो चूरी ॥
देखा जाय जैसि कुभलानी | सुनि सुहाग रानी बेहँसानी[14]
लेसग सबही पद्मिन नारी | आई जहँ पद्मावत बारी ॥
आय रूप सबही जो देखा | सोन बरन होय रही सो रेखा

कुसुम फूल जस सखी निरंग[15] देख सब अंग
चम्पावत भइ बारी चूब के पूरा औ संग ॥

सब रनवास बैठि चहुँ पासा | पाँपा[16] मण्डल जनु बेढ़ अकासा
बोली सबहिं बारि कुभलानी | करहु पिंगार देहु रवड़ बानी[17]
कमल कली कोमल रस भीनी | अति सुकमार[18] लंक कै छीनी
चाँद जैसि धन बैठि गरासी | सहस किरन होय सूर्य्य बिकासी

[1] आँख [2] चंदन [3] कुचनारंग [4] होठ पर पान की लाली [5] बाल [6] लाल [7] सुख [8] मुँह [9] भँवर [10] नाम चिड़या [11] बाबर [12] [illegible] [13] आप पद्मावत [14] बेरंग [15] हँसना [16] चाँद [17] पारबत [18] कमरुनती

तेहि[1] के झार गहन अस गही | भइ निरंग[2] मुख ज्योति न रही
दर्ब वार कुछ पुन्य करेहू ॥ | औ लै बर[3] सन्यासहि देहू ॥
भर के थार नखत गज मोती | वरती[4] कीन्ह चाँद की ज्योती

कीन्ह अरराजा[5] मरवन औ मुख दीन्ह नहान
पुनि भइ चाँद जो चौदस रूप गयो छिप भान[6]

पटवहि[7] चेर आन सब छोरी | सारी कंचुक[8] पहिर पटोरी[9] ॥
पहँदया[10] और कंस्या[11] राती[12] ॥ | छायल[13] पिंडवाही[14] गुजराती
चकवा[15] चीर मखोना[16] लोने[17] ॥ | मोति लाग औ छापे सोने ॥
सुरंग चीर भल सिंहल दीपी | कीन्ह जो छापा धन वह छीपी
पेमचा[18] डुरया[19] और बुंदेरी[20] ॥ | प्रयाम[21] सेत[22] पीरी औ हरी ॥
सात रंग सो चित्र[23] चितेरे ॥ | भर के दीठ[24] जाहिं नहिं हेरे ॥
चन्दनोता[25] जो खरदुक[26] भारी | बाँसपूर[27] झिलमिल[28] की सारी

पुनि अभरन[29] बहु काढ़ा आनो भाँति जड़ाउ
फेर फेर सब पहिरहिं जैस जैस मन भाउ

रतनसेन गये अपनी सभा | बैठे पाट[30] जहाँ अठ खँभा ॥
आय मिले चितौर के साथी | सबै बिहँस के दीन्ही हाथी
राजा कर भल मानहु भाई ॥ | जेहम कहँ यहि भूमि[31] दिखाई
जो हम कहँ नहिं एत नरेशू[32] ॥ | तब हम कहाँ कहाँ यहि देशू ॥
धनि राजा तुईं राज विशेषा | जेहि की रजायसु सब कुछ देखा
भोग बिलास सभी कुछ पावा | कहाँ जीभ तस अस्तुति आवा
अब तुम आय अंतर पट साजा | दरशन कहँ न तपावहु राजा ॥

किसके मुलाक़ात के लूक से १ बेरंग २ दरवाज़ा ३ न्योछावर ४ ख़ुशबूदार उपटन ५ सूर्य्य ६ दारोग़ा तोशाख़ाना ७ अँगिया ८ रेशम ९ नामक पड़ा १०-११-१३-१४-१५ १६-१८-१९-२०-२७-२८ लाल १२ ख़ूब सूरत १७ काला २० सफ़ेद २२ तसवीर २३ निगाह २४ क़िस्म लहँगा २५-२६ ज़ेवर २९ तख़्त ३० ज़मीन ३१ राजा ३२ ॥

नयन[1] सेराने भूख गइ देख दरश तुम आज ॥
आज भयो अवतार[2] नव औ सब भे नये काज

हँस के राज रजोयसु[3] दीन्हा ॥ मैं दरशन कारन[4] तप कीन्हा
अपनी योग लाग अस खेला ॥ गुरु भा आप कीन्ह तुम चेला
अहक मोर बर्षा[5] ऋतु देखहु ॥ गुरू चीन्ह के योग बिशेषहु
जो तुम तप साधा मोहिं लागी ॥ अब जन हिये[6] होहु बैरागी[7] ॥
जो जेहिं लाग सहै तप योगू ॥ सो तेहि के संग मानै भोगू ॥
सोरह सहस[8] पद्मिनी मांगी ॥ सबै दीन्ह नहिं काहू खांगी[9] ॥
सबक धौरहर[10] सोने साजा ॥ सब अपने अपने घर राजा ॥

हस्ति[11] घोर औ कापर सबहि दीन्ह बड़ साज
भये गृहस्त सब लखपती घर घर मानहु राज

पद्मावत सब सखी बोलाई ॥ चीर पटोर[12] हार पहिराई ॥
शीश[13] सबन के सेंदुर पूरा ॥ शीश पूर सब मांग सिंदूर ॥
चन्दन अगर चित्र[14] सम भरीं ॥ नयन चार जानहु औ तरी[15] ॥
जानु कमल संग फूली कोई[16] ॥ औ सो चांद संग तरई[17] उई ॥
धन पद्मावत धन तोर नाहू[18] ॥ जेहि अभरन[19] पहिरा सब काहू
बारह अभरन सोरह शिंगारा ॥ तोहि सोहे पिय शशि[20] मसयारा
शशि सुकलंकी राहुहि पूजा ॥ तुइ निकलंक न कोइ सर[21] दूजा

काहू बीन गहा कर[22] काहू नाद मृदंग ॥
सब दिन अनन्द बधावा रहस कूद इक संग

पद्मावत कहि सुनहु सहेली ॥ हौं सो कमल तुम कुमदन[23] बेली
कलश मानि हौं तेहि दिन आई ॥ पूजा चलो चढ़ावहिं जाई ॥

आँख ठंडी १ नई पैदाइश २ हुक्म ३ वास्ते ४ तथा रोना ५ दिल ६ दुखी ७ हज़ार ८ कमी ९ महल १० हाथी ११ क़िस्म कपड़ा १२ शिर १३ तसवीर के बराबर १४ छोटे नख्त १५-१७ कोका बेली १६-२३ खाविंद १८ ज़ेवर १९ चाँद २० बराबर २१ हाथ २२

मँझ[1] पद्मावत का जो बिवानू | जनु पर[2] भात उठै रति भानू[3] ॥
आस पास बाजत चौंडोला[4] | द्वंद[5] मृदंग[6] झाँझ डफ ढोला ॥
एक संग सब सौंधी[7] भरी ॥ | देव दुवारे उतर भई खरी ॥
अपने हाथ देव अन्हवावा ॥ | कलश सहस[8] इक घृत[9] भरावा
पोता मँडफ अगर औ चन्दन ॥ | देव भरा अरगज[10] औ बिन्दन

कै प्रणाम[11] आगे भई बिनय[12] कीन्ह बहु भाँति
रानी कहा चलहु घर सखी होत है राति ॥

भइ निशि[13] धन[14] जस शशि[15] परकसी[16] | राजे देखि भूमि[17] फिर बसी ॥
भइ कटक[18] कई शरद शशि आवा | फेर गगन[19] रबि चाही छावा ॥
सुनि धन[20] धनुष भौंह कर फेरी | काम कटाक्ष[21] मकोरत[22] हेरी ॥
जानहुँ[23] न कै बीच पै खाचौं ॥ | पिता सप्त[24] हो आज न बाचौं ॥
काल्ह न होय रहे सुख रामा | आज करौं रावन[25] संग्रामा ॥
सैन[26] शिंगार मुहूँ है सजा ॥ | गज[27] गत चाल अँचल गत धुजा
नयन समुद्र खड्ग[28] नासिका[29] | सर[30] बर जूझ को मोसों जिता ॥

हो रानी पद्मावती मैं जीता सुख भोग ॥
तू सर[31] बर कर तासों जस योगी तोहि योग

हौं अस योगि जान सब कोऊ | वीर[32] शृंगार जिते मैं दोऊ ॥
वहँ तो हनू[33] बीर घट माहीं ॥ | यहँ तो काम कटक[34] तुम्ह पाहीं
वहाँ तो हय[35] चढ़ के महि[36] मंडो | यहाँ तो अधर[37] अमी रस खंडो
वहाँ तो खड्ग नरन्दहि मारो ॥ | यहाँ तो बिरह तुम्हार सँहारो

बीच १ भोर २ लाल सूर्य्य ३ नाम बाजा ४-५-६ सहेली ७ हज़ार ८ घीव ९ खुशबू १० दंडवत ११ आजज़ी १२ गत १३ पद्मावत १४-२० चाँद १५ रौशनी १६ ज़मीन १७ हुक्म १८ आसमान पर सूर्य्य तथा कोठे पर जाना १९ ग़मज़ा २१ कोर से देखना २२ भौंह चढ़ा के न बचौगे २३ क़सम २४ रावन की तरह लड़ो २५ फ़ौज २६-३४ हाथी २७ तलवार २८ नाक २९ बराबरी ३० ३१ मैदान लड़ाई-वा भोग ३२ हनूमानजी ३३ घोड़ा ३५ ज़मीन ३६ होंठ ३७ ॥

वहाँ तो गज[1] पेलों होय केहर[2] | यहाँ तो कुच[3] कामिन कर हेहर
वहाँ तो लूटों कटक[4] खंडारू | यहाँ तो जीत तुम्हार शिंगारू
वहाँ तो कुंभस्थल[5] गज नाऊँ | यहाँ तो गज कलशहि कर लाऊँ

पड़ा बीच तब धर धर प्रेम[6] राज के टेक ॥
मानौ भोग छहू ऋतु मिल दोनों होय एक ॥

खण्ड चौबीसवाँ छह ऋतु बारह मास

प्रथम[7] बसंत नवल ऋतु आई | सु ऋतु चैत बैशाख सुहाई ॥
चन्दन चीर पहिर धन[8] अंगा ॥ | सेंदुर दीन्ह बेहसि भर मंगा
कुसुम हार औ परबल[9] बासू ॥ | मलया[10] गिरि छिड़का कैलाशू
सूर[11] सपेती फूलन दासी ॥ | धन औ कंत मिले सुख बासी
पिय संयोग[12] धन यौवन बारी | भँवर पुहुप[13] संग करहिं धमारी
होय फाग भल चाचर जोरी ॥ | बिरह जराय दीन्ह जस होरी ॥
धन शशि[14] सीर[15] तपी[16] पिय सूरू[17] | नखत शिंगार होहिं सब चूरू

जेहि घर कंथा ऋतु भली आव बसंता नित्त
सुख भर आवहिं देव हरे[18] दुःख न जानै कित्त

ऋतु ग्रीषम की तपन नहिं तहाँ | जेष्ठ असाढ़ कंत घर जहाँ ॥
पहिरे सुरंग चीर धन झीना ॥ | परमल[19] मेद रही तन भीना ॥
पद्मावत तन सीर[20] सुबासा ॥ | नैहर राज कंत घर पासा ॥
औ बड़ जूड़ तहाँ सोनारा[21] ॥ | अगर पोत सुखनंत[22] उहारा ॥
सेत[23] बिछावन सूर[24] सपेती ॥ | भोग बिलास कराह सुख सेती
अधर[25] तँबोर कपूर भीउ सेना | चन्दन चरच लाव नित बैना ॥

हाथी १ शेर २ औरत की छाती से काम ३ फ़ौज ४ नाम हाथी ५ प्रेम ने बीच बचाव करदिया ६ पहिले ७ पद्मावत ८ ख़ुशबूदार ९ चन्दन १० तोशकलहाफ़ ११ २४ मुलाक़ात १२ फूल १३ चाँद १४ ठंढ़ा १५-२० गर्म १६ सूर्य्य १७ महादेवजी १८ बहुत ख़ुशबू १९ रात के रहने का मकान २१ फ़र्श २२ सफ़ेद २३ होंठ २५

भा अनन्द सिंहल सब कहूँ | भागवंत कहँ सुख ऋतु चहूँ

दाड़िम[1] दारव[2] लेहि रस बरसहिं आँब छुहार ॥
हरियर तन सोटा[3] कर जो अस चाखनहार

ऋतु पावस[4] बरसै पिव पावा ॥ | सावन भादौं अधिक[5] सुहावा
पद्मावत चाहत ऋतु पाई ॥ | गगन[6] सुहावन भूमि[7] सुहाई
कोकिल बैन पात बग[8] छूटी | धन[9] निसरी जनु बीर बहूटी ॥
चमक बीज[10] बरसै जल सोना | दादुर[11] मोर शब्द[12] सुठ लोना ॥
रंग राती पिय संग निशि[13] जागी | गरजे गगन[14] चौंक कंठ लागी
शीतल बुंद ऊँच चौपारा ॥ | हरियर सब देखै संसारा ॥
मलय समीर[15] बास सुख बासी | बेल फूल सेज सुख दासी ॥
हरियर भूमि[16] कुसुम्भी चोला | औ धन पिय संग रचो हिंडोला

पवन झकोरे है हरष[17] लागै शीतल बास ॥
धन जानी यहि पवन है पवन सो अपने पास

आय शरद ऋतु अधिक[18] पियारी | नाउँ कुवार कातिक उजियारी
पद्मावत भइ पूनो कला[19] ॥ | चौदह चाँद उई सिंहला ॥
सोरह किरण शृंगार बनावा | नखत भरा सूर्य्य शशि[20] पावा
भा निरमल[21] सब धर्ति अकासू | सेज सँवार कीन्ह बल दासू ॥
श्वेत[22] बिछावन औ उजियारी | हँस हँस मिलहिं पुरुष औ नारी
सोने फूलहिं प्रथवी[23] फूली | पिय धन सो धन पिय सों भूली
चष[24] अंजन दै खंजन[25] दिखावा | होय सारस जोरी रस पावा ॥

यहि ऋतु कंथा पास जेहि सुख तिन के हिय माँह
धन हँस लागी पिय गले धन गल पिय के बाँह

अनार १ अंगूर २ तोता ३ बरसात ४ बहुत ५ आसमान ६ ज़मीन ७-२३ बगुला ८ पद्मावत ९ बिजुली १० मेढक ११ आवाज़ १२ रात १३ आसमान १४ हवा १५ ज़मीन १६ खुश १७ बहुत १८ पूरनमासी का चाँद १९ चाँद २० साफ़ २१ सफ़ेद २२ आँख २४ ममोला २५

आय शिशिर[1] ऋतु तहाँ न सीऊ | अगहन पूष जहाँ घर पीऊ ॥
धन[2] औ पिय महँ सेव[3] सुहागा | दुहूँ अंग[4] एकै मिल लागा ॥
मन सो मन तन सो तन गहा | हिय[5] सो हिय बिच हार न रहा
जानहुँ चन्दन लाग्यो अंगा | चन्दन रहे न पावै संगा ॥
भोग करहिं सुख राजा रानी | वहँ लेखे सब सृष्टि[6] जुड़ानी
जूझ[7] दुहूँ यौवन[8] सों लागा ॥ | बिच हुत सैव[9] जीव लै भागा
दुइ घट मिल एकै होय जाहीं | ऐसि मिलहिं तब हीन अघाहीं

हंसा केल करहिं ज्यों सर[10] वर कंदन[11] हि दोउ ॥
सेव पुकारे पार भा जस चकवीक बिछोउ ॥

ऋतु हेमंत संग पियो पियाला | मानहुँ फागुन सुख सेव साला
सूरस[12] पेती महँ दिन राती ॥ | दगल चीर पहिरहिं बहु भाँती
घर घर सिंहल होय सुख भोजू | रहा न कतहूँ दुख कर खोजू
जहँ धन पुरुष शीत नहिं लागा | जानहुँ काग देख सर भागा
जाय इन्द्र सों कीन्ह पुकारा ॥ | हों पद्मावत देश निसारा ॥
यहि ऋतु सदा संग मैं सोवा | अब दरशन ते भरा बिछोवा[13]
अब हँस के शशि[14] सूरह[15] भेटा | अहा जो शीत बीच हुत मेटा

भयो इन्द्र कर आय[16] सुपर[17] सेहावहिं भइ सोय
काहु काहु की पीर भा कोहि काहु की होय

नागमती चितौर पँथ[18] हेरा ॥ | पिय योगी पुनि कीन्ह न फेरा ।
नागर नारि काहु बस परा ॥ | तें बिमोह[19] मोसों चित हरा ॥
सुवा काल[20] होय लैगा पीव ॥ | पीव न जात जात पर जीव ॥
भयो नरायण बावन किरा | राज करत नल राजा छरा ॥

जाड़े का मौसिम १ पद्मावत २ जाड़ा ३-९ बदन ४ छाती ५ सारी दुनियां ६ लड़ाई ७ जवानी ८ तालाब १० सुख से कलोल ११ तोशाकलहाफ़ १२ अलग १३ चाँद १४ सूर्य्य १५ हुक्म १६ तसवीर १७ राह देखना १८ मोह लेना १९ मौत २०

करनबान लीन्हों कै छन्दू ॥ भरथहिं भयो झिलमिला नन्दू
मानत भोग गोपिचन्द भोगी लै अपसवा जलंधर योगी ॥
लै के कंथ भा कुररा लोपी ॥ कठिन बिछोह जियहि किमि गोपी

सारस जोरी किमहरी मारगयो किन खाग ॥
झुर झुर माँजर धन भई बिरह की लागी आग

पिय बियोग अस बावर जीव पपिहा जस बोलै पिय पीव ॥
अधिक काम दरधे सो कामा हरि लै सुवा गयो पिय नामा ॥
बिरह बान तस लागन डोली रक्त पसीज भीज तन चोली ॥
संग ही हीर हार हिय बारी ॥ हरहर प्रान तजी अब नारी ॥
खन इक आव पेट महँ स्वासा खनहि जाय जिव होय निरासा
पवन डुलावहिं सींचहिं चोला फिर के नारि समुझ मुख बोला
प्रान पयान होत को राखा ॥ कोयल औ चात्रिक मुख भाखा

आह जो मारी बिरह की आग उठी तेहि हाग
हंस जो रहा शरीर महँ पाख जरे तब भाग ॥

पाट महादेव हिये निहारू ॥ समझ जीव चित चेत सँभारू
भँवर कमल संग होय मिलावा सँवर नेह मालति पुनि आवा ॥
जैसी पपीहा स्वाति हि प्रीती । टेक प्यास बाँधे जिय सेती ॥
धर्ती जैसि गगन सो नेहा ॥ पलट फिरै वर्षा ऋतु मेहा ॥
पुनि बसंत ऋतु आवन वेली सुरस सुमधुकर सारस बेली ॥
जन अस जीव करेसि तू बारी ॥ वह तरवर पुनि उठहिं सँवारी
दिन दश बिन जल सूखा कासा पुनि सोइ सरवर सोई हाँसा ॥

मिलहिं जो बिछुड़े साजन कै की भेंट कहंत
तपन गिरगसर जिनि सहैं ते अद्रा पलहंत

नाम राजा १ नाम योगी २-४ दुख पाया ३ छिपना ५ खाविंद ६ कौआ ७ नागमती ८ दुख ९ बहुत
१० जलना ११ छोड़ना १२ फल १३ कूच १४ पपीहा १५ तखत १६ दिल १७ आसमान १८ भँवर

चढ़ा असाढ़ गगन[1] घन[2] गाजा ॥ साजा बिरह दुंद दल बाजा ॥
धूम[3] श्याम धौरी घन धाये ॥ श्वेत[4] ध्वजा बक[5] पाँति देखाये ॥
खड्ग[6] बीज[7] चमकै चहुँ ओरा ॥ बुन्द बान बरसहिं घन घोरा
उनई घटा आय चहुँ फेरी ॥ कंत उबार मदन[8] हौं घेरी ॥
दादुर[9] मोर कोंकिला पीऊ ॥ गिरहि बीज घट रहै न जीऊ ॥
पुष्य नक्षत्र शिर ऊपर आवा ॥ हौं बिन नाह[10] मंदिर को छावा
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई ॥ मो पिय बिन को आदर देई ॥

जेहिं घर कंता ते सुखी तेहि गारू तेहि गर्ब[11] ॥
कंत पियारे बाहरे हम सुख भूला सर्ब ॥

सावन बरस मेह अतवानी[12] ॥ मरन परी हौं बिरह झुरानी ॥
लाग पुनर बस पीऊ न देखा ॥ भइ बावर कहँ कंत सरेखा[13] ॥
रक्त[14] की आँसू परहिं भुइँ टूटी ॥ रेंग चलीं जनु बीर बहूटी ॥
सखिन रचा पिय संग हिंडोला ॥ हरियर भूमि[15] कुसुंभी चोला
हिय[16] हिंडोल जस डोलै मोरा ॥ बिरह झुलावै देइ झकोरा ॥
बाट[17] असूझ अथाह गँभीरी[18] ॥ जिव बावर भा फिरै भँभीरी ॥
जग जल बूड़ जहाँ लग ताकी ॥ मोर नाव खेवक[19] बिन थाकी ॥

पर्बत समुद्र अगम बन औ बीहड़ घन ढंख ॥
किम कर भेंटूँ कंत तुम ना मो पाँव न पंख ॥

भरि भादौं दुपहर अति भारी ॥ कैसे भरौं रयनि अँधियारी ॥
मंदिर सून पिय अंतहि बसा ॥ सेज नाग भइ दहि दहि डसा ॥
रहौं अकेल गहे इक पाटी ॥ नयन पसार मरौं हिय फाटी
चमक बीज घन गरजत त्रासा ॥ बिरह काल होय जीव निरासा

आसमान १ बादल २ भूरी - काली - सफ़ेद ३ सफ़ेद पताका ४ बगुला ५ तलवार ६ बिजुली ७ कामदेव ८ मेढक ९ ख़ाविंद १० ग़रूर ११ तुला हुआ १२ होशियार १३ लोहू १४ ज़मीन १५ दिल १६ राह १७ गहिरी १८ मल्लाह १९ ॥

बरसै मघा झकोर झकोरी | मोर दुइ नयन चुवैं ज्यों ओरी
धन सूखै भर भादौं माहाँ ॥ | अबहुँ न आय नसीं चेसि नाहाँ
पुरबा लाग भूमि जल पूरी ॥ | आक जवास भई हौं झूरी ॥

जल थल भरे अपूर सब धर्ति गगन मिल एक
धन यौबन औगाह महँ वय बूडी पिय टेक

लागा कुँवार नीर जस घटा ॥ | अबहुँ आवरे प्रीतम लुटा ॥
तुहि देखौं पिय पलुहे कँया | उतरा चीत बहुर कर मँया ॥
उये अगस्त हस्ति तन गाजा | तुरी पलान चढ़ै रण राजा ॥
चित्रा मीत मीन घर आवा ॥ | कोकिल पीव पुकारत पावा
स्वाति बूंद चातृक मुख परी | सीप समुद्र मोति बहु भरी ॥
सरवर सँवरि हंस चलि आये | सारस कुरलें खँजन देखाये
भई निराश कास वन फूले | कंत न फिरे बिदेशहि भूले

बिरह हस्ति तन सालै घाय करै नित चूर ॥
आय बचावो बेग पिय गाजहु होय सेंदूर ॥

कातिक शरद चन्द उजियारा | जग शीतल मो बिरहिन जारा
चौदह किरन चन्द परकाशू | जनहु जरै सब धर्ति अकाशू
तन मन सेज करै इक दाहू ॥ | सब कहँ चन्द भयो मोहिं राहू
चहूँ खण्ड लागै अंधियारा ॥ | जो घर नाहीं कंत पियारा ॥
अबहूँ निठुर आव यहि बारा | पर्ब देवारी हो संसारा ॥
संग झुमक गावहिं अंग मोरी | हौं झुरवों बिछुरी जेहि जोरी ॥
जेहि घर पिय सो मनोरथ पूजा | मो कहँ बिरह सौत दुख दूजा

नाम नखत १-४-११-१३-१४-१६ औरत तथा नागमती २ खाविंद ३ ज़मीन ५ आसमान ६ गहिरा ७ पानी ८ लौटके ९ बदन हरा होजाय १० मेहरबानी १२ घोड़ा १५ मछली १७ पपीहा १८ तालाब १९ ममोला २० हाथी २१ छेदना २२ जल्द २३ शेर २४ रौशन २५ जलाना २६ कामना २७ ॥

सखि मानैं त्योहार सब गाय देवारी खेल ॥
हौं का खेलौं कंत बिन रही छार शिर मेल ॥

अगहन दिवस घटा निशि बाढ़ी
दुपहर रयनि जाय किमि गाढ़ी
अब धन दिवस बिरह भा राती
जरौं बिरह जस दीपक बाती
काँपा हिया जनावा सीव ॥
तौ पै जाय होय संग पीव ॥
घर घर चीर रचे सब काहू ॥
मोर रूप सब लैगा नाहू ॥
पलट न बहुरा गा जो बिछोई
अबहूँ फिरै फिरै रंग सोई ॥
बज्रागिन बिरहिन हिय जारा
सुलग सुलग दग्धै भइ छारा
यह दुख दग्ध न जानै कंतू ॥
यौबन जन्म करै भसमन्तू ॥

पिय सो कहो सँदेशरा ये भँवरा ये काग ॥
सो धन बिरहिन जरगई तेहिक धुवाँ हम लाग

पूष जाड़ थर थर तन काँपा ॥
सूर्य्य जुड़ाय लंक दिशि तापा
बिरह बाढ़ भा दारुन सीव ॥
कँप कँप मरौं लेइ हर जीव
कंत कहाँ हो लागो हियरे ॥
पंथ अपार सूझ नहिं नेरे ॥
सूर सँपेती आवै जूड़ी ॥
जानहु सेज हिमंचल बूड़ी
चकई निशि बिछुड़े दिन मिला
हौं दिन रात बिरह कोकिला
रयनि अकेल साथ नहिं सखी
कैसे जिये बिछोही पखी ॥
बिरह सुजान भयो तन जाड़ा ॥
जियत खाय औ मुयेहि न छाँड़ा

रक्त दुरा मासू गिरा हाड़ भये सब शंख ॥
धन सारस होइ रुर मुई आय समेटहिं पंख

लाग्यो माघ परै अति पाला
बिरहा काल भयो जड़ काला
पहल पहल तन रुई जो झाँपौं
अहल अहल अधिकौ हियँ काँपौं

खाक १-९ दिन २ रात ३-४ दिल ५ जाड़ा ६ खाविंद ७ जलना ८ उत्तर तरफ १० टेढ़ा ११ छाती १२ राह १३ तोशक-लहाफ १४ पाला की तरह १५ तथा नागमती १६ बहुत १७ दिल १८ ॥ ३ ॥

आय सूर[1] होय तपरे नाहाँ[2] ॥ तुहि बिन जाड़ न छूटे माहाँ ॥
यही माँह उपजी रस मूलू ॥ तो सुभँवर मोर यौबन फूलू
नयन चुवहिं जस महवट नीरू[3] तेहि बिन आग लाग शिर चीरू[4]
टपटप बूँद परहिं जनु ओला बिरह पवन होय मारै झोला
केहिक शिंगार कौ पहिर पटोरा[5] ग्रीव[6] न हार रहै होय डोरा ॥

तुम बिन कंता धन हरवी[7] तृन तृन बर भा डोल
तेहि पर बिरह जराय के चहै उड़ावा झोल ॥

फागुन पवन झकोरे महा ॥ चौगुन सीव[8] जाय नहिं सहा ॥
तन जस पियर पात भा मोरा ॥ तेहि पर बिरह देइ झक झोरा
तरवर[9] झरहिं झरहिं बन ढाखा भई उपंत[10] फूल फर शाखा
करहिं बनाफ़त[11] कीन्ह हुलासू मोकहँ जग भा दून उदासू ॥
फाग करहिं सब चाँचर जोरी मो तन लाय दीन्ह जस होरी ॥
जो पै पिये जरत अस भावा ॥ जरत मरत मोहिं रोस न आवा
रात दिवस[12] निरभै जिय मोरे ॥ लरयो[13] निहार कंत जो तोरे ॥

यह तन जारौं छार[14] कै कहौं कि पवन उड़ाव
मग[15] तेहि मारग[16] होय परै कंत धरै जहँ पाँव ॥

चैत बसंता होय धमारी ॥ मो लेखे संसार उजारी ॥
पंचम बिरह पन चँसर[17] मारी ॥ रक्त रोय सगरे बन ढारी ॥
बूड़ उठे सब तरवर[18] पाता ॥ भीज मजीठ[19] टेसु बन राता[20] ॥
बौरे अम्ब फरे अब लागी ॥ अबहुँ सँवरि घर आवस भागी
सहस[21] भाव फूली बनपती ॥ मधुकर[22] फिरैं सँवरि मालती ॥
मोकहँ फूल भये सब काँटे दृष्टि हरी जनु लागहिं चाँटे[23] ॥

सूर्य्य १ खाविंद २ पानी ३ कपड़ा ४ जोड़ा ५ गरदन ६ हलकी तिनका से ७ जाड़ा ८ पेड़ ९-११-१८ पैदा १० दिन १२ तथा न्योछावर हों १३ राख १४ शायद १५ राह १६ तीर खींच के १७ लाख १९ लाल २० हज़ार २१ भँवर २२ चींटी २३ ॥

भर यौबन[1] भइ नारंग[2] शाखा ॥ सो अब बिरह तात है चाखा

घरन परेवा[3] आव जस आय परो पिय टूट ॥
नारि पराये हाथ है तुम बिन पाँव न छूट ॥

भा बैसाख तपन अति लागी चोला चीर चंदन भा आगी ॥
सूरज जरत हि मंचल ताका बिरह बिजोग[3] सौंह[4] रथ हाँका
जरत बचासि होय पिय छाहाँ आय बुझाव अँगारहिं माहाँ
तोहि दरशन होय शीतल[5] नारी आय आग सो कर फुलवारी
लागे जरै जरै जस भारू ॥ फिर फिर भूजेसि तज्यो न बारू
सर[7] बर हिया[8] घटत नित जाई ॥ तरक तरक होय होय भर आई
बेहिरत[9] हिया करहु पिय टेका[10] दृष्टि[11] मया कर मिल बहु एका

कमल जो बिकसत[12] मानसर बिन जल गयो सुखाय
अबहुँ बेल फिर पल्हवे जो पिय सींचहिं आय

जेष्ठ जरौं जग भुनहि लुवारा उठहिं बौंडरा परहिं अँगारा ॥
बिरह गाजे[13] हनुमत होय जागा लंका दाह[14] करै तन लागा ॥
चारौं पवन झकोरैं आगी ॥ लंका दाह पलंका लागी ॥
दह भइ श्याम नदी कालिन्दी[15] बिरह की आग कठिन अस मुन्दी
उठै आग औ आवै आँधी ॥ नयन न सूझ मरौं दुख बाँधी
अधजर भई माँस तन सूखा ॥ लाग्यो बिरह काल होय भूखा
माँस खाय अब हाड़हि लागा अबहुँ आव आवत सुनि भागा

गिरि समुद्र शशि[16] मेघ रबि[17] सहि न सके यह आग
मुहमद सती सराही जरै जो अस पिय लाग ॥

तपै लाग अब जेठ असाढ़ी ॥ भइ मोकहँ यहि छाजन[18] गाढ़ी

जवानी १ कबूतर २ भारी ३ सामने ४ ठंढ़ा ५ दरवाज़ा ६ तालाब ७ दिल ८ छाती फटना ९ मदद १० निगाह ११ खिलना १२ बिजुली १३ जलाना १४ यमुना १५ चाँद १६ सूर्य्य १७ छावना १८ ॥ ५ ॥

तृन तृन बर भा झूरों खरी | भा बर्षा दुख आगर जरी ॥
बंधु नाहिं औ खराड न कोई | नाग न आव कुहो कहि रोई
साठ नाठ लग बात को पूछा | बिन जिय फिरै मूज तन छूछा
भई दुहेली टेक बहूनी ॥ | थाभ नाह उठ सके न थूनी ॥
बरषहिं मेह चुवहिं नयनाहा | छपर छपर होई बिन नाहा ॥
कोरो कहाँ ठाठ नव साजा ॥ | तुम बिन कंत न छाजन छाजा

अबहूँ दृष्टि मया कर नाथ निठुर घर आव
मंदिर उजाड होत है नव के आय बसाव ॥

रोय गवाई बारह मासा ॥ | सहस सहस दुख इक इक स्वासा
तिल तिल बरष बरष पर जाई | पहर पहर युग युग न सराई ॥
सौंह आव पिय रूप मुरारी | जासो पाव सुहाग मुनारी ॥
साँझ भई झुर झुर पंथ हेरी | कौन सो घरी करी पिय फेरी
दहि कुइला भइ कंत सनेहा | तोला मास रहा नहिं देहा ॥
रक्त न रहा बिरह तन गिरा ॥ | रती रती होय नयनहिं ढुरा
पाँय लगी जोरै धन हाथा | जोरा नेह जोराये नाथा ॥

बरस दिवस धन रोय के हारपरी चित झूरव
मानुष घर घर बूझ के पूछी निसरी पंखँ ॥

भई पुछार लीन्ह बन बासू ॥ | बैरिन सौत दीन्ह चिलवासू
हौं खरि बान बिरह तन लागा | जो अबहू आवै घर कागा ॥
हारल भई पंथ मैं सेवा ॥ | अब तुहि पठवौं कौन परेवौ
धौरी पाडुक कहि पिय ठाऊँ | जो चित रोखै न दूसर नाऊँ

तिनका के बराबर १ पत्ती २ रुपिया पास नहीं ३ दुबली ४ बेसहारा ५ खाविंद ६ छावनी ७ निगाह ८ मेहरबानी ९ हज़ार १० मालूम होना ११ सामने १२ राह १३ जलना १४ नागमती १५ दिन १६ जानवर परिंद १७-२२ मोर १८ चिल्लाना १९ तिनका २० नाम चिड़या २१-२३-२४-२५ ॥ ✻ ॥

जाय बिवाही पिय कँठ[1] लुवा ॥ करै मिलाव सोई गौर[2] वा ॥
कोंकिल[3] भई पुकारत रही ॥ महर[4] पुकार लीन्ह लै दही ॥
पेड़ तिलोरी[5] औ जल[6] हँसा ॥ हिरदय[7] बैठि बिरह लगन सा

जेहि पंखी के नेर होय कहै बिरह की बात ॥
सोई पंख जर तर[8] वर जाय होय नहिं पात ॥

कुहुक कुहुक जस कोयल रोई ॥ रक्त आँसू घुंगची बन वोई
भइ कर मुखी नयन तन राती ॥ कोसिराव बिरहा दुख ताती[10]
जहँ जहँ ठाढ़ होय बन बासी ॥ तहँ तहँ होइ घुंघचिन्ह की रासी
बूंद बूंद महँ जानौ जीव ॥ गूंजा गूंज करहिं पिय पीव
तेहि दुख भई पलास निपाती ॥ लोहू बूड़ उठी होय राती[11] ॥
राती बिम्ब[12] भये तेहि लोहूँ ॥ परवर पाक फटे हिय[13] गोहूँ
देखौं जहाँ सोइ होय राता ॥ जहँ सो रतन कहै को बाता

ना पावस[14] वह देश रा नहिं हेवंत न बसंत ॥
ना कोंकिल न पपीहरा जेहि सुनि आवें कंत

फिर फिर रोय कोई नहिं डोला ॥ आधी रात बिहंगम[15] बोला ॥
तुइ फिर फिर दाहे[16] सब पाँखी ॥ केहि गुन रयनि[17] न लावेसि आँखी
नागमती केहि कारन[18] रोई ॥ कासों कहूँ जो कंत बिछोई[19]
मन चित हिये न उतरै भोरे ॥ नयन कजल चष[20] रहे न मोरे
कोइ न जाय तेहि सिंहल दीपा ॥ जेहि सेवात कह नयना सीपा
योगी होय निसरा सो नाहूँ[21] ॥ तबहुन कहा सँदेश न काहूँ
नित पूँछौं सब योगी जंगम ॥ कहै न कोइ निज बात बिहंगम

गले लगाया १ तथा मर्द २ नाम चिड़या ३-४-५-६ दिल ७ पेंड़ ८ लाल आँख ९ जली हुई १० लाल ११ कुंदरू १२ छाती १३ बरसात १४ नाम चिड़या १५ जलाना १६ रात १७ वास्ते १८ अलग १९ आंख २० ख़ाविंद २१

चारयो[1] चक्र उजार भये सकल सँदेशा टेक
कहौं बिरह दुख आपन बैठ सुनहु दँड एक

तासौं दुख कहिये हो बीरा | जेहि सुन के लागै पर पीरा ॥
को होय भिम[2] दिन को लै रहा | को सिंहल पहुँचावै चहा ॥
जहाँ सो कंत गये होय योगी | हौं किंगरी भइ झूर बियोगी[3]
वह सुन के पूरी करु भेटा[4] ॥ | हौं भइ भस्म न आय समेटा
कथा जो कहै आय पिय केरी | पाँवर[5] होहुँ जन्म भर चेरी ॥
वह के गुन सवरत भइ माला | अबहुँ न बहुरा उड़गा छाला
बिरह गुरु दुख प्यर के हिया[6] | पवन अधार रहै सो जिया ॥

हाड़ भई झुर किंगरी नसैं भई सब ताँति ।
रोम रोम तन धुन उठै कहौ बिथा तेहि भाँति

पद्मावत सो कह्यो बिहंगम[7] ॥ | कंत लुभाय रहे जेहि संगम
तू घर घरन[8] भई पिउ हरता ॥ | मोतन जप दीन्हीं औ बरता
रावन कनक[9] सो तो कहँ भयो | रावट[10] लंक मोहिं कै कियो ॥
तो कहँ चैन सुख मिलै शरीरा | मो कहँ हिये द्वन्द दुख पीरा ॥
हमहूँ ब्याह तोर संग पीऊ ॥ | आपेहि[11] पाय जान पर जीऊ ॥
अबहूँ कर माया जिव फेरो ॥ | मोहिं जियाव देहु पिय मेरो
मोहिं भोग सो काज न प्यारी | सौंह[12] दृष्टि की चाह न हारी ॥

सौतन होस तू बैरिन मोर कंत जेहिं हाथ ॥
आन मिलाव एक बेर कैसे तोर पाय मोर माथ

रतनसेन की मा सरस्वती ॥ | गोपिचन्द जस मैनावती ॥
अंधरी बूढ़ी सुठ दुख रोवा ॥ | यौबन[13] रतन कहाँ होय खोवा

चारों तरफ़ १ नाम पहेलवान २ दुखी ३ मुलाक़ात कर ४ जूती ५ दिल ६ नाम चिड़या ७ घरवाली ८ सोना ९ राख १० अपना पैर जान के मेरी ज़िन्दगी चाह ११ सूधी निगाह १२ जवानी १३ ॥ ÷ ॥

यौवन[1] अहा लीन्ह सो काढ़ी | भइ बिन[2] टेक करै को ठाढ़ी ॥
बिन यौबन भइ आप पराई | कहाँ सुपूत खंभ होय आई ॥
नयन दृष्टि[3] नहिं दिया बराहीं | घर अँधियार पूत जो नाहीं
कोरी चला श्रवन[4] की ठाउँ ॥ | टेक देह वह टेकों पाउँ ॥
तुम श्रवन होय काँवर सजी | डार लाय सो काहे बजी[5] ॥

श्रवन श्रवन के रुर मुई माता काँवर लाग
तुम बिन पानि न पावे दशरथ[6] लावै आग ॥

लै सुसँदेश बिहंगम[7] चला | उठी आग सगरी सिंहला ॥
बिरह बिजाग[8] बीज को टेगा | धूम[9] सो उठी श्याम[10] भये मेघा
भरिगा गगन[11] लूक तस छूटी ॥ | होय सो नखत गिरहिं भुइँ टूटी
जहँ जहँ भूमि[12] जरी भा रेहू ॥ | बिरह कि दरध[13] भई जनु खेहू[14] ॥
राहु केत जस लंका जरी ॥ | औ उड़ चिनग चाँद महँ परी ॥
जाय बिहंगम[15] समुद्र डफारा[16] | जरे मच्छ पानी भा खारा ॥
दाढ़ी[17] बन बीहड़ जल सीपा | जाय नेर भा सिंहल दीपा ॥

समुद्र तीर इक तरवर[18] जाय बैठ तेहि रूख
जब लग कहि न सँदेशा तब लग प्यास न भूख

रतनसेन बन करत अहेरा[19] ॥ | कीन्ह वही तर बर तरि फेरा
शीतल बृक्ष समुद्र के तीरा ॥ | अति उतंग[20] औ छाँह गँभीरा ॥
तुरी[21] बाँधि के बैठि अकेला ॥ | साथी और करहिं सब केला ॥
देखत फिरै सो तरवर शाखा | लाग सुनै पंखिन की भाखा
पंखिन महँ जो बिहंगम अहा | नागमती जासों दुख कहा ॥

जवानी १ बेसहारे २ निगाह ३ नाम ब्राह्मन जो अंधी अंधा मा-बाप को काँवर में लिये रहता था ४ छोड़ना ५ राजा दशरथ ६ नाम चिड़या ७-१५ जहाँ बिरह की बिजुली वहाँ बिजुली क्या दुशमनी करै ८ धुवाँ ९ काला १० आसमान ११ ज़मीन १२ जलना १३ राख १४ चिल्लाना १६ जलाना १७ पेड़ १८ शिकार १९ ऊँचा २० घोड़ा २१

पूछहि सबैदिहंगम नामा | अहो मीत काहे तुम प्रयामा
कहेसि मीत मासिकदुइ भये | जम्बूदीप तहाँ हम गये ॥

नगर एक हुम देखा गढ़ चितौर वह नाउँ
सो दुख कहूँ कहाँ लगि हम डाढ़े तेहि ठाउँ

योगी होय निसरा सो राजा | सुन नगर जानहु धुन्द बाजा
नागमती है ताकर रानी ॥ | जरै बिरह जस कोयल बानी
अबहुँ लागि जर भइ होयहै छाँरा | कहीं न जाय बिरह की झाँरा
हिया फाट वह जबहीं कुहके | परै आपु सब होय होय लूके
चहूँ खराड छिटकी वह आगी | धरती जरत गगन कहँ लागी
बिरह दवान को जरत बुझावा | चही लाग सो हेरै धावा ॥
हौं पुनि तहाँ सो दाढ़े लागा | तन भा प्रयाम जीव लै भागा

कानुम हुँ सो गर्व के करहु समुद्र महँ केल ॥
मति अन्ह बिरही वपु परहिं दही अगिन जस मेल

सुनि चितौर राजै मन गुना ॥ | बिधि सँदेशु मैं कासो सुना ॥
को नर वैर पर पंरवी बेपा ॥ | नागमती कर कहै सँदेशा
को तुम मीत मन चेत बसेरू ॥ | देवकि दानों पवन परेरू ॥
रुद्र ब्रह्म शिव बाचा तोहीं ॥ | सो निज बात अंत कहु मोहीं
कहो सो नागमती तुइ देखी ॥ | कहेसि बिरह जस मरो बिशेषी
हौं राजा सोई भा योगी ॥ | जेहि कारन वह ऐसो बियोगी
जस तू परेवी हौं दिन भरौं ॥ | चाहौं कबहिं जाय उड़ परौं ॥

पलक आरव तेहि मारग लागी दुनहु रहाहिं ॥
कोउ न सँदेशी आवहिं तेहि क सँदेशा काहिं

नामचिड़या १ दोस्त २ दोमहीना ३ जलना ४ जगह ५ अँधियारा ६ रारव ७ लूक ८ छाती ९ आसमान १० आग ११ गरूर १२ पेड़ १३ महादेवजी १४ दुखी १५ जानवरपरिंद १६ राह १७ ॥ ॥

पूँछहि कहा सँदेश बियोगू ॥ योगी भया न जानहि भोगू ॥
धर्नी संग न संगे पूरे ॥ पानी बूड़ रात दिन झूरे ॥
तेल बैल जस बायें फिरे ॥ परै भँवर महँ सौंह न टरे ॥
तुरी नाउँ दाहिन रथ हाँका बायें फिरै कुम्हार का चाका
तुहि अस नाहिं जो पंख भुलाना उड़ै सो आव जगत महँ जाना
एक दीप का आयों तोरे ॥ सब संसार पाँय तरि मोरे ॥
दहने फिरै सो अस उजियारा जस जग चाँद सूर्य्य औ तारा

मुह मद बायें दिशा तजी एक श्रवन इक आँख
जब ते दाहिन होय मिला बोल पपीहा पाँख

हौं ध्रुव अचल सो दाहिन लावा फिर सुमेरु चितोर गढ़ आवा ॥
देखौं तोरे मँदिर घ मोई ॥ मात तोर आँधर भइ रोई ॥
जस श्रवन बिन अंधी अंधा तस रुर मुई तोहिं चित बंधा ॥
कहेसि मरों को काँवर लेइ पूत नाहिं पानी को देइ ॥
गई प्यास लाग तुहि साथा ॥ पानी देह दशरथ के हाथा
पानी न पिये आग पै चाहा तोहि अस पूत जन्म अस लाहा
भागीरथी होहु कर फेरा ॥ जाय सँवारि मरन की बेरा

तू सपूत मन ताकर अस परदेश न लेहि ॥
अब ताईं मुइ होय ही सुयहिं जाय गत देहि

नागमती दुख बिरह अपारा धर्ती स्वर्ग जरै तेहिं झारा
नगर कोट घर बाहेर सूना ॥ न्योंज होय घर पुरुष बहूना
तू कामरू परा बश टोना ॥ भूला योग छरा तोहि टोना
वह तुहि कारन मर भइ मारा रही नाक होय पवन अधारा
कहुँ बोलहिं लै मो कहँ खाऊ माँस न कोया जो रुच काहू ॥

दुख १ सामने २ घोड़ा ३ तरफ़ ४ कान ५ नाम सितारा ६ पहाड़ ७ नाम माता पिता भक्त ८ गंगा जी ९ परमेश्वर न करे १० ख़ाली ११ बदन १२

बिरह मयूर[1] नागवह नारी ॥ तू मजार[2] कर बेग[3] गुहारी[4] ॥
माँस गिरा माँजर होय परी ॥ योगी अबहुँ पहुँच लै जरी[5] ॥

देख बिरह दुख ताकर मैं सो तजा[6] बन बास
आयों भाग समुद्र महँ तोहन छाँड़े पास

अस पुनि जरा बिरह कर गाँठा मेघ श्याम भये धूम जो उठा
दाढ़ा[7] राहु केतु गा दाढ़ा ॥ सूरज जरा चाँद जर आधा ॥
औ सब नखत तराईं[8] जरीं ॥ टूटहिं लूक धर्ति महँ परीं ॥
जरै सो धर्ती ठावहिं ठाउँ ॥ दहक पलास[10] जरे तेहि दाउँ
बिरह स्वास तस निकसी झारा दहि दहि परबत होहिं अँगारा
भँवर पतंग जरे औ नागा ॥ कोकिल भुजयल औ बन कागा
बन पंखी सब जिव लै उड़े ॥ जल पक्षी जल महँ दुख बुड़े ।

हमहुँ जरत तहँ निकसा समुद बुझायों आय
समुद्र जरा पनि भा खारा धूम रहा जग छाय

राजैं कहा रे स्वर्ग सँदेशी ॥ उतर आव मोहिं मिल परदेशी
पाँय टेक तहिं लावों हियरे[11] ॥ परम सँदेश कहो होय नेरे ॥
कहा बिहंगम[12] जो बन बासी कित क ग्रही ते होहिं उदासी
जेहि तरुतरि[13] तुम आसन कोऊ कोकिल काग बराबर दोऊ
धर्ती महँ बिय चारा परा ॥ हारल[14] जानि भूमि[15] पर हरा ॥
फिरों बियोगी डारहि डारा ॥ करों चले कहँ पंख सँवारा ॥
जहवाँ घरी घट तनित जाहीं ॥ साँझ जीव है दिवस[16] नाहीं ॥

जोलहि फेरे मुक्त[17] है परों न पिंजर माह ॥
जाउँ बेग यल आपने है जेहि बीच निबाह ॥

मोर १ बिल्ली २ जल्द ३-१८ मदद ४ बूटी ५ छोड़ना ६ ढेर ७ जलना ८ छोटे नख ९ ढाख १० दिल ११ नाम चिड़या १२ पेंड़ १३ यहि चिड़या पेंड़ नहीं छोड़ती पानी पीते में भी लकड़ी चोंच में लिये रहिती १४ ज़मीन छोड़ी १५ दिन १६ ननात १७

कहि संदेसु बिहंगम चला ॥ आगे लाय सगरे सिंहला ॥
घड़ी बीत राजा घर आवा ॥ भा अलोप पुनि दृष्टि न आवा
परवी नाउँ न देखा पारू ॥ राजा रोय फिरा के सारू ॥
जस हेरत वह परव हेराना ॥ दिन कहँ महि अस करब पयानू ॥
जोलहि प्रान पिंड इक ठाऊँ ॥ एक बार चितउर गढ़ जाऊँ ॥
आवा भवर मंदिर जहँ केवा ॥ जीव साथ लेगयो परेवा ॥
तन सिंहल मन चितउर बसा ॥ जिव बस भर नागिन जिमि डसा

जेतन नारि हँस पूछी अमी बचन जिमि निंत ॥
रसउतरा बिय चढ़ रहा नावहु चित न मिंत ॥

बरस एक तहँ सिंहल रही ॥ भोग बिलास कीन्ह जस चही
भाउ दास जो सुना संदेसू ॥ सवरि चला मन चितउर देसू
कमल उदासी देखा भँवरा ॥ थिर न रही मालति मन सवरा
योगी अँमन पवन परावा ॥ कित थिर रहै जो चित उचावा
जो जिव काढ़ दे आवन कोई ॥ योगी भँवर न आपन होई ॥
चला कमल मालति हिय घाली ॥ अब कित थिर आछी अलि आली
गन्धर्वसेन आय सुनि बारी ॥ कस जिव भयो उदास तुम्हारा

मैं तुम्हीं जिव लावा दीनयनन महँ बास
जो तुम होहु उदासी यहि का कर कैलासू

रतनसेन बिनवा कर जोरी ॥ अस्तुति योग जीभ ना मोरी
सहँस जीभ जो होहि गुसाईं ॥ की न जाय अस्तुति जहँ ताईं
काँच किरा तुम कंचन कीन्हा ॥ तब भा रतन ज्योति तुम्ह दीन्हा
गंगा जोनि नीर मल नीरू कुलीना ॥ नाम मिले जल होय मलीना ॥

नामचिड़या १ गायब २ निगाह ३ देरवना ४ कूच ५ बटन ६ जगह ७ कमलतथा पद्मावत ८ जानवर परिंद ९ मीठी बात १० क़ायम ११ तथापद्मावत १२ दिल १३ भँवर १४ दरवाज़ा १५ हज़ार १६ सोना १७ चाक साफ़ १८ पानी १९

तस[1] होअहा मलीनी केला | सिला आय तुम भानि[2] रसला
पान समुद्र मिला होय सोती[3] | पाप हरा निरमल भइ ज्योती[4]
तुम सन आवा सिंहल पुरी ॥ | तुमने चढा राज औ कुरी[5] ॥

सात समुद्र तुम राजा सरन पाव कोउ खाट
सबै आय पिरा[6] नावहिं जहाँ तुम्हारा पाँट[7] ॥

औ मोहि[8] बिनय अब करौं गुसाईं | तब लगा कया जीव तब ताईं
आवा आज हमार परेवा[9] ॥ | पाती दीन्ह आन पति देवा ॥
राज काज औ भुइ उपराहीं[10] | पूँजु भाय अस कोऊ नाहीं ॥
आपन आपन करहिं सुलोको[11] | एक कहि मार एक चहि टीका ॥
भई अमावस नरवत[12] हि राजू ॥ | हम कह चन्द चला वह आजू
राज हमार जहाँ चलि आवा ॥ | लिख पढ़ई अब होय पुरावा
कहाँ नेर दिल्ली मुलतानू ॥ | होय है भोर उठै जो भानू ॥

रहहु अमर[13] महि गगन[14] लखाऔ जाल हम आव
पृथी[15] पाह मारा तहाँ नित[16] जहाँ तुम्हारा पाव ॥

राज सभा पुनि उठी सवारी ॥ | अन बिनती रारवी पत भारी
भाइन माझ होय जन फूटी ॥ | घर के भेद लंक अस टूटी ॥
बिरवा लाय न सरवन दीजै ॥ | पावै पान दृष्टि[17] सो कीजै ॥
अन रारवा तुम दीपक लेसी ॥ | पैन रहै पाडुन परदेपूी ॥
जाकर राज जहाँ चलि आवा ॥ | वही देपा पै ताकहँ भावा ॥
हम दोउ नयन घाल के रारवहिं | एसो भारव यहि जीभ न भारवहिं
दिवस[18] देहु सेकुशल सिधावहिं | दीरघ आयु[19] होय पुनि आवहिं ॥

बेरोपूनी १ पाकसाफ़ २ सोता ३ साफ़ ४ इज़्ज़त पूरा बरनही कोई ६ तरह ७ अर्ज़करना ८ बदन ९ क़ासिद १० तुग़लक ११ हुद १२ सूर्य्य १३ हमेशाज़िन्दा १४ ज़मीन-आसमान १५ पिरा १६ हमेशा १७ निगाह १८ दिन क़रारदो १९ बड़ीउमरहो २० ॥ ÷ ॥

सबहिँ बिचारपरा अस भागवने कर साज॥
सिद्ध गरोप्रा मनावहिँ बिधि[1] पुरवे मन काज

बिनय[2] करै पद्मावत बारी॥ हौं पिय कमल सो गोंदने वारी
मोहिँ अस कहाँ सो मालति बेली कदम सेवती चम्पच मेली॥
औ पूंटगार हार जस तागा॥ पुहुप[3] कली अस हिरदय[4] लागा
हौं सुबसंत करौं नित पूजा॥ कुसुम गुलाल सुदरशन गूजा
बकचने[5] बिनवौं रोस बिमोही सुनि बकावत जजाही जूही॥
नागेसर[6] जो मन है तोरी॥ पूजन सके बोल सर मोरी॥
हौं सद बर्ग लीन्ह मैं शरना॥ आगे कर जो कंत तुहि करना

केते नारि समझावै भँवर[7] न काटै बेध॥
कहै मरौं पै चित्तोर यज्ञ करौं अश्वमेध॥

गवनचार पद्मावत सुना॥ उठा धसक जिव औ शिर धुना
गहबर आय नयन भर आंशू छाँड़व यहि सिंहल कैलाशू॥
छाँड़्यौं नैहर चल्यौं बिछोही[8]॥ यह रे दिवस[9] होहू तहँ रोई॥
छाँड़्यौं आपन सखी सहेली॥ दूर गवन तज चल्यौं अकेली
जहाँ न रहन भयो निज चालू होतहि कसन तहाँ भा कालू
नैहर आय काहि सुख देखा॥ जनु होय गयो स्वपन कर लेखा
राखत पार सो पिता निछोहा[10]॥ कित बिवाह के दीन्ह बिछोहा[11]

हिये[12] आय दुख बाजा[13] जिव जानहु गा छेक
मन तेवान के रोवै हर[14] मँडार कर टेक

पुनि पद्मावत सखी बोलाई॥ सुनि के गवन मिलीं सब आई
मिलहु सखी हम तहवाँ जाहीं जहाँ जाय पुनि आवन नाहीं॥

ईश्वर १ अर्ज़ करना २ फूल ३ छाती ४ तारीफ़ सुनि गुस्सा नहीं आता ५ तथा नागमती ६ तथा राजा ७ अलग ८ दिन ९ बेदर्द १० जुदाई ११ दिल १२ पहुँचा १३ ईश्वर का नाम ले ठीक करके १४ ॥ ÷ ॥

सात समुद्र पार वह देशू ॥ कितरे मिलन कित आव संदेशू
अगम[1] पंथ परदेश सिधारी ॥ नजनो कुशल[2] कि बिथा हमारी
पितौने छोह[3] कीन्ह हिय[4] माहाँ तहँ को हम राखै गहि बाहाँ ॥
हम तुम एक मिले संग खेला अंत बिछोह[5] आन गोय[6] मेला
तुम अस हितू संगात पियारा जियत जीव नहिं करौं निरारा[7]

कंत चलाई का करौं आयसु[8] जाय न मेट ॥
पुनि हम मिलहिं किना मिलैं लेहु सहेली भेट

धन[9] रोवत रोईं सब सखी ॥ हम तुम देख आप कहँ झखी
तुम ऐसी जहँ रही न पाहीं ॥ पुनि हम काहि जो आहि पराहीं
आदि[10] पिता जो रहा हमारा वहूँ न यहि दिन हियें बिचारा ।
छोह[12] न कीन्हा ने छोहा[13] ओहूं ॥ का हम दोष[14] लगाइ कगोहूं ॥
मँग[15] गोहूं करहिया[16] चराना ॥ पै सो पिता नाहिये छोहाना[17]
औ हम देखा सखी सरेखे ॥ यहि नैहर पाहुन कर लेखे ॥
तब तेहि पिय नैहर ना चाहा जेहि ससुरार अधिक[18] होय लाहा

चालन कहँ हम अवतरी[19] चलन सिखा तहँ आय
अब सो चलन चलावै को राखै गहि[20] पाय

तुम बारी पिय भोज[21] कराजा ॥ गर्ब[22] क्रोध वोही पै छाजा ॥
सब फल फूल वही की शाखा चहै सो तोड़ै चहै सो राखा ॥
आयसु[23] लहे रहौं नित हाथा ॥ सेवा करहु लाय भुंइ माथा ॥
बरपी पर शिर ऊभ[24] जो कीन्हा पाकर तिन सूखी फर दीन्हा
बंबर[25] बोड़ शीश भुंइ लावा ॥ बड़ फल सुफर वही पै पावा ॥

मुश्किल राह १ दुख सुख का हाल २ बेमेहरी ३ दिल ४ ११ जुदाई ५ गरदन में डाला ६ अलग ७ हुक्म ८ पद्मावत ९ आदम १० मेहरबानी १२ बेदर्दी १३ पाय १४ शायद १५ छाती फटी १६ मेहरबान १७ बहुत फ़ायदा १८ पैदा १९ दैर पकड़ के २० राजा भोज २१ ग़रूर २२ हुक्म २३ बलंद २४ कद्दू २५ शिर २६

आँब जो फरके नवै तराहीं | तब अमृत भा सब उपराहीं ॥
सोइ पियारी पियहिं पिरीती | रहै जो आयमु सेवा जीती ॥

पोथी काढ़ गवन दिन देखै कौने दिन है चाल
दिशा शूल औ वक्र योगिनी सौंहन चलिये काल

अदित शुक्र पश्चिम दिशा राहू | बेफै दक्षिन लंक दिशा दाहू ॥
सोम शनीचर पुरुब न चालू ॥ | मंगर बुद्ध उतर दिशा कालू ॥
आवै श चला चहै जो कोई ॥ | औषधि कहूँ रोग नहिं होई ॥
मंगल चलत मेल मुख धनियाँ | चलै सोम देखै दरपनियाँ ॥
शूकहिं चलत मेल मुख राई | बेफै चलै दक्षिन गुड़ खाई ॥
अदित तँबोल मेल मुख मुंडी | बायबरंग शनीचर खंडी ॥
बुध दधि किये चलहु भोजना | औषधि यहिन आन रेवाजना

अब सुनि चक्र योगिनी ते भुइँ थिर न रहाहिं ॥
तीसो दिन स चन्द्रमा आठो दिशा फिराहिं ॥

बारह उनइस चार सताइस ॥ | योगिन पच्छम दिशा गिनाइस
नौ सोरह चौबिस औ एका ॥ | पूरब दक्षिन कोन नेहि टेका
तीनइ ग्यारह छबिस अठारा ॥ | योगिन दक्षिन दिशा बिचारा
दुइ पचीस सत्रह औ दसा ॥ | दक्षिन पश्चिम कोन बिचबसा
तेइस तीस आठ पन्द्रहा ॥ | योगिन होहि पूर्ब सामहाँ ॥
चौदह बाइस उनइस सात ॥ | योगिन उतर दिशा कहँ जात
बीस अठाइस तेरह पाँच ॥ | उत्तर पश्चिम कोन तहँ बाँच

इकइस औ छह योगिन उतर पुरब के कोन ॥
यह गुन चक्र योगिनी बाँच जो चहै सिधि होन

परेवा नवे पूर्ब परँ भाये ॥ | दुइज दसमी उतर अँदाये ॥

हुक्म १ सामने २ इतवार ३ उत्तर तरफ़ ४ सोमबार ५ ज़रूरत ६ दही ७ क़ायम ८ दिन ९ परेवा और नवीं को जाना मना १० दुइज दसमी उत्तर मना ११

तीज[1] एकादश अगन् मारी ॥ चौथ[2] दुवादश नैऋत बारी ॥
पंचमी[3] तेरस दक्षिन रमेशरी ॥ छठ[4] चौदश पश्चिम परमेशरी
सतमी[5] पून्यो बायब आछें ॥ अठै[6] अमावस इशान लाहें ॥
तिथि नछत्र गुरबार[7] कहीजे ॥ सुदिन साध प्रस्थान धरीजे
सगुन दुधड़ियागिन साधना भद्रा औ दिशाशूल बाचना ॥
बक्र योगिनी गिने जो जाने ॥ परवरजीत लच्छ घर आने ॥

सुखसमाध आनन्द धर कीन्ह पयाना[8] पीव
थरथरात तन काँपे धरक धरक जाय जीव

मेघ[9] सिंह धन पूरब बसी ॥ बृष[10] कन्या मकर यम दिसी ॥
मिथुन[11] तुला औ कुम्भ पछाहां कर्क मीन[12] बिरछीक उतराहां
गवन करे कहँ उगरे[13] कोई ॥ सनमुख सोम[14] लाभ[15] बहु होई ॥
दहिन चन्द्रमा सुख सर बदा बायें चन्द्रायत दुख आपदा ॥
अदित[16] होय उत्तर कहँ कालू ॥ सोम काल बायब नहिं चालू ॥
भूमि[17] काल पच्छम बुधि नैऋता गुरु[18] दक्षिन शुक्र अगनेयता ॥
पूरब काल शनीचर बसे ॥ पीठ दे काल चले सब हँसे ॥

धन नछत्र औ चन्द्रमा औ तारा बल सोय ॥
समय एक दिन गवने लक्ष्मी केतक होय

पहिले चाँद पूर्ब दिश तारा ॥ दूजे बसे इशान बिचारा ॥
तीजे उत्तर सो चौथे बायब ॥ पँचै सो पच्छिम दिशा गिनायब ॥
छठयें नैऋत दक्षिन सतें ॥ बसे जाय अगनेय सो अठें ॥

तिथ ३-११ अगनो मना १ तिथि ४-१२ नैऋत मना २ तिथि ४-१३ दक्षिण बुरा ३ तिथ ६-१४ पच्छम मना ४ तिथि ७-१५ बायब मना ५ तिथ ८-३० ईशान मना ६ दिन अच्छा ७ कूच ८ मेष सिंह धन पूरब अच्छा ९ बृष कन्या मकर उत्तर अच्छा १० मिथुन तुला कुम्भ पच्छम अच्छा ११ कर्क मीन बृश्चिक उत्तर अच्छा १२ निकलना १३ चाँद १४ फ़ायदा १५ इतवार १६ मंगल १७ बीफ़े १८ ॥ ॥

नवें[1] चन्द्र जो पृथवी बासा ॥ | दसयें[2] चन्द्र जो रहै अकासा ॥
ग्यारें[3] चन्द्र पूर्व फिर जाय ॥ | बहु कलेपा मेंदिवस भवाय ॥
अप्पुन[4] भरन[5] रेवती[6] भल्ली ॥ | रगापि[7] रोस्ले पुनर्बस[8] वल्ली
पुष्य[9] जेट्ठा[10] हस्त[11] अनुराधा ॥ | जो सुख चाहै पूजे साधा ॥

तिथ नछत्र औ बार दुक अछ सात[13] खण्ड भाग
आदि अंत बुध सो यह दुख सुख अंक मलाग[14]

परेवा[15] छठ एकादपा नन्दा ॥ | दुइज[16] सत्तमी द्वादपा मन्दा ॥
तीज[17] अष्टमी तेरस जया ॥ | चौथ[18] चतुरदपा नोमी किया ॥
पूरन[19] पूनो दपामी पाँचे ॥ | छठे[20] नन्दे बुध भा नाचे ॥
अतिनेसाह[21] सतनखतसिधि लहिये | दीफे[22] पुष्य अवन पूपि कहिये
भरने[23] रेवती बुध अनुराधा ॥॥ | भई[24] अमावस रोहिनि साधा ॥
राहु चन्द्र भूमि[25] संपति आये ॥ | चन्द्र ग्रहन तब लागसजाये ॥
सुनि[26] रक्त गज अन्ना लीजे ॥ | सिद्धि योग गुरु परवा कीजे ॥

जेहि नक्षत्र होय रबि[27] वही अमावस होय ॥
बीच परेवा जब मिले सूर्य्य ग्रहन तब होय ॥

चलहु चलहु भा पिये[28] कर चालू | घडी न देख लेत जिव[29] कालू ॥
समुद लोक धनै[30] चढी बेवाना ॥ | जो दिन डरै सो आय तुलाना ॥
रोवहिं मात पिता औ भाई ॥ | कोउ न[32] टेक जो कंत चलाई ॥
रोवहिं सब नैहर सिंहला ॥ | लै बजाय के राजा चला ॥

नोमी को चाँद का वास ज़मीन पर १ दिन बीते २ नाम नक्षत्र ३-४-५-६-७-८-९ १०-११-१२ सानो मुल्क १३ अच्वल से आखिर तक खुशी १४ परेवा छठ एकादशी सफ़र करना अच्छा १५ दुइज सत्तमी द्वादशी बुरा है १६ तीज अष्टमी तेरस मौत १७ चौथ चतुरदशमे देरी १८ पूरनमासी पञ्चमी अच्छा १९ खुशी २० दूज नवमी कोई सत नक्षत्र अच्छा २१ नाम नक्षत्र २२-२३-२४ ज़मीन २५ खास का विचार २६ सूर्य्य २७ रत्नसेन २८ मौत २९ पद्मावत ३० पहुँचा ३१ रोकना ३२

तजा[1] राज रावन का गयो ॥ छाँड़ा लंक बिभीषन लियो ॥
फिरी सखी भेंट तज फेरा ॥ अंत कंत सो भयो गुरेरा[2] ॥
कोइ काहू का नाहिं नियाना[3] मया मोह बाँधा उर झाना ॥

कंचन[4] काया नारि[5] की रही न तोला मास ॥
कंत कसौटी घाल के चूरा[6] गढ़ै किहाँस ॥

जो पहुँचाय फिरा सब कोहू चला साथ गुन[7] अवगुन दोऊ
औ संग चला गवन सब साजा वही दई[8] अस पारै राजा ॥
डोली सहस[9] चली संग चेरी ॥ सबै पद्मिनी सिंहल केरी ॥
भल पटोर[10] खर[11] वार सँवारी ॥ लाख चारइक भरी पेटारी ॥
रतन पदारथ[12] माणिक मोती काढ़ भँडार दीन्ह रथ जोती ॥
परखसों रतन पारखहिं[13] कहा इक इक नग सृष्टि[14] बर लहा
सहस[15] पाँति तुरयन की चली औ सौ पाँति हस्ति[16] सिंहली ॥

लिखनी लाग जो लेखा कहे न पारहिं जोर
अर्ब खर्ब औ नील शंख साहस पदम करोर

देख दर्ब राजा गर्बाना[17] ॥ दृष्टि[18] माह कोइ और न आना
जो मैं होव समुद्र के पारा ॥ कोहै मोहिं जगत[19] संसारा ॥
दर्ब गर्ब लोभ बिष मूरी ॥ दत्त[20] न रहे सत्य[21] होदूरी ॥
दत्त सत्य पै दोनों भाई ॥ दत्त न रहै सत्य पुनि जाई ॥
जहाँ लोभ तहँ पाप सँघाती ॥ संचै मरै आन की थाती ॥
सिद्ध[23] दर्ब आग के थापा ॥ कोई जरा जार कोइ तापा ॥
काहू चाँद काहु भा राहू ॥ काहू अमृत बिष भा काहू ॥

छोड़ना १ मुलाक़ात २ आख़िर ३ सोने की तरह बदन ४ पद्मावत ५ नाम ज़ेवर ६ पाप और पुन्य ७ ईश्वर पार लगावै ८ हज़ार डोली लौंडी ९ कपड़ा १० छाती ११ हीराज वाहिर १२ जौहरी १३ सारी दुनियाँ की क़ीमत १४ हज़ार क़तार घोड़ा १५ हाथी १६ ग़रूर किया १७ निगाह १८ बराबर १९ देना २० सचाई २१ जोड़ना २२ साधू २३ ॥

तस भूला मन राजा लोभ पाप अन्ध[1] कूप ॥
आय समुद्र ठाढ़ भा होय दानी के रूप ॥

बोहित[2] भरी चला लै रानी ॥ दान माँग सत देखी दानी[3] ॥
लोभ न कीजे दीजे दानू ॥ दानहि पुन्य होय कल्यानू[4] ॥
दर्ब दान देई बिधि[5] कहा ॥ दान मोक्ष[6] होय दुख नहिं रहा
दान आहि सब द्रव्य कि जूरू[7] ॥ दान लाभ होय बाचै मूरू[8] ॥
दान करै रक्षा मझ[9] नीरा ॥ दान गहे लै लावै तीरा ॥
दान करन[10] दै दुइ जग तरा ॥ रावन सँचा[11] अगिन महँ जरा ॥
दान मेरु[12] बड़ लाग अकारा[13] । सैत[14] कुबेर बूड़ मझ धारा ॥

चालिस अंश द्रव्य जहँ एक अंश तहँ मोर ॥
नाहिं तजरै कि बूड़ै की निपूँ[15] मूसहिं चोर ॥

सुनि सुदान राजै रिस मानी ॥ कै बोरायस बौरे दानी ॥
सोई पुरुष द्रव्य जो सैतें ॥ द्रव्य हुते सुनि बातैं ऐतें ॥
द्रव्य ते गर्ब[16] करै जो चाहा ॥ द्रव्य ते धर्ती स्वर्ग निबाहा ॥
द्रव्य ते हाथ आव कैलाशू ॥ द्रव्य ते अप्सर छाँड़ न पासू ॥
द्रव्य ते निरगुन होगुन वंता ॥ द्रव्य ते कुब्ज[17] रूप रूप वंता ॥
द्रव्य रहै भुइँ दिपै ललारा[18] ॥ असमन द्रव्य हिये को पारा ॥
द्रव्य त धर्म कर्म औ राजा ॥ द्रव्य ते सुद्धि बुद्धि बल काजा

कहा समुद्र रे लोभी बड़ी द्रव्य नहिं झाँप ॥
भयो न काहू आपन मूँद पिटारी साँप

आधे समुद्र आय सो नाहीं ॥ उठी बायु आँधी उपराहीं ॥
लहरैं उठीं समुद्र उलथाना[19] भूला पंथ[20] स्वर्ग नियराना ॥

अन्धा कुवाँ १ नाव २ दान देने वाला ३ भलाई ४ ईश्वर ५ नजात ६ न्योछावर ७ असिल जमा ८ पानी में बचावै ९ नाम राजा १० जोड़ना ११ नाम पहाड़ १२ आसमान १३ जमा करना १४ रात १५ गरूर १६ बदसूरत १७ माथा १८ उलटना १९ राह २०

अदिन[1] आय जो पहुँचै काहू | पहन[2] उड़ाय बहै सो बाऊ ॥
बोहित[3] भई लंक[4] दिश ताकी | मारग[5] छाँड़ कुमारग हाँकी ॥
जो लै भार[6] निबाह न पारा ॥ | सोका गर्ब[7] करै कन्धारा[8] ॥
द्रव्य भार संग काहि न उठा | जैसैं ताही[9] सो रूठा ॥
गहि परवान[10] लै परवन ऊड़ा | मोर मोर जैं कीन्ह सु बूड़ा ॥

द्रव्य जो जानहिं अपना भूलहिं गर्ब मनाहिं
जोरे उठाय न लै सकहिं बूड़ चलहिं जल माहिं

खेवट[11] एक बिभीषन केरा ॥ | आव मच्छ कर करत अहेरा[12]
लंका कर अति राक्षस कारा | आवै चला होय अंधियारा ॥
पाँच मूड़ दश बाँही ताही ॥ | धड़ भा पूयाम[13] लंक जब दाही[14]
धुवाँ उठै मुख स्वास[15] सँघाता | निकसै आग कहै जो बाता ॥
फेकरे मूड़ चँवर जनु लाये ॥ | निकस दाँत मुख बाहेर आये
देह रीछ की रीछ डेराई ॥ | देखत दृष्टि[16] धाय जनु खाई
राते[17] नयन निडर जो आवा | देख भयावन सब डर खावा

धती पाय स्वर्ग शिर जानु सहस्रा[18] बाहु ॥
चाँद सूर्य्य औ नखत महँ अस देखै जनु राहु

बोहित[19] बही न मानहिं खेवा | राक्षस देख हँसा जनु देवा ॥
बहुते दिनहिं बार[20] भइ दूजी | अजगर केर आय भुख[21] पूजी ॥
यहि पद्मिनी बिभीषन पावा | जानहु आज अयोध्या छावा
जानहु रावन पाई सीता ॥ | लंका बसी राम रन जीता ॥
मच्छ देख जैसे बक[22] आवा ॥ | टोय टोय भुइँ पाँव उठावा

बुरे दिन १ पत्थर २-१० नाव ३-१९ लंका की तरफ ४ राह ५ जबतक हो सका ६ ग़रूर ७ मल्लाह ८-११ जोड़ना ९ शिकार १२ काला १३ जलना १४ स्वास के साथ १५ निगाह १६ लाल आँख १७ नाम राजा जिसके हज़ार हाथ थे १८ खुश हुवा २० पेट भरा २१ बगुला २२

आय नेर होय कीन्ह जोहारू ॥ पूँछा क्षेम[1] कुशल ब्योहारू ॥
जो विप्रवास[2] घात का देवा ॥ बड़ बिप्रवास[3] करै की सेवा ॥

कहां मीत तुम भूलेहु औ जायहु कहि घाट
हौं तुम्हार अस सेवक लाय देउँ तुहिं बाट[4] ॥

गाढ़े[5] परे जिव बावर होई ॥ जो भल बात कहै भल सोई ॥
राजैं राक्षस नेर बोलावा ॥ आगे कीन्ह पंथ[6] जनु पावा ॥
बहु बसाव[7] राक्षस कहँ बोला पैग टेक[8] भूमि[9] सब डोला ॥
तू खेवक[10] खेवक उपराहीं ॥ बोहित[11] तीर लाव गहि बाहीं
तुहिते तीर घाट जो पाऊँ ॥ नौग्रही[12] तोड़र पहिराऊँ ॥
कुण्डल श्रवन[13] देउँ नग लाई सहरा की सोंपौं महराई ॥
तस राक्षस तोर पूरौं आशा ॥ रक्षसाइन की रहै न बासा ॥

राजैं बीड़ा दीन्हों नहिं जानो बिप्रवास[14] ॥
इक अपनी भुख कारन[15] होय मच्छ कर दास

राक्षस कहा गुसाँइ बिनाती ॥ भल सेवक राक्षस की जाती ॥
छीना लंक देही[16] श्री रामा ॥ सेवन छाड़ देह भइ श्यामा[17]
अबहूँ सेवक रे संग लागे ॥ मानुष भूल होहिं नहिं आगे
सेतबन्ध राघव जहँ बाधा ॥ तेहिते चढ़ो भार[18] ले काँधा ॥
पै अब तुरत दान कुछ पाऊँ तुरत गही वह बाँध चढ़ाऊँ ॥
तुरत जो दान पान हँस दीजे ॥ थोरा दान बहुत पुनि कीजे ॥
सेवक[19] राय जो दीजे दानू ॥ दान नाहिं सेवा[20] बर मानू ॥

दै बाचा[21] सत ना रहा हत निरमल जेहि रूप ॥
आँधी बहुत उड़ाय के मार गयो अन्ध कूप

ख़ैरियत १ दग़ा बाज़ २ यक़ीन ३ राह ४ ६ दुख ५ ख़ुशी ७ खड़ाहुवा ८ जमीन ९ मल्लाह १० नाव ११ नाम ज़ेवर १२ कान १३ एतबार १४ भूख वास्ते १५ जलाना १६ काला १७ बोझ लैजा सक्ता १८ ख़िदमत १९ ख़िदमत का हक़ २० क़ौल २१

जहाँ समुद्र मँझधार भँडारू[1] | फिरै पानि पाताल दुआरू ॥
फिर फिर पानि वही ठाँव मरै | फेर न निकसै जो तह परै ॥
वही ठाँव महिरावन पुरी ॥ | हल कातर[2] यम कातर चुरी ॥
वही ठाँव महिरावन मारा | परे हाड़ जनु पड़े पहारा ॥
परी रीड़ जेहि ताकर पीठी ॥ | सेत[3] बन्ध अस आवै दीठी ॥
राक्षस आन तहाँ के जुड़े ॥ | बोहित[4] भँवर चक्र महँ पड़े
फिरे लाग बोहित जस आई | जस कुम्हार घर चाक फिराई

राजैं कहा रे राक्षस जान बूझ बौरास ॥
सेत बन्ध यह देखै कस न तहाँ लै जास ॥

सुनि बावर राक्षस तब हँसा | जानहु स्वर्ग[5] टूट भुइँ गसा ॥
को बावर तुम बौरहि देखा ॥ | जो बावर भुख लाग सरेखा ॥
बावर तुम जो भूख[6] कहँ आनी | तोहि न समझी पंथ[7] भुलानी
पंख जो बावर रहि धर माटी ॥ | जीभ चढ़ाय भखै सब चाँटी[8] ॥
महिरावन की रीर जो पड़ी ॥ | कहो सो सेत बन्धु बुधि हरी
यहि सो आहि महिरावन पुरी | जहवाँ स्वर्ग नेर घर दुरी ॥
अब पछताब द्रव्य जस जोरा | करहु स्वर्ग पर हाथ मरोरा

जोहि जियत महिरावन लेत जगत कर भार
जो मर हाड़ न लैगा अस होय परा पहार

बोहित[1] भवहि भवै सब पानी | नाचै राक्षस आप तुलानी[10] ॥
बूड़हिं हस्ति[11] घोर मानवा[12] | चहुँ दिशा आय जुरे मँस खवा
ततखन[13] राज पंख[14] इक आवा | शिखरी[15] टूट जस डहन[16] डुलावा
परा दृष्टि[17] वह राक्षस खोटा | ताकेसि जैसु हस्ति बड़ मोटा

बीचो बीच १ यमफाँस २ पुल ३ नाव ४-६ आसमान ५ भूखे के पास आये ६ राह ७ चींटी ८ उन्मेद पूरी हुई १० हाथी ११-१२ आदमी १२ तुरंत १३ सीमुर्ग़ १४ पहाड़ १५ बाज़ू १६ निगाह १७ ॥ ४ ॥

आय वही राक्षस परटूटा ॥ गहि ले उड़ा भँवर जल छूटा
बोहित टूक टूक सब भई ॥ ऐसो न जाना वह कहँ गई ॥
भये राजा रानी दुइ पाटा ॥ दोनों बहे चले दुइ बाटा ॥

काया जीव मिलाय के मार कियो दुइ खंड
तन रोवत धर्ती चला जीव चला ब्रह्मंड

मुरछ परी पद्मावत रानी ॥ कहँ जिव कहँ पिव ऐस न जानी
जानु चित्र मूरति गहि लाई पाटा परी बही तस जाई ॥
जन्म न पवन सही सुकवारा तेहि सो परा दुख समुद्र अपारा
लक्ष्मी माय समुद्र की बेटी ताकहँ लच्छ होय जे भेटी
खेलत रही सहेली सेती ॥ पाटा जाय लाग तेहि रेती ॥
कहेसि सहेली देखो पाटा मूरति आय लागि बहि घाटा
जो देखहिं त्रिया है स्वासा फूल मुवा पै मुई न बासा ॥

रंग जो राती प्रेम की जानहु बीर बहूट ॥
आय बही दधि समुद्र मैं पै रंग गयो न छूट ॥

लक्ष्मी लक्षण बतीसों लखी कहेसि न मरी सँभारहु सखी ॥
कागद पतिरी जैसो शरीरा पवन उड़ाय परी मँझ नीरा ॥
लहर झकोर उड़हिं जल भीजा तौहू रूप रंग नहिं छीजा ॥
आप शीश लै बैठी कोरा ॥ पवन डुलावे सखि चहुँ ओरा
पार की समुझ परा तन जीउ मागेसि पानि बोल कै पीउ ॥
फनि पियाय सखी मुख धोई पद्मिन जान कमल संग कोई
तब लक्ष्मी दुख पूँछमि लोही त्रिया समुझ बात कहु मोही

देख रूप तोर आगर लाग रहा चित मोर ॥
केहि नगरी की नागर काहि नाउँ धन तोर

पकड़ना १ नाव २ राह ३ बदन ४ आसमान ५ तसवीर ६ दौलत ७ मुरझाना ८ लाल ९ सब गुन जानने वाली १० पानी में ११ नुकसान १२ शिर १३ गोद १४ कोकावेली १५

नयन पसार चेत धन[1] चेती ॥ देखी काह समुद्र की रेती ॥
आपन कोउ न देखेसि तहाँ ॥ पूँछेसि को तुम कोहम कहाँ ॥
अहै जो सखी कमल संग कोई[2] सो नाहीं मोहिं कहाँ बिछोई[3] ॥
कहाँ जगत मन पिया पियारा जस सुमेरु[4] बिधि[5] गरू सँवारा
ताकर गरबी प्रीति अपारा ॥ चढ़े हियें जनु चढ़े पहारा ॥
रहै न गरबी प्रीति सो झाँपी कैसे जियों भार दुख चाँपी
कमल करी की जोरी नाहाँ[7] दीन्ह बहाय उदधि[8] जल माँहा

आवा पवन बिछोह[9] का पाति परा बिकरार
तरवर[10] तजी जो चूर कै लागै केहि की डार ॥

कहनि न जानहिं हम तोर पीउ हम तू पाइ रहा नहिं जीउ ॥
पाटा परी आय तू बही ॥ ऐसो न जानहिं धौं कह अही
तब सुधि पद्मावत मन भई सँवरि बिछोह[11] मुरछ मर गई ॥
नयनहिं रक्त सुराही ढारा ॥ जनहु रक्त[12] शिर काट पयारा
खनहिं[13] चेत खन हो बिकरारा भा चन्दन बन्दन सब छारा[14]
बावर होय सो परी पुनि पाटा देहु बहाय कंत जेहि घाटा ॥
को मोहिं आग देय रचहोरी जियत न बिछुड़ै सारस जोरी

जेहि सर मारबि छोगा देहु वही शिर आग
लोग कहैं यहि सर[15] चढ़ी हौं सो जरौं पिय लाग

काया[16] उदधि[17] चितौं पिय पाहाँ देखौं रतन सो हिरदय[18] माहाँ ॥
जनहु आहि दरपन मम हिया तेहि महँ बैठि देखावे पिया ॥
नयन[19] नीर भीजत मुठ दूरी ॥ अब तेहि लाग मरौं मुठ झूरी
पिय हिरदय महँ भेंट[20] न होई कोरे मिलाव कहौं केहि रोई

पद्मावत १ कोका बेली २ अलग ३-९-११ पहाड़ ४ ईश्वर ५ दिल ६-१२ ख़ाविंद ७ समुद्र ८ पेंड़ १० जानवर ज़बह कर छोड़ दिया १२ कभी १३ राख १४ चिता १५ बदन १६ समुद्र १७ आँसू १९ मुलाक़ात २० ॥ २ ॥

स्वास पास नित आवे जाई ॥ सोन संदेश कहै मोहिं आई
नयन कौड़िया भइ मंडराहीं थिरक सार पै आवहि नाहीं ॥
मन भँवरा वह कमल बसेरी होय मरजिया न आये हेरी ॥

साथी आथ नियाथ जो सके न साथ निबाह
जो जिय जारे पिय मिले भेंट रे जिय जर जाहि

सती होय कहँ शीश उघारी ॥ घन महँ बीज घाव जिमि मारी
सेंदुर जरै आग जनु लाई ॥ शिर की आग सँभार न जाई
छूट माँग सब मोति परोई बारहिं बार गिरहिं जनु रोई ॥
टूटहिं मोति बिछोहि के भरे श्रावन बूंद गिरहिं जनु झरे ॥
फेर फेर कर यौवन करा ॥ जानहु कनक अगिन महँ जरा
अगिन माँग पै देइ न कोई ॥ पाहुन पवन पान सम होई ॥
खीन लंक टूटी दुख भरी ॥ बिन रावन केहि बैरे होय खरी

रोवत पंख बिमोही जनु कोकिला अरंभ ॥
जाकर कनक लुटा सो बिछुड़ी प्रीतम खंभ

लक्ष्मी लाग बुझावे जीव ॥ नामर बहिन मिलहि तोर पीव
पियो पानि होव पवन अधारी जस हौं तुहू समुद्र की बारी ॥
मैं तोहिं लाग लेत षटवाटू ॥ खोजब पिते जहाँ लग घाटू
हौं जेहि मिलौं ताहि बड़ भागू राज पाट औ देउँ सुहागू ॥
कहि बुझाय के मंदिर सिधारी भइ ज्योनार न जेवै नारी ॥
जोहेर कंत कर होय बिछोवा कातेहि नीद भूख सुख सोवा
जीव हमार पीउ ले आहा ॥ दरशन देव लेब चित चाहा ॥

जो माल के साथी थे १ शिर २ बादल ३ बिजुली ४ बिरह ५ जवानी ६ सोना ७ महिमान ८ हवा-पानी देते हैं ९ पतली कमर १० तथा राजा रतनसेन ११ ताक़त १२ मोह जाना १३ बेक़रार १४ सोना १५ लड़की १६ बाप १७ पद्मावत १८ जुदाई १९ ॥ ✻ ॥

लक्ष्मी जाय समुद्र पहँ ये बातैं सब चाल ॥
कहा समुद्र अहे घट मोरे आन मिलावौं काल

राजा जाय तहाँ बहि लागा । जहाँ न कोइ सँदेशी कागा ॥
तहाँ एक पर[1] बत हा धूँगा ॥ जहवाँ सब कपूर औ मूँगा ॥
तहँ चढ़ हेरा[2] कोइ न साथा । द्रव्य समेट कुछ लाग न हाथा
रहा जो रावन केर बसेरा[3] ॥ गाहराय कोइ मिले न हेरा ॥
डाढ़ मार के राजा रोवा ॥ कैंचितौर गढ़ राज बिछोवा[4]
कहाँ मोर सब द्रव्य भँडारू । कहाँ मोर सब कटक[5] कँधारू
कहाँ तुरंग[6] मोर बाँकावली । कहाँ मोर हस्ति[7] सिंहली ॥

कहँ रानी पद्मावत जीव बसे जेहि माहिं ॥
मोर मोर के खोयौं भूल गर्ब[8] औ गाहिं ॥

चंपा भँवरा गुरु जो मिलावा ॥ माँगे राजा बेग[9] न पावा ॥
पद्मिन चाह जहाँ सुन पाऊँ । परौं आग औ पानि धसाऊँ
ढूढौं पर्वत मेरु[10] पहारा ॥ चढौं स्वर्ग[11] औ परौं पतारा ॥
कहाँ सो गुरु पाऊँ उपदेशी[12] । अगम[13] पंथ कर होय सँदेशी
पर्यौ आय यह समुद्र अथाहा । जहाँ न वार न पार न थाहा ॥
सीता हरन राम संग्रामा ॥ हनुमत मिला जिता तब रामा
मोहि न कोइ बिनवौं[14] केहि रोई । को सहाय उपदेशिक होई ॥

भँवर जो पावै कमल कहँ मन अरित[15] बहु केल
आय परा कोइ हस्ति[16] तहँ चूरकिये सो वेल ॥

कासौं पुकारौं का पहँ जाऊँ ॥ गाढ़े मीत[17] होय तेहि ठाऊँ[18] ॥
को यह समुद्र मथे बल बाढ़ा । को मथ रतन पदारथ काढ़ा ॥

ऊँचा पहाड़ १ देखना २ मकान ३ अलग ४ फ़ौज भारी ५ घोड़ा ६ हाथी ७ ग़रूर गहिरा ८ जल्द ९ बीहड़ १० आसमान ११ राह बताने वाला १२ मुश्किल राह १३ मिन्नत १४ दुख १५ पियारा दोस्त १७ जगह १८

कहाँ सो ब्रह्मा विष्णु महेशू ॥ कहाँ सुमेरु कहाँ वह शेषू ॥
को अस साज देइ मोहिं आनी बासुक दाम सुमेरु मथानी ॥
कोदधि समुद्र मथै जस मथा करनी सार न कहिये कथा ॥
जौलहि मथ न कोइ दै जीव ॥ सूधी अँगुरिन न निकसै घीव ॥
लै नग मोर समुद्र भा बटा ॥ गाढ परै तौ लै परगटा ॥

लील रहा अब ढील होय पेट पदारथ मेल
कोउ जियार करै जग झाँपा चन्द उघेल

एगुसाइँ तू सिरजन हारू ॥ तुइ शिर जायहि समुद्र अपारू
तुइ अस गगन अन्तरिक्ष राखा जहाँ न टेक न थूनि न खाँभा ॥
तुइ जल ऊपर धर्ती राखी ॥ जगत भार लै भार न थाकी ॥
चाँद सूर्य्य औ नखतहिं पाती तोरे डर धावहिं दिन राती ॥
पानी पवन आग औ माटी सबकी पीठ तोरहैं साँटी ॥
सोइ मूरुख औ बावर अन्धा तोहिं छाड़ चित औरहि बन्धा
घट घट जगत तोरहै दीठी ॥ हौं अन्धा जेहि सूझ न पीठी ॥

पवन हिये भा पानी पानि हिये भइ आग ॥
आग हिये भइ माटी गोरख धन्धे लाग ॥

तुइँ जिव तन मिल बसदै आऊ तुही बिछोवँस करेसि मिलाऊ
चौदह भवन सो तोरे हाथा ॥ जहँ लग बिछुड़ी आवइ कसाथा
सब कर मर्म भेद तोहि पाहाँ रोम जमावसि टूटी जाहाँ ॥
जानेसि सबै अवस्था मोरी ॥ जस बिछुड़ी सारस की जोरी
एक मुई रुर मुई सो दूजी ॥ रहा बजाय आयु अब पूजी ॥

महादेव जी १ पहाड़ २५ नाम राजा सापों का ३ रस्सी ४ बेडर ६ लाल जवाहिर ७ ईश्वर ८ पैदा करने वाला ९ आसमान १० बीचौ बीच में लटका हुवा ११ सहारा १२ कोड़ा १३ निगाह १४ हवा १५ दिल १६ जुदाई १७ सात परदा आसमान सात परदा ज़मीन १८ भेद १९ हाल २० उमर तमाम २१ ॥ + ॥

झूरत तपत दरध[1] का मरों ॥ कलपों[2] माथ बेग[3] निसतरों[4] ॥
मरों सो ले पद्मावत नाऊँ ॥ तुइ कर्तार[5] करेसि इक ठाऊ

दुख तो प्रीतम देखिये सुख नहिं सोवे कोय ॥
यही ठाँउ[6] तन डर पै मिलन बिछोवा[7] होय ॥

कहि के उठा समुद्र महँ आवा ॥ काढ़ि कटार ग्रीव[8] लै लावा ॥
कहा समुद्र पाप अब घटा ॥ ब्राह्मन रूप आय परगटा[9] ॥
तिलक दुवादश मस्तक दीन्हे हाथ कनक[10] बैशाखी लीन्हे
मुद्रा[11] श्रवन जनेऊ काँधे ॥ कनक पत्र[12] धोती तरि बाँधे
पावर[13] कनक जड़ाऊ पाऊँ ॥ दीन्ह अशीश आय तेहि ठाऊँ
कहो कुँवर मोसें सत बाता काहे लाग करेसि अपघाता
परेहेसि[15] मरेसि कि कौने लाजा आपन जिव देइस केहि काजा

जन कटार गर लावरि समझ देख मन आप
सकत जीव जो काढ़ेसि महा दोष[16] औ पाप ॥

को तुम उतर[17] देइ हो पाँड़े ॥ सो बोलै जाकर[18] जिव भाँड़े ॥
जम्बूदीप केर हौं राजा ॥ सोमैं कीन्ह जो करत न छाजा[19]
सिंहल दीप राज घर बारी ॥ सोमैं जाय बिवाही नारी ॥
लख बोहित[20] दायज तें भरी नग अमोल औ सब निरमरी[21]
रतन पदारथ माणिक मोती हती न खाँगी सम्पति[22] ओती
बहल घोड़ हस्ती[23] सिंहली ॥ औ संग कुँवर लाख दुइ बली
तेहि गोहन[24] सिंहल पद्मिनी इक सो एक चाह रूप मनी

पद्मावत जग रूप मन कहँ लग कहूँ उहेल ॥
ते समुद्र महँ खोयों हौं का जियों अकेल ॥

जलाना १ शिर कटाना २ जल्द ३ नजात ४ ईश्वर ५ जगह ६ जुदाई ७ गरदन ८ ज़ाहिर ९ सोने की लाठी १० कान में बाली ११ सोने की पटरी १२ खड़ाऊँ १३ खुद कुशी १४ निन्दा सेहँसी १५ पाप १६ जवाब १७ बदन में जान १८ सज़ावार १९ नाव २० साफ़ २१ दौलत २२ हाथी

हँसा समुद्र होय उठा अजूरा[1] ॥ जग जो बूड़ सब कहि कहि मोरा
तोर होय तोहि परै[2] न बेरा ॥ बूझ बिचार तुहीं कहु केरा ॥
हाथ मरोर धुनै सिर माँखी पै तोहि हिये[3] न उघरे आँखी
बहुतें आय गये सिर मारा ॥ हाथ न रहा झूठ संसारा ॥
जो पै जगत[4] होत थिर[5] माया सैंतत[7] सिद्धि न पावत राया[8]
सिद्धि द्रव्य न सैंता गाड़ा ॥ देखा भार चूव कै छाड़ा ॥
पानी की पानी महँ गई ॥ तुइ जो जिया कुशल[9] सब भई

जाकर दीन्ह जीव औ काया[10] लेहि चाह जब चाव
धन लक्ष्मी सब ताकर लिये तो का पछताव

अन[10] पाड़े पर कहि काहानी[12] जो पाऊँ पद्मावत रानी ॥
तप[13] के पावा मिल के फूला ॥ पुनि तेहि खोइ सोई पंथ[14] भूला
पुरुष न आपन नारि सराहा[15] मुये गये[16] सँवरा पै चाहा ॥
कहँ अस नारि जगत उपराहीं कहँ अस जीव मिलन सुख छाहीं
कहँ अस रहस भोग अब करना ऐसे जिये चाहि भल मरना ॥
जहँ अस परी समुद्र नगँ[17] दिया तेहि किम जिया चहै मरजिया
जस ये समुद्र दीन्ह दुख मोका देहत्या झगरो शिव[18] लोका

का मैं यहि क नसावा का मैं सँवरा दाँव ॥
जाय स्वर्ग[19] पर होय है यहि कर मोर नियाव

जो तुमुवा कित रोवस खरा ना मुर[20] मरै न रोवै मरा ॥
जो मर भा औ छाँड़ेसि काया[21] बहुर[22] न करै मरन की दाया ॥
जो मर भयो न बूड़ै नीरा[23] ॥ बहत जाय लागे पै तीरा[24] ॥

रोशनी १ तेरे पास रहिती २ दिल ३ दुनियाँ ४ क़ायम ५ दौलत ६ फ़क़ीर जमा न कर ता ७ राजा ८ खैरियत ९ बदन १०-२१ ऐ ब्राह्मन ११ नुक़सान १२ मेहनत से १३ रन्ह १४ नारीफ़ १५ मरन पीछे १६ जवाहिर चिराग की तरह रोशन १७ ईश्वर के सामने १८ आसमान १९ हिलना २० फिर २२ पानी २३ किनारा २४ ॥ +

तुहौं एक मैं बावर भेटा ॥ जैस राम दशरथ कर बेटा ॥
वहूं नारि कर पड़ा बिछोवा ॥ वही समुद्र महँ फिर फिर रोवा ॥
पुनि जो राम रवाई भा मरा ॥ तब एकांत भयो मिल तरा ॥
तस मर होहु मूंद अब आंखी ॥ लावों तीर टेक बैशाखी ॥

बावर अन्ध प्रेम का लुब्धा सुनत वही भा बाट
निमिष एक महँ लेगा पद्मावत जेहि घाट

पद्मावत कहँ दुख तस बीता जस अशोक बिरवा तरि सीता
कनक लता दुइ नारंग भरी ॥ तेहि कभार उठ सकै नहिं खरी
तेहि पर अलक भुअंगिन डसा शिर पर चढ़ हिये पर गसा ॥
रहि मरनाल टेक दुख दाढ़ी ॥ आधी कमल भई शशि आधी
नलिन खराड़ दुइ तस करहाऊँ ॥ रोमावली बिछूक कहाऊँ ॥
रही टूट जिमि कंचन तागू ॥ कोपिय मिलवे देइ सुहागू ॥
पान न खावै करै उपासू ॥ फूल सूख तन रही गवासू ॥

गगन धर्ति जल बुड़ गये बूड़त होय निसास ॥
पिय पिय चातृक ज्यों ररी मरै सेवात पियास ॥

लक्ष्मी चंचल नारि परेवा ॥ जेहि सत होय छरै कै सेवा ॥
रतनसेन आवै जेहि बाटा ॥ अगम न जाय बैठ तेहि घाटा
और भई पद्मावत रूपा ॥ कीन्हेसि छांह जरै जेहि धूपा ॥
लख सो कमल भंवर होय धावा स्वांस लीन्ह वह बास न पावा ॥
निरखत आय लक्ष्मी दीठी ॥ रतनसेन तब दीन्हीं पीठी ॥
जो भल होत लक्ष्मी नारी ॥ तज महेश कित होत भिखारी

मुलाकात १ जुदाई २ बहुत कोशिश किया ३ किनारा ४ लाठी पकड़ ५ मस्त ६ पल ७ सोने की डाली तथा छाती ८ दाल नागिन की तरह ९ छाती १० कमर पकड़ के ११ चांद १२ कमल १३ छाती के बाल १४ सोना १५ आसमान-ज़मीन १६ पपीहा १७ सच्चे की छतती १८ राह १९ पहिले २० देखना २१ देखा २२ महादेवजी २३ ॥ + ॥

पुनि धन[1] फिर आगे होय रोई | पुरुष पीठ कस दीन्ह निछोई[2]

हौं रानी पद्मावत रतन सेन तुइं पीउ ॥
आय समुद्र महँ छाँड़े अब रोय देत मैं जीव ॥

मैं हौं सोई भँवर औ भोजू[3] ॥ | लेत फिरौं मालति कर खोजू[4] ॥
मालति नारि भँवर अस पीउ | कहँ वह बास रहै थिर[5] जीव ॥
का तुइं नारि करेसि अस रोई ॥ | फूल सोई पै बास न होई ॥
भँवर जो सब फूलन कर फेरा | बास न लेइ मालतिहि हेरा[6] ॥
जहाँ पाव मालति कर बासू ॥ | वर्ती[7] जिव दै होवै दासू ॥
कित वह बास पवन पहुँचावे | नवत[8] न होय पेट जिव आवे
हौं वह बास जीव बल देऊँ ॥ | और फूल की बास न लेऊँ ॥

भँवर मालतिहि पै चहै काँटन आवै दीठ[9] ॥
सौंह[10] भाल खाये हियें[11] पै फेरै नहिं पीठ ॥

तब हँस कह राजा वह ठाऊँ ॥ | जहाँ सो मालति चल लै जाऊँ
लै सो आय पद्मावत पासा ॥ | पानि पियाई मरत पियासा ॥
पानी पिया कमल जस तपा ॥ | निकसा सूर्य्य समुद्र महँ छिपा
मैं पावा पिय समुद्र के घाटा ॥ | राजकुँवर मन दिपै ललाटा[12] ॥
दशन[13] दिपै जस हीरा ज्योती ॥ | नयन कचूर[14] भरे जनु मोती ॥
भुजा[15] लंक उर केहर जिता ॥ | मूरति कान्ह देख गोपिता ॥
जस नल तपतै दमन[16] नहिं पूँछा ॥ | तस बिन प्रान पिंड[17] है छूँछा[18] ॥

जस तुइं पदक[19] पदारथ तैस रतन तुहिं योग
मिला भँवर मालति कहँ करहु दोउ दिपा भोग

पदक पदारथ खीन जो होती | सुनतहि रतन चढ़ी मुख ज्योती

पद्मावत रूप लक्ष्मी १ बेदर्द २ राजा भोज ३ पता ४ क़ायम ५ देखना ६ न्योछावर ७ नया बदन ८ निगाह ९ सामने काँटा १० छाती ११ शिर १२ दाँत १३ कटोरी १४ बाँहु कमर छाती चीता कीसी १५ रानी दमन १६ बदन १७ खाली १८ लाल जवाहिर १९

जानहु सूर्य्य कीन्ह परकोपू ॥ दिन बहुरा भा कमल बिकोसू ॥
कमल जो बिहँस सूर्य्य मुख दरसा सूर्य्य कमल दृष्टि सो परसा ॥
लोचन कमल थी मुख सूरू ॥ भयो अत्यंत दुहूँ रस रूरू
मालति देख भँवर गा भूली ॥ भँवर देख मालति बन फूली
देखा दरश भये इक पासा ॥ वह वह की वह वह की आसा
कंचन दाह दीन्ह जनु जीव ॥ उगा सूर्य्य छूटगा सीव ॥

पाँय परी धन पीय के नयनन सो रज मेट ॥
अचरज भयो सबन कहँ भइ शशि कमलहि भेंट

जन काहू कहँ होय बिछोऊ ॥ जस बेमिले मिलै सब कोऊ ॥
पद्मावत जो पावा पीऊ ॥ जनु मरजियें परा तन जीऊ ॥
कै न्योछावर तन मन वारे ॥ पाँयन परी घाल कै नारे ॥
नव अवतार दीन्ह बिधि आजू रही छार मानुष भइ साजू ॥
राजा रोय घाल गरे पागा पद्मावत के पाँय न लागा ॥
तन जिय महँ बिधि दीन्ह बिछोऊ अस नगरी तब चीन्ह न कोऊ ॥
सोई मार छार के मेटा ॥ सोइ जियाय करावे भेंटा ॥

सुह मद मीत जो मन बसै तेही मिला बिधि आन
संपति बिपति पुरुष कहँ काह लाभ का हान

लक्ष्मी सों पद्मावत कहा ॥ तुम प्रसाद पायो जो चहा
जो सब खोय जाहिं हम दोऊ ॥ जो देखै भल कहै न कोऊ ॥
जे सब कुँवर आय हम साथी ॥ औजित हस्ति घोर आवाथी ॥
जो पावे सुख जीवन भोगू ॥ नाहित मरन भरन दुख रोगू

रोशनी १ खिलना २ निगाह ३ आँख ४ सूर्य्य ५ दोनों खुश हुवे ६ तथा पद्मावत ७ तथा राजा ८ सोना औटा हुवा ९ जाड़ा १० चाँद ११ जुदाई १२ गरदन १३ नई पैदायश १४ ईश्वर १५-१८ राख १६ गले में पगड़ी १७ धूर १९ फ़ायदा २० नुक़सान २१ हाथी २२ ॥ ॥

तब लक्ष्मी गइ पिता[1] के ठाऊँ ॥ जो यहि कर सब बूड़ सो पाऊँ ॥
तब सो जरी अमृत[2] लै आवा ॥ जो मरहत[3] सो छिड़क जियावा
एक एक कै दीन्ह सो आनी ॥ भा संतोष[4] मन राजा रानी ॥

आय मिले सब साथी हिलमिल करहिं अनन्द
भई प्राप्त सुख संपति गयो छूट दुख धन्ध ॥

और दीन्ह बहु रतन परवाना[5] ॥ सोन रूप जो मनहिं न आना ॥
जे बहु मोल पदारथ[6] नाऊँ ॥ का तेहि बरन[7] कहूँ तुम ठाऊँ ॥
तेहि कर भाव रूप को कहा इक इक नग सृष्टि[8] बर लहा ॥
हीर फार बहु मोल जो अही ॥ ते सब नग चुन चुन के गही[9] ॥
जो इक रतन भुनावै कोय ॥ करै सोई जो मन महँ होय
द्रव्य गर्ब[10] मन गयो भुलाई ॥ हम[11] सम लच्छ मनहिं नहिं आई
लघु दीरघ[12] जो द्रव्य बखाना ॥ जो जेहि चही सोई तेहि माना

बड़ औ छोट दोउ सम स्वाम कारजी सोय ॥
जो चाही जेहि काज कहँ वही काज सो होय

खण्ड उनतीसवाँ समुद्र और लक्ष्मी खण्ड

दिन दश रही जाय पहुनाई ॥ पुनि भइ बिदा समुद्र सो जाई
लक्ष्मी पद्मावत सो भेंटी ॥ जो सो कहा अपनी सो बेटी
समुद्र न दीन्ह पान कर बीरा भर के रतन[13] पदारथ हीरा ॥
और पाँच नग दीन्ह बिशेषी श्रवन[14] सुनी नयन नहिं देखी
एक सो अमृत दूसर हंसू ॥ औ तीसर पंखी कर बंसू ॥
चौथ दीन्ह सावक[15] सा दूरू ॥ पाँचों परस जो कंचन[16] मूरू ॥
तुरत तुरंगम[17] दोउ चढाई ॥ जल मानुष अगवा संग लाई ॥

पाप १ सजीवन मूर २ जो मर गये थे ३ सब्र ४ पत्थर ५ जवाहिर ६ रंग ७ दुनियां का मोल ८ लेना ९ गरूर १० हमारे बराबर कोई महीं ११ छोटे बड़े १२ जवाहिर १३ कान १४ शेर का बच्चा १५ सोना १६ घोड़ा १७ ॥ ॥

भेंट[1] समुं[2] दिन तब कियो फिरे नाय कै माथ ॥
जल मानुष तबहीं फिरे जब सो आय जगनाथ

जगन्नाथ दरशन कहँ आये
भोजन रीधा भात पकाये ॥
राजैं पद्मावत सों कहा ॥
साठ[3] नाठ कछु गाठ न रहा
साठ[4] होय जासों सो बोला ॥
नष्ट[5] जो पुरुष[6] पात ज्यों डोला
साठे[7] रंक चलै मौराई[8] ॥
नष्ट[9] राव सब कहँ बौराई ॥
साठे आव गर्ब[10] तन फूला ॥
नष्टहि[11] बोल बुद्धि बल भूला
साठे[12] जाग नींद निशि[13] जाई ॥
नष्टे[14] कहै होय औंघाई ॥
साठे दृष्टि[15] ज्योति हो नयना
नष्ट[16] हिये मुख आवन बैना[17]

साठे रहै सिधन[18] तन नष्टहि[19] आगर[20] भूख ॥
बिन[21] गाठ बृक्ष निपत्र[22] ज्यों ठाढ़ ठाढ़ पै सूख

पद्मावत बोली सुनु राजा
जीव गये धन कौने काजा ॥
रहा द्रव्य तब कीन्ह नगाठी
पुनि कित मिले लच्छ[23] जो नाठी
मुक्ती साठ[24] गाँठ जो करे ॥
साकर[25] परै सोई उपकरे[26] ॥ ॥
जेहि तन पंख जाय जहँ ताका
पैगप[27] हार होय जो थाका ॥
लक्ष्मी रही दीन्ह मोहिं बीरा ॥
भर के रतन पदारथ हीरा ॥
काढ़ एक नग बेग[28] भुजाऊ ॥
बहुरे लच्छ[29] फेर दिन पाऊ ॥
द्रव्य भरोस करै जन कोई ॥
साठ सोई जो गाँठी होई ॥

जोर कटक[30] पुनि राजा घर कहँ कीन्ह पयान[31] ॥
दिवसहि[32] भानु[33] अलोप भा बासुक[34] इन्द्र सकान

मुलाक़ात १ लक्ष्मी २ दौलत गई ३ दौलत ४ बेदौलत ५ मर्द ६ कमीना मालदार ७ अकड़के ८ राजा ९ ग़रूर १० बेदौलत ११ मालदार १२ रात १३ ग़रीब १४ निगाह १५ दिल १६ आवाज़ १७ दिल जमई १८ ग़रीब १९ बहुत २० बेरूपया २१ बेपता २२ दौलत जाती रही २३ दौलत होने के समय २४ तंगी २५ काम आवे २६ क़दम २७ जल्द २८ दौलत २९ फ़ौज ३० कूच ३१ दिन ३२ सूर्य्य ३३ नाम राजा साँप ३४

चितोर आय नेर भा राजा ॥ फिरा जियत इन्द्रासन गाजा ॥
बाजन बाजे होय अडोरा[1] ॥ आवहिं बहल हस्ति[2] औ घोरा
पद्मावत चंडोल जो बैठी ॥ पुनि गइ उलट स्वर्ग[3] सों दीठी[4]
यहि मन ऐंठा रहै न सूधा ॥ बिपत न सँवरै संपति लुब्धा[5] ॥
सहस[6] बरस दुख सहै जो कोई घड़ी एक सुख बिसरै सोई ॥
योगिन यही जान मन मारा तेहुँ न यह मन मरै अपारा ॥
रहै न बाँधा बर भा जेही ॥ तेलिया[7] मार डार पुनि तेही ॥

मुहम्मद यहि मन अमर[8] है कहु कित मारा जाय
कहा सदा शिव आवैं घटते घटत बिलाय ॥

कुँवर जो बहि बहि घाटन लागी बहु बेक़रार सोय जनु जागी ॥
बिकल अचेत चेत तिन कहा संग साथ नहिं दूसर रहा ॥
कहाँ रहे आये हम कहाँ ॥ जानी नहीं कि जायहि कहाँ ॥
जागहिं दया दृष्टि[9] कै आपी ॥ खोल सो नयन दीन्ह बिधि झाँपी
जेहि के संग पद्मिनी बाँची ॥ बहुत अनन्द[10] बहुत नृत[11] नाची
अब मग[12] मिले आय जगनाथा सबै आय के नावहिं माथा ॥
अति दुख मिले आय के राजा सोई ते गये उन[13] के काजा ॥

सो ही रामन रतन रबि[14] सो पद्मावत लाल ॥
सो पद्मावत सो कुँवर सो प्रीतम प्रति पाल ॥

नागमती कहँ अगम[15] जनावा गई तपन बर्षा जनु आवा ॥
रही जो मुइ नागिन जस तुचा[16] जिव पायें तन की भइ सुचा
सब दुख जस केंचुल गा छूटी ॥ होय निसरी जस बीर बहूटी ॥
जस भुइँ दहि असाढ़ पलहाई परहिं बूँद औ सोंध बसाई ॥

शेर १ हाथी २ आसमान ३ निगाह ४ दौलत में दीवाना ५ हज़ार ६ संखिया ज़हर ७ हमेशा ज़िन्दा ८ मेहरबानी की निगाह ९ ख़ुश १० नाच ११ शायद १२ राजा के काम को १३ सूर्य्य १४ आगम १५ चमड़ा १६ ॥ २० ॥

वही भाँति[1] पलही सुख बोरी[2] | उठी करलि नइ कोंप सँवारी
हुलस गंग जिमि बाढ़े लेई ॥ | यौबन लाग हिलोरे देई ॥
काम धनुष शर[3] दै भइ ठाढ़ी ॥ | भाग्यो बिरह रहै जो बाढ़ी ॥

पूँछहिं सखी सहेली हृदय देख आनन्द
आज बदन[5] तुम निरमल[6] कहाँ उवाहै चन्द

अब लग सखी पवन रहि ताता[7] | आज लाग मोहिं शीतल[8] गाता
महि[9] हुलसी जस पावस[10] छाहाँ | तस हुलास[11] उपना[12] जिय माँहाँ
दशौ दाव कै गा जो दशहरा ॥ | पलटा सोई नाव लै महरा ॥
अब यौबन गंगा होय बाढ़ा ॥ | औटन कठिन मार सब काढ़ा ॥
हरियर सब देखे संसारा ॥ | नई चार[13] जनु भा अवतारा ॥
भाग्यो बिरह करत जो दाहू[14] । | भा मुख चन्द छूटगा राहू ॥
लहि कहिं नयन हार हिय[15] खिला | को धौं हितू आय के मिला ॥

कहतहिं बात सखिन सो तत[16] खन आवा भाट
राजा आय नेर भा मँदिर बिछावो पाट[17] ॥

सुनतहि खन राजा कर नाऊँ | भा हुलास सब ठावहिं ठाऊँ ॥
पलटा जनु बरषा ऋतु राजा ॥ | जस असाढ़ आवै दर[18] साजा ॥
देख सो छत्र भई जग छाहाँ | हस्ति[19] मेघ उनये जग माहाँ ॥
सैन[20] पूर आई घन घोरा ॥ | रहस चाव बरषे चहुँ ओरा ॥
धर्ति स्वर्ग[21] अब होय मिलावा | भरहिं पुखर औ ताल तलावा
उठी लहक महि[22] सुनि तेहि नामा | ठाँवहिं ठाँव दूब अस जामा ॥
दादुर[23] मोर कोकिला बोले ॥ | हत जो अलोप[24] जीभ सब खोले

उसी तरह १ बाग़ीचा २ कमान-तीर ३ दिल ४ मुँह ५ पाक साफ़ ६ गर्म हवा ७ ठंढा बदन ८ ज़मीन ९ बरसात १० खुशी ११ पैदा होना १२ नई तरह १३ जलाना १४ दिल १५ तुरन्त १६ तख़्त १७ फ़ौज १८-२० हाथी १९ ज़मीन-आसमान २१ ज़मीन २२ मेढक २३ ग़ायब २४ ॥ २-॥

भये असवार पंथमें मिले चले सब भाय ॥
नदी अठारह बराबर मिली समुद्र कहँ जाय

बाजत गाजत राजा आवा ॥ नगर चहूँ दिसि बाज बधावा
बिहँस आय माता सो मेला ॥ रतनहि जनु भेंटी कौसिला ॥
साजे मन्दिर बन्दन वारा ॥ औ बहु होय सो मंगल चारा
पद्मावत कर आव बिमानू ॥ नगर अति दहुँ कस भानू
जनहु छाह महँ धूप देखाई ॥ तैसे अँधार लाग जो आई ॥
सही न जाय सौत की झारा दुसरे मन्दिर दीन्ह उतारा ॥
भई उहाँ चौरवाह बरवानी ॥ रतनसेन पद्मावत आनी ॥

पुहुप सुगन्ध ससार महँ रूप बरवान न जाय
हेम सेत उयु गाजना जगत पात पहिराय ॥

बैठ सिंहासन लोग जोहारा निधनी निरगुन द्रव्य बोहारा
आगनित दान निछावर कीन्हा मगतन दान बहुत कै दीन्हा ॥
तुरी हँसि लै महावत मिले ॥ तुलपुरी लै उपरोहित चले ॥
बेटा भाय कुँवर जैत आवहिं राजा हँस हँस गले लगावहिं ॥
नेगी गेंज मिले अरकाना ॥ पंवरथ बाजे घर मसेयाना ॥
मिले कुँवर कापर पहिराये देकर द्रव्य तिन घरहिं पठाये ॥
सब की दर्पा भई पुनि दुनी ॥ दानि दाग सबै जग सुनी ॥

बाजे पाँच पौंह नित सिद्ध बरवाने भाट ॥
छत्तिस गौरी षट दरशन आय जुरे वह पाँट

सब दिन राजा दान देवावा ॥ भइ निपूत नागमती पहँ आवा

पहिले १ चंडोल २ सूर्य्य ३ आग ४ चारों तरफ़ मग्ज़ाहूर ५ फूल ६ मिस्ल बर्फ़ सफ़ेद बहार के मौसिम में हरे हरे पत्ते लहराते हैं ७ ग़रीब ८ बेहुनर ९ जना करना १० बेहिसाब ११ घोड़ा १२ हाथी १३ हक़दार १४ मस्त १५ प्याकल १६ रेवरात और दूनाम १७ नगारा-ग्रह-नाई-करना-तुरही-ओंझ १८ तारीफ़ १९ योगी-जंगम-सेवरा-संन्यासी ब्राह्मण-दरवेश २० तरह

नागमती मुख फेर के बैठी ॥ सो नहिं करहि पुरुष[1] सो दीठी[2]
ग्रीषम[3] जरत छोड़ कै जाय ॥ सो मुख कौन देखावे आय ॥
जोह जरै परबत बन लागी ॥ उठी झार[4] पंखी उड़ भागी ॥
अब शाखा देखी औ छाहाँ कौने रहस पसारेसि बाँहाँ ॥
कौन्यो थिरक बैठि तेहि डारा कौन्यो[5] कली केल कुरबारा
तू योगी होय गा बैरागी ॥ हौं जर छार[6] भयो तुहि लागी

काह हँसौं तुम मोसों कियो औरसो नेह ॥
तुहिं मुख चमकै बीजुली मुहिं मुख बरषै मेह

नागमती तू पहिल बिवाही ॥ कठिन[7] सु प्रीति दही जस दाही
बहुते दिनन आव जो पीउ ॥ धन[8] न मिलै धन पाहन जीउ
पाहन लोह पोढ़ जग दीऊ ॥ सोऊ मिलै जो होय बिछोऊ[10] ॥
भलहिं सेत गंगाजल[11] दीठा ॥ यमुन जो श्याम[12] नीर अति मीठा
काह भयो तन दिन दश[13] दहा औ बरषा शिर ऊपर अहा ॥
कोइ कहि पास आश[14] के हेरा धन वह दरश निराश[15] न फेरा
कंठ लाय के नारि मनाई ॥ जरी जो बेल सींच पलहाई ॥

सहस[16] अठारह शाख फर दाड़िम[17] दाख[18] जंभीर
सबै पंख मिल आय जो हारे लौट वही भइ भीर

जो भा मेरु[19] भयो रंग राता ॥ नागमती हँस पूँछी बाता ॥
कहु जो कंत परदेश लुभाने ॥ कस धन मिली भोग कस माने
जो पद्मावत सुठ है लोनी[20] ॥ मोरे रूप किसर[21] वर होनी
जहाँ राधिका अप्सर माहाँ ॥ चन्द्रावल सर पूज[22] न छाहाँ ॥

मर्द १ शोख २ बड़ी गरमी ३ आग ४ किस कली के लिये कुलेल मचाते थे ५ राख ६ सख़्त मुहब्बत जली जैसा जलना चाहिये ७ नागमती ८ पत्थर ९ जुदाई १० सफ़ेद गंगा जल तथा पद्मावत ११ सियाह पानी १२ थोड़े दिन जली १३ उम्मेद १४ ना उम्मेद न करना चाहिये १५ हज़ार १६ अनार १७ अंगूर १८ हमबिस्तरी में मस्त १९ ख़ूबसूरत २० बराबरी २१ २२

भँवर पुरुष[1] अस रही न राखा | तजै दाख[2] महुवा रस चाखा ॥
तज नागेसर फूल सुहावा ॥ | कमल बसेंधी सो मन लावा
चौ[3] अन्हवाय भरै अरगजा[4] ॥ | तौहु बिसायंध वहि नहिं तजा

काह कहूँ हूँ तोसों कुछ नहिं तोरे भाव ॥
यहाँ बात मुख मोसों वहाँ जीव वह ठाँव ॥

दुख कि कथा कहि रयनि[5] बिहानी | भयो भोर जहँ पद्मिन रानी ॥
भानु[6] देख शशि[7] बदन मलीना | कमल नयन राती[8] तन खीनी[9] ॥
रयनि नखत गिन कीन्ह बिहानू ॥ | बिमल[10] भई देखी जस भानू ॥
सूर्य्य हँसा शशि[11] रोय डफारा ॥ | टूट आँसु जस नखतहिं मारा[12] ॥
रही न राखी होय निसासी ॥ | तहँवाँ जाउ जहाँ निशि[13] बासी ॥
हौं कै नेह कुवाँ महँ मेली ॥ | सींचहि लाग झुरानी बेली ॥
भये दुइ नयन रहँट की घरी ॥ | भरहिं लै ढारैं छूछी भरी ॥

सुभ्र[14] सरोवर हंस जल घटा तो होय बिछोय[15] ॥
कमल प्रीति नहिं परहरे[16] सूख बेल पर होय ॥

पद्मावत तुइ जीव पराना ॥ | जिय तें जगत पियार न आना ॥
तुइ जिम कमल बसी हिय[17] माहाँ | हौं होय अलि[18] बेधा तोहिं पाहाँ
मालति कली भँवर जो पावा | सो तज आन फूल कित भावा
मैं हौं सिंहल की पद्मिनी ॥ | सरन[19] पूज जम्बू नागिनी ॥
हौं सुगन्ध निरमल[20] उजियारी | वह बिष भरी डेरा वन कारी ॥
मोरी बास भँवर संग लागहिं ॥ | वह देखत मानुष डर भागहिं
हौं पुरुषन[21] की चितवन[22] दीठी | जेहि के जिय[23] अस आहौं पीठी

मर्द १ अंगूर २ चोवा ३ खुशबू ४ रातबिताई ५ सूर्य्य ६ चाँद ७-११ लाल ८ पतली कमर ९ रंज ज्यादा हुवा सूर्य्य को देख के १० माला १२ रात १३ तालाब १४ जुदाई १५ छोड़ना १६ दिल १७ भँवर १८ बराबरी १९ पाकसाफ़ २० मर्द २१ देखना २२ जिसकी हौं उसके दिल में बैठी हूं २३ ॥ ÷ ॥

ऊँची ठाँव[1] जो बैठै करै न नीचै संग ॥
जहाँ सो नागिन धर गई काला करै सो अंग

पलही नागमती की बोरी[2] ॥ सोने फूल फूल फुलवारी ॥
जानवंत परंब[3] रहि सब दहे[4] ॥ सबै परंब बोलत कह कहे ॥
सारो[5] सुवा महर कोकिला ॥ रहसत आय पपीहा मिला ॥
हारल[6] शब्द महोक[7] सुहावा ॥ काग कुराहर[8] करहि सो आवा
भोग बिलाश कीन्ह अति फेरा बासहिं रहसहिं करहिं बसेरा ॥
नाचहिं पाँडुक[9] मोर परेवा ॥ निफल न जाय काहु की सेवा
होय उजियार बैठ जस तपै ॥ खूसट मुख न देखावे छिपै ॥

संग सहेली नागमति अपनी बारी माहिं ॥
फूल चुनहिं फल तोड़हिं रहस कूद सुख छाहिं

जाही जूही तेहि फुलवारी ॥ देख रहस रहि सकी न वारी ॥
इते न बातन हिये[10] समानी ॥ पद्मावत सो कही सो आनी ॥
नागमती है अपनी बारी[11] ॥ भँवर मिला रस करै सँवारी ॥
सखी साथ सब रहसहिं कूदहिं और श्रंगार हार सब गूंदहिं ॥
तुम जो बकावल तुम सो लड़ना बकचन[12] कहो चहो जस करना
नागमती नागेसर रानी ॥ कमल न आछी अपनी बानी ॥
जस सेवती गुलाल चमेली ॥ तैसि एक जन वहू अकेली

अब सुदरशन[13] गूजा तब सत[14] बरगै योग ॥
मिला भँवर नागेसर से ते वही देहि सुख भोग

सुनि पद्मावत रिस न सँभारी सखिन साथ आई फुलवारी
दोउ सौत मिल पटि[15] जो बैठी ॥ हिय बिरोध[16] मुख बातैं मीठी

जगह १ बागीचा २-११ चिड़या ३ जलना ४ तोता ५ मैना ५ नाम चिड़या ६.७.९ कौवा की बोली ८ दिल १० तुम को जो कहना या करना है सो करो १२ तथा नागमती-वा राजा १३ तथा पद्मावत १४ तख़त १५ दुशमनी १६ ॥-:-॥

बारी[1] दीठि सो रंग सो आई ॥ पद्मावत हँस बात चलाई ॥
बारी सुफल अहै तुम रानी हैलाई ऐ लाय न जानी ॥
नागेसर औ मालति जहाँ ॥ सुगन्धरावन हिं चाही तहाँ
रहा जो मधुकर कमल पिरीता[2] लागे योजाय करील की रीता
जहँ[3] इमली बाकी हिय माहाँ तहँ न भाव नारंग की छाहाँ

फलहि फूल के फरजहाँ देखहु मनाहि बिचार
अम्ब लाग जेहि बारी चम्प लाग तेहि बार

अन तुम कहीं नीक यह सोभा पै फल सोई भवर जोहि लोभा
पूयाँस जाम्ब कस्तूरी चोवा अम्ब जो ऊँच हृदय तेहि रोवा
तेहि गुन अस भइ जाम्बनेवारी लाई आन माँझ के बारी ॥
जल बाढ़े बहिया जो आई ॥ हैबाकी इमली शिर नाई ॥
तुकस पराई बारी दीखी ॥ तजै पानि धावहु मुख सूखी
ऊठै आग दोठडार अभीरा ॥ कौन साथ तुहि बैरी केरा ॥
जो देखी नागेसर बारी ॥ लाग मरी अब सूगा सारी

जो सरवर जल बाढ़े रहै सो अपनी ठाँउ ॥
तजै नागेसर को वहि जाइ न तोहि अँबराउ

तेहि अँबराउ लीन्ह काजूरी[12] काहे भई नींव मुख मूरी ॥
भई बेर किन कुटिल कटीली तेद[14] कीन्ह चाह बक सीली ॥
नारंग दारिव न तुम्हरी बारी ॥ देख मरहि जेहि सूगा सारी
औ न सदा फर तुरज जँभीरा कटहर बड़हर लौका रवीरा

फुलवारी खुप्पा रंग देख १ भवर कमल का आशिक़ २ दिल ३-५ काली जामुन
बुपूक ४ जो मैं जवाब दो तो पानी छोड़ दो और मुह सूख जाय ६ जो मेरे बाग़ को ना-
गेसर देखे ७ तोता मैना ८-११ तालाब ९ नागेसर छोड़ तेरे बाग़ न जाऊ १० बाग़
११ मुक़ाबिल १२ नींव ऐसी कड़ुवी १३ बैंगन जंगली से बेर काँटादार अच्छा
होता १४ अंगूर १५ ॥ २-॥

कमल के हिरदय रोवाँ केसर | तोहू न सरे पूजी नागेसर ॥
जहँ कटहर कोऊ बरहि न पूछी | बड़ पीपर का बोलहि छूछी
जो फल देखी सोई फीका | ताकर काह सराहे नीका ॥

रहु तू अपनी बारी मोसो जूझ न बाझ
मालति उपम न पूजी पुनि करवोजा खाज

जो कटहर बड़हर बड़ बेरी ॥ | तोहि अस नाहिं जो कोकाबेरी
पूयाम जान मोर तुरंज भीरा | कडुइ नीब तू छाँह गँभीरा ॥
नरियर दारिव बिही कहा रावा | गलगल जाठ सीत नहिं भारवा
तोरे कहे होय मोर काहा ॥ | फरे बृक्ष कोउ ढेल न बाहा
नवै सदा फर सो नित फरै ॥ | दाड़िम देख फाट हिय मरै ॥
जाफर लौंग सुपारि खुहारा | सिर्च होय जो सहै नपारा ॥
हौं सुपान रंग पूजन कोई ॥ | बिरह जाज जेर चून जेरहोई ॥

लाजहि बूड़ मरौं सि नहिं ऊँभ उठाव सबाह
हौं रानी पिय राजा तो कहँ योगी नाह ॥

हौं पद्मिनी मानसर केवा ॥ | भवर मराल करहि मोर सेवा
पूजा योग दई हौं गढ़ी ॥ | मन महे प्राके माथे चढ़ी ॥
जानी जगत कमल की करी | तोहि अस नाहि नागिन बिष भरी
तुइ सबलिये जगत के नागा | कोयल भेष न छाँड़सि कागा
तू भुजैल हौं हंस की जोरी ॥ | सोहिं तोहिं मोती पोत की चोरी
कंचन कली रतन नग बिना | जहाँ पदारथ सोह नहिं पना ॥
तुइ तोराइ हौं प्राणि उजियारी | दिनहि न पूजी निपूरी अँधियारी

दिल १ हरा बर २-५-२० कटहर बलंद ३ तारीफ़ ४ अंगूरद्राक्षा वास्ते रक्वाहे ६ सीत का मुहसे नाम न लो ७ अनार ८ छाती ९ खाविन्द के बिरह में जल के चूना हूँ १० बलंद ११ खाविन्द १२ नाम तालाब १३ कमल १४ हंस १५ सोने की अंगूठी १६ लाल १७ पन्ना १८ चाँद १९ रात २१ ॥ ॥

ठाढ़ होसि जेहि ठाईं मसि लागै तेहि ठाउँ ॥
तेहि डर राँध न बैठौं जनु साँवर होय जाउँ ॥

कमल सो कौन सुपारी रोठा
रही न झापै आपन गटा ॥
कमल पत्र दाड़िम तोर चोली
ऊपर राता भीतर पियरा ॥
यहाँ भँवर मुख बात हि लावसि
सब निश तप तप मरेसि पियासी
सेजवाँ रोय रोय निश भरसी

जेहि के हिये सह सदश कोठा
सखति उघेल चहै परगटा ॥
देखेसि सूर देश है खोली ॥
जारौं वही हरद अस हेरा ॥
वहाँ सूर्य्य कहँ हँस हँस लावसि
भोर भये पावसि पिय बासी ॥
तू मोसों का सरबर करसी ॥

सूर्य्य किरन तोहि रावी सरबर लहर न पूज ॥
भँवर यहाँ तोह पावै धूप देह तोर भूज ॥

मैं हौं कमल सूर्य्य की जोरी
हौं वह आपन दरपन लेखौं ॥
मोर बिकास वहक परकाश
हौं वह सों वह मोसों राता ॥
कमल के हिरदय महँ जो गटा
जाकर दिवस तेही पै आवा ॥
तुइ उदुम्बर जेहि भीतर माँखी

जो पिय आपन तेहि का चोरी
करौं शिंगार भोर मुख देखौं ॥
तुइ जर मरेसि निहार अकाश
तिमर बिलाय होत परभाता
हरयरि हार कीन्ह का घटा ॥
कार रयनि कित देखै पावा ॥
चाहहिं उठहिं मरन की पाँखी

धूपन देखी बिष भरी अमृत सो सर पाव ॥
जेहि नागिन डस सो मरै लहर सूर्य्य की आव

सियाही १ सुपारी सुख़्त के सामने कमल की क्या हक़ीक़त २ कमल अपना गट्टा नहीं छिपा सक्ता ३ सख़्ती उधेर डालो तब ज़ाहिर हो ४ अनार ५ सूर्य्य ६ लाल ७ हलदी की तरह जलाता हूँ ८ रात ९-२१ बराबर १०-११-१२ सूर्य्य से जल १३ खिलना १४ खुश १५ अँधियारी १६ भोर १७ दिल १८ हरे कमल गट्टा का हार पहिने से क्या नुक़सान १९ दिन २० गूलर २२ ॥

फूलहिं[1] कमल भानु[2] के उये ॥ पानी मैल[3] होय जडु[4] छुये ॥
फिरहिं भवर जिमि तो नयनाहाँ[5] नील बिषायँध सबतो पाहाँ ॥
मच्छ कच्छ दादुर[6] तोहिं आसा बक[7] औ पंख बसहिं तोहिं पासा
जेजे पंख बास तोहिं लिये ॥ पानी महँ सो बिषायँध भये ॥
जोउ जियाइ चाँद होय ऊई[8] ॥ बदन कलंक डोंब लै छुई ॥
औ मोहि तोहिं निपूँ दिनकर बीचू राहु के हाथ चाँद की मीचू ॥
सहँस बार जो धोवै कोई ॥ तोहू बिषायँध जाय न धोई ॥

काह कहउँ वह पियसो मोहि पिरि धरे सि अगार
तेहि के रेवल भरो सँ तू जीती मैं हार ॥

नार अकेल का जीत्यो हारू[9] ॥ मैं जीता जग केर पिरागारू[10] ॥
बदन जित्यो जो पूनिउ जियारी बेनी जित्यो भुवँगिनि कारी ॥
औ मैं जीते सरा के नयना ॥ कंट जित्यो कोकिल के बैना
भौंह जित्यो अर्जुन धनकारी गीव जित्यो तुम चोर पुछारी ॥
नासक[13] जित्यो पुहुप पुतिल सुवा[14] भूक जित्यो बसर होय उवा ॥
दामिनि[15] जित्यो दसन चमकाहीं औ धररगर बिजीत्यो साहीं ॥
केहरि[16] जित्यो लंक मैं लीन्ही ॥ जित्यो मराल चाल वै दीन्ही ॥

पुहुप[17] बास मलैयागिरि[18] निरमल अंग बसाय ॥
नागिन[19] मस आपुहि लुबधमो सि के हर को जाय

का तोहिं रूप पिरागर[20] पराये अबही लेह सोर सब ठाये ॥
हौं सो बर सलोन मोर[21] नयना खेत[22] चीर मुख चाँद[23] के बैना ॥
नासक[24] खरग फूल ध्रुव तारा भौंह धनुष गरीव[25] का हारा ॥

सूर्य १ हिलानेसे पानी मैला होता २ मेंढक ३ बगुला ४ चाँद मैं सियाही ५ रात ६ मौत ७ हजार ८ चाँद ९ नागिन १० गर्दन ११ मुर्ग़ा १२ नाक १३ फूल १४ नाम जानवर १५ बिजली १६ दाँत १७ होंठ १८ चीता १९ कमर २० हंस २१ फूल २२ चन्दन २३ अर्जुन नामक पेड़ के नाम जानने की रवती २४ गरूर २५ मफ़ेद २६ पपीहा २७ आसमान २८

हीरा[1] दसन[2] प्रवेत अमृत्रा[3] | छिपै बीज[4] जोविहँसै रसा ॥
बिद्रुम[5] रंग अधर रस राती ॥ | जो दामिन[6] अस रबि महँ ताती
चाल गयंद[7] गर्ब अति भरी ॥ | बिसहर[8] लंक[9] नारी सर करी ॥
सावर[10] जहाँ लवन सुठ नीकी | कौसर[11] बरतू करसि जो फीकी ॥

पुहुप[12] बास हौं पवन अहारी कमल मोर निरहेल[13]
चहौं कै पौन[14] धरौं नाऊँ तोर मरन मोर खेल[15] ॥

पद्मावत सुनि उतर[16] न हिं सही ॥ | नागमती नागिन[17] जस कही ॥
वैवहकाहि वहवैं कहु कहा ॥ | काहु कहौं तस जाय न कहा ॥
दाउ नवल भर यौबन गाजे ॥ | अप्सर[18] जानु अरवरे बाजे ॥
भा बाहुन बाहुन सो जोरा ॥ | हिय सो हिय कोइ बाग न मोरा
कुचे[19] मां कुच भइ सौहँ[20] अनी ॥ | नवहिं[21] न नाये दूटहिं[22] तनी ॥
कुंभस्थल दौ गज मैमंता ॥ | दोनौं ऊफर परे चौदन्ता ॥
देवलाक देखत दुत ठाढ़े ॥ | लागे बान हिये[23] जाहिं न काढ़े ॥

जनहु दीन्ह ठग लाइ देख आय तस मीचे[24] ॥
रहा न कोइ धरँहिया करै जो दोउ महँ बीच ॥

पवन[25] पवँन राजा के लागा ॥ | कहेसि लड़हि पाछि न[26] भागा
दोनौं सौंत पुरुष औ गोरी ॥ | मरहिं तो कहँ पावसि अस जोरी
चला राजा आवा तेहि बारी ॥ | जरत बुझाई दोनौं नारी ॥
एक बार जेहि पिय मन बूझा | सो दुसरे सौं काढ़े कै जूझा ॥
एसो ज्ञान मन जानत कोई ॥ | कबहूँ रात कबहूँ दिन होई ॥
धूप छाह दोऊ इक संगा ॥ | दोनौं मिले रहैं इक संगा ॥

दांत १ सफेद-काला २ बिजुली ३ मूंगा ४ होंठ ५ लाल ६ बिजुली ७ सूर्य्य ८ हाथी ९ गरूर १० भंवरा की कमर ११ बराबर १२ फूल हवा के सहार १३ तरु ताज़ा १४ बात १५ जवान १६ परी इन्द्र लोक १७ छाती १८ नौक सामने १९ अंगिया के बन्द २० आम हाथी मस्त २१ दिल २२ मौत २३ पकड़ने वाला २४ कान २५ ॥ ॥

जूझ[1] बछाड़हु बूझौ दोऊ ॥ सेवे[2] करहु सेवा फल होऊ ॥

गंगा यमुन तुम नारि दोउ लिखी मुहम्मद योग
सेव करहु मिल दोनौ तो मानहु सुख भोग

अस कहि दोनों नारि मनाई ॥ बिहँसि दोउ तब कंठ[3] लगाई
लै दोउ संग मंदिर महँ आई ॥ सोन पलंग तहँ जाय बिछाई
सीझी पाँच अमृत ज्यों नारा औ भोजन बावन परकारा
हुलसी सरस घँचि चया खायें भोग करत बिहँसीं रहसायें ॥
सोन मंदिर नगमति कहँ दीन्हा रूप मंदिर पद्मावत लालीन्हा
मन्दिर रतन रतन के खंभा ॥ बैठा राज जोहारे सभा ॥
सभा सो सबै सुभ्र[4] मन कहा ॥ सोई अस[5] गुरु जो भल कहा

बहु सुगन्ध बहु भोग सुख कुरलहिं केल कराहिं
दोहु सो केल नित मानी रहस अनन्द दिन जाहिं

जाई नागमती नग[6] सेनी ॥ ऊँच भाग ऊँची दिन रेनी ॥
कमलसेन[7] पद्मावत जाई ॥ जानहु चन्द्र धति महँ आई ॥
पण्डित बहु बुधवंत बोलाये ॥ राघ बर्ग औ गिरह गिनाये ॥
कहे न बड़े दोउ राजा होहीं ॥ ऐसे बूत दसे[8] सब तोहीं ॥
नवें खण्ड के राजा जाहीं ॥ औ कुछ दण्ड[10] होय दल माहीं ॥
खुल भंडार कुछ दान देवावा दुखी सुखी कर नाम बढ़ावा ॥
याचक लोग गुनी जन आये अरु आनन्द के बजे बधाये ॥

अति कुछ पावा ज्योति यिन औ दै चले अशीष
पुत्र[11] कलत्र कुटुंब सब जीवहिं कोटि बरीस ॥

राघव चेतन चेतन महा ॥ आय उरके[12] राजा पह रहा ॥

लड़ना १ खिदमत २ गले लगाया ३ अंगूर ४ अच्छी बात कही ५ वह अच्छा जिसको गुरू पसंद करै ६ नागमती से नगसेन पैदा हुवा ७ पद्मावत से कमलसेन ८ बल में दश गुना ९ आपुस में फरेब १० बेटा — औरत खान्दान ११ पास १२ ॥ ॥

चित चिन्ता[1] जानै बहु भेउ[2] ॥ कबि ब्यास[3] परिडत सहदेउ[4] ॥
बरनी[5] आय राज की कथा ॥ पिंगल[6] महँ सब सिंहल मथा ॥
जो कबि सुनै शीश[7] सो धुना ॥ श्रवन[8] नाद बेद कबि सुना ॥
दृष्टि[9] सो धर्म पंथ जेहि सूझा ॥ ज्ञान[10] सो परम अर्थ मन बूझा ॥
योग जो रहै समाधि समाना ॥ भोग जो गुनी केर गुन जाना ॥
बीर[11] सुरिस मारै मन कहा ॥ सोइ शृंगार कंत जो चहा ॥

बेद भेद जस बररचे[12] चित चिन्ता तस चेत ॥
राजा भोज[13] चतुरदश भा चेतन सो हेत ॥

घड़ी अचेत[14] होय जो आई ॥ चेतन की सब चेत भुलाई ॥
भादौं एक अमावस सोई ॥ राजैं कहा दुइज कब होई ॥
राघव के मुख निकसा आजू ॥ परिडतन कहा काल्ह बड़ राजू ॥
राजैं दुहूँ दिशा फिर देखा ॥ परिडत बावर[15] कौन सरेखा[16] ॥
भुजा टेक के परिडत बोला ॥ छाँड़हि देश बचन[17] जो डोला ॥
राघव करी जाँघनी[18] पूजा ॥ चहै स्वभाव देखावै दूजा ॥
तेहि ऊपर राघव बर[19] खाँचा ॥ दुइज आज तौ परिडत साँचा

राघव पूज जाघनी दुइज देखायस साँझ ॥
बेद पंथ जे नहिं चलहिं ते भूलहिं बन माँझ ॥

परिडत कहा परा नहिं धोखा ॥ कौन अगस्त समुद्र जेहि सोखा
सो दिन गयो साँझ भइ दूजी ॥ देखी दुइज घड़ी वह पूजी ॥
परिडतन राजा दीन्ह अशीशा ॥ अब कसये कंचन औशीशा
जो यह दुइज काल्ह की होती ॥ आज तेज देखत शशि[20] ज्योती

दिल का हाल १ भेद २ कबिताई में व्यासजी ३ परिडताई में सहदेव ४ बयान ५ छंद ६ शिर ७ कानमें वेद नाद की तरह सुना ८ निगाह ९ अक़िल से मुशकिल बात दरयाफ़्त करता १० बहादुर ११ नाम परिडत १२ चौदह विद्या जानने वाला राजा भोज की तरह १३ बुरी १४ कौन परिडत का दान १५ होशियार १६ बात १७ भारी पूजा १८ क़सम १९ चाँद २०

राघव दीए बन्द कल्ह रवेला | सभा माझ चेट क अस मेला
यहि कर गुरू चमारिन लोना | सिरवा काम रू पाढत टोना ॥
डुडू ज अमावस महँ जो देखावे | दिन इक राहु चाँद कहँ लावे ॥

अस गुनिया नहिं चहिं नृप सभाजेहि टोना कर खोज
यही छंद डगबिद्या छला सो राजा भोज ॥

राघव बैन जो कंचन रेखा ॥ | कसे बान पीतर अस देखा ॥
अंजा भई रिसान नरेंद्रू ॥ | मारौं काहि निसारौं देसू ॥
झूठ बोल थिर रहै न राचा ॥ | परिउत सोई वेद मति साचा ॥
वेद बचन मुख साच जो कहा | सोयुग युग दृ स्थिर थिर रहा ॥
खोट रतन सोई फटकिरा ॥ | केहि घर रतन जो दारिद हरा ॥
चहै लेख बावर कवि सोई ॥ | जहँ सरस्वती लक्ष कित होई ॥
कविता सगदारिद मति भंगी ॥ | काटे कुटिल पुहुप के संगी ॥

कविता चेला बिधि गुरू सीप सेवाती बुन्द ॥
तेहि मानुख की आँपा का जो मरजिया स मुन्द ॥

यहि सो बात पद्मावत सुनी ॥ | देसू निसारा राघव गुनी ॥
ज्ञान दीए धन अगम बिचारा | भल न कीन्ह अस गुनी निसारा
जेजोंधनी पूज पोंपि काढ़ी ॥ | सूर्य्य की दाँव करै पुनि ठाढ़ी ॥
क बकी जीभ रवेंगे हर बानी ॥ | इक दिसा आगु दुसरि दिसा पानी ॥
जन अयुके मुख काढ़े भोरें ॥ | यसा चढ़ते अपयसा होय थोरें ॥
रानी राघव बेगे हँकारा ॥ | सूरय गढ़ तरि लेहु उतारा ॥
ब्राह्मन जहाँ दच्छिना पावा | स्वर्ग जाय जो होय बोलावा ॥

दरबार १ जादू २ राजदरबार में ऐसा जादूगर न चाहिये ३ बात ४ सोना ५ डुबकन ६ राजा ७ इज़्ज़त नहीं रहती ८ वेद के मुक़ाबिल ९ क़ायम १० झूँठा ज़वाहिर ११ फटकरी की तरह १२ दारिद दूर नहीं करता १३ दौलत १४ एक बाल १५ कवि दरिद्री होता है १६ फूल १७ नीलोफर १८ उगमद १९ अक़्ल १९ भारी पूजा २० चाँद २१ तलवार तेज़ २२ बेमौक़ा २३ जल्द २४ ॥

आवा राघव चेतन धौरा[1]हर के पास ॥
एसि न जानी तेहि हृदय[2] बिजुली बसे अकाश ॥

पद्मावत जो झरोखे आई ॥ नेहि कलंक[3] जस पूशि[4] देखराई
ततखन[5] राघव दीन्ह अशीशा भयो चकोर चन्द मुख दीशा ॥
पहिरे शीशि[6] नखतन की मारा धर्ती[7] खर्रा भयो उजियारा ॥
औ पहिरे कर कंकन जोरी ॥ नग जो लाग तेहि तीस करोरी ॥
कंकन एक काढ़ दै डारी ॥ काढ़त नार टूट गयें हारी ॥
जानहु चाँद टूट लै तारा ॥ छूट्यो स्वर्ग काल कर धारा ॥
जनहु टूट बिजुली भुइँ परी ॥ उठा चौंध राघव चित हरी ॥

परा आइ भुइँ कंकन जगत भयो उजियार
राघव बिजुली मारा बेसँभर कुछ न सँभार

पद्मावत हँस दीन्ह झरोखा ॥ अब जो गुनी मरै मुहिं दोखा[8] ॥
सबै सहेली देखी धाईं ॥ चेतन चेत जगावैं आईं ॥
चेतन परा न आवै चेतू ॥ सबहिं कहा यहि लाग परेतू ॥
कोइ कहि काँप[10] कोई संपातू ॥ कोई कहि अहि मिरगा[11] बातू ॥
कोइ कहि लाग पवन[12] कर झोला कैसहिं समुझ न चेतन बोला ॥
पुनि उठाय बैठारो छाहाँ ॥ पूछहि कौन पीर जिय माहाँ ॥
धौं काहू के दरशन हरा ॥ कै ठग धूत[13] भूत जेहि हरा ॥

कै तोहि काहू दीन्ह[14] कुछ कै रेडसा तोहि साँप ॥
कहो सो चित होय चेतन देह तोर कस काँप

भयो सो चित चेतन जब चेता ॥ नयन झरोखें जीव सकेता[15]
पुनि जो बोला मति बुधि खोवा नयन झरोखा लायें रोवा ॥

महल १ दिल २ बेऐब ३ चाँद ४ - ६ तुरंत ५ माला ७ ज़मीन - आसमान ८ पाप ९ जूड़ी १० मिरगी का रोग ११ फ़ालिज १२ किसी ठग या दग़ा बाज़ ने मंत्र चलाया १३ खिला दिया १४ कुंभलाया १५ ॥ ÷ ॥

बावरफेर शीश[1] पै धुना ॥ आपन कहि न पराई सुना ॥
जानहु लाई काहु[2] ठगोरी ॥ खन[3] पुकार खन बाँधै बोरी ॥
हो रे ठगा यहि चितोर माहाँ कासो कहौं जाउ केहि पाहाँ
यहि राजा सठ बड़ हत्यारा ॥ जे राखा यहि ठग बट पारा[5] ॥
ना कोइ बरजन[6] लाग गुहारी ॥ अस यहि नगर होय बट पारी

दृष्टि[7] रही ठग लाडू अलक[8] फाँस पर ग्रीव[9] ॥
जहाँ भिखारि न बाचै तहाँ बचै को जीव

कित धौराहर[10] आय झरोखें लै गयो जीव दछना के धोखें
स्वर्ग सूर[11] शशि[12] करै अजोरी[13] तेहि ते अधिक[14] देउ केहि जोरी
शशि[15] सूर[16] रहि जो होत वह ज्योती दिन पहाड़ हत रयनि न होती
ते हँकार[17] मोहि कंकन दीन्हा दृष्टि जो पड़ी जीव हर लीन्हा
नयन भिखार डीठ[18] सत[19] छुड़ी ॥ लागे तहाँ बान हिय[20] गड़ी ॥
नयन हिं नयन जो बेध समाने शीश[21] धुनहिं निसरे नहिं ताने
नबहिं न नाये निलज भिखारी तबहूँ बुरी लाग मुख गारी ॥

कित कर मुखी नयन भै जीवहरा तेहि बाट
सरवर[22] नीर बिछोह ज्यों तरक तरक हिय फाट

सखिन कहा चेतन बेसु भारा हिये चेत जिव जाय न मारा ॥
जो कोइ पावै आपन मागा ॥ ना कोइ मरै न काहूँ खागा[23] ॥
वह पद्मावत ऐसो सुरूपा ॥ बरन न जाय काह के रूपा ॥
जे चीन्हीं सो गुप्त[24] चल गयऊ ॥ परगट[25] गुप्त जीव बिन भयऊ
तुम अस बहुत बिमोहित[26] भये धुन धुन शीश जीव दै गये ॥

शिर १-२१ जादू २ कभी ३ चुप ४ राह लूटने वाले ५ मना करने वाला ६ निगाह ७ बाल ८ गर्दन ९ महल १० सूर्य्य ११-१६ चाँद १२-१५ रोशनी १३ बहुत १४ बोलाना १७ शोख १८ ईमान छोड़ाने वाले १९ दिल २० तालाब का पानी घटे से २२ कमी २३ छिपा २४ जाहिर वा छिपा २५ आशिक़ २६ ॥

बहु तहिँ दीन्ह नाय के ग्रीवा[1] | उतरे न देइ मार के जीवा ॥
तुइ पुनि मरत होय जर भुई | अबहिँ उघेल कान की रुई

कोइ माँग मार ना पावै कोइ बिन माँगा पाव ॥
तू चेतन औरहि समझावे बहु तुहिं को समझाव

भयो चेत चित चेतन चेता ॥ | बहुर न आय सहौं दुख एता
रोवत आय परे हम जहाँ ॥ | रोवत चले कौन सुख तहाँ ॥
जहवाँ बहु सासू[2] जिय केरा ॥ | कौन रहन पर चलौं सवेरा ॥
अब यहि भीख तहाँ होय मागों | एतना दे जग जन्म नरवाँगों[4]
औ अस कंकन जो पाऊँ दूजा ॥ | दारिद हरै आश मन पूजा ॥
देहिली नगर आव तुरकानू ॥ | शाह अलाउद्दीं सुलतानू ॥
सोन जरी जेहि की टकसारा ॥ | बारह बानी[5] परहिँ दिनारा ॥

कमल बखानों[6] जाय तहँ जहँ अलि अलाउद्दीन
मुनि के चढै भानु[8] होय रतन होय जल मीन

खण्ड बत्तीसवाँ देहिली गवन राघव चेतन ॥

राघव चेतन कीन्ह पयाना[10] | देहिली नगर जाय नि पुराना ॥
आय शाह के द्वार[11] जो पहुँचा | देखा राज जगत पर ऊँचा ॥
छतिस लाख तुरुक असवारा | तीस सहस[12] हस्ती[13] दरबारा ॥
जहँ तक तपै जगत पर भानू[14] | तहँ लग राज करै सुलतानू ॥
चहूँ खण्ड[15] के राजा आवहिँ ॥ | ठाढ़ झुराहिँ जुहार[16] न पावहिँ ॥
मन ते बान कै राघव झूरा ॥ | नाहिँ उबार जिया डर पूरा ॥
जहाँ झुरा न दिये शिर छाता ॥ | तहँ हमार को चालै बाता ॥

बार पार नहिँ सूझै लाखन उमर अमीर
अब खुर[17] खेह जाव मिल आय परे यहि भीर ॥

गर्दन १ जबान २ अँदेशा ३ कमी ४ बारह तरह ५ पद्मावत की तारीफ़ ६ भँवर ७ सूर्य्य ८ १४ मछली ९ कूच १० दरवाज़ा ११ हज़ार १२ हाथी १३ चारों तरफ़ १५ मलाम १६ टापकी धूर १७

बादशाह सब जाना बूझा ॥ स्वर्ग पतार हिये में सूझा ॥
जो राजा अस सजग न होई ॥ काकर राज कहाँ कर कोई ॥
जगत भार वह एक सँभारा ॥ तौ थिर रहै सकल संसारा ॥
औ अस वह क सिंहासन ऊँचा सब काहू पर दृष्टि जो पहुँचा ॥
सब दिन राज काज सुख भोगी रात फिरै घर घर होय योगी ॥
राव रंक जहँ तक सब जाती ॥ सब की चाँह लेइ दिन राती ॥
पंथी परदेशी जब आवहिँ ॥ सब की चाह दूत पहुँचावहिँ

यहू बात तहँ पहुँची सदा छत्र सुख छाय ॥
ब्राह्मन एक द्वार है ठाढ़ा कंकन जड़ा ऊ हाथ

मया शाह मन सुनत भिखारी परदेशी कहँ पूछहँ कौरी ॥
हम पुनि जाना है परदेशा कौन पंथ गवन ब केहि भेशा
देहिली राज चिन्त मन काढ़ी यहि जग जैसि दूध की साढ़ी ॥
सेत मिलाय छाछ के फेरा ॥ मथ घिव लीन्ह महिउ कहँ केरा
यहि देहिली कित होय होय गये कै कै गर्ब खेह मिल गये ॥
यहि देहिली की रही ढिलाई ॥ साढ़ी काढ़ ढील जब ताई ॥
रावन लंक जार सब तापा ॥ रहा न यौवन औ तरु नापा ॥

भीख भिखारी दीजिये का ब्राह्मन का भाट
अज्ञा भई बोला बहु धर्ती धरा ललाट ॥

राघव चेतन हत जो निरासा ततखन बेग बोलावा पासा ॥
शीश नाय के दीन्ह अशीशा चमकत नग कंकन कर दीशा
अज्ञा भई सो राघव पाहा ॥ तुइँ मंगन कंकन का बाहा ॥

ज़मीन-आसमान १ दिल २ होशियार ३ क़ायम ४ निगाह ५ अमीर ग़रीब ६ ख़बर ७-९ मुसाफ़िर ८ मेहरबानी १० बोलाना ११ सह १२ अंदेशा १३ नरमी १४ ग़रूर १५ धूर १६ नरमी १७ जवानी १८ हुक्म १९ माथा २० नाउम्मेद २१ तुरंत २२ जल्द २३ शिर २४ माँगने वाला २५ ॥ ✝ ॥

राघव फेर शीश भुइँ धरा | युग युग राज भानु की करा
पद्मिन सिंहल दीप की रानी | रतन सेन चितोर गढ़ आनी
कमलन सर पूजी तेहि बासा | रूपन पूजी चन्द अकाशा
जहाँ कमल शशि सूरन पूजा | केहि सर देउँ और को दूजा ॥

सो रानी संसार मन दछना कंकन दीन्ह ॥
अप्सर रूप देखाय के जीव झरोके लीन्ह ॥

सुनि के उतर शाह मन हँसा | जानहु बीज चमक परगसा ॥
काँच योग जो कंचन पावा ॥ | मगन ताहि सुमेरु चढ़ावा ॥
नाउँ भिखार जीभ मुख बाँची | अबहिं सँभार बात कहु साँची
कहँ अस नारि जगत उपराहीं | जेहि के सर सूरज शशि नाहीं
जो पद्मिन तुइँ मन्दिर मोरे ॥ | सातों दीप जहाँ कर जोरे ॥
सप्त दीप महँ चुन चुन आनी | सो मोरे सोरह सै रानी ॥
जाउन्ह महँ देखेसि इक दासी | देखलोन होय लोन बिलासी

चहूँ खण्ड हौं चकवे जस रवि तपै अकाश ॥
जो पद्मिन मोरे मंदिर अप्सर तौ कैलाश ॥

तुम बड़ राज छत्र पति भारी | अन ब्राह्मन हौं अहौं भिखारी
चारहुँ खण्ड भीख का बाजा | उदय अस्त तुम्ह ऐसो न राजा
धर्म राज औसत कुल माहाँ | झूँठ जो कही जीभ गहि बाहाँ
कुछ जो चार सब कुछ उपराहीं | सो यहि चहूँ दीप महँ नाहीं ॥
पद्मिन अमृत हँसे सदूरू ॥ | सिंहल दीप भलहिं सो मूरू ॥
सातों दीप देख हौं आवा ॥ | तब राघव चेतन कहवावा ॥
अज्ञा होय न राखौं धोखा ॥ | कहौं सो सब नारि मगुन दोषा

शिर १ सूर्य्य २ बराबरी ३-६-१२ चाँद ४-१३ सूर्य्य ५ परीइन्द्र लोक ७ जवाब ८ बिजुली ९ सोना १० नाम पहाड़ ११ हाथ १४ चारों तरफ १५ सारी दुनियां का राजा १६ सूर्य्य १७ पहुँचा १८ लाल शेर १९ असिल २० हुक्म २१ ऐब-हुनर २२ ॥

यहाँ हस्तनी सिंहनी औ चित्रनि बन बास ॥
कहौं पद्मिनी पद्म[1] शिर भँवर फिरै चहुँ पास

खण्ड तैंतीसवां स्त्री बर्णन

पहिले कहौं हस्तिनी नारी ॥ हस्ती[2] की पर की रति[3] सारी ॥
शिर औ पाय सुभ्र[4] गये[5] छोटी ॥ उर[6] की खीन[7] लंक[8] की मोटी ॥
कुंभस्थल[9] गज अमित अमाहीं गवन गयंद[10] ढाल जनु बाहीं ॥
दृष्टि[11] न आवै आपन पीठ ॥ पुरुष पराये ऊपर जीठ ॥
भोजन बहुत बहुत रति चाऊ[12] अछ[13] बाई सो थोर सुमाऊ ॥
मधु[14] जस मंद बसाय पसेऊ ॥ औ बिश्वास[15] धरै जस देऊ ॥
डर औ लाज न एको हिये ॥ रहै जो राखै आँकुश दिये ॥

गज[16] गत चलै चहूँ दिश लाय जगत कहँ चोखै[17]
कही हस्तनी नारी ये सब हस्तनि के दोष[18] ॥

दूसर कहौं सिंहनी नारी ॥ करै बहुत बल अल्प[19] अहारी[20] ॥
उर[21] अति सुभ्र[22] खीन[23] अति लंका[24] गर्ब[25] भरी मन धरै न शंका ॥
बहुत रोष[26] चाही पिय हना ॥ आगे घाल न काहू गिना ॥
अलंकार[27] अपनी वह भावा ॥ देख न सकै शृंगार परावा ॥
सिंह की चाल चलै डराढ़ी ली ॥ रोवाँ बहुत जाँघ औ फीली ॥
मोट माँस रुच भोजन तासू ॥ औ मुख आव विषायँध बासू ॥
दृष्टि[28] तराहीं हेरै आगे ॥ जन मथवाह रहै शिर लागे ॥

सेजवाँ मिलत सो स्वामी लावै उर नख बान ॥
यहि गुन सबै सिंह के वह सिंहन सुलतान ॥

तीसर कहूँ चित्रनी नारी ॥ महा चतुर रस प्रेम पियारी ॥

कमल १ हाथी २ स्वभाव ३ मोटा ४ गर्दन ५ छाती ६-७ पतली ७ कमर ८-२४ नाम हाथी ९ चाल १० निगाह ११ चाह १२ सफ़ाई १३ शहद १४ ख़याल १५ हाथी १६ पियार १७ ऐब १८ थोड़ा १९ ख़ुराक २० चौड़ी २२ बारीक २३ ग़रूर २५ ग़ुस्सा २६ सूरत २७ नज़र २८

रूप स्वरूप शृंगार सवाई ॥ अप्सर[1] जैसि रही अछवाई[2] ॥
रोच[3] न जानै हस्ता मुखी ॥ जहँ अस नारि कंत[4] सो सुखी
अपने पुरुष की जानै पूजा ॥ एक पुरुष के जान न दूजा ॥
चन्द्र बदन[5] रंग कुमदन[6] गोरी चाल सुहाय हंस की जोरी ॥
खीर[7] खाड़ कुछ अल्प[8] अहारू पान फूल से बहुत पियारू ॥
पद्मिन चाह[9] घाट दुइ करा[10] ॥ और सबै वह गुण निरमरा[11] ॥

चित्रिनि जैसु कुमुद[12] रंग और बासना अंग ॥
पद्मिन बास चंदन जस भँवर फिरहिं तोहे संग

चौथे कहौं पद्मिनी नारी ॥ पद्म[13] गन्ध शशि[14] दई सवारी ॥
पद्मिन जात पद्म रंग ओई ॥ पदम बास मधु[15] कर संग होई ॥
ना सुठ लाँबी ना सुठ छोटी ॥ ना सुठ पातर ना सुठ मोटी ॥
सोरहों करन रंग है बनी ॥ सो सुलतान पद्मनी गुनी ॥
दीरघ[16] चारु बार लघु[17] सोई ॥ सुभ्र[18] चार बहु खीनी[19] होई ॥
औ शशि[20] बदन देख सब मोहा चाल मराल[21] चलत गत सोहा ॥
खीर अहार न कर सुकवारा ॥ पान फूल के रहै अधारा ॥

मोह किरन मम बूरन औ सोरहों शृंगार ॥
अब यह भाँति बरन के जस बरनै संसार ॥

प्रथम[22] केश[23] दीरघ[24] शिर सोहैं ॥ औ दीरघ[25] अंगुरी कर[26] सोहैं ॥
दीरघ नयन तीख तहँ देखा ॥ दीरघ ग्रीव कण्ठ त्रिय रेखा ॥
पुनि लघु[27] दशन[28] होहिं जनु हीरा औ लघु कुच[29] उतंग जम्भीरा ॥
लघु ललाट[30] दुइज परकासू ॥ औ नाभी लघु चन्दन बासू ॥

इन्द्रलोक की परी १ सफ़ाई २ गुस्सा ३ ख़ाविंद ४ मुँह ५ कोकाबेली ६-१२ दूध ७ थोरी खुराक ८ ज़्यादा ९ दो हिस्सा १० पाक साफ़ ११ कमल १३ चाँद १४ भँवर १५ बड़े १६-२४-२५ छोटे १७ मोटा १८ पतला १९ चाँद २० हंस २१ पहिले २२ बाल २३ हाथ २६ छोटे २७ दाँत २८ छाती २९ माथा ३० ॥ + ॥

नासक

नासिक[1] खीन[2] खर्ग[3] की धारा | खीन[4] लंक जनु केहर[5] हारा ॥
खीन पेट जानहु नहिं आंता | खीन अधर[6] बिद्रुम रंग राता[7] ॥
शुभ्र कपोल देख मुख शोभा | शुभ्र नितंब[10] देख मन लोभा ॥

शुभ्र कलाई अति बनी शुभ्र जंघ गज चाल ॥
सोरह शृंगार बरन के करहिं देवता लाल[11] ॥

यहि पद्मिन चितोर जो आनी | कुंदन काया[12] द्वादश[13] बानी ॥
कुन्दन कनक[14] ताहि नहिं बासा | बहु सुगन्ध जस कमल बिकासा[15]
कुन्दन कनक[16] कठोर सो अंगा | वह कोमल रंग पुहुप[17] सुरंगा ॥
वह छुइ पवन वृक्ष जेहि लागा | सोइ मलय[18] गिरि भयो सुभागा
काहन मूठ भरी वह देही ॥ | अस मूरति केहि दई उरेही[19]
सबै पठेतर[20] चित्र के हारीं ॥ | वह कर रूप कोइ लखी न पारीं ॥
कया कपूर हाड़ सब मोती ॥ | तेहि ते अधिक[20] दीन्ह बिध ज्योती

सूर्य्य किरन जस निरमल[22] तेहि ते अधिक शरीर
सौंह दृष्टि[23] नहिं जाय कर नयन नहिं आवै नीर[24] ॥

शशि[25] मुख जबहिं कहै कछु बाता | उठत तन्त सूरज जस राता[26] ॥
दशन[20] दशन सो किरनी फूटहिं | सब जग जानि फुल झरी छूटहिं
जानहुं शशि[28] महं बीज[29] देखावा ॥ | चौंध पर्यो कुछ कहै न आवा ॥
कौंधत रहि जस भादौं रैनी ॥ | श्याम रयनि[30] जनु चलै उडेनी[31]
जनु बसंत ऋतु कोकिल बोली | सरस सुनाय मार सर[32] डोली ॥
जनु अमृत होय वचन बिकासा[33] | कमल जो बास बास धन बासा
यहि सर शीश जो नाग बेहरा ॥ | जाय शरन बेनी होय परा ॥

नाक १ पतली २ तलकर ३ पतली कमर ४ चीता ५ होठ ६ मूंग ७ लाल ८ मेटा गाल ९ चूतर १० लालच ११ बदन १२ ख़ालिस १३ सोना १४-१६ खिलना १५-३३ फूल १७ चन्दन १८ बनाना १९ दूती २० बहुत २१ पाक साफ़ २२ निगाह सामने २३ पानी २४ चाँद २५-२८ लाल २६ दाँत २७ बिजुली २९ रात ३० जुगनू ३१ तीर ३२ ॥

सबै मनोहर[1] जाय मर जो देखै तस चार[2] ॥
पहिले सो दुख बरन के बरनो वह कै शृंगार ॥

कित हौं रहा काल कर काढ़ा
कित वह आय झरोखे झाँकी
बिहँसी शशि[3] तरई[4] जनु परीं ॥
चमक बीज[5] जस भादौं रैनी ॥
काम कटाक्ष[10] दृष्टि[11] विष बसा ॥
भौंह धनुष पलक[13] काजल बूड़ी ॥
मार चली मारतहू हँसा ॥

जाय धौरहर[2] तर भा ठाढ़ा ॥
नयन कुरंगिन[4] चितवन बाँकी
कै सो रयनि छटे फुल झरीं ॥
जगत दृष्टि[8] भर रही उड़ेनी[9] ॥
नागिन अलक[12] पलक महँ डसा
वह भइ धानुक[14] हौं भइ ऊँड़ी[15] ॥
पाछे नाग रहा हौं डसा ॥

काल घाल पीछे रखा गरुड़ न मंतर कोय ॥
मोर पीठ वह बैठा कासों पुकारों रोय ॥

बेनी[16] छोर झोर जो केशा ॥
शिरहन बिषहर[19] परी भुइँ बारा
सक पकाहिं विष भरे पसारे ॥
जानहुँ लोटहिं चढ़े भुअंगा[20] ॥
लरहिं मुरहिं जनु मानहिं केली
लहरैं देइ जानहु कालिन्दी[22] ॥
चँवर धरत आछी चहुँ पासा ॥

रयनि[17] होय जग दीपक[18] लेशा
सगरे देश भयो अन्धियारा ॥
लहरहिं भरलहकहिं अतिकारे
बेधी बास मलय[21] गिर अंगा ॥
नाग चढ़े मालति कै बेली ॥
फिर फिर भँवर भये चित बन्दी[23] ॥
भँवर न उड़हिं जो लुब्धे[24] बासा

होय अँधेर घन[25] बिजु[26] चमक जबहिं चीर गहि झाँप
केश[27] नाग कित देख मैं सँवरि सँवरि जिय काँप

माँग कनक[28] जो सेंदुर रेखा ॥
जन बसंत राता[29] जग देखा ॥

उम्मेद १ चाल २ महल ३ हिरन ४ चांद ५ छोटे नखत ६ बिजुली ७-२६ निगाह ८ जुगनू ९ तिरछी चितवन १० निगाह ११ बाल १२-२७ पलक १३ तीर अंदाज़ १४ निशाना १५ चोटी १६ रात १७ चिराग रोशन १८ साँप १९-२० चन्दन २१ यमुना २२ दिल फँसाना २३ लपटना २४ बादल २५ सोना २८ लाल २९ ॥ ÷ ॥

गद्द पचावल पारी पारी ॥ औरचि चित्र बिचित्र सँवारी ॥
भईउरेह पुहुप सब नामा ॥ जनुबँक बिरवा रेह घनेपूयामा
यमुना साँझ सरस्वती माँगा ॥ दुहुँ दिसा दिये तरंगन गाँगा ॥
सेन्दुर रेख सोझ पर राती ॥ बीर बहूटिन की जस पाँती ॥
बलि देवता भये देख सेंदूरू ॥ पूजी माग भोरउढ सूरू ॥
भोर साँझ रबि होय जो राता वही देख राती भा गाती ॥

बेनी कारी पुहुप पते निकसी यमुना आय ॥
पूजइन्द्र आनन्द सो सेंदुर पूँजी पूजा चढ़ाय ॥

दुइज लेलाट अधिक मन करा पूरा कर देख माथ भुइँ धरा ॥
यहि नित दुइज जगत मह दीपा जगत जोहारे देइ अशीषा ॥
पूजि जो होय नहिं सरवर छाजे होय सो अमावस छिपमन लाजे
तिलक सँवारि जो चन्दन रचे दुइज माँझ जानहु कचबचे ॥
पूजि पर कर बट सारा राहू ॥ नरवतहि भरा दीन्ह परदाहू ॥
पारस ज्योति ललाटहि ओती दृष्टि जो करै होय तेहि ज्योती
औ जो रतन माग बैठारा ॥ जानहु गगन बूट निपुतारा ॥

पूजि औ सूर जो निरमल तेहि को ललाट की रूप
निपूत दिन चलहिं न सरवर पावै तप तप हेरहि चूप

भौंहैं धनुष पूरा जनु चढ़ा पनच करे मानुष कहँ गढ़ा ॥
चन्द कि सूर धनुष वह ताना जाकर बीज बरनि विष बाना
जासो हेर जाय सो मारी ॥ गिरि बरटहि सो भौंहहिं टारी
सेत बन्ध जे धनुष बिडारा ॥ वहू धनुष भौंहहिं सो हारा ॥

नामदारा १ बहुत अच्छी २ फूल ३-१४ बगुला ४ बादल सिर बाल ५ पूलहर ६ लाल ७-११-१२ सुरदान ८ सूर्य ९-१०-२८ बदन १३ पिया १५ माथा १६ ज्यादा १७ चाँद १८-२१-२७ बराबर १९-३१ नाम नरवत २० रोपानी २२ रोपानी २३ निगाह २४ टीका २५ आस-मान २६ साफ़ २७ रात ३० गायब ३२ निपूता ३३ बिजुली ३४ पलक के बाल ३५

हारा धनुष[1] जो बेधा राहू ॥ और धनुष कोइ गिने न काहू
कित सो धनुष भौंह मैं देखा लागा बान तित आव न लेखा
तित बानहि झाँझर भा हिया जो अस मार सो कैसें जिया ॥

सोत सोत तन बेधा रोम रोम सब देह ॥
नस नस महँ भइ सालहि[4] हाड़ हाड़ भये बेह[5]

नयन चित्र वे रूप चितेरे ॥ कमल पत्र पर मधुकर फेरे
समुद्र तरंग[7] उलटहिं जनराती[8] डोलहिं औ घूमहिं मद माती
शरद चंद महँ खंजन[10] जोरी ॥ फिर फिर लरहिं अहोरबहोरी
चपल[11] बिलोल डोल वह लागी थिर[12] न रहहिं चंचल बैरागी ॥
निरख[13] अघाहिं नहत्या हते ॥ फिर फिर श्रवन[14] नहिं लागे मते
अंग श्वेत[15] मुख श्याम सो ओहीं ॥ तिरछ चलहिं खन सूध न होहीं
सुर[16] नर गन्धप लाल[17] कराहीं ॥ उलटे चलहिं स्वर्ग[18] कहँ जाहीं

अस वै नयन चक्र दुइ भँवर समुद्र उलथाहिं ॥
जनु जिव घालहिं डोलें लै आवहिं लै जाहिं

नासिक[19] खड्ग[20] हरी धन कीरू[21] योग पटगार जिता औ बीरू ॥
शशि मुख सौंह[22] खड्ग गहि रामा रावन सो चाहै संग्रामा ॥
दुहु समुद्र महँ ननु रचि बीरू[23] ॥ सेत बन्ध[24] बाधा नल[25] नीलू ॥
तिलक फूल अस नासिक तासू औ सुगन्ध दीन्हीं विधि[26] बासू ॥
करन फूल फेरैं उजियारा ॥ जनहु शरद शशि सोहिल तारा
सोहिल चाँह[27] फूल वह ऊँचा धावहिं नखत न जाइ पहुँचा
नजनो कैसो फूल वह गढ़ा ॥ विकस[28] फूल सब चाहहिं चढ़ा

अर्जुन की कमान १ दिल २ सूराख ३-४-५ भँवरा ६ लहर ७ लाल ८ पूरनमासी का चाँद ९ ममोला १० चंचल ११ क़ायम १२ देखना १३ कान से सलाह १४ सफ़ेद १५ देवता १६ आरज़ू १७ आसमान १८ नाक १९ तलवार २० तोता २१ सामने २२ पेड़ २३ फूल २४ बानबन्दर २५ ईश्वर २६ ज़्यादा २७ खिलना २८ ॥ ॥

असवह फूल बास का आगर भा नासका[1] समुन्द्र
जेति फूल वह फूलहिं ते सब भये सुगन्द ॥

अधर[2] सुरंग पान अस खीनी[3] ॥ राती[4] सुरंग अमी रस भीनी ॥
आछहि बिहँसत[6] बोल सो राती[7] जनु गुलाल देखै बिहँसाती ॥
माणिक[8] अधर[9] दशन[10] जनु हीरा बैन[11] रिशाल खांड मुख बीरा ॥
काढ़ी अधर[12] डाभ सों चीरी ॥ रुधिर[13] चुवै जो खावै बीरी ॥
ढारे दशन[14] रसहिं रस कीली ॥ रक्त भरी बहु सुरंग रंगीली ॥
जनु प्रभात[15] राति रबि रेखा ॥ बिकसै बदन[16] कमल जनु देखा
अलक[17] भुवंगिन अधरहिं आखा गहै जो नागिन सो रस चाखा

अधर[18] अधर रस प्रेम का अलक[19] भुवंगिन बीच
तब अमृत रस पावै जब नागिन कहँ खीच ॥

दशन[20] श्याम पानहिं रंग पाके बिकसत[21] कमल फूल अति ताके
एसि चमक मुख भीतर होई ॥ जनु दाड़िम[22] औ श्याम न कोई ॥
चमकहिं दशन[23] बिहँस जो नारी बीज[24] चमक जस निशि[25] अंधियारी
श्वेत[26] श्याम अस चमकत दीठी श्याम हीर दहुँ पायत बैठी ॥
कै सो गढ़ी अस दशन अमोला ॥ मारै बीज बिहँस जो बोला ॥
रतन भीज रंग मसि[27] मइ श्यामा ओही छात पदारथ[28] नामा ॥
कित वे दशन देख रंग भीने ॥ लैगइ ज्योति नयन भये खीने[29]

दशन ज्योति होय नयन मरा[30] हृदय[31] माँझ सो पैठ
प्रगट[32] जगत अंधियार जनु गुप्त[33] वही में दीठ ॥

नाक १ होंठ २-६-१२-१८ पतला ३-१६ लाल ४-७ अमृत ५ हँसना ६ मूंगा ८ दाँत १० १४-२०-२३ मीठी बोली ११ खून १३ भोर के समय लाल सूर्य्य १५ मुहँ १९ जुल फ़ोंकी नागिनी होठों तक पड़ी रहिती १७ बाल १९ खिलना २१ अनार २२ बिजुली २४ रात २५ सफ़ेद-सियाह २६ मिस्सी २७ लाल नाम उसी को सज़ावार २८ हात २९ राह ३० दिल ३१ ज़ाहिर ३२ छिपा ३३ ॥ ✝ ॥

रसना[1] सुनहि जो कहि रस बाता | कोकिल बैन[2] सुनत मन राता[3] ॥
अमृत कोप जीभ जनु लाई ॥ | पान फूल अस बात सुहाई ॥
चातक[4] बैन सुनत हो शाती | सुने सो परै प्रेम मधु माती ॥
बिरवा सूख पाव जस नीरू[5] ॥ | सुनत बैन तस पल्लहि शरीरू ॥
बोल सेवात बुंद जनु परहीं ॥ | श्रवन[6] सीप सुख मोती भरहीं ॥
धन वै बैन[7] जो प्राण अधारू ॥ | भूंखे श्रवणहिं[8] दीन्ह अहारू ॥
उन्ह बैनहिं[9] की काहि न आशा | मोहहिं मिरग बिहँस तेहि स्वासा

कंठ[10] शारदा मोही जीभ सरस्वती काहि ॥
इन्द्र चाँद रवि[11] देवता सबै जगत मुख चाहि ॥

श्रवन[12] सुनहि जो कुन्दन सीपी | पहिरे कुण्डल सिंहल दीपी ॥
चाँद सूर्य्य दुहुँ दिश चमकाहीं | नखतहिं भरी निरखन[13] नहिं जाहीं
क्षिण क्षिण[14] करहिं बीज[15] अस काँपी | अमर मेघ महँ रहहिं न झाँपी
सूक शनीचर दुहुँ दिश मतें ॥ | होहिं निरार[16] न श्रवणहि हुतें ॥
काँपत रहहिं बोल जो बैना ॥ | श्रवणहि जनु लागहिं फिर नयना
जो जो बात सखिन सो सुना ॥ | दुहुँ दिश करहिं शीश वै धुना
खूट[17] दोउ ध्रुव तरई[18] खूटी ॥ | जानहु परहिं कच पची[19] टूटी ॥

वेद पुराण ग्रंथ जित सबै सुनै सिख लीन्ह ॥
नाद[20] बिनोद रागरस बंदक श्रवण वही विधि दीन्ह

कमल कपोल[21] वही अस छाजे ॥ | औरन काहि दई अस साजे ॥
पुहुप[22] पंग रस अमी सँवारी ॥ | सुरंग गेंद नारंग रतनारी[23] ॥
पुनि कपोल[24] बायें तिल परा ॥ | सो तिल बिरह चिनग के करी[25] ॥

ज़बान १ आवाज़ २-७-९ लाल ३ पपीहा ४ पानी ५ कान-६-८-१२ गला १० सूर्य्य ११ देखना १३ हरसाइत १४ बिजुली १५ अलग १६ बाली १७ नखत १८ छोटे नखत जो चाँद के आसपास होते हैं १९ गाने-बजाने का शौक़ ईश्वर ने दिया २० गाल २१-२४ फूल २२ लाल २३ मानिन्द २५ ॥ ॥

जो तिल देख जाय जर सोई ॥ बायें दृष्टि काह जन होई ॥
जानहुँ भँवर पद्म पर टूटा ॥ जीव दीन्ह औ वहीं न छूटा ॥
देखत तिल नयन हिंगा काढ़े ॥ और न सूझे सो तिल छाँढ़े ॥
तेहि पर अलक मंजरी डोला ॥ छुवै सो नागिन सुरंग कपोला

रक्षा करै मयूर वह नागिन हिय पर लोट ॥
केहिरे जग कोउ छुइ सकै दुइ पर बत की ओट

ग्रीव मयूर केर जस ठाढ़ी ॥ कोंड़े फेर कँडेरे काढ़ी ॥
धनि वह ग्रीव का बरनो करा ॥ बाँक तुरंग जानगहि धरा ॥
बरन परेवा ग्रीव उठावा ॥ चहै बोल तँ मैचोर सुनावा ॥
ग्रीव सुराही के अस भये ॥ अमी पियाला कारन नये ॥
पुनि तेहि ठाँव परी त्रिय रेखा ॥ तेहि सो ठाँउ होय जो देखा ॥
कनक तार सोने की करा ॥ साज कमल तेहि ऊपर धरा ॥
सूर्य्य किरन हत ग्रीव निरभली ॥ देइ पैग जात हिय चली ॥

नागिन चढ़ी कमल पर चढ़ के बैठ कमंठ ॥
कर पसार जो काल कहँ सो लागै वह कंठ ॥

कनक दंड दुइ बनी कुलाई ॥ डाँड़ी फेर कमल जनु लाई ॥
चँदन गाभ की भुजा सँवारी ॥ जन सो बेल कमल पौनारी ॥
तेहि डाँड़ी संग कमल हतोरी ॥ एक कमल की दोनों जोरी ॥
सहजहि जानहुँ मेहिदी रची ॥ मुक्ताहल लीन्हें जनु घुँघुची ॥
कर पल्लव जो हथोरिन साथा ॥ वै सब रक्त भरीं तेहि हाथा ॥
देखत हिया काढ़ जिव लेई ॥ हिया काढ़ के जान न देई ॥

निगाह १ कमल २ बाल ३ लालगाल ४ निगह बानी ५ मोर ६ छाती ७ दुनियाँ ८ तथा छाती ९ गर्दन १०-२० खराद ११ खरीदी १२ घोड़ा १३ कबूतर १४ चिड़िया १५ जगह १६-१८ तीन लकीर १७ सोना १९ साफ़ २१ कदम २२ जान से गुज़र जाय २४ सोन कीदंडी २५ नाल २६ मोती २७ अंगुली २८ दिल २९ ॥

कनक अगूठी औ नगा जड़ी ॥ | बहुहत्यारिन रकत तहिं भरी ॥

जेंमी भुजा कलाई तेहि विधि जाय न भारव ॥
कंकन हाथ होय जेहि तेहि दर्पन का सारव

हिय पाथार कुच कनक कचूरा | जानहुं दोऊ श्री फल जूरा ॥
एक पार दुवे दोनों राजा ॥ | पूरा मकनदू नहुं पिए छाजा ॥
जानहुं दुइ नदुइ क साथा ॥ | जंग भा लहू चढ़े नाहाथा ॥ ॥
पातर पेट आहि जनु पूरी ॥ | पान अधार फूल अस गोरी ॥
रोमावलि तेहि ऊपर झूमा ॥ | जानहुं दोउ भुंगम औ रूमा ॥
अलक भुंअंगिन तेहि पर लोटा | हिय कर एक खेल दुइ गोटा ॥
बोन पुकारउं कुंच दोऊ ॥ | नागधरन वह पाव न कोऊ ॥

केसहिं न वहि न नाये यौवन गर्ब उठान ॥
जो पहिले कर लावै सो पावै रतन मान ॥

भृंग लुबुध जनु माऊ न लागा | उड़ रवं उ नलिन माऊ जनु तागा
नवफिर चले देख वह पाछे ॥ | अप्सर इन्द्र केर जनु काछे ॥
जोह चले मन भा पछताऊ ॥ | अबहूं दृष्टि लाग वह माऊ ॥
वही गवन छिप अप्सर गई ॥ | भई अलोप ना परगट भई ॥
हंस लजाय समुद्र कहं खेली | हस्ती लाज धूर सिर मेली ॥
जगत में स्त्री देखी मह ॥ ॥ | उदय अस्त नारि नाकहूं ॥
नहि सराउस तौ ऐसी न कोई ॥ | ब्रह्म मंडल जो होय तो होई ॥

बरनौं नारि जहां लग दृष्टि झरोखे आय ॥
औरनो अहै अदृष्टि धन सो मोहि बरनि न जाय

सोना १ नथ नागर २ सोना ३ छाती ४ १४ सोने की कटोरी ५ नारियल दंत खंडन ६ दुनियां ८ नानमुल्क ९ बाल १० नागिन ११ छाती १२ तीर १३ गुरु १५ हाथ १६ मुख १७ भौंरी १८ कमर १९ कोका बेली २० परी २१ साड़ी पहिने २२ निगाह २३ गायब २४ जाहिर २५ हाथी २६ स्वर्ग लोक २७ नज़र २८ नज़र में नहीं २९

का धन कहौं जैसो सुकुमारा ॥ फूल के छुवे होय बिकरारा ॥
परखुरी काढ़ैं फूलन सेती ॥ सोई डासी सोर सपेती ॥
फूल समूचा रहै जो पावा ॥ व्याकुल होय नींद नहिं आवा
सहै न क्षीर खांड़ औ घीव ॥ पान अधार रहै तन जीव ॥
नस पानन की काढ़ै हेरी ॥ अधर न गड़ै फांस वह केरी ॥
मकरिक तार ताहि कर चीरू ॥ सो पहिरे जर जाय शरीरू ॥
पालंग पांवकि आछे पाटा ॥ नेत बिछाय चलै जो बाटा ॥

कहां नयन जो राखौं पलक न लाऊं ओट ॥
प्रेमक लुब्धा पावै काहि सो बड़ का छोट ॥

जो राघव धन बरन सुनाई ॥ सुना शाह मुरछा गत आई ॥
जनु मूरति वह परगट भई ॥ दरश देखाय ताहि छिप गई
जो जो मंदिर पद्मिनी लेखे ॥ सुना सो कमल कुमुद जो देखे
होय मालती धन चित पैठी ॥ और पुहुप कोइ आवन दीठी
मन होय भंवर भयो बैरागा ॥ कमल छांड़ चित और न लागा
चांद की रंग सूर्य्य जस राता ॥ और न रवत सो पूछ न बाता ॥
तब अलि अलाउदी जग सूरू ॥ लेउं नारि चितौर कै चूरू ॥

जो वह मालति मानसर अलि न मलीन्हीं जात
चितौर महं जो पद्मिनी फेर वही कहु बात ॥

ये जग सूर कहूं तुम पाहां ॥ और पांच नग चितौर माहां ॥
एक हंस है पंख अमोला ॥ मोती चुनै पदारथ बोला ॥
दूसर नग जो अमृत बसा ॥ सब बिष हरै जहां लग डसा ॥
तीसर पाहन परस बखाना ॥ लोह छुवै होय कंचन बाना

बिछाना १ बिछौना २ दूध ३ होंठ ४ कपड़ा ५ बदन ६ तखत ७ जेर अंदाज़ ८ आशिक ९ जाहिर १० कोकाबेली ११ पद्मावत १२ फूल १३ लाल १४ भंवर १५-१७ सूर्य्य १६.१९ तम्मुल १८ लाल २० पारसपत्थर २१ सोना २२

चौथ अहै सादूर अहेरी ॥ जेहि बन हस्ते धरै सब घेरी ॥
पाँचों है सो तहाँ लागना ॥ राजपंख पंखी गरजना ॥
हरनि रोझ कोइ बाच न भागा ॥ जस सुचान तैस उड़ भागा ॥

नग अमोल अस पाँचों मान समुद्र वह दीन्ह ॥
इस कंदर नहिं पाई जोरे समुद्र धस लीन्ह ॥

पान दीन्ह राघव पहिरावा ॥ दश गज मत्त घोर सो पावा ॥
अरु दूसरि कंकन की जोरी ॥ रतन जो लाग वह तीस करोरी
लाख दिनार देवाई जेंवा ॥ दारिद हरा समुद्र की सेंवा ॥
हों जेहि दिवस पद्मिनी पाऊँ ॥ तोहि राघव चित्तौर बैठाऊँ ॥
पहिले कर पाँचों नग मूठी ॥ सो नग लेउँ जो कनक अँगूठी ॥
सुरजा बीर पुरुष बरयारू ॥ नाजन नाग सिंह असवारू ॥
दीन्ह पत्रि लिख बेग चलावा ॥ चित्तौर गढ़ राजा पहँ आवा ॥

राजै पत्रि बँचावा किरपा लिखी अनेग ॥
सिंहल की जो पद्मिनी पटै देव तेहि बेग ॥

खण्ड चौंतीसवाँ लड़ाई राजा और बादशाह

सुन अस लिखा उठा जर राजा ॥ जानौ देव तड़प धन गाजा
का मोहिं सिंह देखावस आई ॥ कहौं तो शारदूल धर खाई
भलहिं जो शाह भूमिपति भारी ॥ माँग न कोऊ पुरुष की नारी ॥
जो सो चक्रवे ताकहँ राजू ॥ मन्दिर एक अपन कहँ साजू ॥
अप्सर जहाँ इन्द्र पै आवै ॥ और जो सुने न देखै पावै ॥
कंस का राज जिता जो गोपी ॥ कान्ह न दीन्ह काहुँ कहँ गोपी

शेर सुर्ख १ २० हाथी २ सी मुर्ग ३ नाम जानवर ४ शिकरा ५ खिल अत ६ हाथी मस्त ७ अशरफी ८ दक्षिना ९ खिदमत १० दिन ११ राज पर बैठाऊँ १२ सोना १३ जबरदस्त १४ कोड़ा १५ जल्द १६ मेहरबानी १७ बादल १८ बिजुली १९ ज़मीन का मालिक २१ तमाम दुनियाँ का राज २२ किला २३ परी २४ श्री कृष्णचन्द्र २५

को म्वहिँ ते अस शूर[1] अगारा ॥ चढ़ै स्वर्ग[2] घुस परै पतारा ॥

का तोहि जीव मराऊँ सकत आन का दोष[3] ॥
जो तस[4] बुझै न समुद्र जल सो बुझाय कित ओस

राजा अस न होहु रिस राता[5] ॥ सुनहु न जूड़ न जर कहु बाता ॥
मैं हौं यहाँ मरे कहँ आवा ॥ बादशाह अस जान पठावा ॥
जो तोहि भार न औरहि लीन्हा ॥ पुनि सो काल[6] उतर[7] वहि दीन्हा
बादशाह कहँ ऐस न बोलू ॥ चढ़ै तौ परै जगत महँ डोलू ॥
सूरहि[8] चढ़त लाग नहिँ बारा दहक आग तेहि स्वर्ग पताय ॥
पर बत उड़हिँ सूर[9] के फूकें ॥ यहि गढ़ छार[10] होय इक झोकें ॥
धसै सुमेर[11] समुद्र गा पाटा ॥ भूमि[12] डोल शेष फण फाटा

तासों कौन लड़ाई बैठ न चितौर खास ॥
ऊपर लेहु चँदेरी का पद्मिन इक दास ॥

जो पै घरनि[13] जाय घर केरी ॥ का चितौर का राज चँदेरी ॥
जेई[14] लेई घर कारन कोई ॥ सो घर देइ जो योगी होई ॥
हौं रनथँभौर[15] नाथ हमीरू[16] ॥ कल्प[17] माथ जे दीन्ह शरीरू[18] ॥
हौं सो रतनसेन सक बन्धी[19] ॥ राहु[20] बेध जीते सर बन्धी ॥
हनुमत सरस[21] भारे[22] जेँ काँधा ॥ राघव[23] सम समुद्र जे बाँधा ॥
बिक्रम[24] सरस कीन्ह जेँ शाका सिंहलदीप लीन्ह जो ताका ॥
जो अस लिखा भयो नहिँ ओछा जिषत सिंह की गहि को मोछा ॥

द्रव्य लेइ तौ मानौं सेव करौं गहि पाँव ॥
चाहै नारि पद्मिनी तौ सिंहलदीपहि जाँव ॥

शूरमा १ आसमान २ पाप ३ प्यास बुझे ४ लाल ५ दुशमन ६ जवाब ७ सूर्य्य ८ नाम बाजा ९ धूर १० नाम पहाड़ ११ ज़मीन १२ औरत १३ जो कोई किसी की औरत लै ले १४ नाम क़िला १५ नाम राजा १६ शिर कटाना १७ बदन १८ मशहूर १९ निशाना जीत द्रुपदी ब्याही २० बराबर २१ बोझ २२ श्री रामचन्द्र जी २३ राजा बिक्रमादित्य २४ ॥

बोल न राजा आप जनाई[1] ॥ लीन्ह उदय[2] गिरि और छिताई[3]
सप्त[4] दीप राजा शिर नावहिं ॥ औ सैन[5] चली पद्मिनी आवहिं
जाकर सेव करै संसारा ॥ सिंहल दीप लेत कित बारा ॥
जन जानेसि यह गाढ[6] तो पाहीं ताकर सबै तोर कुछ नाहीं ॥
जेहि दिन आय गढ़ी को छेकी ॥ सर बस[7] लेइ हाथ को टेकी[8] ॥
शीश[9] न झार खेह[10] के लागें ॥ सो शिर झार होय दुख आगें ॥
सेवा कर जो जियन तोहिं भाई ॥ नाहित फेर मांख[11] होय जाई ॥

जाकर जीव दीन्ह पै अगमन[12] पावै शीश[13] जो हार ॥
तेहि करनी[14] सब जानै काह पुरुष का नारि ॥

तुरुक[15] जाय कहि मरै न धाई ॥ होये इस्कन्दर[16] की नाईं ॥
सुन अमृत कजली[17] बन धावा हाथ न चढ़ा रहा पछतावा ॥
औ तेहि दीप पतंग[18] होय परा ॥ अगिन भाड़ पाँव दै जरा ॥
धर्ती लोह स्वर्ग[19] भा ताँबा ॥ जीव दीन्ह पहुँचत करै[20] लाँबा ॥
यह चितोर गढ़ सोइ पहारू ॥ सूर[21] उठै दहक होय अंगारू ॥
जे बरई[22] सकंदर सर कीन्ही ॥ समुद्र लियो धस जस वे लीन्ही
जो चढ़[23] आनी जाय जिताई ॥ तब का भै सो जीत जिताई ॥

महँ सनुझ यहि आगमन[24] सज राखा गढ़ साज ॥
काल्ह होय जेहि आवन सो चल आवै आज ॥

शुरजी पलट शाह पहँ आवा ॥ देवन मानै बहुत मनावा ॥
आग जो जरै आग पै सूझा ॥ जरत रहै न बुझाये बूझा ॥

अपनी तारीफ़ १ नाम मुल्क २-३ सातों मुल्क ४ फ़ौज ५ क़िला को घेरे ६ सब ७ ऐकना ८ शिर ९-१३ धूर १० गुस्सादिली ११ पहिले १२-२४ कियाहुवा १४ बादशाह १५ नाम बादशाह १६ जहाँ अमृत है १७ पाँखी १८ आसमान १९ हाथ २० सूर्य्य २१ जैसे सिकंदर ने दुख पाया २२ जब बादशाह आयेंगे २३ नाम पहलवान २५ ॥ ॥

ऐसे माथ न नावै देवा ॥ चढ़ै सुलेमा[1] मानै सेवा ॥
सुन के अस राता[2] सुलतानू जैसे तपै जेठ कर भानू[3] ॥
सहस[4] किरान रोष[5] तस भरा जेहि दिश देखै तेहि दिश जरा
हिन्दू देव काह बर[6] खाँचा ॥ सरक[7] न आप आग सों बाँचा ॥
यहि जग[8] आग जो भरमहिं लीन्हा सो संग आग दुहूँ जग कीन्हा

रनथंभोर[9] जस जर बुझा चितौर परै सो आग
फेर बुझाये ना बुझै जरै दिवस[10] के लाग

लिखी पत्रि चारहुँ दिश धाये जहँ तहँ उमरा बेग[11] बोलाये ॥
द्वन्द[12] घाव भा इन्द्र सकाना ॥ डोला मेरु[13] शेष[14] अकुलाना
धर्ती डोल कूर्म[15] खर भरा ॥ महनामथ[16] समुद्र महँ परा ॥
शाह बजाय चढ़ा जग जाना तीस कोस भा पहिल पयाना[17]
चितौर सौंह[18] बारगह तानी ॥ जहँ लग सुना कूच सुलतानी
उठ सरवान[19] गगन[20] लहि छाई ॥ जानहु राते[21] मेघ देखाई ॥
जो जहँ तहँ सोता अस जागा ॥ आय जोहार कटक[22] सब लागा

हस्ति[23] घोर औदर[24] पुरुष जहँ तक बेसरी[25] ऊँट
जहँ तहँ लीन्ह पलाने कटक[26] सुरह[27] अस छूट

चले सहस[28] बेसक सुलतानी तीष[29] तुरंग बाँक कनकानी
परवरी[30] चली जो पातहि पाती बरन बरन औ भाँतहि भाँती
काले[31] कुमेते[32] नीले[33] सपेती[34] खिंगी[35] कुरंग[36] बोज[37] दौर[38] केतीती
अबलक[39] अबरस[40] लखी[41] शिराजी[42] चौधर[43] चाल समुंद सब ताजी

नाम बादशाह १ लाल २-२१ सूर्य्य ३ हज़ार ४ गुस्सा ५ घमंड ६ भागना ७ दुनियां में आगसे जलाया जायगा ८ नामक़िला ९ दिन १० जल्द ११ नाम बाजा १२ नाम पहाड़ १३ नाम राजा साँप १४ कछुवा १५ उलटपलट १६ कूच १७ सामने १८ ख़ीमा १९ आसमान २० फ़ौज २२-२४-२६ हाथी २३ ख़च्चर २५ टीड़ी २७ हज़ार कुरसी २८ तेज़ घोड़ा २९ निशान ३० घोड़ोंकी ज़ात ३१ से ४३ तक ॥

क़िरमज़[1] नुक़रा[2] ज़रदा[3] भले ॥ रूपकगन[4] बोलेसर[5] चले ॥
पंचकल्यान[6] संजाब[7] बखानी महिसा[8] पर सब चुन चुन आनी
सुपूकी[9] औहिरमज़ी[10] इराक़ी[11] तुरकी[12] कही भुथार[13] बुलाक़ी[14]

शिर औ पूछ उठाये चहुँ दिश स्वास उनाहि
रोष[15] भरे जस बावरे पवन की बास[16] उड़ाहिं

लोहे सार[17] हस्ति[18] पहिराये ॥ मेघ श्याम[19] जनु गरजत आये
मेघहि चाह[20] अधिक वै कारे भयो असूझ देख अन्धियारे
जस भादौं निशि[21] आवै दीठी स्वर्ग[22] जाय हर के तेहि पीठी ॥
सोरह लख हस्ती[23] जब चाला ॥ परबत सरस चलै जगहाला
चले गैंड़ माते मद आवहिं ॥ भाराहिं हस्ति[24] गन्ध जो पावहिं
ऊपर जाय गगन[25] शिर घिसा ॥ औ धर्ती तरि कहँ धस मसा ॥
भा भू चाल चलत गजगानी जहँ पग धरहिं उठै तहँ पानी

चलत हस्ति जग काँपा चाँपा शेष पतार ॥
कूर्म[26] जे धर्ती लिये रहा बैठ गयो गज भार ॥

चले सो उमर अमीर बखाने ॥ का बरनो जस उन के बाने ॥
खुरासान[27] औ चला हरेऊ[28] ॥ गोर[29] बंगाल रहा नहिं केऊ
रहा न रूम[30] शाम[31] सुलतानू ॥ काश्मीर[32] ठट्ठा[33] मुलतानू[34] ॥
जहँ तक बड़ बड़ तुरुवा की ज़ाती माँडो[35] बाली अरु गुजराती[36] ॥
पटना[37] उड़ेसा[38] के सब चले ॥ लै गज हस्ति जहाँ लग भले
कमरू[39] कामत[40] औ पंड़वाई[41] ॥ देवगढ़[42] लेत उदय[43] गिरि आई
चला सो परबत और कमाऊँ[44] घिसया[45] नगर जहाँ लग नाऊँ

घोड़ों की ज़ात १ से ७ तक-सब दुनियां ८ घोड़े की ज़ात ९ से १४ तक-ग़ुस्सा १५ डर १६ झूल लोहे की १७ हाथी १८-२३-२४ काले बादल १९ बहुत २० सत २१ आसमान २२-२५ कछुवा जिस के ऊपर ज़मीन है २६ नाम मुल्क २७ से ४५ तक ॥ ÷ ॥

उदय[1] अस्त लहि देश जो को जानै तेहि नाउं ॥
सातों दीप[2] नवो खण्ड जुरे आय इक ठाउं[3] ॥

धन सुलतान जेहि क संसारा
वही कटक[4] अस जुरी अपारा
सबै तुर्क शिर ताज बखाने[5] ॥
तबल बाज औ बाँधे बाने ॥
लाखन मीर बहादुर जंगी ॥
चित्र[6] कमानी तीर[7] खदंगी ॥
जीमा[8] खोल राग सो मढ़े ॥
लेज़म घाल इराक़[9] हि चढ़े ॥
चमकै परवरी[10] सारि सवारी ॥
दरपन चाहि[11] अधिक उजियारी
बरन बरन औ पातहि पाती ॥
चली सो सेना[12] भातहि भाती ॥
बीहर[13] बीहर सब की बोली ॥
बिधि[14] यहि कहाँ कहाँ सो खोली

योजन सप्त[15] सप्त कर इक इक होय पयान[16] ॥
अगिलहि जहाँ पयान होय पछलहि तहाँ मिलान

डोले गढ़ गढ़पति[17] सब काँपे
जीवन पेट हाथ हिय[18] चाँपे ॥
काँपा रनथंभोर[19] डर डोला ॥
तर वर[20] गयो झुराय तँबोला
चूना गढ़[21] औ चँपा[22] तेरी ॥
काँपा माड़ो[23] लेत चँदेरी[24] ॥
गढ़ ग्वालियर[25] महँ परी मथानी
औ क़न्धार[26] मथा होय पानी ॥
कालिंजर[27] महँ परा भगाना ॥
भाग उजे गढ़[28] रहा न थाना ॥
काँपा बाँदा[29] नर दुर्रानी ॥
डर रुह[31] तास बिजय[32] गिरि मानी
काँप उदय[33] गढ़ देव गढ़[34] डेरा ॥
तब सो छिपाय आप कहँ घेरा

गढ़ गढ़पति जहँ तक सबै काँप डोल जस पात
का कहँ बोल सौंहैं[35] भा बादशाह कर छात ॥

चितौर गढ़ औ कंभल नेरी ॥
साजे दोनों जैसि सुमेरी[36] ॥

पूरब से पश्चिम तक १ सातों मुल्क २ जगह ३ फ़ौज ४ बयान ५ तसवीर ६ नामतीर ७ मूठ तात से मढ़ी ८ घोड़ा ९ निशान १० ज़्यादा ११ फ़ौज १२ अलग १३ ईश्वर १४ कोस २८-१५ कूच १६ क़िलादार १७ दिल १८ नाम क़िला १९ पेंड़ २० नाम मुल्क २१ से २४ तक - सामने २५ नाम पहाड़ ३६ ॥ ॥

दूतन कहा आय जहँ राजा ॥ चढ़ा तुर्क[1] आवै दर[2] साजा ॥
सुनि राजा दौड़ाई पाँती ॥ हिन्दू नाउँ जहाँ लग ज़ाती
चितौर हिन्दुन कर अस्थाना[3] शत्रु[4] तुर्क हठ कीन्ह पयाना[5]
आव समुद्र रहे ना बाँधा ॥ मैं हौं मेड़ भार[6] शिर काँधा
पुरवहु साथ तुम्हार बड़ाई ॥ नाहित सब कहँ मार चढ़ाई ॥
जौलहि मेड़ रहै सुख सारवा दूटहिं बार[7] जाय नहिं राखा ॥

सती जो जिय महँ सत धरै जरै न छोड़ै साथ ॥
जहँ बीड़ा तहँ चून है पान सुपारी काथ ॥

करत जो रहे शाह की सेवा ॥ तिन कहँ पुनि अस आव परेवा[8]
सब होय एक मते[9] जो सिधारे बादशाह कहँ आन जोहारे ॥
है चितौर हिन्दुन की माता ॥ गाढ़[10] परे तज[11] जाय न नाता ॥
रतनसेन है जून्हेर[12] साजा ॥ हिन्दुन माँझ आहि बड़ राजा
हिन्दुन केर पतंग कर लेखा दौर परहिं आग जो देखा ॥
कृपा[13] करहु तौ करहु समीरा[14] ॥ नाहित हमहिं देहु हँस बीरा
पुनि हम जाहिं मरहिं वह ठाऊँ[15] मेट न जाय लाज कर नाऊँ ॥

दीन्ह शाह हँस बीरा और तीन दिन[16] बीच ॥
तेहि शीतल[17] को राखे जिन्हें अगिन महँ मीच[18] ॥

रतनसेन चितौर महँ साजा आय बजाय बैठ सब राजा ॥
तोमर[19] बैस[20] पनवार[21] सवाई[22] ॥ औ गोहलौत[23] आय शिर नाई
क्षत्री[24] औ बचवान[25] बघेली[26] अगरवार[27] चौहान[28] चँदेली[29]
गहरवार[30] परहार[31] सूकेर[32] ॥ कलहँस[33] औ ठकुराय[34] जुरे ॥

बादशाह १ फ़ौज २ मकान ३ दुशमन ४ कूच ५ बोझ ६ दरवाज़ा ७ दूत ८ एक सलाह ९ मुशकिल १० छोड़ना ११ मौत का सामान १२ मेहरबानी १३ माफ़ १४ जगह १५ तीन दिन की मोहलत १६ ठंढ़ा १७ मौत १८ राजपूतों की ज़ात १९ से ३४ तक ॥ ✤ ॥

आगे ढाढ़ बजावहिं ढाढ़ी ॥ पाछे ध्वजा मरन की गाढ़ी ॥
बाजहिं संग शंख औ तूरा ॥ चन्दन खोरी भरे सेंदूरा ॥
सज संग्राम बाँध सब साका ॥ छाड़ा जियन मरन सब ताका ॥

गगन धर्ति जोटे को तेहि का गरू पहार ॥
जौ लहि जिव काया महँ परै सो अंगवे भार ॥

गढ़ तस सजा जो चाहै कोई ॥ बरष सात लग खाँगी न होई ॥
बाकी चाँह बाँक गढ़ कीन्हा ॥ औ सब कोटि चित्र सम लीन्हा
खराड खराड चौखराड सँवारे धरे बिषम गोलन के मारे ॥
ढाँवहिं ढाँव लीन्ह सब बाटी ॥ रहा न बीच जो सँचरै चाटी
बैठे धानुक कंगुरन कंगुरा ॥ भूमि न आटी अंगुरिन अंगुरा
औ बाँधे गढ़ गढ़ मतवारे ॥ फाटै भूमि होहिं जो ठाढ़े ॥
बिचबिच बुर्ज बने चहुँ फेरी ॥ बाजै तबल ढोल औ भेरी ॥

भा गढ़ राज सुमेरु जस स्वर्ग छुवै पै चाह ॥
समुद्र न लेखे लावै गंग सहस मुख नाह ॥

बादशाह हठ कीन्ह पयाना ॥ इन्द्र भंडार डोल भय माना ॥
नब्बे लख सवार जो चढ़ा ॥ जो देखा सो लोहे मढ़ा ॥
बीस सहस घुमरहहिं निशाना ॥ गुल कंचन फेरै असमाना ॥
बैरख ढाल गगन का छाई ॥ चला कटक धर्ती न समाई ॥
सहस पाँति गज मत्त चलावा ॥ घुसत अकाश धसत भुइँ आवा
वृक्ष उचार पेड़ि सो लीन्हीं ॥ मस्तक झार तार मुख दीन्हीं
चढ़हिं पहारहिं भय गढ़ लागू ॥ बन खराड खोह न देखहिं आगू

नामबाजा १. २-१९-२० कटोरी ३ लड़ाई ४ आसमान ५ उठाना ६-८ बदन ७ कमी ९ पेचदार खाई १० क़िला ११ तसवीर १२ जगह १३ चींटी न जा सके १४ चौकीदार १५ ज़मीन १६-१८ हाथी मस्त १७-२९ नामपहाड़ २१ आसमान २२-२७ हज़ार २३-२५ कूच २४ चींटी २६ फ़ौज २८ जड़ ३० ॥

कोउ काहू न सँभारै होत आव दर चाँप ॥
धर्ति आप कहँ काँपै स्वर्ग आप कहँ काँप ॥

चली कमानै जेहि सुरव गोला
लागे चँकबज्र के गढ़े ॥
तेहि पर बिषम कमानै धरी
सौ सौ मनै पियहि वै दारू ॥
माती रहहि रथहि पर परीं
जो लागै संसार न डोलहि ॥
सहँस सहस सहँस्तिन की पाती ॥

आवहि चली धर्ति सब डोला ॥
चमकहि रथ सोने के मढ़े ॥
साँचे अष्ट धात की भरी ॥
लागहि जहाँ सो टूट पहारू ॥
पारथ कहँ सौंहे उठ रवरी ॥
होय भुइँ कंप जीभ जो रवोलहि
रवाँचहि रथ डोलहि नहि माती

नदी नार सब पानी जहाँ धरै वै पाँव ॥
ऊँच खाल बन बीहर होत बराबर आव ॥

कहौ पूरगार जैसि वै नारी
उठै आग जो छाड़हि स्वासा
सेंदुर आग भूमि उपराहीं ॥
कुच गोला दुइ हिरदै लाई ॥
रसना लूक रहहि मुख रवोलै
अलक जजीर बहुत गहि बाँधे
बीर पूरगार दोउ इक ठाऊँ ॥

दारू पियहि जैसि मतवारी
धुवाँ सो लागै जाय अकासा
पहिया तरवन चमकत जाहीं
अंचल ध्वजा रहहि छिरकाई
लंका जरै सोउन के बोलै ॥
रवींचहि हस्ती टूटहि काँधे ॥
पारथ भाल गढ़े भजन नाऊँ ॥

तिलक पलीता माथे दीपान बज्र के बान ॥
जेहि हेरहि तेहि मारहि चुर कुस करै निदान

जेहि जेहि पंथ चली वे आवहि
आवहि जरत आग तस लावहि

आसमान १ तोपें २ पहिया ३ भारी ४ तथा बारूद ५ दुश्मन ६ सामने ७ हज़ार ८ हाथी ९-१६ पिंजर १० छाती ११ सीना १२ ज़बान १३ बाल १४ गरदन १५ जगह १७ दुश्मनको मारने वाली १८ क़िला तोड़ने वाली १९ दाँत २० तीर २१ देखना २२ बहुत २३ ॥ ॥

जरहिं जो परबत लाग अकासा | बन खराड धकहिं पलास को पासा
गैंडा गयंद जरे भये कारे ॥ | आवै मृगी रोज झनकारे ॥
कोयल नाग काग औ भँवरा | और जो जरे तिन हिं को सँवरा
जरा समुद्र पानि भा खारा ॥ | यमुना पूयाम भई तेहि झारा
धूम पूयाम अंत्रक्ष भये मेघा | गगन पूयाम भा धुवाँ जो भेघा
सूर्य्य जरा चाँद औ राहू ॥ | धर्ती जरी लंक भा दाहू ॥

धर्ती स्वर्ग असूझ भा तबहुँ न आग बुझाय।
उठहिं बज्र जर डंगवे धूम रही जग छाय ॥

आवै डोलत स्वर्ग पतारू ॥ | काँपे धर्ति न अँगवे भारू ॥
टूटहिं परपत मेरु पहारा ॥ | होय होय धूर उड़हिं होय छारा
सत खराड धर्ती भइ खराड खराडा | ऊपर अष्ट भये ब्रह्मंडा ॥
इन्द्र आय तेहि खराड होय छावा | चढ़ सब कटक घोर दौड़ावा ॥
जेहि पंथ चल ऐरावत हाथी ॥ | अबहिं सो डगर गगन महँ आती
औ जहँ जाम रही वह धूरी ॥ | अबहुँ बसे सो हरिचन्द पूरी ॥
गगन छिपा खेह तस छाई ॥ | सूरज छिपा रयनि होय आई ॥

गयो सिकंदर कजलि बन भयो सो तस अन्धियार
हाथ पसार न सूझे बरै लाग मसयार ॥

दिनहिं रात अस परी अचाका | भा रबि अस्त चन्द्र रथ हाँका ॥
मन्दिर जगत दीप परगसी ॥ | पंथक चलत बसेरे बसी ॥
दिन के पंख जरत उड़ भागे ॥ | निशाके निसर चरे सब लागे ॥
कमल सुकेता कुमदन फूले ॥ | चकई बिछुरा चकमन भूले ॥

ढाँख १ हाथी २ नाम जानवर ३-४ धुवाँ ५-१२ बीच ६ बादल ७ आसमान ८-९ १३-१७-२१ जलना ९ ढेर ११ बोझ न उठाना १४ नाम पहाड़ १५ धूर १६ फ़ौज १८ राह १९ नाम हाथी २० ख़ाक २२ रात २३-२९ सूर्य्य २४ मकान २५ दुनियाँ २६ रोशन २७ मुसाफ़िर २८ कोकाबेली ३० ॥ ✣ ॥

चला कटक[1] अस चढ़ा अपूरी ॥ अगलहिं पानी पिछलहिं धूरी ॥
महि[2] उजड़ी सायर[3] सब सूखा ॥ बन खराड[4] रहे न एको रूखा ॥
गढ़ गिरि[5] फूट भये सब माटी ॥ हस्ति[6] हेरान तहाँ को चाँटी[7] ॥

खेह[8] उड़ानी जाहि घर हेरत फिरत सो खेह ॥
पिय आवहिं अब दृष्टि[10] तोहिं अंजन नयन उरेह

यहि बिधि होत पयान[11] सो आवा आय शाह चितौर नियरावा ।
राजा राउ देख सब चढ़ा ॥ आव कटक[12] सब लोहे मढ़ा ॥
चहुँ दिश दृष्टि[13] परी गज[14] जूहा श्याम घटा[15] मेघ जस रूहा ॥
औरो[16] उरु कुछ सूझ न आना स्वर्ग[17] लोक घुमर हहिं निशाना
चढ़ धौराहर[18] देखहिं रानी[19] ॥ धन तुइ अस जाकर सुलतानी
कै धन रतनसेन तुइ राजा ॥ जाकहँ तुर्क कटक[20] यहि साजा
बैरख ढाल केर पर छाईं ॥ रयनि[21] होत आवै दिन माहीं

अन्ध कूप भा आवै उड़त आव तस छोर[22] ॥
तालतलावा पोखर धूर भरी ज्योनार ॥

राजै कहा कीन्ह जस करना भयो असूझ सूझ अब मरना
जहँ लग राज साज सब होऊ ॥ तत[23] खन भयो सजोउ[24] सँजोऊ
बाजे तबल अ कोट जुझाऊ चढ़ा कोप सब राजा राऊ ॥
करहिं तुरवार[25] पवन सों रीसा[26] ॥ कन्ध ऊँच असवार न दीसा ॥
का बरनों अस ऊँच तुरवारा ॥ दुइ बेरें पहुँचे असवारा
बाँधे मोर[27] छाँह शिर सारहिं ॥ भीजहिं पूँछ चँवर जनु ढारहिं
राग सँभाहा[28] पहुँचो तोपा ॥ लोहे सार पहिर सब कोपा ॥

फ़ौज १-१२-२० ज़मीन २ तालाब ३ जंगल ४ क़िला ५ पहाड़ ६ हाथी ७ चींटी ८ धूर ९ निगाह १०-१३ कूच ११ हाथियों का हलक़ा १४ काली घटा छाई १५ वारपार १६ आसमान १७ महल १८ पद्मावत १९ रात २१ रुपाक २२ तुरंत २३ सामान २४ घोड़ा २५ गुस्सा २६ मोर छल २७ तेज़-चालाक २८ ॥ ÷ ॥

तैसें चँवर बनाये औ घाले गल[1] झंप ॥
बाँध सेत[2] गज[3] गाह तहँ जो देखै सो कंप

राजतुरंगम[4] बरनौं काहा ॥ आनी छोर इन्द्र रथ बाहा ॥
ऐसो तुरंगम परी न दीठी[5] ॥ धन असवार रहहिं तेहि पीठी
जात बालका समुद्र थहाये ॥ श्वेत[6] पूँछ जनु चँवर बनाये ॥
बरन[7] बरन पखुरी अति[8] लोनी[9] ॥ जानहुँ चित्र[10] सँवारे सोनी ॥
माणिक[11] जड़े शीश[12] औ काँधे चँवर लाग चौरासी बाँधे ॥
लागे रतन[13] पदारथ हीरा ॥ बरहिं दिनहिं दीपक चहुँ फेरा
चढ़हिं कुँवर मन करहिं उछाहू[14] आगे घाल गिनै नहिं काहू ॥

सेन्दुर शीश चढ़ाये चन्दन खौरे देह ॥
सो तन काह लगाई अन्त होय जो खेहि[15] ॥

गज[16] मैमंत पुरवरी नृप बारा[17] ॥ देखै जानहुँ मेघ पहारा ॥
श्वेत[18] गयंद पीत औ राते[19] ॥ हरे श्याम घूमहिं मद माते ॥
चमकहिं दरपन[20] लोहे सारी ॥ जनु परबत पर परी अँबारी ॥
श्री[21] मेल पहिराये सूँड़े ॥ कनक[22] न भाय पाँयतर रौंदे ॥
सोने मेल सो दाँत सँवारे ॥ गिरि[23] बर टरहिं सोउ नके टारे ॥
परबत उलट भूमि[24] सों मारहिं ॥ परै जो भीर तीर अस झारहिं
ऐस गयंद[25] साजे सिंहली ॥ कोटि कूर्म[26] पीठ कल मली ॥

ऊपर कनक[27] मंजूसा लाग चँवर औ ढार ॥
भलपति बैठ भाल[28] लै औ बैठे धन्कार[29] ॥

अश्व[30] दल गज दल दोनों साजे औ घन तबल जुझारू बाजे ॥

गलखोद १ सफ़ेद २-६ नामज़ेवर ३ घोड़ा ४ नज़र ५ रंगबरंग निशान ७ बहुत ८ खूब सूरत ९ तसवीर १० जवाहिरात ११-१३ शिर १२ खुशी १४ धूर १५ हाथी १६-२५ राजा के दरवाज़ा १७ सफ़ेद हाथी १८ लाल १९ चार आईना २० टीका २१ सोना २२ पहाड़ २३ ज़मीन २४ कछुवा २६ सोने की अँबारी २७ नेज़ा २८ तीर अंदाज़ २९ घोड़े की फ़ौज ३० ॥

माथे मुकुट छत्र शिर साजा ॥ चढ़ा बजाय इन्द्र अस राजा ॥
आगे रथ सेना सब ठाढ़ी ॥ पाछे ध्वजा मरन की काढ़ी ॥
चढ़े बजाय चढ़ा जस इन्दू ॥ देवलोक गोहन भा हिन्दू ॥
जानहु चाँद नखत लै चढ़ा ॥ सूर्य्य कटक रयनि मस मढ़ा ॥
जौलहि सूर जाहि देखरावा ॥ निकस चाँद घर बाहर आवा ॥
गगन नखत जस गिने न जाहीं निकस आय तस भुइँ न समाहीं

देख अनी राजा की जग होय गयो अस झ ॥
वहिं कस होय चहत है चाँद सूर्य्य सों जूझ ॥

यहाँ राज अस साज बनाई ॥ वहाँ शाह की भई अवाई ॥
अगलें दौड़े आगे आईं ॥ पिछले पाछ कोस दस ताईं ॥
शाह आय चितोर गढ़ बाजा ॥ हस्ती सहस बीस संग गाजा ॥
उनई आय दोउ दल गाजे ॥ हिन्दू तुरुक दोउ सम बाजे ॥
दोउ समुद्र दधि उदध अपारा ॥ दोनों मेरु खरवराड पहारा ॥
कोप जो झार दुहूँ दिश मेली ॥ औ हस्ती हस्तहिं सो पेली ॥
आकुश चमक बीज अस बाजहिं गरजहिं हस्ति मेघ जनु गाजहिं

धर्ती स्वर्ग दोऊ दल जूहहिं ऊपर जूह
कोऊ टरै न टारै दोनों बज्र समूह ॥

खराड पैंतीसवाँ सुलह राजा और बादशाह

हस्तिहि सों हस्ती हठ गाजहिं ॥ जनु परबत परबत सों बाजहिं ॥
कोउ गयंद न टारें टरहीं ॥ टूटहिं दाँत सूँड़ गिर परहीं ॥
परबत आय जो परहिं तराहीं ॥ दल मह चाँप रवेह मिल जाहीं
कोइ हस्ती अस वारहिं लेहीं ॥ सूँड़ समेट पाँय तर देहीं ॥

फ़ौज १-८-१७ साथ २ तथा सुलतानी फ़ौज ३ रात की सियाही में ४ सूर्य्य ५ तथा राजा ६ आसमान ७ पहुँचा ८ हाथी १०-१४-१५-१६ बराबर ११ समुद्र दही का १२ पहाड़ १३ धूर १८ ॥ ॥

कोइ अस वार सिंह[1] होय मारहिं ॥ हन मस्तक सों सूंड़ उतारहिं ॥
गर्ब[2] गयंद[3] तन गगन[4] पसीजा ॥ रुधिर[5] चले धर्ती सब भीजा ॥
कोइ मैमत्त सभारहिं नाहीं ॥ तब जानै जब गुद[6] शिर खाहीं ॥

गगन रुधिर जस बरसे धर्ती भीज मिलाय ॥
शिर धर टूट बिलाहिं तस पानी बेग[7] बिलाय

उठो बज्र जूझ जस सुना ॥ तेहि ते अधिक[8] भयो चौगुना
बाजहिं खड्ग[9] उठी डर आगी ॥ भुइं जर चही स्वर्ग[11] कहं लागी
चमकहिं बीज होय उजियारा ॥ जेहि शिर परै होय दुइ फारा
सेन[12] मेघ अस दुहुं दिश गाजा ॥ खड्ग जो बीच बीज[13] अस बाजा
बरसहिं सेल बान होय कांदों ॥ जस बरसै सावन औ मादों ॥
लपटहिं कोप परहिं तरवारी ॥ औ गोला ओला जस भारी ॥
जूझे वीर लिखों कहं ताईं ॥ लै अप्सर[14] कैलाश सिधाईं ॥

स्वाम[15] काज नो जूझै सोइ गये मुख रात[16] ॥
जो भागे सत छांड़ के मसि[17] मुख चढ़ै बरात[18] ॥

भा संग्राम[19] न भा अस काऊ ॥ लोहे दुहुं दिश भयो अगाऊ ॥
कंदहि[20] कोदहि पुर भुइं परे ॥ रुधिर शलिलि[21] होय सायर[22] मरे
आनन्द ब्याह कहैं मस खावा ॥ अब भख जन्म जन्म कहं पावा
चौसठ योगिन खप्पर पूरा ॥ बृक[23] जम्बुक[24] घर बाजहिं तूरा ॥
गृद्ध चील्ह सब मंडफ़ छावहिं ॥ काक कलोल करहिं औ गावहिं
आज शाह हठ अनी[25] बिवाही ॥ पाई भुक्ति[26] जैसि मन चाही ॥
जेहिं जस मासू भखा परावा ॥ तस तेहि कर लै औरहिं खावा ॥

शेर १ गरूर २ हाथी ३ आसमान ४ ११ खून ५ भेजा शिर का ६ जल्द ७ भारी लड़ाई ८ बहुत ९ तलवार १० बादल सी फ़ौज १२ बिजुली १३ इन्द्रलोक की परी १४ मालिक १५ लाल १६ सियाही १७ ईश्वर के सामने १८ लड़ाई १९ तलवार की बिजुली से बहुत लोग ज़मीन में गिरे २० पानी २१ तालाब २२ भेड़या २३ सियार २४ फ़ौज २५ खुराक २६

काहू साथ न तन[1] का सकत मुवे सब पोष ॥
ओछे[2] पूर जू जानत जो नहिं आवत जोष

चाँद न टरै सूर[3] सो कोपा ॥ दूसरि छत्र सौंहि[4] के रोपा ॥
सुना शाह अस भयो समूहा[5] ॥ पेले सब हस्तिन[6] के जूहा ॥
आज चन्द्र तोर करों निपातू ॥ रहै न जगमहँ दूसर छातू ॥
सहस[7] किरन होय किरन पसारा छेका चाँद[8] जहाँ लग तारा ॥
दर[9] लोहे दरपन भा आवा ॥ घट घट जानों भानु[11] देखावा
बहु क्रोधित सेना[12] हल धाई ॥ अगिन पहार जरत जनु आई ॥
खड्ग[13] बीज सब तुर्क उठाई ॥ ओड़न[14] चन्द कमल कर[15] पाई ॥

जगमग अनी[16] देखके धाय दृष्टि तेहि लाग ॥
छुवे होय जो लोहे माँझ[18] आव तेहि आग ॥

सूरज[19] देख चाँद मन लाजा ॥ बिकसत[20] कमल कुमुद[21] भा राजा
पहिलहि चन्द आव निशि[22] पाई दिन दिनेर[23] सो कौन बड़ाई ॥
अहै जो नखत चाँद संग तपी ॥ सूर[24] की दृष्टि[25] गगन[26] महँ छिपी
की चिंता राजा मन बूझा ॥ जेहि सो स्वर्ग[27] न धर्ती जूझा ॥
गढ़पति उतर लड़े नहिं धाई ॥ हाथ परे गढ़ हाथ पराई ॥
गढ़पति इन्द्र गगन गढ़ काजा ॥ दिवस[28] न निसर रयनि[29] कर राजा
चन्द्र रवनि रहि नखतहिं भाँझा सूर्य्य न सौंहि[30] होय चहि साँझा

देखा चन्द्र भोर भा सूरज के बड़ भाग ॥
चाँद फिरा भा गढ़पति सूर्य्य गगन गढ़ लाग ॥

कटक[31] असूझ अलावल शाही आवत कोइ न सँभारै ताही ॥

तन साथ नहीं जाता चाहै मोटा हो १ ओछा पेट फरता-जो दाना है अंदाज़ रखता २ सूर्य्य ३-१४-२३-२४ सामने ४ गुस्सा ५ हाथी ६ नाश ७ हज़ार ८ तथा राजा ९ फ़ौज १०-१२-१६-३१ तलवार ११ ढाल १४ हाथ १५ निगाह १७ बीच १८ तथा बादशाह १९ खिलना २० कोका बेली २१ रात २२-२६ नज़र २५ आसमान २६-२७ दिन २८ सामने ३

उदह[1] समुद्र जस लहरे देखी | नयन देख मुख जाय न लेखी
केते बजावत उतरे थाटी ॥ | केते बजावत मिल गये माटी
केतेहिं नितहिं[2] देइ नव साजा ॥ | कबहुं न साज घटै तस राजा
लाख जाहिं आवहिं नव लाखा | फरै झरै उपनी[3] नइ शाखा ॥
जो आवै गढ़[4] लागै सोई ॥ | थिर होय रहै न पावै कोई ॥
उमर अमीर रहे जहं ताईं | सबही बाट अलंगैं[5] पाईं

लाग कटक[6] चारहुं दिश गढ़ सो पराइक दाहु[7]
सूर्य्य गहन भा चांदहि[8] चांद भयो जस राहु

अथवा दिवस[9] सूर[10] भा बासा | परी रयनि[11] शशि[12] ठवा अकाशा
चांद क्षत्र[13] दय बैठो आय ॥ | चहुं दिश नखत दीन्ह छिटकाय
नखत अकाशहिं चढ़े दिपाई ॥ | तततत लूका परहिं बुझाई ॥
परहिं सेल[14] जस परहिं बिजागी[15] | पहनहिं[16] पहन बाज उठ आगी
गोला पर गोला ढर कावहिं ॥ | चून करत चारहुं दिश आवहिं
उनई घटा बर्ष झर लाई ॥ | ओला टपकैं परे बुझाई ॥
तुरकन मुख फेरैं गढ़ लागी ॥ | एक मरै दूसर होय आगी ॥

नृपति[17] बान सन मुख परहिं सकै न कोई गाढ़[18] ॥
उनई शाह सेन[19] सब रही भोर लग ठाढ़ ॥

भयो बिहान भानु[20] पुनि चढ़ा | सहस[21] किरन जैसो बिधि[22] गढ़ा
भा धावा गढ़ लीन्ह गरेरी ॥ | कोपा कटक[23] लाग चहुं फेरी ॥
बान करोर एक मुख छूटहिं | बाजहिं[24] जहां फोंक लहि फूटहिं
नखत गगन[25] जस देखे घने | तस गढ़ फाटहिं बनहिं हने ॥

दरिया आग का १ हमेशा २ पैदा होना ३ क़िला तथा दुनियां ४ हद ५ फ़ौज ६ १९ २३ आग ७ तथा राजा ८ दिन ९ सूर्य्य १० रात ११ चांद १२ तथा रतनसेन १३ गोला १४ आग १५ पत्थर १६ राजा के तीर १७ सामाने १८ सूर्य्य २० हज़ार २१ ईश्वर २२ पहुंचना २४ आसमान २५ ॥ ÷ ॥

बान बेध साही किये राखा ॥ गढ़ भा गडुर फुलावै पाँखा ॥
उड़गा कीर[1] कढ़िन[2] हिय बाता ॥ तो पै लहैं होय मुख[3] राता ॥
पीठ दीन्ह तेहिं बानहिं लागे चाँपत जाहिं पगहिं पग आगे

चार पहर दिन जूझ भा गढ़ न टूट तस बाँक
गरू होत पै आवै दिन दिन नाकहिं नाक ॥

छेंका[4] कोट ज़ोर अस कीन्हा घुसा नगर सुरंग तहँ दीन्हा ॥
गरगज[5] बाँध कमानैं[6] धरीं ॥ बज्र अगिन मुख दारू भरीं ॥
हबशी रूमी और फिरंगी ॥ बड़ बड़गुनी और तेहि संगी ॥
जेहि की ज्योत जाहिं उपराहीं जहँ ताकहिं चूकहिं तहँ नाहीं
अष्ट धात के गोला छूटहिं ॥ गिरि पहाड़ चून होय फूटहिं ॥
इक बारहिं सब छूटहिं गोला गरजै गगन[7] धर्ति सब डोला
फूटे कोट[8] फूट जनु पीसा ॥ उड़हिं बुर्ज जाँय सब पीसा

लंका रावट[9] जस भई दाह पड़ा गढ़ सोय ॥
रावन भाल[10] जो जर लिखो कहु किम अजर सो होय

राजा केर लाग गढ़ धुई ॥ फूटे जहाँ सँवारहि सोई ॥
बाँकी बरसहिं बानक[11] करेइ ॥ रातहिं कोट चित्र[12] कै लेइ ॥
गाजे गगन[13] चढ़ा जस मेघा ॥ बरसहिं बज्र[14] शललि को ढेघा
सौसौ मन के बरसहिं गोला ॥ बरसहिं टपक तीर जस ओला
जानहु परी स्वर्ग[15] हत गाजा ॥ फाटी धर्ति आय जो नाजा[16]
गर[17] गज चूर चूर होय परहीं ॥ हस्ति[18] घोर मानुष संहरहीं[19] ॥
सबहिं कहा अब परलै[20] आवा धर्ती स्वर्ग जूझ तस लावा ॥

राजा के हवास का तोता उड़ गया १ मुशकिल २ मुँह लाल ३ घेरा क़िला ४ मरहला ५-१७ तोपैं ६ आसमान ७ क़िला ८ राख ९ माथा १० बाँके बनाने वाले ११ तसवीर १२ आसमान १३ कड़े पत्थर के गोले १४ आसमान से बिजुली गिरी १५ पहुँचना १६ हाथी १८ मरना १९ क़यामत २० ॥

ओ बज्र सनमुख मरे होय इक डंके कोड़ि लारा ॥
जगत जरै चारहु दिसा कोरे बुझावै आरा ॥

तबहूं राजा हिये न हारा ॥ राजै पवुर परचा अखारा ॥
सौंह पाह कर बैठक जहां ॥ सामहि नाच करावै तहां ॥
जंत्र परवावज आदि जो बाजा सुर मन्दिर रवाब भल साजा
बीन निपातक कमांयज गहे ॥ बाज उमरती अति कहकहे ॥
चंग उपंग नाद सुर तूरा ॥ सुहेर बंस बाजे भल तूरा
डुडुक बाज डुफ़ बाज गभीरा औ बाजहि भल झाझ मजीरा
तन्ते बितन्ते पुखे घन तारा बाजहि पाछ होय झन्कारा

जग पूरि गा रसमन मोहन पातुर नाचहि पांच
बाद पाह गढ़ छेंका राजा भूला नाच ॥

बीजा नगर कर सब गुनी ॥ करहि अलाप बुद्ध चौ गुनी ॥
प्रथमे राग भरौं तेहि कीन्हा ॥ दुसरे मालकोस पुनि लीन्हा
रागहि हिंडोल सो तिसरे गाई ॥ चौथे मेघ मलार सोहाई ॥
पचये पिरी राग भल किया छठये दीपक उदा बर दिया ॥
छओ राग गाये भल गुनी ॥ औ गाई छत्तिस रागिनी ॥
ऊपर भई सो पुतली नाचहि ॥ तर भये तुर्क कमानै खांचहि
काढ़ा माथा घूमरा झूमरा ॥ तर भये देख मीर औ उमरा ॥

सुन सुन पीरि पौ धुनहिं सब करें मलि मलि पछितांहि
कबहुं म हाथ चढ़हिं यहि कै तब यह दुख जांहि ॥

पत्थर १ इक तरफ़ २ दिल ३ खास महल ४ सामने ५ नाम बाजा ६-७-८ ९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१ मोटे बड़े तार २२ पहिले २३ नाम राग २४-२५-२६-२७-२८-२९ मुसलमान लोग तोपैं मारते थे ३० जिसने राजा की फ़ौज से फिर निकाला वह वहीं रहा ३१ फिर ३२ हाथ ३३ ॥ + ॥

छओ राग गावैं पातुरनी[1] ॥ पुनि तेहि कीन्ह लिये रागिनी
भा कल्यान[2] कान्हरा[3] कीन्हीं राग बिहाग[4] किदारा[5] लीन्हीं
ललित[6] बंगाला[7] गीतहिं सोई ॥ आसावरी[8] भयो सब कोई ॥
धना[9] शिरी सोहो[10] सो कीन्हीं ॥ भयो बिलावल[11] मारू[12] लीन्हीं
राम[13] कली गुन कली सोहाई ॥ सारंग[14] औ बिभास[15] मुह आई ॥
नित मलार[16] जो मिला सुनाई ॥ श्याम गूजरी[17] पुनि भल गाई ॥
पूरबी[18] औ देसाख[19] कुरारी[20] ॥ टोड़ी[21] गोंड़[22] सो भई निरारी

गौरी[23] गौरा[24] तर बन[25] सिद्ध अलापहिं ऊँच ॥
तहाँ तीर कहँ पहुँचहिं दृष्टि[26] जहाँ नहिं पहूँच

पतुरिन नाच दीन्ह जो पीठी ॥ पड़गइ सौंह[27] शाह की दीठी[28] ॥
देखत शाह सिंहासन गूँजा कब लग मिर्ग चन्द्र[29] तेहि भूँजा
छाँड़हिं बान जाहिं उपराहीं ॥ गर्ब[30] केर शिर सदा तराहीं
बोलत बान लाख भा ऊँचा कोई कोट[31] कोइ पवर[32] सो पहुँचा
जहाँगीर कन्नोज का राजा ॥ वहक बान पातुरि के लागा ॥
बाजा[33] बान जाँघ जस नाचा ॥ जिवगा स्वर्ग[34] परा भुइँ साँचा ॥
उड़सा[35] नाच नचिनया मारा ॥ रहसे[36] तुर्क बाज कै तारा ॥

जो गढ़ साजहिं लाख दश कोटि सँवारहिं कोट
बादशाह जब चाहैं बनै न एको ओट ॥

राजै पवर[37] अकाश चलाई ॥ परा[38] बाँध चहुँ फेर ललाई ॥
सेत बन्ध[39] जस राघव[40] बाँधा ॥ परा फेर भुइँ भार न काँधा ॥
हनुमत होय सब लाग गुहारा आवहिं चहुँ दिश चले पहारा ॥

तवायफ़ १ नाम राग रागिनी २ से २५ तक निगाह २६-२८ सामने २७ हिरन का बच्चा २९ ग़रूर ३० क़िला ३१ दरवाज़ा ३२ पहुँचा ३३ आसमान ३४ मौक़ूफ़ ३५ ख़ुश ३६ फ़ौज से बादशाह के तोपें चलीं ३७ राजा के क़िला में भूँचाल पड़ा ३८ पुल ३९ थी रामचन्द्र जी ४१ ॥

स्वेत[1] फटक जस लागे गढ़ा ॥ बाँध उठाय चहूँ गढ़ मढ़ा ॥
खराड खराड ऊपर होय पटाऊ चित्र[2] अनेक अनेक कटाऊ ॥
सीढ़ी होत जाहिं बहु भाँती ॥ जहाँ चढ़ै हरितन[3] की पाँती ॥
भागरगज[4] अस कहत न आवा जनहुँ उठाय गगन[5] लै लावा ॥

राहु लाग जस चाँदहि गढ़ लागा तस बाँध ॥
सब धड़ लील ठाढ़ भा रहा जाय गढ़ काँध ॥

राज सभा सब मंत्री बैठी ॥ देखन जाय सुन्द भइ दीठी[6] ॥
उठा बाँध तस सब गढ़ बाँधा ॥ कीजे बेग[7] भार जस काँधा ॥
उपजी आग आग जस बोई ॥ अब मत[8] क्षीन आन नहिं होई ॥
भा त्योहार जो चाँचर जोरी ॥ खेल फाग अब लाई होरी ॥
समंद[9] फाग मेल पिर धूरी ॥ कीन्ह जो शाका[10] चाही पूरी ॥
चन्दन अगर मलयगिरि काढ़ा घर घर कीन्ह सरा[11] रचि ठाढ़ा ॥
जून्हर[12] कहँ साजा रनवासू ॥ जेहि सत हिये[13] कहाँ तेहि आँसू

पुरुष न खड्ग[14] सँवारी चन्दन खौरी देह ॥
नेहरिनि[15] सेंदुर मेला चहहिं भई जर खेह[16] ॥

आठ बरष गढ़ छेंका रहा ॥ धन सुलतान कि राजा महा
आय शाह अम्बराउँ[17] जो लाई फरे झरे पै गढ़ नहिं पाई ॥
हठ जोरी तब जून्हर होई ॥ पद्मिन[18] पाव न मिन्नत[19] सोई ॥
यहि बिधि ढील दीन्ह तब ताईं दे हली की अरदासैं[20] आईं ॥
पछम हरेव[21] दीन्ह जो पीठी ॥ सो अब चढ़ा सौंह[22] कै दीठी ॥
जेहि भुइँ माथ गगन[23] पिर लागा थाने उठे आव सब भागा ॥

सफेद पत्थर १ तसवीर २ हाथी ३ मरहला ४ आसमान ५-२३ निगाह ६ जल्द ७ डरपोक ८ फाग खेलों ९ बहादुरी १० चिता ११ मौत १२ दिल १३ मरदों ने तलवार ली १४ औरत १५ खाक १६ बाग़ १७ शाह समझा कि-बेमरे १८ मुशकिल १९ अरज़ी २० नाम मुल्क २१ सामने २२ ॥

वहाँ[1] शाह चितौर गढ़ छावा | यहाँ देश अब भयो परावा ॥

परत दृष्टि[2] जेहि पंथ[3] में बाढ़ा बेर बबूर ॥
निशि[4] अन्धियारी जाय तब बेग[5] उठै जो सूर[6]

सुना शाह अरदास[7] जो पढ़ी ॥ | चिन्ता आन आन चित चढ़ी ॥
तब आगो मन चीते कोई ॥ | जो आपन चेता कछु होई ॥
मन झूठा जिव हाथ पराई ॥ | चिन्ता एक भई दुइ ठाईं ॥
गढ़ सो उरझ जाय तब छूटा ॥ | होय मिलाव कि सो गढ़ टूटा ॥
पाहन[8] कर रबि[9] पाहन हीरा ॥ | बेधों रतन पान दै बीरा ॥
शुरजा[11] सेतें कहा यहि भेऊ[12] ॥ | पलट जाहु अब मानहु सेऊ ॥
कहु तोसों पद्मिन ना लेऊं ॥ | जो राकहि[13] छाड़ गढ़ देऊं

आपन देश खाहु निहचल[14] और चँदेरी[15] लेहु ॥
समुद्र समंदन[16] कीन्ह तोहि ते पाचों नग देहु ॥

शुरजा पलट सिंह[17] चढ़ गाजा | अज्ञा[18] जाय कही जह राजा ॥
अबहूँ हिय[19] सम झरे राजा ॥ | बादशाह सो जूझ न छाजा ॥
जाकर देहिरी पृथ्वी सेई ॥ | चहै तो मारै औ जिव लेई ॥
पिंजर महँ तू लीन्ह परेवा[20] ॥ | गढ़पति[21] सो बाचै कै सेवा[22] ॥
जब लग जीभ अहे मुख तोरे | सवर उघेल बिनय[23] कर जोरे ॥
पुनि जो जीभ पकड़ जिव लेई ॥ | को खोलै को बोलै देई ॥
आगे जस हमीर[24] मैमन्ती[25] ॥ | जो तस करेसि तोर भायन्ती

देख काल्ह गढ़ टूटै राज वही कर होय ॥
कर सेवा शिर नाय के घर न घाल बुधि खोय

अलाउद्दीं १ निगाह २ राह ३ रात ४ जल्द ५ सूर्य्य ६-६ अरज़दाश्त ७ पत्थर ८ मारडालना १० नाम पहलवान ११ भेद १२ मुलाक़ात १३ यकीन १४ नाम मुल्क १५ तुहफ़ा १६ शेर १७ हुक्म १८ दिल १९ जानवर परिन्द २० क़िलादार २१ खिदमत २२ ताबेदारी २३ नाम राजा २४ अहंकारी २५ ॥ ✣ ॥

सुरजा[1] जस हमीर[2] मन ताका | और निबाही आपन शाका[3]
वह अस हौं शकबन्दी[4] नाहीं | हौं सो भोज[5] विक्रम[6] उपराहीं ॥
बरस सात मह अन्न न खाँगा | पानि पहार चुवै बिन माँगा
तेहि ऊपर जो पै गढ़ टूटा ॥ | सत शकबन्दी[7] केर न छूटा
सोरह लाख कुवर हैं मोरे | पतंग परहिं जस दीप अँजोरे[8]
जेहि दिन चाँचर चाहौं जोरी | समन्दो[9] फाग मेल के होरी
दै के घरनि जो राखत जीउ | सो कस[10] आवहिं भोसक पीउ

अबहूँ जून्हर[11] साज के कीन्ह चहूँ उजियार
होरी खेलौं रन कठिन कोउ न समेटहि छार[12]

अन राजा सो जरै नियाना[13] | बादशाह की सेव न माना
बहुतहिं अस गढ़ कीन्ह सजोना | अंत भई लंका जस रवना
जेहि दिन वह छेकै गढ़ घाटी | होय अन्न ओही दिन माटी
तू जानेसि जल चुवै पहारू | वह रोवै मन सँवर सिहारू[14]
सोतहिं सोत[15] ऐस गढ़ रोवा ॥ | कस होइहै जो होइहै धुवा ॥
सँवर पहाड़ सो ढारै आँसू ॥ | पै तोहि सूझ न आपन नाशू
आज काल्ह चाहै गढ़ टूटा ॥ | अबहुँ मान जो चाहस छूटा ॥

हैं जो पाँच नग तो सों लै पाँचौं कर भेंट ॥
मर्ग[16] सो एक गुन मानै सब औगुन कर मेंट ॥

अन सुरजा को मेटै पारा[17] ॥ | बादशाह बड़ अहै हमारा ॥
औगुन मेंट सकहि पुनि सोई ॥ | औ जो कीन्ह चहै सो होई ॥
नग पाँचों का देउँ भँडारा[20] ॥ | इस[21] कन्दर सो बाचै दारा[22] ॥

नाम पहलवान १ नाम राजा २-५-६ बहादुरी ३ बहादुर ४-८ कमी ७ रोशनी ९ फाग खेलों १० क्या किसी को मुँह देखावैंगे ११ मौत १२ राख १३ आखिर १४ खिदमत १५ नाश १६ सूराख १७ शायद १८ सचहै १९ खज़ाना २० नाम बादशाह २१-२२ ॥ ÷ ॥

जो यह बचन तुहिं माथे मोरे | सेवा करौं ठाढ़ कर जोरे ॥
पै बिन सप्त न अस मन माना | सप्त बोल बाचा परमाना
कीन्ह जो गुरु लीन्ह जग भारू | तेहि क बोल नहिं टरै पहारू
नायत माझ भँवर हत ग्रीवा | सुरजहिं कहा मुन्द भइ जीवा

सुरजै सप्त कीन्ह छल बैनहिं मीठी मीठ ॥
राजा कर मन माना मानी तुरत बसीठ ॥

हंस कनक पींजर हत आना | औ अमृत नग परस परवाना
और सुना सोने की डाँडी | शार्दूल रूपे की काँड़ी ॥
दीन्ह बसीठ सुरजा लै आई | बादशाह पहुँ आन मिलाई
ऐ जग सूर भूमि उजियारी ॥ | बिनती करहिं काग मसि कारी
बड़ परताप तोर जग तपा | नवों खराड तुहिं को न छिपा
कोह छोह दोनों तोहि पाहाँ | मारेसि धूप जियावस छाहाँ
जन मन सूर चाँद सो रूसा ॥ | गहन गिरासा पड़ा मँजूसा ॥

भोर होय जो लागै उठै रोर किये काग ॥
मसि छूटै सबरयनि की कागा जाय अभाग

करबिनती अज्ञा अस पाई ॥ | कागहिं सै आपहिं मसि लाई
पहिले धनुष नवै जब लागी | काग न लेइ देख सुर भागी ॥
अबहूँ तेहि सुर सौंह न होहीं | देखहिं धनुष चलहिं फिर ओहीं
तेहि कागहिं की कौन बसीठी | जो मुख फेर चलहिं दै पीठी ॥

ख़िदत १ हाथ २ क़सम ३ मज़बूत ४ भारी ५ नाम पहलवान ६ बात ७ क़ासिद ८ सोना ९ पारसपत्थर १० हाविन्ददस्ता ११ लालशेर १२ पिंजरा १३ सूरज १४ ज़मीन १५ काला कौवा तथा राजा १६ गुस्सा- मेहरबानी १७ सूर्य्य तथा बादशाह १८ तथा राजा १९ गुस्सा २० पकड़ा हुवा २१ पिंजरा २२ हाज़िर २३ सियाही २४-२८ रात २५ कौवा की सियाही दूर होजायगी २६ हुक्म २७ निशाने पर २९ देवता ३० मुक़ाबिल ३१ वकालत ३२ ॥ २- ॥

जो सर[1] सौंह होहिं संग्रामा[2] | कित बक[3] होत पूवेत[4] वै पूयामा
करहिं न आपन ऊजर केशा[5] | फिर फिर कहहिं परारसंदेशा
काग नाग पै दोनों बाँकी ॥ | अपनी[6] चलत पूयाम भय आँकी

मेट जाय नहिं मसिक[7] बहु भये पूयाम वे अंक ॥
सहस[8] बार जो धोवहु तौहू न मेट कलंक[9] ॥

अब सेवा[10] जो आय जोहारी ॥ | अबहू देख पूवेत[11] कहि कारी ॥
कहो जाय जो साँच न डरना ॥ | जहवाँ शरन[12] नाहिं तहँ मरना ॥
काल्ह आव गढ़ ऊपर भानू[13] ॥ | जो दै धनुष[14] सौंह हिय बानू ॥
पान बसीठ[15] मया कर पाई ॥ | लीन्ह पान राजा पहँ आई ॥
जस हम भेंट कीन्ह गा कोहू[16] | सेवा माँझ प्रीति अरु छोहू[17] ॥
काल्ह शाह गढ़ देखै आवा | सेवा[18] करहु जैसो मन भावा ॥
गुन[19] सो चलै सो बोहित[20] बोझा | जहवाँ धनुष बान तहँ सूझा

भा आयसु[21] अस राज घर बेगहि[22] करो रसोय ॥
तस सभार रस मिलवहु जेहि सु प्रीति रस होय

खण्ड पैंतीसवाँ ज्याफत बादशाह

छागर[23] मेढ़ा बड़ औ छोटी | धरंधर आनी जहँ जहँ मोटी
हिरन रोछ[24] लगना[25] बनबसी | चत्र[26] कोन छाख[27] औ ससी[28] ॥
तीतर बटई लवा न बाची ॥ | सारस गुंज[29] पुछार[30] जो नाची ॥
धरी परेवा[31] पाडुक[32] हेरी ॥ | केही[33] कदरो[34] उतर[35] बगेरी ॥
हारल[36] चरज[37] आय बन्द परे | बन ककरी[38] जल ककरी[39] धरे ॥
चकई चकवा केप[40] बिदारे ॥ | नकटा[41] लेंदी[42] सोन[43] सलारे ॥

सामने १ लड़ाई २ बगुला ३ सफेद ४-११ बाल ५ आपही काले होते ६ सियाही ७ हज़ार ८ ऐब ९ ख़िदमत १० पनाह १२ सूर्य्य १३ कमान तीर धरदे १४ क़ासिद १५ ग़ुस्सा १६ मेहरबानी १७ ख़िदमत १८ रस्सी १९ नाव २० हुवन २१ जल्द २२ बकरा २३ पाढ़ा २४ नाम जानवर २५ से ४३ तक ॥

मोट बड़े सब टोइ टोइ धरे ॥ ऊबर दूबर खड्ग[1] न चढ़े ॥

कंठ परी जब झूरी रक्त ढुरा होय आँस
कित आपन तन पोषा[2] भाख परावा माँस

धरे मच्छ पढ़ना औ रोहू ॥ धीमर धरत करै नहिं छोहू ॥
संध[4] सुगंध[5] धरे जल बाढ़े[6] ॥ टेगन[7] मुवे[8] टोय सब काढ़े ॥
सींग[9] मगोर[10] बीन सब धरे ॥ तरिपा[11] बहुत बाँब[12] बनगरे[13] ॥
मारे चरक[14] चाल्ह[15] परहासी[16] ॥ जल तज कहाँ जाय जल बासी
मन होय मीन[17] चरा सुख चारा पराजाल को दुख निरवारा ॥
माटी खाय मच्छ नहिं बाँची वाचहिं काह भोग सुख नाची
मारे कहँ सब अस कै पाले ॥ कोउ बार तेहि सरवर[18] घाले ॥

यहि दुख कंतहि[19] सार की अगमन रक्त न देह ॥
पंथ[20] भुलाय आय जल पाछे छूटे जगत सनेह

देखत गोहूँ कर हिय फाटा आनी तहाँ होय जेहि आटा ॥
तब पीसै जब पहिले धोय कापर छान माड़[21] भल होय ॥
करले[22] चढ़हि तेहि पाकहिं पूरी मूठी माँझ रहै सौ जोरी ॥
जानहु तप्त[23] पूवत[24] अरु उजरी नयनू चाहि अधिक वह कुदरी[25]
मुख मेलत खन जाहिं बिलाई सहस[26] स्वाद सो पाव जो खाई ॥
लुचई पोय पोय घिव भेई ॥ पाछे चहन खाँड़ सो जेई ॥
पूरी सुहारी करे घिव चुवा छुवत बिलाय डरहिं को छुवा

कही न जाय मिठाई कहत मीठ सत बात
खात अघात न कोई हेवर[27] जाय सिरात

तलवार १ पालना २ दया ३ क़िस्म जानवर दरियाई ४ से १६ तक मछली १७ तालाब १८ ख़ाविन्द ने मुखडाल के पहिले से ख़ून बदन में न रक्खा १९ राह भूल के पानी में फँसे झूठी दुनियाँ के मुहब्बत में २० रोटी २१ कराही २२ गर्म २३ सफ़ेद २४ मुलायम २५ हज़ार २६ बर्फ़ २७ ॥ ३० ॥

रींधे चावल बरन न जाहीं ॥ बरन बरन सब सुगंध बसाहीं
राय भोग औ काँजर रानी ॥ किसनवार रुदवा दाउद खानी ॥
कपूर काट कजरी रतनारी ॥ मधुकर ढेला जीरा सारी ॥
घीव बाड़ो औ कुवँर बिरासू ॥ रामदास आवै अति बासू ॥
कही सो साँधी लौंची वाकी सुगँटी बगरी बरहन पाकी ॥
बहुहन चढ़ दुहुन बदमन मिला औ ससार तिलक खराड़े चला
रंजहस और हँसी भोरी ॥ रूप मञ्जरी औ गुन गोरी ॥

सोरह सहस बरन अस सुगंध बासना कूर ॥
मधुकर पुहुप सो जान के आय परेसब टूट ॥

निरमल मास अनूप बघारा ॥ तेहि के आब बुरुन परकारा ॥
कटवा बटवा मिला सो बासू सीझा आना भाति गिरासू ॥
बहुती साँधी घृत हिंग बघारा औ तहँ कंकहि पीस उतारा
सेंधा लोन परा सब हाड़ी ॥ काटी कन्दमूल की आड़ी ॥
सोवा सौंफ उतारहि धनियाँ ॥ तेहि ते अधिक आव बासनियाँ
पानि उतारहि ताकहि ताका घृत परेह रहा तस पाका ॥
और लीन्ह मास के राँधा ॥ लागे चढ़े सो बड़ बड़ हाँड़ा ॥

छागर बहुत समूची धरी सरागहि भूँज ॥
जो अस जेवन जेवै उठै सिंह अस गूँज ॥

भूँजस मोसा घी महँ काढ़े ॥ लौंग मिर्च तेहि भीतर डाढ़े ॥
औ जो मास अनूप सो बाटा ॥ भयेफर फूल आब औ भाटा
नारंग दाड़िम तुरंज जम्भीरा ॥ औ हिन्दबाना बालम खीरा

तरह बतरह १ किसमिस चावल २ से २९ तक हजार ३० भँवरा ३१ फूल ३२ साफ़ ३३ सेमानिन्द ३४-४१ किस्म ३५ केसर ३६ अदरक बाँधियाना वगैरह ३७ बहुत ३८ लोहे की सीख ३९ प्याज ४० फल-फूल आब और बैंगन मास के बनाये गये ४२ अनार ४३ ॥+

कटहर बड़हर तेउ सँवारे ॥ नरियल दाख[1] खजूर छुहारे ॥
औ जानवन्त खचीचो[2] होहीं जो जेहि बरन स्वाद सो ओहीं ॥
सिरका भेय काढ़ जनु आने ॥ कमल जो भये रहहिं बिकसाने[3]
कीन्ह मसूरा[4] धन सो रसोंई ॥ जो कछु सब माँसू सो होई ॥

थारी आय पुकारी लिये सबै कर छूँछ ॥
सब रस लीन्ह रसोंई अब मोकहँ को पूँछ ॥

काटी मच्छ मेल दधि[7] धोई ॥ औ बघार चहुँ बार निचोई ॥
कड़वे तेल कीन्ह बस[8] बारू मेथी घृत सों दीन्ह बघारू ॥
युक्त युक्त सब मच्छ उतारे ॥ आँव चीर तेहि माँझ[9] उतारे ॥
औ परेह[10] तेहि चटपट राखा ॥ सो रस सुरस पाव जो चाखा ॥
भाँति भाँति तहँ खाँडा तरे ॥ अंडा तल तल बीहड़[11] धरे ॥
कहँ कहँ[12] परा कपूर बसाई ॥ लौंग मिर्च तेहि ऊपर लाई ॥
घीव टाँक महि सौंध सिरावा ॥ परेव[13] बघार कीन्ह अरदाना[14] ॥

घृत परेह[15] रेहा तस हाथ पहुँचलहि बोड़ ॥
बूढ़ खायनौ यौवन सो मेहरी की ओड़ ॥

भाँति भाँति सीझी तरकारी कयो भाँति कुम्हड़े के फारी ॥
भइ भूँजी लौका परबती ॥ रौता कीन्ह काट कै रेती[16] ॥
चूक लाय के रीँधे भाँटा ॥ अरवी कहँ भल अरहन[17] बाँटा
तुरइ चचेंड़े ढेढस तरे ॥ जीर धुँगार मेल सब धरे ॥
परवर कुंदरू भूँजे ठाढ़े ॥ ॥ बहुते घीव चुर[18] चुर के काढ़े ॥
कड़ुई काढ़ करेला काटे ॥ अदरक मेल तरे कै[19] खाटे ॥
रीँधे ठाढ़ सेव के फारे ॥ छौंक साग पुनि सौंध उतारे

अंगूर १ नाग मेवा फ़सली २ खिलना ३ मसूर की खिचड़ी ४ पद्मावत ५-६ दूध ७ भूना ८ बीच ९ इस सब बसे १० अलग ११ केसर १२ चिड़या १३ गलाना १४ बहुत घी डाला १५ कद्दूकश १६ तलना १७-१८ खटाई डाल के १९ ॥

सीझी[1] सब तरकारी भा जेवन सब ऊँच ॥
धौं का रुचै शाह कहँ केहि पर दृष्टि[2] पहुँच

घृत कराही भीतर परा ॥ भाँति[3] भाँति सब पाकहिं बरा
एकहि[4] आदि मिर्च सों पीठी औ जो दूध खाँड़ सो मीठी ॥
भई मुँगोछे[5] मिरचहिं परीं ॥ कीन्ह मुँगोरा[6] औ करपरीं[7] ॥
भई मिथौरी[8] सिरका परा ॥ सोंठ लाय के खर[9] साधरा ॥
मीठ महीव[10] औ जीरा लावा ॥ भीज बरा नैनू जनु खावा ॥
खराड़हि कीन्ह आँब चरपरा लौंग इलाची सों खराड़ बरा ॥
कढ़ी सँवारी और फुलौरी ॥ औ खंड बानी[11] लाय बेरोरी[12] ॥

पान कतर छौंके रु कौंछ हींग मिर्च औ आदि[13]
एक खराड़ जो खावै पावै सहस[14] सवाद ॥

तहरी पाक बोन[15] औ गरी ॥ परी चिरौंजी औ खरहरी[16] ॥
घृत भूँज के पाका पेठा ॥ औ भा अमृत[17] करंब कर मीठा
चंबक[18] लोहड़ा औटा खोवा भा हलुवा ब्रिव करे निचोवा
शिखरन सौंध छनाई काढ़ी जामा दही दूधि सों साढ़ी ॥
और दही के मुरंडा[19] बाँधे ॥ औ संधान[20] बहु भाँती साँधे ॥
भइ जो मिठाई कही न जाई मुख मेलत खन जाय बिलाई
मतलड़[21] छाल[22] और मरकोरी[23] माठ पेराकैं और बुँदोरी ॥

फेनी पापर भूँजे भय अनेक परकार[24] ॥
भइ जावरी[25] भजयावर सीझी सब ज्योनार

जेत प्रकार रसोंई बखानी ॥ तब भइ सब पानी सो सानी

तइयार १ निगाह २ तरह ब तरह ३-२४ अदरक ४-१३ क़िस्म खाने की ५-६-७-८-११-१२ पियाला ९ दही १० हज़ार १४ नाममेवा १५-१६ शक्कर का क़ेमाम बनाके पकाया १७ लोहे की कराही १८ लाडू १९ अचार २० क़िस्म मिठाई २१-२२-२३ खीर २५ ॥ + ॥

पानी मूल[1] परेरवो[2] कोई ॥ पानी बिना स्वाद नहिं होई ॥
अमृत पान यहि अमृत आना पानी सो घट[3] रहै पराना ॥
पानी दूध सो पानी घीव ॥ पानि घटै घट[4] रहै न जीव ॥
पानी माझ[5] समानी ज्योती ॥ पानी उपजै[6] माणिक[7] मोती ॥
पानी महँ सब निरमल[8] कला पानि जो छुवै होय निरमला[9]
सो पानी मन गर्ब[10] न करेइ ॥ पीपी[11] नाय घाले पै धरेइ ॥

मुहमद नीर[12] गँभीर जो सो तेहि मिलहि समुन्द
भरे ते भारी होरहे छूछहिं बाजहिं द्वन्द[13]

सीझ रसोई भयो बिहानू गढ़ देखे गवने सुलतानू ॥
कमल सुहाय शूर[14] संग लीन्हा राघव चेतन[15] आगे कीन्हा ॥
तत रवन[16] आय बेवान[17] जो पहुँचा मन सों अधिक[18] गगन[19] से ऊँचा
उघरी पँवर[20] चला सुलतानू जानहु चला गगन[21] कह भानू[22]
पँवरी सात सात खण्ड बाँके ॥ सातौं खण्ड गाढ़े दुइ नाके ॥
आज पँवर मुख भा निरमरा जो सुलतान आय पग[23] धरा ॥
जानु उरेह काट सब काढ़े ॥ चित्र[24] मूरते बिनवहिं ठाढ़े ॥

लख लख बैठ पँवरया[25] जेहि ते नवहिं करोर
जेहिं सब पँवर उघारे ठाढ़ भये कर[26] जोर ॥

खण्ड अरतीसवाँ किला बर्णन बादशाह

सातौं पँवरी कनक[27] केवारा सातहु पर बाजहिं घरियारा
सातहि रंग सो सातौं पँवरी तब तहँ चढ़ै फिरै नव भँवरी
खण्ड खण्ड साज पलंग औ पीढ़ी जानहु इन्द्र लोक की सीढ़ी ॥
चन्दन वृक्ष[28] सुहाई छाहाँ अमृत कुण्ड भरा तेहि माहाँ

जड़ १ देखना २ बदन ३-४ बीच ५ पैदा होना ६ जवाहिरात ७ पाक साफ़ ८-९ ग़रूर १० शिर ११ पानी १२ ढोल १३ बहादुर १४ नाम भाट १५ तुरंत १६ हवादार १७ बहुत १८ आसमान १९-२१ दरवाज़ा २० सूर्य्य २२ क़दम २३ तसवीर २४ दरबान २५ हाथ २६ सोना २७ पेड़ २८

फरे खजीजा[1] दाड़िम दाखा[3] | जो वह पंथ[4] जाय सो चाखा ॥
कनक[5] छत्र सिंहासन साजा | पैठत पवर[6] मिला लै राजा ॥
चढ़ा शाह चढ़ चितौर देखा | सब संसार पाय तर लेखा

देखा शाह गगन गढ़ इन्द्रलोक के साज ॥
कही राज फिरता कर स्वर्ग[8] करै जो राज ॥

चढ़ गढ़ ऊपर संगत देखी ॥ | इन्द्रपुरी सो जान बिशेषी
ताल तलावा सरवर[9] भरे ॥ | औ अम्बराऊ[10] चहू दिश फरे
कुवा बावरी भांतिहि भांती | मढ़ मंडफ तहं तहं चहुं पाती
राय[11] राग घर घर सुख चाऊ ॥ | कनक[12] मंदिर नग कीन्ह जड़ाऊ
निशिदिन[13] बाजहि मन्दिर तूरा[14] | रहस कूद सब लोग सें दूरा ॥
रतन[15] पदारथ नग जोबखाने | घूरन मह देखे झहिराने ॥
मंदिर मंदिर फुलवारी बारी ॥ | बार बार[16] तह चित्र[17] सवारी

पासा सार[18] कुवरस बखेलहि श्रवनहि[19] गीत उनाहिं
चैन चाउ तस देखा जनु गढ़ छेका नाहिं ॥

देखत शाह कीन्ह तहं फेरा ॥ | जहं मन्दिर पद्मावत केरा ॥
आस पास सरवर[20] चहुं पासा ॥ | मंदिर मांझ[21] जनु लाग अकाशा
कनक[22] सवार नगहि सब जरा | गगन[23] चन्द जनु नखतहि भरा
सरवर[24] चहुं दिश पुरइन फूली ॥ | देखा बारि[25] रहा मन भूली ॥
कुवरि लाख दुइ बार अगोरे[26] ॥ | दुहु दिश पवर[27] ठाढ़ कर[28] जोरे ॥
शारदूल[29] दुहु दिश गढ़ काढ़े ॥ | कलंक[30] जहि जानहु रिस ठाढ़े ॥
जानवन्त लिये चित्र[31] कटाऊ | वह तक[32] पवर सो लाग जड़ाऊ

नाममेवा १ अनार २ अंगूर ३ राह ४ सोना ५-१२-२२-३२ दरवाज़ा ६ आसमान ७ ८-२३ तालाब ९-२०-२४ बाग़ीचा १० अमीर उमरा ११ रात १३ नाम बाजा १४ जवाहिरात १५ दरवाज़ा १६-२५-२७-३२ तसवीर १७-३१ चौसर १८ कान १९ बीच २१ पेशवाई २६ हाथ २८ लालशेर २९ डकारना ३० ॥ ॥

शाह मंदिर अस देखा जनु कैलाश अनूप[1]॥
जाकर अस धौराहर[2] सो रानी केहि रूप

नाँघत पवरे[3] गये खराड साता | सतयें भूमि[4] बिछावन राता[5]॥
आँगन शाह ठाढ़ भा आय॥ | मंदिर छाँह अति शीतल[6] पाय
चहूँ पास फुलवारी बारी॥ | माँझ[7] सिंहासन धरा सँवारी
जनु बसन्त फूला सब सोने॥ | हँसहिं फूल बिकसहिं[8] फर लोने[9]
जहाँ जो ठाँव दृष्टि महँ आवा॥ | दर्पन भाव दरश देखरावा॥
तहाँ पाट[10] राखा सुलतानी॥ | बैठ शाह मन जहाँ सो रानी॥
कमल सुभाय सूर[11] सों हँसा॥ | सूर का मन चाँद[12] पहँ बसा॥

सोपै जानै नयन रस हिरदय[13] प्रेम अँगूर॥
चन्द जो बसै चकोर चित नयनहि आव न सूर[14]

रानी धौराहिर[15] उपराहीं॥ | करहिं दृष्टि[16] नहिं करहिं तराहीं
सखी सरेखी[17] साथहिं बैठी॥ | तपै सूर[18] शशि[19] आव न दीठी[20]॥
राजा सेव करै कर[21] जोरे॥ | आज शाह घर आवा मोरे॥
नट नाटक पतुरनि औ बाजा | आय अखाड़ सबै महँ साजा
प्रेमक लुब्ध[22] बहिर औ अन्धा | नाच कूद जानहु सब धन्धा
जानहु काठ नचावै कोई॥ | जोजें नाच न परगट[23] होई॥
परगट कहि राजा सों बाता॥ | गुप्त[24] प्रेम पद्मावत राता[25]॥

गीत नाद जस धन्धा दहक[26] बिरह की आँच॥
मन की डोर लाग तहँ ठाईं जहाँ सो गहि[27] पुनि[28] खाँच

गोरा[29] बादल राजा पाहाँ॥ | रावत[30] दोऊ दोउ जनु बाहाँ

बेमिसाल १ महल २-१५ दरवाज़ा ३ ज़मीन ४ लाल ५-२५ ठंढा ६ बीचों बीच ७ रिवलना ८ ख़ूबसूरत तरब्ज़ १० सूर्य्य ११-१४-१६ तथा पद्मावत १२ दिल १३ निगाह १६-२० होशियार १७ चाँद १९ हाथ २१ भराकुवा २२ ज़ाहिर २३ छिपा २४ जलना पकड़ना २७ रस्सी २८ नाममंत्री २९ सरदार ३० ॥

आय अवन राजा के लागी
बाचा पुरुष तुर्क हम बूझा
तुम नहि करो तुर्क सो मेरू
बैरी कीट न कुटिल जस काटा
प्रानु कोटि जो पाय अगोटी ॥
हम सो आछे कै पावा छातू

मूसि न जाहि पुरुष जो जागी
परगट मेरु गुप्त छल सूझा
छल पै करहि अंत के फेरू
सो मकोय राहि जारहि आटा
मीठी खाड़ जेंवाये रोटी ॥
मूल गये संग रहे नपातू ॥

यहि सो छपा बलराज जस कीन्ह चहै छार बाध
हम विचार अस आवहि मेरहि दीजे न कांध ॥

सुन राजा यहि बात न भाई ॥
मन्दहि भल जो करे भल सोई
प्रानु जो बिय दय चाहै मारा ॥
बिष दीन्हे बिषधर होय खाय ॥
मारे खड्ग खड्ग कर लिये ॥
कंवरो बिय जो पंडवन दीन्हा ॥
जो छल करै वही छल बाँजा

जहा मेर तहं नहि अस साई ॥
अंतहि भला भली कर होई ॥
दीजे नोन जान बिय सारा ॥
लोन देख लोन बिलाय ॥
मारे लोन जाय पिर दिये ॥
अंतहि दाव पंडवन लीन्हा ॥
जैसे सिंह मंजूसा साजा ॥

राजै लोन सुनावा लागा दोहो जस लोन ॥
आय कुहाय मंदिर कहं सिंह जान औ गोन ॥

कान १ चोरी होजाना २ कौल बादशाह ३ ज़ाहिर ४ मेल ५-१-१५ छिपा ६ दग़ा ७ सख़्त ८ दुशमन १०-१६ क़िला ११ घेरना १२ तथा बादशाह को बे मुरव्वत पाया १३ जड़ १४ तलवार १५ दुर्योधन १८ राजा युधिष्ठिर आदिक १९ पहुंचना २० एक ब्राह्मन ने पोर को जो पिंजरे में बन्द था निकाल लिया पोर ने उस को खाने चाहा उस ने कहा कि भलाई के बदले बदी न करना चाहिये जब तक करार होने लगी तब एक गीदर ने आके पंचायत की और कहा कि हम सूरत असली देखें तब फैसला करें जब पोर पिंजरे में चला गया ब्राह्मन ने किवड़ की बन्द करली गीदर ने कहा कि ऐ ब्राह्मन अब घर जाओ यही फैसला है २१ ॥ २० ॥

राजा की सेवहु सै दासी ॥ | तिनमहँ चुन काढ़ी चौरासी
बरण बरण सारी पहिराई ॥ | निकस मंदिर ते सेवा आई ॥
जनु निसरीं सब वीर बहूटी ॥ | रायमुनी पिंजर दुत छूटी ॥
सबै प्रथेमा यौवन सोहैं ॥ | नयन बान औ सरिंग भौंहैं ॥
मारहिं धनुष केर पिउ ओहीं | बन घट घाट धनुष जित ओहीं
काम कटाक्ष हनहिं चितहरनी | एक एकु ते आगर बरनी ॥
जानहु इन्द्र लोक ते काढ़ी ॥ | पातहि पात भई सब ठाढ़ी ॥

प्राहपूछ राघव पहँ सबते कही बैनाहि ॥
तुइ जो पद्मिनी बरनी कहु सो कौन इन माहि ॥

दीरघ आयु भूमिपति भारी | इन्ह में नाहि पद्मिनी नारी
यहि फुलवार सो बहु की दासी | कहु केतकी भवर संग बासी
वह सो पदारथ ये सब मोती ॥ | कहु वह दीप पतंग जहँ ज्योती
ये सब तरहिं सेव कराहीं ॥ | कहु वह पाँपि देखत छिपजाहीं
जब लग सूर की दृष्टि अकाप्रू ॥ | तबलग पाँपि नहि करै प्रकाप्रू ॥
सुन के प्राह दृष्टि तर नावा ॥ | हम पाहुन यहि मंदिर परावा ॥
पाहुन ऊपर देइ नाहीं ॥ | हना राहु अर्जुन पर छाहीं ॥

तपै बीज जस धर्ती सूरब बिरह के घाम ॥
कब सो दृष्टि कर बरसहि तन तरिवर होय जाम

सेव करैं दासी चहु पासा | अप्सर जानु इन्द्र कैलाप्रा
कोउ परात कोउ लोटा लाई | प्राह सभा सब हाथ धोवाई
कोइ आगे पनवार बिछावहिं | कोई जेवन लैलै आवहिं ॥

रंग बिरंग १ नाम जानवर २ नौजवान ३ तीर ४ कमान ५-६ तिरछी निगाह ७ ज्यादा ८ बयान करना ९. १० बड़ी उमर ११ ज़मीन का मालिक १२ जवाहिरात १३ छोटे नरवत १४ चाँद १५. १६ सूर्य्य १६ निगाह १७ रोप्रनी १८ नज़र २० न देखना २१ पेड़ २२ इन्द्रलोक की परी २३ ॥ ॥

कोई माँड़ जाहिँ धरि जूरी ॥ कोई भात परोसहिँ पूरी ॥
कोई लैलै आवहिँ थारा ॥ कोइ परसहिँ बावन परकारा
पहिर जो चीर परोसहिँ आवहिं दुसरी और बरन देखरावहिं ॥
बरन बरन पहिरहिं हर फेरा ॥ आव झुंड जस अप्सर केरा ॥

पुनि संधान बहु आनी परसहिँ बूकहिँ बूक ॥
करै सवार गुसाईं जहाँ परी कछु चूक ॥

जानहु नखत करहिँ सब सेवा बिन शशि सूरहिं भावन जेवा
बहु परकार फिरहिँ हर फेरें ॥ हेरा बहुत न पावा हेरें ॥
परी असूझ सबै तरकारी ॥ लोनी बिना लोन सब खारी
मच्छ छुवहिँ आवहिँ गड़काँटी जहाँ कमल तहँ हाथ न आँटी
मन लाग्यो तेहि कमल की दंडी भावै नहिँ एको कनहंडी ॥
सो जेवन नहिं जा कर भूखा ॥ तेहि बिन लाग जनु सब रूखा
अन भावत चाखी बैरागा ॥ पंचामृत जानहु बिष लागा ॥

बैठ सिंहासन गूँजै सिंह चरैं नहिं घास ॥
जब लग मिरगन पावैं भोजन करैं उपास ॥

पान लिये दासी चहुँ ओरा ॥ अमृत दानी भरे कचूरा ॥
पानी देहिँ कपूर क बासा सो नहिँ पियें दरश कर प्यासा
दरशन पान देय तौ जीऊँ ॥ बिन रसना नयनहिँ सो पीऊँ ॥
पपिहा बूँद सेवा तिह अघा ॥ कौन काज जो बरसै मघा ॥
पुनि लोटा कोपर लै आई कै निराश अब हाथ धुवाई
हाथ जो धोवैं बिरह को रोरा सँवरि सँवरि मन हाथ मरोरा
बिधि मिलाव जासो मन लागा जोरहिँ तोर प्रेम कर तागा ॥

रोटी १ कपड़ा २ रंग ३ परी ४ अचार ५ राजा ६ चाँद ७ सूर्य्य ८ बहुत तरह ९ देखना १० तथा पद्मावत ११ पहुँचना १२ तरकारी १३ बेचाहना १४ शेर १५ हिरन १६ शरबत १७ कटोरा १८ ज़बान १९ सिलफ़ची आफ़ताबा २० सताया २१ ईश्वर २२

हाथ धोय जब बैठो लीन्ह ऊब के स्वास ॥
सँवरा सोई गुसाईं[1] देय निराशहिं[2] आश ॥

भइ ज्योनार फिरा खराड[3] बानी
फिरा अरगजा[4] कंकहि बानी ॥
नग अमोल सो थारहिं भरे ॥
राजै सेव आन के धरे ॥
बिन्ती[6] कीन्ह घाल गये[7] पागा
ये जग सूर[8] सीव[9] मुहिं लागा ॥
औ गुन भरा काँप यहि जीऊ
जहाँ भानु[10] तहँ रहा न सीऊ[11]
चारहु खराड भानु[12] अस तपा ॥
जेहि की दृष्टि[13] रयनि[14] मसि[15] छिपा
औ भानहिं[16] अस निरमल[17] कला
दरश जो पावै सो निरमला
कमल भानु देखै पै हँसा ॥
औ भातेहिं चाहै परकसा

रतन[18] श्याम तहँ रयनि[19] मसि[20] पै रबिति[21] मरै[22] सँहार
कर सो दृष्टि[23] औ कृपा दिवस[24] देहु उजियार

सुन बिन्ती[25] बेहँसा[26] सुलतानू ॥
सहँसहि[27] किरन दिपै जस भानू[28]
ऐ राजा तुइ साँच जुड़ावा ॥
भइ सो दृष्टि अब सीव[29] छुड़ावा
भान[30] की सेवा जो कर जीव ॥
तेहि मसि कहाँ कहाँ तेहि सीव[31]
खाउ देश आपन कर सेवा ॥
और देउँ माड़ो तोहिं देवा ॥
लीक पषान[32] पुरुष[33] कर बोला
ध्रुव[34] सुमेरु[35] ऊपर नहिं डोला ॥
फेर बसाव[36] दीन्ह नग सूरू
लाभ देखाय लीन्ह चहि मूरू[37]
हँस हँस बोले टेके काँधा
प्रीति भुलाय चहै छल बाँधा

माया बोल बहुत कर शाह पान हँस दीन्ह
पहिले रतन[38] हाथ कै चहौं पदारथ[39] लीन्ह

माया मोह बिबश भा राजा
शाह खेल शतरंज कर साजा

ईश्वर १ जाउम्मेद २ शरबत ३ अतर ४ नज़र ५ अर्ज़ ६-२५ गर्दन ७ सूर्य्य ८-१० १२-१६-२१-२८-३० जाड़ा ९-११-२९-३१ निगाह १३ रात १४ सियाही १५-२० पाक साफ़ १७ राजा १८ रात १९ अन्धियारा नाश कर २२ अच्छी नज़र २३ दिन २४ हँसा २६ हज़ार २७ पत्थर ३२ मर्द ३३ नाम नखत ३४ पहाड़ ३५ लालच ३६ जड़ ३७ तथा राजा ३८ तथा पद्मावत

राजा है जब लग शिर घामू ॥ हम तुम घड़ि[1] के करहिं बिश्रामू[2]
दर्पन शाह भीते[3] तहँ लावा देखौं जोह झरोखे आवा ॥
खेलहिं दोऊ शाह औ राजा शाह करुष दर्पन रहि साजा
प्रेमक[4] लुब्ध पियादे पाउँ ॥ चलै सौंहि[5] ताके कह ठाउँ[6] ॥
घोड़ा दय फ़रज़ी बन्द लावा जेहि मुहरा रुख चहै सो पावा
राजा पील देइ शह मागा ॥ शह[7] दै चाहि मरै रथ खागा

पीलहि पील देखावा भयो दुहू चौ[8] दात ॥
राजा चहै बुर्द भा शाह चहै शह मात ॥

सूर[9] देख वै तरई[10] दासी ॥ जह शशि[11] तहाँ जाय परकासी[12]
सुना जो हम देहिली सुलतानू देखा आज तपै जस भानू[13] ॥
ऊँच छत्र ताकर जग माहाँ ॥ जग जो छाँह सब वहकी छाहाँ
बैठ सिंहासन गर्बहि[14] गूजा ॥ एक छत्र चारहु खण्ड भूजा ॥
निरखि[15] न जाय सौंहि[16] वह पाहीं सबै नवै कै दृष्टि[17] तराहीं ।
मन माथे वह रूप न दूजा ॥ सब रूपवन्त करहिं वह पूजा ॥
हम अस कसा कसौटी आरस[18] तुहू देख कस कंचन[19] पारस ॥

बादशाह देहली कर कित चितौर महँ आव
देख लेहु पद्मावत जे न रहैं पछताव ॥

बिकस[20] जो कुमुद[21] कही शशि[22] ठाऊँ बिकसा कमल सुनत रबि[23] नाऊँ
भइ निशि[24] शशि धौरहर[25] चढ़ी सोरह किरिन जैसि बिधि[26] गढ़ी
बेहँस झरोखे आय सरेखी[27] ॥ निरख[28] शाह दर्पन महँ देखी
होतहि दरश परस[29] भा लोना ॥ धर्ती स्वर्ग भयो सब सूना ॥

एक घड़ी १ आराम २ दीवार ३ भराहुवा ४ सामने ५-१६ जगह ६ शाह देके बाज़ी जीतना चाहा ७ मुक़ाबिल ८ सूर्य्य ९-१३-२३ नखत १० चाँद तथा पद्मावत ११-२२ रोशनी १२ ग़रूर १४ देखना १५-२८ सामने १६ निगाह १७ आईना १८ सोना १९ खिलना २० कोंकाबेली २१ रात २४ महल २५ ईश्वर २६ होशियार २७ पारसपत्थर २८ ॥

रुख मांगत रुख[1] तासों भयो | भा शह मात खेल मिट गयो ॥
राजा भेद न जानै झांपा[2] ॥ | भा बिष नारि पवन बिन कांपा
राघव[3] कहा कि लाग सपारी[4] | लै पौढ़ावहिं सेज सवारी ॥

रयनि[5] बीत गइ भोर भा उठा सूर[6] तब जाग ॥
जो देखै शशि[7] नाहीं रही करा[8] चित लाग ॥

भोजन प्रेम सो जानि जो जेवा | भंवरहिं रुचहि बास रस केवा[9] ॥
दरश देखाय जाय शशि[10] छिपी | उठा भान[11] जस योगी तपी ॥
राघव चेत शाह पहँ गयो ॥ | सूर्य्य देख कमल बिष भयो ॥
छत्रपती मन कहाँ सो पहुँचा | छत्र तुम्हार जगत पर ऊंचा ॥
पाट[12] तुम्हार देवतन पीठी ॥ | स्वर्ग[13] पताल रयनि दिन दीठी[14] ॥
छोहि[15] ते पलहहिं[16] उघटे रूखा ॥ | कोहि[17] ते महि सायर[18] सब सूखा ॥
सकल[19] जगत तुम नावै माथा ॥ | सब कर जियन तुम्हारे हाथा ॥

दिन न नयन लावहु तुम रयनि भाव नहिं जाग ॥
अबनि चिन्त अस सोये कहँ बिलम्ब अस लाग ॥

देख एक कौतुक[20] हो रहा ॥ | रह अंतरपट[21] पै नहिं अहा ॥
सरवर[22] एक देख मन सोई ॥ | रहा पानि अब पानि न होई ॥
स्वर्ग[23] आय धर्ती महँ छावा ॥ | रहा धर्ति पै धरत न आवा ॥
तिन्ह महँ पुनि इक मन्दिर ऊँचा | करन[24] अहा पै कर नहिं पहुँचा
तेहि मंडफ़ मूरत मन देखी ॥ | बिन तन बिन जिव जाय बिशेषी
पूरन[25] चन्द्र होय जनु तपी ॥ | पारस रूप दरश दै छिपी ॥
अब जहँ चतुर्दशी[26] जिव तहां ॥ | भान अमावस पावै कहां ॥

मुहँ १ छिपा २ नाम भाट ३ बुरी हवा ४ रात ५ सूर्य्य तथा बादशाह ६-११ चाँद तथा पद्मावत ७-१० ध्यान ८ कमल ९ तख़त १२ आसमान १३-२३ निगाह १४ मेहरबानी १५ हरा होना १६ गुस्सा १७ तालाब १८-२२ सब १९ तमाशा २० परदा २१ हाथ २४ चौदहीं रात का चाँद २५-२६ ॥ +

बिकसा[1] कमल स्वर्ग[2] निशि[3] जनहुँ लौंक गाबीज
यह राहु भा भानहिं[4] राघव मनहिं पतीज[5] ॥

अति बिचित्र देखौं सो ठाढ़ी
चित की चित्र लीन्ह जिव काढ़ी
सिंह[6] लंक कुंभस्थल[7] जोरू ॥
आँकुश नाग महावत मोरू ॥
तेहि ऊपर भा कमल बिकासू[8]
फिर अलि[9] लीन्ह पुहुप[10] रस बासू
दोहुँ खंजन[11] बिच बैठो सुवा ॥
दुइज का चन्द धनुष लै उवा ॥
मिर्ग[12] देखाय गवन फिर गया
शशि[13] भा नाग सूर्य्य भा दिया
सुठ ऊँचे देखत वह उचका ॥
दृष्टि[14] पहुँच कर[15] पहुँच न सका
पहुँचा[16] भयो दृष्टि गत भई ॥
गहि[17] न सका देखत वह गई

राघव हेरत[18] जोगयो अच्छत हिये समाधि ॥
वह तन[19] राघव बाघ भा सके न कै अपराध

राघव सुनत शशि[20] भुइँ धरा
युग युग राज भान[21] की किरा
वही किरान वह रूप बिशेषी
निश्चय तुम पद्मावत देखी ॥
केहर[22] लंक कुंभस्थल[23] हिया ॥
ग्रीव[24] मयूर अलक[25] रबि[26] दिया
कमल बदन औ बास समीरू[27]
खंजन[28] नयन नाशिका[29] कीरू
भौंहें धनुष शशि[30] दुइज ललाटू[31]
सब रानिन ऊपर वह पाटू[32] ॥
सोई मिरग[33] देखाय जोगयो ॥
बेनी[34] नाग दिया चित भयो ॥
दरपन महँ देखी परछाहीं ॥
सो मूरति भीतर जिव नाहीं

सबै शृंगार बनी धनि[35] अब सोली मति[36] कीज
अलक[37] जो लटकी अधर[38] पर सो गहि[39] के रस लीज

खिलना १-८ आसमान २ रात ३ सूर्य्य ४-२१-२६ मुरझाना ५ चीता की कमर ६ २२ हाथी ७-२३ भँवरा ९ फूल १० ममोला ११-२८ हिरन १२ चाँद १३-३० निगाह १४ हाथ १५ देखतेही चाहा कि आप को पहुँचाऊं १६ पकड़ना १७-३९ देखना १८ तदबीर काम न आई शेर की तरह गुस्सा किया १९ शिर २० गर्दन २४ बाल २५ हवा २७ नाक तोता की २९ माथा ३१ तख़्त ३२ हिरन ३३ चोटी ३४ पद्मावत ३५ अक़िल ३६ जुल्फ़ ३७ होंठ ३८ ॥

खराड उन्नालीसवाँ क़ैद होना राजा रतनसेन का

मीत भा मांगा बेग बेवानू ॥ चला सूर सवरा अस्थानू ॥
चलत पंथ रारवा जो पाऊ ॥ कहाँ रहै थिर चलत बटाऊ
पंथिक कह कहवाँ ससताई पंथ चलै तब पंथ सेराई ॥
छल कीजे बल जहाँ न आँटौ लीजे फूल टार के काँटा ॥
बहुत मया सुन राजा फूला चला साथ पहुँचावे भूला ॥
प्राह हेतु राजा सो बाँधा ॥ बातहि लाय लीन्ह गहि काँधा
बिष मधु सान दीन्ह रस सोई जो मुख मीठ पेट बिष होई ॥

अमी बचन औ माया कोन मुयो रस भीज ॥
प्राचुमरै अस्तुत जो तेहि बिष काहे दीज ॥

चाँद घरहि जो सूरज आवा होय सो अलोप अमावस पावा
पूछहि नरवत मलीन सो मोती सोरह कला न एको ज्योती ॥
चाद गहन आगाह जनावा ॥ राज भूल गहि प्राह चलावा ॥
पहिले पँवर नाघ सो आई ॥ ठाढ़े भये राज पहि राई ॥
सो तुषार तीस गज पावा ॥ दुदुभि औ चौघोड़ी देखावा ॥
दूजे पँवर दिया असवारा ॥ तीजे पँवर नग दीन्ह अपारा ॥
चौथे पँवर दै द्रव्य करोरी ॥ पँचये दुइ हीरा की जोरी

छठये पँवर माड़ो दियो सतये दीन्ह चँदेर ॥
सात पँवर नाघत नृपति लेगयो बाँध गरेर ॥

यहि जग बहुत नदी जल जोड़ा कौन पार भा कौन न बूड़ा ॥
कौन अन्ध भा आगु न देखा ॥ कौन भयो डीडार सरेखा ॥
व्याध भई राजा कहँ माया ॥ तन कै लापा परी भुइँ पाया

दोस्त १ सवारी २ बादप्राह ३ अकाब ४ राह ५-६ क़ायम ७ मुसाफ़िर ७-८ पहुँचना १० पकड़ना ११ प्राह १२ मीठी बात १३ दुश्मन १४ छिपजाना १५ तथा सस्ती १६ पद्मावत १७ दरवार १८ दरवाजा १९ घोड़ा २० हाथी २१ डंका २२ बरछी २३ सोना २४ होशियार २५ ॥

जेहि कारन[1] गढ़ कीन्ह अँगूठी[2] | कित छोड़े जो आवै मूठी ॥
शत्रुहि[3] कोउ पाव जो बाँधे ॥ | छोड़ आप कहँ करै बियाँधे[4]
चारा मेल धरा जस माछू ॥ | जल से निकस मरै जस कोछू[5]
शत्रुहि[6] नाग पेटारी मूँदा ॥ | बाँधा मिरग[7] पैग नहिं खूँदा

राजा धरा आन के तन पहिरावा लोह ॥
ऐसो लोह सो पहिरे चेत[8] श्याम की ओह ॥

पाँयन गाढ़ी बेड़ी परी ॥ | साँकर[9] ग्रीव हाथ हथकड़ी
औ धर बाँध मजूसा[10] मेला ॥ | ऐसो शत्रु जन होय दुहेला[11] ॥
सुनि चितौर महँ पड़ा बखाना[12] | देश देश चारहुँ दिश जाना ॥
आज नरायण फिर जग खूँदा[13] | आज सो सिंह[14] मजूसा[15] मूँदा ॥
आज खसे[16] रावन दश माथा ॥ | आज कान्ह[17] काली फणनाथा
आजहिं प्रान कंस कर ढीला | आज मीन[18] शंखासुर[19] लीला ॥
आज परे पाँडव[20] बन्द माहाँ ॥ | आज दुशाशन[21] उतरी बाहाँ ॥

आज धरा बलराजा मेला बाँध पतार ॥
आज सूर[22] दिन अथवा भा चितौर अन्धियार

देव सुलेमाँ[23] के बन्द परा ॥ | जहँ लग देव सबहिं सत हरा
शाह लीन्ह गहि कीन्ह पयाना[24] | जो जहँ शत्रु[25] सो तहाँ बिलाना
खुरासान[26] औ डरा हरेव[27] ॥ | काँपा बिदुर[28] धरा अस देव ॥
बंध उदय[29] गिरि धौला[30] गिरी ॥ | काँपी सृष्टि[31] दुहाई फिरी ॥
उवा सूर भइ सामहि करा ॥ | पाला फूट पानि होय ढरा ॥
डंडवी दाँड दीन्ह जहँ ताईं ॥ | आय दंडवत कीन्ह सबाईं ॥

जिसलिये १ घेरना २ दुशमन ३-९-२५ दुख ४ कछुवा ५ पैर बँधा हिरन नहीं भागता ७ गफ़लत का फल उठाये ८ गर्दन ९ पिंजरा १०-१५ दुखी ११ बयान १२ सख्ती १३ शेर १४ गिरवा १६ श्री कृष्णजी १७ मछली १८ नाम दैत्य १९ राजा युधिष्ठिर २० नाम बहादुर २१ सूर्य २२ नाम बादशाह २३ कूच २४ नाम मुल्क २६ से ३० तक दुनिया ३१ ॥ ५ ॥

द्वंद[१] दांड सब स्वर्गहि[२] गई ॥ भूमि[३] जो डोली इस्थिर[४] भई ॥

बादशाह देहिली महँ आय बैठ सुख पाट[५]
जेहिं जेहिं शीश[६] उठावा धर्ती धरी ललाट[७] ॥

हबशी[८] बन्दवान जिव[९] बधा ॥ तेहि सौंपा राजा अगदहा[१०] ॥
पानि पवन कहँ आपु करेई सो जिय बधिक[११] सांस बहु देई ॥
मांगत पान आग लै धावा ॥ मुंगरी एक आन शिर लावा
पानी पवन तुइँ पिया सो पिया अब को आन देय पानिया ॥
नबचि तौर जिय रहा न तोरे बादशाह है शिर पर मोरे ॥
जोहि हँकारे[१२] ही उठ चलना ॥ सो कित करो होय कर[१३] मलना
करै सो मीत गाढ़ बन्द जहां पान फूल पहुँचावै तहां ॥

जल[१४] अंजल महँ सोवा समुद्र न सँवरा जाग ॥
अब धर काढ़ा मच्छ ज्यों पानी मांगत आग ॥

पुनि चल दुइ जन[१५] पूंछन धाये वैसठ दग्ध[१६] आय देखराये
तुइँ मरि[१७] पुरी न कबहूँ देखी हाड़ जो बिथरे देख न लेखी ॥
जानी नहिं किहोब अस मुहूँ ॥ खोजे खोज न पावव कहूँ ॥
अब हम उतर[१८] देहु रे देवा ॥ कौने गर्ब[१९] न मानी सेवा ॥
तुइँ अस बहुत गाड़ खन मूंदी बहुर[२०] न निकस बार होय खूंदी
जो जस हँसै सो तैसे रोवा ॥ खेलै हँसै अभैं भुइँ सोवा ॥
जस अपने मुँह काढ़े धुवां ॥ चाहेसि परा नर्क के कुवां ॥

जरेसि मरेसि अब बांधा तैसो लाग तोहि दोष[२१] ॥
अबहूँ मांग पद्मिनी जो चाहेसि भा मोष[२२] ॥

आवाज़ मनादी १ आसमान २ ज़मीन ३ क़ायम ४ तख़त ५ शिर ६ माथा ७ हबशी दारोगा क़ैद खाना ८ जल्लाद ९ जल्लाहुवा १० जान मारने वाले ११ बोलाना १२ हाथ १३ पानी महँ पियासा १४ आदमी १५ आग १६ यमपुरी १७ जवाब १८ ग़रूर १९ फेर २० पाप २१ छूटना क़ैद से २२ ॥ ÷ ॥

पूँछहिं बहुत न बोला राजा
खन गड़वा चरनहिं लै राखा ॥
ठाँव सों साँकर औ अन्धियारा
पीछे साँप आय तहँ मेली ॥
धरहिं सँदासी छूटै नारी ॥
जो दुख कठिन न सहै पहारू
जो शिर परै आय सो सहै ॥

लीन्हेसि जियें मीच मन साजा
नित उठ दग्ध होय नौ लाखा ॥
दूसर करवट लेइ न पारा ॥
बाँका आन छुवावहिं हेली ॥
रात दिवस दुख पहुँचै भारी
सो अगवा मानुष शिर भारू ॥
कछु न बिसाय काह सों कहै

दुख जारै दुख भूजै दुख खोवै सब लाज ॥
काजहिं चाह अधिक दुख दुखी जान जेहि बाज

पद्मावत बिन कंत दुहेली ॥
गाढ़ी प्रीति सो मोसों लाई ॥
कोउ न बहुरा पुनि हर देशू ॥
जो कोइ जाय तहाँ कर होई ॥
अगम पंथ पिय तहाँ सिधावा
कुवाँ ढार जल जैसो बिछोवा
लीजर भई नाँह बिन तोहीं ॥

बिन जल कमल सूख जस बेली
देहिली जाय निचिंत होय छाई
केहि पूँछहुँ को कहै सँदेशू ॥
जो आवै कछु जान न सोई ॥
जो रे गयो सो बहुरै न आवा ॥
डोल भरा नयनहिं धन रोवा
कुवाँ परी धर काढ़ेसि मोहीं ॥

नयन डोल भर ढारै हिये न आग बुझाय ॥
घड़ी घड़ी जिय आवै घड़ी घड़ी जिव जाय ॥

नीर गभीर कहाँ हो पिया ॥
गयों हेराय बिरह के हाथा ॥
चरत जो पंख केल कर नीरा

तुम बिन फाटै सरवर हियाँ
चलत सरोवर लीन्ह न साथा
नीर कठिन कोठ आव न तीरा

मौत १ तंग पिंजरा में कैद किया २ जलाना ३ जगह ४ डोम ५ संसी ६ दिन ७ भारी ८ उठाना ९ दुख को वह जानै जिसपर पड़ै १० दुखी ११ मुशकिल राह १२ लौट १३ पद्मावत १४ रस्सी १५ खाविन्द १६ छाती १७-२० पानी गहिरा १८ तालाब १९-२१ जानवर परिन्द २२ ॥ ✢ ॥

कमल सूख परबुरी बेहिरानी[1] | गल गल के मिल छोर[2] हेरानी[3] ॥
बिरह रेत कंचन[4] तन लावा ॥ | चून चून कै खेह[5] मिलावा ॥
कनक[6] जो कनकन[7] ह्वै बेहिराई[8] | पिय पै छार[9] समेटो आई ॥
बिरह पवन यहि छार शरीरू ॥ | छारहि आन मिलावहु नीरू[10] ॥

अबहुँ जियावहु कै मया बिथुरी छार समेंट ॥
नइ काया[11] अवतार[12] नव दर्श तुम्हारे भेंट ॥

नयन सीप मोती तस आशू | तत[13] तन परहिं करै तन नाशू
पदक पदारथ[14] पद्मिन नारी ॥ | पिय बिन भइ कौड़ी बरबारी[15]
संग लेगयो रतन सब ज्योती ॥ | कंचन[16] कया काँच भइ पोती ॥
बूड़त हों दुख दग्ध[17] गंभीरा ॥ | तुम बिन कंत लाव को तीरा[18]
हिये[19] बिरह होय चढ़ा पहारू ॥ | जल यौबन सह सकै न भारू
जल महँ अगिन सो जान बिछूना | पाहन[20] जरहिं होहिं सब चूना ॥
कौनेय तन कंत तुम पाऊं ॥ | आज आग हों जरत बुझाऊं

कौन खण्ड हों हेरों[21] कहाँ बन्धु[22] हौ नाह[23] ॥
हेरे कतहु न पाऊं बसै तु हिरदय माह ॥

नागमती पिय पिय रट लागी ॥ | निशि दिन तपै मच्छ ज्यों आगी
भँवर भुजंग कहाँ हो पिया ॥ | हम ठेगों[25] तुम कानन किया
भूल न जाहि कमल के पाहां | बाँधत बिलंब न लागै नाहां[26] ॥
कहाँ सो सूर[27] पास हों जाऊं ॥ | बाँधा भँवर छोर कै लाऊं ॥
कहाँ जाउं को कहै सँदेशा ॥ | जाउं सो तहँ योगिन के भेशा
फार पटोरे[28] सो पहिरों कंथा[29] ॥ | जो मोहिं कोउ देखावै पंथा[30]

अलग १-८ धूर २-५-६ मिलना ३ सोना ४-६-१६ रेज़ा रेज़ा ७ पानी १० बदन ११ पैदा होना १२ गर्म १३ लाल जवाहिर १४ मोल १५ आग भारी १७ किनारा १८ छाती १९ पत्थर २० देखना २१ क़ैद २२ खाविन्द २३-२६ रात २४ दुशमनी २५ सूर्य २७ सारी २८ गुदड़ी २९ राह ३० ॥ ॥

वह पंथे पलक[1] जाउँ बलिहारी | पीपो[2] चरना के चलों सिधारी

को गुरु आवा होय सरिद[3] मोहि लावे पंथु[4] साह
तन मन धन बल बल करौं जोरे मिलावे नोह

कै कै कारन रोवै बाला ॥ | जनु टूटहि मोतिन के माला ॥
रोवत भई न स्वास सँभारा | नयन चुवहि जनु उरती धारा
जाकर रतन परे पर हाथा ॥ | सो अनाथ किमि जीवै नाथा ॥
पाँच रतन[5] वह रतन न लागी | बरु आव पिय रतन सभागी ॥
रही न जोत नयन भये रवीनी[6] | श्रवन न सुनै बैन तुम लीनी ॥
रसना[7] रस नहि एकौ भावा ॥ | नासिक[8] और बास नहि आवा ॥
तचत तचत तुम बिन अँग माहि लागी | पोचौं[9] दगधे बिरह अब जागी

बिरह सो जाम भस्म कै चहौं उड़ावा रेंहु[10] ॥
आय सो धन पिय मिलवे करलेवे नउ नेह ॥

पिय बिन ब्याकुल व्यापी नाँगी[11] | बिरह तपन भूयाम भये कागा
पवन पानि कह प्रीतल पीउ ॥ | जेहि देखे पलहै[12] तन जीउ ॥
कहँ सो बास मलयँगिरि नोहा[13] | जेहि कल परत देत गल बाहा
पंखिन टगनी भइ कित साथा ॥ | जेहि ते रतन परा पर हाथा ॥
होय बसंत आवहु पिय केसर | देखै फिर फूलै नागेसर[14] ॥
तुम बिन नोंह[15] रहै हिये तचा ॥ | श्रवन नहि बिरह गरुर पै बचा ॥
अब अन्धियार परा मसि[16] लागी | तुम बिन कौन बुझावै आगी

नयन[17] श्रवन रस रसना[18] सबै रवीने[19] भये नोंह ॥
कौन सो दिन जेहि भेंटे आय करै सुख छाँह

१ पल्लव २ पपीहा ३ सखा ४ पथिक ५ रत्न ६ क्षीण ७ बास ८ नाक ९ जलती १० मिटा दूँ ११ नग्न १२ जलेगा १३ नहीं १४ नागमती १५ नेत्र १६ मसि १७ नेत्र १८ जीभ १९ क्षीण

कंभलनीर[1] राय देव पालू ॥ राजा केर शत्रु[2] हिय[3] शालू ॥
उनपै सुनी कि राजा बाँधा ॥ पाछल बैर संवर छल साधा ॥
शत्रु[4] शाल तब न्योरे सोय ॥ जो घर आव शत्रु[5] की जोय ॥
दूती एक बृद्धि तेहि ठाऊं[6] ॥ ब्राह्मन जात कुमोदन नाऊं
वह हँकार[7] के बीरा दीन्हा ॥ तोरे बल मैं बल जिव कीन्हा
तुइ कुमदनी कमल के नेरे स्वर्ग[8] जो चाँद बसै तोहि हेरे[9] ॥
चितोर मह जो पद्मिन रानी करबल छल सोदै मुहिं आनी

रूप जगत मनमोहन जेहि पद्मावत नाउं ॥
कोटि द्रव्य तुहिं देहों आन करेसि इक ठाउं

कुमदिन कहा देखहों सोहों मानुष कहा देवता मोहों ॥
जस कामरू चमारिन लोना ॥ कौनहिं छल पाढ़त कै टोना ॥
विषहर[10] नाचहि पाढ़त[11] मारी औ धर मूंदे घाल पेटारी ॥
बृक्ष[12] चलै पाढ़त[13] के बोला ॥ नदी उलट बहि परबत डोला ॥
पाढ़त हरि पण्डित मति घेरी और को अन्ध गूंग औ बहिरी
पाढ़त ऐसे देवतहिं लागा ॥ मानुष का पाढ़त सों भागा ॥
पाढ़त कै हठ काढ़त पानी ॥ कहा जाय पद्मावत रानी ॥

दूती बहुत पैंच[14] कै बोली पाढ़त बोल ॥
जाकर सत[15] सुमेरु है लागे जगत न डोल ॥

दूती बहुत पकावन साधी मोतिन लड्डू[16] खरोरा बाँधी ॥
माठ पेराकै पेठे पापर ॥ पहिर बूझ दूती के कापर ॥
लै पूरी भर डाल अछूती ॥ चितौर चली पैंच[17] कै दूती ॥
बृद्धि बैश जो बाँधे पाऊं ॥ कहाँ सो यौबन कित बोसाऊं[18] ॥

नाम मुल्क १ दुशमन २-५ दिल दुख देने वाला ३ दुशमन दुख देने वाले ने चाहा कि जैसे बन पड़ै ४ जगह ६ बोलाया ७ आसमान ८ नज़र ९ साँप १० मंत्र ११-१३ पेड़ १२ कौल मज़बूत १४-१७ ईमान १५ मोती चूर के लड्डुवा ११ ख़रीदार १८ ॥ ॥

तन बूढ़ा मन बूढ़ न होई ॥ | बल मरै तौ तालच जैहोई ॥
कहा सो रूप जो जोत सब राता ॥ | कहाँ सोसैवँ होति जस माता
कहा सोतीख नैन तन ढाढ़ा ॥ | सबै मार यौवन पुनि काढ़ा ॥

सुहमद दृष्टि जोन बूझै कहै चलौं मुकुताय
यौवन रतन हेरानेउ मरौं धनी मुहँ होय

आयकुमोदनि चितौर चढ़ी ॥ | जोतनु मोहन पाटन पढ़ी ॥
पूछ लीन्ह रनवास बराता ॥ | पैठ पवँरि भीतर बड़ कोदा ॥
जहँ पद्मावत पूँछि ओनेवारी | लेइ तौ पकवान कतारी ॥
हाथ पसार थार के भेंटी ॥ | कौन्हीं बहिं राजा की बेटी
हौं ब्राह्मनु जेहि कुमदनि नाऊ | हम तुम उपनी एक कहि ठाऊ
नाउ पिता कर दूबे बेनी ॥ | सो परोहित मन्त्रिउ सेवी ॥
तुम बारी तब सिंहल दीपा ॥ | लीन्हें दधिपिया यों सीपा ॥

ठाँउ कीन्ह मैं दूसर कंसल जीरहि आय ॥
सुनि तुम कहु चितौर महँ कहँकि भेंटो जाय

सुनि निश्चै नेहर की गोई | गर लागी पद्मावत रोई ॥
नयन गगन रवि बिनु अँधियारे | पूँछि सुरव आपुहि जनु तारे
जग अँधियार सहज दिन परा | कबलगपूँछि नरवतहि तस भरा
माय बाप कित जन्मी बारी ॥ | रवि तोहु कित जन्म न मारी
कित बिवाह दुख दीन्ह दुहेलो | चितौर पंथ कंत बद मेला ॥
अब यहि जियन चाह भल मरना | भयो पहार जन्म दुख भरना ॥
निकस न जाय निलज यह जीऊ | देखौं मंदिर सून बन्द पीऊ ॥

दुनियाँ १ लाल २ गाहर ३ हाथी ४ कटीली ५ पूछा गया ६ बहुत तरह के मेवे ७ दरवाजा ८ चाँद ९. १९-२० पैदा होना १० जगह ११ बाप १२ पद्मावत का बाप १३ दूसरा खाविन्द १४ याकीन १५ मुद्दत १६ आसमान १७ सूर्य १८ गर्दन १९ भाई २० गह २१ खाविन्द २४ कैद २५ ॥ ८ ॥

कुहुक जो रोवे शशि[1] नखत[2] नयन नहिं रात[3] चकोर
अबहूँ बोले तहँ कुहुक चातक[4] कोकिल मोर

कुमदिन[5] कंठ लाग मुठ रोई ॥ पुनि लै रोग डार[6] मुख धोई ॥
तुइ शशि[7] रूप जगत उजियारी मुख न झाँप निशि[8] होय अँधियारी
सुन चकोर कोकिल दुख दुखी घुंघची भई नयन कर मुखी ॥
केतो धाय मरै कोइ बाटा ॥ सोइ पावै जो लिखा लिलाटा[9] ॥
जो बिधि[10] लिखा आन नहिं होई कित धावे कित रोवे कोई ॥
कित को इच्छा[11] कर औ पूजा ॥ जो बिधि लिखा होय नहिं दूजा
जेते कुमोदनि[12] बयने[13] करेई ॥ तस पद्मावत उतर[14] न देई ॥

सेंदुर चीर मैल तस सूख रही तस भूल ॥
जोहि शृंगार पिय तज[15] गया जन्म न पहिरे फूल

तब पकवान उ धारा दूती ॥ पद्मावत नहिं छुई अछूती ॥
मोहिं अपने पिय केर खँभारू[16] पान फूल कस होय अहारू ॥
मो कहँ फूल भये जस काँटी ॥ बाँट देहु जो चाहेसि बाँटी ॥
रतन छुवे जेहि हाथहिं सेती औ न छुवों सो हाथ सकेती ॥
दमक रंग भय हाथ मँजीठी[17] ॥ बुक्ता[18] लेउँ पै घुंघची दीठी ॥
नयन कर मुखी राती[19] काया ॥ मोती होहिं घुंघची जेहि छाया
अस कै ओछ नयन हत्यारे ॥ देखत गा पिउ गहै[20] न पारे ॥

का तोर छुवों पकवान मैं गुड़ कड़ुवा धिय रूख
जेहि मिल होत सवाद रस लै पिय गयो सुभूख

कुमदनि रही कमल के पासा बैरी सूर्य्य[22] चाँद की आशा ॥

चाँद तथा पद्मावत १ तथा सखी २ लाल ३ पपीहा ४ नामदूती ५-१२-२१ आफ़ताबा ६ चाँद ७ रात ८ माथा ९ ईश्वर १० चाहना ११ बात १३ जवाब १४ छोड़ना १५ दुख १६ लाख १७ मोती १८ लाल बदन १९ पकड़ न सके २० तथा राजा २२ ॥ ॥

बहु कुँभलान रही भै चूरू[1] ॥ बिकसे[2] रयनि[3] बातहिं कर भोरू
कस तुइ बारि[4] रहेसि कुँभलानी सूख बेल जस पाव न पानी ॥
अबहीं कमल कली तुम बारी कोमल[5] बैस उठत पौनारी[6] ॥
बेनी तोर मैल सिर रूखी ॥ सरवर[7] माँह रहेसि कस सूखी ॥
पान बेल बिधि[8] कयाँ[9] जमाई ॥ सींचत रही तोह पलहाई[11] ॥
कर सृंगार मुंख फूल तँबोला बैठ सिंहासन झूलहिं डोला

हार चीर नित पहिरो सिर की करो सँभार ॥
भोग मान दिन दस लिये यौबन गये न बारे[12] ॥

बेहँस जो कुमदनि यौबन कहा कमल न बिकसा[13] संपुट रहा ॥
ऐ कुमदनि यौबन तेहि माहाँ जो आछे पिय की सुख छाहाँ ॥
जाकर छत्र सो बाहेर छावा ॥ सो उजार घर कौन बसावा ॥
अहा जो राजा रतन अंजूरा[14] केहक सिंहासन केहक पटोरा[15]
को पलंग को पौढ़े मोढ़े[16] ॥ सोवन हार परा बन्द गाढ़े ॥
चहुँ दिस यह घर भा अन्धियारा सब सृंगार लै साथ सिधारा
काया[17] बेल जान तब जामी ॥ सींचनहार आव घर स्वामी[18] ॥

तौलहि रहौं झुरानी जौलहि आव सो कंत[19] ॥
यही फूल यह सेंदुर होय सो उठै बसंत ॥

जन तुइ बारि[20] करेसि अस जीउ जौ लहि यौबन[21] तौलहि पीउ ॥
पुरुष[22] संग आपन कहु केरा ॥ एक कुहा दुसर सों हेरा[23] ॥
यौबन जल दिन दिन जस घटा ॥ भँवर छिपान हंस पर गटा[24] ॥
शुभ्र[25] सरोवर जो लहि नीरा[26] ॥ बहु आदर पंखी बहु तीरा[27] ॥

भुरझाई हुई १ खिलना २-१३ रात ३ लड़की ४-२० मुलायम उमर ५ छाती उठती हुई ६ चोटी ७ तालाब ८ ईश्वर ९ बदन १०-१७ हरी ११ वक्त १२ ऐशनी १४ कपड़ा १५ मोढ़ा १६ खाविन्द १८-१९ जवानी २१ मर्द २२ देखना २३ ज़ाहिर २४ भराहुवा तालाब २५ पानी २६ किनारा २७ ॥ ॥

नीरे[1] घटै पुनि पूँछन कोई ॥ परसे[2] जो लीज हाथ रहि सोई ॥
जबलग कालिंद होय बिरासी[4] पुनि सुरेसरि[5] होय समुद्र परासी
यौवन भँवर फूल तन तोरा ॥ वर्ध पूँछ जस हाथ मरोरा ॥

यौवन कृष्ण तन करन[7] मया[8] गोत नहिं साथ ॥
छलकै जायहि बानपै[9] धनुय[10] छाँड़ दुइ हाथ ॥

जो पिय रतन सेन मोर राजा ॥ बिन पिय यौवन कौने काजा
जो नहिं जिव तो यौवन कहे ॥ बिन जिव यौवन काह सो अहे
जो जिव तौ यहि यौवन भला ॥ आपहि जैसा करै निर मला[11] ॥
कुलकर पुरुष[12] सिंह[13] जेहि केरा तेहि थल कैसि सियार बसेरा
हिया[15] फाड़ कूकुर तेहि केरा ॥ सिंह तजि सियार मुख हेरा[16] ॥
यौवन नीर[17] घटे का घटा ॥ सत[18] के बेर न जाय हिय[19] फटा ॥
सघन[20] मेघ ह्वै पयाम[21] बरीसहिं यौवन नये तरवेर[22] ह्वै दीसहिं ॥

रावन पाप जो जिव धरा दोउ जगत मुँह कार ॥
राम सत्य जो मन धरा ताहि छलै को पार

कित पावसि पुनि यौवन राता[23] मैं मैं चढ़ा पयान शिर छाता
यौवन बिना वृद्धि हो नाउं ॥ बिन यौवन थाकै सब ठाँठें ॥
यौवन हेरत मिलै न हेरा ॥ तेहि पुनि जाहिं करहिं नहि फेरा
अहहिं जो केश नग भँवर[24] जो बसा पुनि बक[27] होहिं जगत सब हँसा
सँवर सेवन चेत कर सुवा ॥ पुनि पछतास अंत हो भुवा ॥
रूप तोर जग ऊपर लोना[28] ॥ यहि यौवन पाहुन जल सोना
भोग विलास केर यह बेरा ॥ मान लेहु पुनि को केहि केरा ॥

पानी १ सुख २-४ यमुना तथा जवानी ३ गंगा तथा बुढ़ापा ५ जवानी ६ नाम राजा दानी ७ मुहब्बत ८ तीर ९ कमान १० साफ़ ११ ख़ाविन्द ब्याहा हुवा १२ शेर १३ जगह १४ छाती १५-१९ देखना १६ पानी १७ ईमान १८ बादल २० ख़ाविन्द २१ पेड़ २२ लाल २३ मल्ल २४ मुक़ाम २५ साँप २६ बगुला २७ ख़ूब मूरत २८

उठत कोप जस तरवर तस यौबन तोहि रात
तौ लह रंग लहो रच पुनि सो पिय रहो पात

कुमदनि बैन सुनत ही जरी ॥ पद्मिन हिये आग जनु परी ॥
रंग ताकर हौं जारौं रचा ॥ आपन तजै जो पराये लचा ॥
दूसर करै जाय दुइ बाटा ॥ राजा दुइ न होहिं इक पाटा ॥
जेहि जिय प्रेम प्रीति दृढ़ होई ॥ सुख सुहाग सों बैठो सोई ॥
यौबन जाउ जाउ सो भँवरा ॥ पिया की प्रीति न जाय जो सँवरा
यहि जग जो पिय करहिं न फेरा ॥ वह जग मिलहिं जो दिन दिन मेरा
यौबन मोर रतन जहँ पीउ ॥ बल सो पिय पर यौबन जीउ ॥

भरथरि बिछोहि पिंगला आह करत जिव दीन्ह
हौं पापिन जो जियत हौं यही दोष हम कीन्ह

पद्मावत सो कौन रसोई ॥ जहँ प्रकार दूसर नहिं होई ॥
रस दूसर जेहि जीभहि बैठा ॥ सो जाने रस खटा औ मीठा ॥
भँवर बास बहु फूलहि लेई ॥ फूल बास बहु भँवर न देई ॥
तुइ रस पुरुषन दूसर पावा ॥ तेहि जाना जेहि लीन्ह परावा
इक चुल्लू रस भर नहिं हिया ॥ जौ लहि नहिं फिर दूसर पिया
तोर यौबन जस समुद्र हिलोरा ॥ देख देख जिय बूड़ै मोरा
रंग और नहिं पाई वैसे ॥ जन्म और तुइ पावत कैसे

देख धनुष तोर नयना मोहिं लागा बिष बान
बेहँस कमल जो मानै भँवर मिलाऊँ आन

कुमदनि तुइ बैरिन नहिं धाई ॥ मोहिं मसि बोल छलावसि आई

पेंड़ १ लाल २ नामदूती ३-२३ बात ४ दिल ५-१९ छोड़ना ६ दूसरराह तथा नर्क ७ तख़्त ८ मज़बूत ९ मुलाक़ात १० कुरबान ११ नाम राजा १२ जुदाई १३ नाम रानी १४ पाप १५ दुइ तरह १६ मज़ा १७ मर्द १८ तथा बुढ़ापा २० हँसना २१ तथा दूसरा खाविन्द २२ कारख २४ दग़ा २५ ॥ ॥

निरमल[1] जगत नीर[2] कर नामा | जो मसि[3] परै होय सो पूयामा[4]
जहवाँ धर्म पाप नहिं दीसा | कनक[5] मुहाग माँझ जस सीसा
जो मसि परै होय शशि[6] कारी | सो हँस लाय देहेसि मोहिं गारी
कापर मुहँ न छूट मसि अंकू[7] | सो मसि लाय मोहिं देस कलंकू[8]
पूयाम भँवर मोर सूरज करा | और जो भँवर पूयाम मसि भरा
कमल भँवर रबि[9] देखै आँखी | चन्दन पास न बैठै माँखी ॥

पूयाम समुद्र मोर निरमल[10] रतन सेन जग[11] सेन
दूसर सर[12] जो कहावै सो बिलाय जस फेन

पद्मिन पुनि मसि बोल न बैनी[13] | सो मसि देख दुहूँ तोर नयना
मसि शृंगार सब काजर बोला | मसक बुंद तिल सोहिं कपोला[14]
लोना[15] सोई जहाँ मसि रेखा ॥ | मसि पुतरिन तेहि से जग देखा
जो मसि घाल नयन दुहुँ लीन्हीं | सो मसि फेर जाय नहिं कीन्हीं
मसि मुद्रा[16] दुइ कुच[17] उपराहीं ॥ | मसि भँवरा जस कमल भवाहीं
मसि केशहि[18] मसि भौंह उरेहीं | मसि बिन दशन[19] शोभ नहिं देहीं
सो कस श्वेत[20] जहाँ मसि नाहीं | सो कस पिंड[21] न जहँ परछाहीं

अस देवपाल राउ तस छत्र धराशिर फेर ॥
चितौर राज बिसरगा गयो जो कंभल[22] नेर

सुन देवपाल जो कंभल नेरी | पंकज[23] नयन भौंह धन[24] फेरी
शत्रु[25] मोर पिय कर देवपालू ॥ | सो कित पूच सिंह सर[26] भालू[27] ॥
दुखन भरा तन जेत न केशा | तेहेक सँदेशा सुनावसि बेशा
सोन नदी अस मोर पिय गरवा | पाँहन[28] होय परै जो हरवा[29] ॥

पाक साफ़ १-१० पानी २ सियाही ३ काला ४ सोना ५ चाँद ६ दाग़ ७ ऐब ८ सूर्य्य ९ दुनियाँ का देखने वाला ११ बराबरी १२ बात १३ गाल १४ ख़ूबसूरत १५ छाप १६ छाती १७ बाल १८ दाँत १९ सफ़ेद २० बदन २१ नाम मुल्क २२ कमल २३ पद्मावत २४ दुशमन २५ शेर की बराबरी २६ रीछ २७ पत्थर २८ बहिजाना २९

जेहि ऊपर अस गरुवा पीउ ॥ सो कस डोलाये डोलै जीउ ॥
फेरत नयन चीर[1] सो छूटी ॥ भइ कूटन कुटनी तस कूटी
नाक कान काटी मसि[2] लाई मूड़ मूड़ के गदहे चढ़ाई ॥

मुहमद गरू जो बिधि[3] लिखी का कोई तेहि फूंक
जेहि क भार जग थिर[4] रहा उड़ेन पवन के झूंक

रानी धर्म सार[5] पुनि साजा ॥ बन्द मोख जेहि पावहि राजा
जहँ तक परदेशी चलि आवा अन्नदान औ पानि पियावा
योगी यती आव जित कंथी[6] ॥ पूछी पिया जान कोउ पंथी[7]
दान जो देत बाँह भइ ऊँची ॥ जाय शाह पहँ बात जो पहुँची
पातुरि इक हुत योग सुआंगी[8] ॥ शाह[9] उघारे हत वह मांगी ॥
योगिन भेष बियोगिन कीन्हीं सुन के शब्द[10] मोल तत कीन्हीं
पद्मिन पहँ पठई कर योगिन ॥ बेरा[11] आन कर बिरह बियोगिन

चित्र कला[12] मनमोहन पर काया पर देश ॥
आय चढ़ी चितौर गढ़ होय योगिन कर भेश

खराड़ चाली सवाँ बेश्या गवन

मांगत राज बार[13] चल आई ॥ फेर चेरि[14] यह बात जनाई ॥
योगिन एक बार[15] है कोई मांगै जैसि बियोगिन[16] होई
अबहीं नव[17] यौबन तप लीन्हीं फार पटोरा[18] कंथा[19] कीन्हीं ॥
बिरह बिभूत जटा बैरागी ॥ छाला काँध जाप[20] कंठ लागी
मुद्रा[21] श्रवन[22] नहीं थिर[23] जीउ ॥ तन त्रिशूल आधारी पीउ
छाता छाह धूप जनु मरै ॥ पायन पवँरी[24] भूभुल जरै ॥

लहँगा १ सियाही २ ईश्वर ३ क़ायम ४-२३ ख़ैरात ख़ाना ५ भेष वाले ६ मुसाफ़िर ७ मक्कार ८ शाह ने बोलाया ९ पद्मावत को लाव इनआम पावैगी १० जल्द ११ तसवीर १२ दरवाज़ा १३-१५ फेर फार १४ दुखी १६ नवजवान १७ सारी १८ गुदड़ी १९ माला २० बाला २१ कान २२ खड़ाऊं २४ ॥ ÷ ॥

शृंगी[1] शब्द धन्धारी करा ॥	जरै सो ठाउँ[2] जहाँ पगधरा[3]

किंगरी गहे बियोग बजावे बारहि[4] बार सुनाउ
नयन चक्र चहुँ दिशि[5] निरखै[6] धौं दरशन कब पाउ

सुनि पद्मावत मंदिर बोलाई	पूछी कौन देशतें आई ॥
तरुन[7] बैश तोहि छाजन योगू	केहि कारन अस कीन्ह बियोगू[8]
कहेसि बिरह दुख जानन कोई	बिरहिन जान बिरह जेहि होई
कंत हमार गयो परदेशा ॥	तेहि कारन[9] हम योगिन भेशा
काकर जिय यौबन और देहा	जो पिय गयो भयो सब खेहा[10]
फार पटोर[11] कीन्ह मन कंथा[12] ॥	जहँ पिउ मिलै लेहुँ सो पंथा
फिरौं करौं चहुँ चक्र पुकारा	जटा परी कोशीश[14] सँभारा

हिरदय[15] भीतर पिय बसै मिलै न पूछे काहि
सून जगत सब लागै वह बिन कछू न आहि

श्रवन[16] छेद में मुद्रा[17] मेली ॥	शब्द[18] उनाउँ कहाँ पिय गेली[19]
तेहि बियोग[20] सिंही[21] नित पूरी ॥	बार बार किंगरी[22] भइ झूरी ॥
को मोहिं लै पिय कंठ[23] लगावै	परम अधारी बात जनावै ॥
पाँवर[24] टूट चलत गा छाला ॥	मनन मरै तन यौबन बाला
गयो प्राग मिला नहिं पीउ ॥	करवट[25] लीन्ह दीन्ह बल जीउ
जाय बनारस जाड़्यो कया[26] ॥	पाड़्यो पिंड नहायो गया ॥
जगन्नाथ चक्रहिं के आय ॥	पुनि सो द्वारका जाय नहाय

जायके दारा दाग तन तहँ न मिला तन आँक[27]
ढूँढ़ि अयोध्या आय फिर स्वर्गद्वारी झाँक

शृंगी बाजा की तरह आवाज़ मस्ताना १ जगह २ पैर ३ दरवाज़ा ४ तरफ़ ५ देखना ६ नवजवान ७ दुख ८ वास्ते ९ धूर १० सारी ११ गुदड़ी १२ राह १३ शिर १४ दिल १५ कान १६ बाली १७ आवाज़ १८ जाना १९ दुख २० शेर २१ नामबाजा २२ गले २३ खड़ाऊँ २४ शिर कटाना २५ तपकिया २६ पता २७ ॥ ÷ ॥

गउमुख हरिद्वार फिरकीन्हा ॥ नगर कोटि कित रसना दीन्हा
दूदू बालनाथ कर टीला ॥ मथुरा मथ्यो न सोपिय लीला
सूर्य कुण्ड महँ जाय देहा बद्री मिला न जासों नेहा ॥
राम कुराड गोमति गुरु हारू दाहिन वर्त कीन्ह कै आरू ॥
सेतु बन्ध कै लीन्ह सुमेरू ॥ गयो चूलेसर पुर जहाँ गभीरू
ब्रह्मवर्त ब्रह्मावर्त परमी ॥ बेनी संगम सीझौ करसी
नील कराठ मिथिय कुरुजेठा गोरखनाथ अस्थोज समेटा

पढ़ना पूर्व सो घर घर हाड़ फिरो संसार
हेरत कहूँ न पिय मिला नाकोइ मिलवनहार

बन बन सब हेरयो नव खराडा जल जल नदी अठारह गड्डा
चौसठ तीर्थ कीन्ह सब ठाऊं लेत फिरयो वह पिय का नाऊं
देहली सब देख्या तुरकान श्री सुलतान केर बन्द बान
रतनसेन देख्यो बंद माहाँ ॥ जरै धूप खवे पावन छाहाँ ॥
सब राजा बाँधे श्री दागी ॥ योगिन ज्ञान राज पग लागी ॥
कासो भोग जहँ अंत न गयऊ यह दुख लै सो गयो सुरदेवऊ
देहली नाउं न जानों ढीली ॥ सठ बंद गाढ़ निकसन गैली

दरद दगध दुख ना कर अभी कयो नहि जीउ
सोधन कैसे वह जिये जाकर अस बंद पीउ

पद्मावत जो सुना बन्द पीउ ॥ परा अगिनि महँ जाग्यु दीउ ॥
दौरि पाय योगिन के परी ॥ उठी आग योगिन पुनि बरी
पाँय देहु दुहु नयनन लाऊं ॥ ले चलतहाँ कंत जेहि ठाऊं ॥

नामतीर्थ १ से २९ तक नामयोगी ३२ मकान ३३ ढूंढना ३४ कैदखाना ३५ कमू
छा पा नहीं पाता ३६ पालागन राजाने किया ३७ लेकिन बाबू रिश्वार जहाँ दरवन
गैर का न हो ३८ भारी कैदखाना जहाँसे निकलना मुश्किल है ३९ जलना ४० बरन ४१
चौपाई तथा पद्मावत ३२ ॥ २ ॥

जेहि नयन न तुइँ देखा पीउ ॥ मोहिँ देखाय देब बल जीउ ॥
सत औ धर्म देउँ सब तोहीं ॥ पिय की बात कहै जो मोहीं ॥
तुइँ मोर गुरू तोर हौं चेली ॥ भूली फिरत पंथ जे मेली ॥
डंड एक मायो कर मोरे ॥ योगिन होउँ चलौं संग तोरे ॥

सखिन कहा पद्मावतहि प्रगट करो ना भेष
योगी जुगवे गुप्त मन लै गुरु कर उपदेष

भीख लेहु योगिन फिर माँगू ॥ कंत न पाई खीन सुवाँगू ॥
यह बड़ योग बियोग जो सहा ॥ जैसे पिया राखै तुम रहा ॥
घरही महँ रहु भई उदासा ॥ अंचल खप्पर पूँटगी स्वासा ॥
रहै प्रेम मन उरझा लटा ॥ बिरह ढँढार परहिं सिर जटा ॥
नयन चक्र लावै लै पंथा ॥ काया कापर सोई कंथा ॥
छाला भूमि गगन सिर छाता ॥ रंग रक्त रहि हिरदै राता ॥
मन माला पहिरे तंत ओहीं ॥ पाँचौ भूत भस्म तन होहीं ॥

श्रवन कुण्डल सुनि पिय बचन पावँर पाय परेह
डंडके गोरा बादलहि जाय अधारी लेह ॥

सखिन बुझाई दरध अपारा ॥ गइ गोरा बादल के बारा ॥
चरण कमल भुइँ जन्म न धरी ॥ जात तहाँ लग छाला परी ॥
निकस आय सुन क्षत्री दोऊ ॥ तस काँपे जस काँप न कोऊ ॥
केश छोर चरणन रज झारी ॥ कहाँ पाँउ पद्मावत धारी ॥
राखा आन पाट सुन बानी ॥ बिरह बियोग न बैठी रानी ॥
चँवर ढार ह्वै चँवर डुलावहिं ॥ माथे छात रजाय सुपावहिं ॥

यह १ एक घड़ी २-२२ मेहरबानी ३ जाहिर ४ भेद ५ छिपा ६ ओछों के फ़रेबसे ७ नाम बाजा ८ भारी ९ राह १० बदन ११ गुदड़ी १२ ज़मीन १३ आसमान १४ खून १५ दिल १६ लाल १७ आँख-कान-नाक-ज़बान-छूना-१८ कान १९ बात २० खड़ाऊँ २१ नाममंची २३-२४ सहारा २४ आग २५ दरवाज़ा २७ सोने का तख़्त २८ हुक्म २९ ॥ ÷ ॥

उलट बहा गंगा कर पानी ॥ सेवक बार न आवहिं रानी ॥

का अस कष्ट कीन्ह जिय जो तुम करत न छाज
आजो होय बेग सो जीउ तुम्हारे काज ॥

खण्ड इकतालीसवाँ पद्मावत वा गोरा बादल संवाद

कही रोय पद्मावत बाता ॥ नयनहिं रक्त देख जग राता
उलट समुद्र जस माणिक भरे रोवलि रुधिर आँसु तस ढरे ॥
रतन के रंग नयन पै वारों ॥ रती रती के लोहू ढारों ॥
कमलहिं ऊपर भँवर उड़ाऊं लै चलि तहाँ सूर्य्य जहँ पाऊं
हिय कर हरद बदन के लोहू जिय बल देउँ सो सँवर बिछोहू
परहिं आँसु जस सावन नीरू हरियरि भूमि कुसुंभी चीरू ॥
चढी भुवंगिन लट लट केशा भइ रोवत योगिन के भेशा ॥

बीर बहूटी भै चले तोहू रहहिं न आँस
नयनहिं पंथ न सूझै लाग्यो भादौं मास

तुम गोरा बादल खंभ दोऊ ॥ जस रन भारत और न कोऊ ॥
दुख बर्षा अब रही न राखा ॥ मूल पतार स्वर्ग भइ शाखा
छाया रही सकल महि पूरी ॥ बिरह बेल भइ बाढ़ खजूरी ॥
तेहिं दुख लेत वृक्ष बन बाढ़ी शीश उघारे रोवहिं ठाढ़ी ॥
भूमि पूर सायर दुख पाटा ॥ कौड़ी भई फेर हिय फाटा ॥
बेहरि हिये खजूर कर बिया बेहरि नाहिं मोर पाहन हिया
पिय जेहिं बंद योगिन ह्वै धाऊं हों बंधू लों पिय मेकराऊं ॥

सूर्य्य ग्रहण गरासा कमल न बैठी पाट ॥
मुहूँ पंथ तहँ गवन बकंत गये जेहि बाट ॥

दरवाज़ा १ हुक्म २ जल्द ३ लाल ४ जवाहिर ५ खून ६ छाती ७-२२ जुदाई ८ पानी ९ ज़मीन १०-१०-२० नागिन ११ सह १२ नाममंत्री १३ जड़ १४ आसमान १५ सब १६ पेंड़ १८ शिर १९ तालाब २१ फटना २३ दिल २४ पत्थर २५ छोड़ाना २६ तख़्त २७

गोरा[1] बादल दोऊ पसीजे ॥ रोवत रुधिर[2] गीपो लहि भीजे ॥
हनुराजा सो यही कुहाने ॥ तुम नहिं मिला धरे तुरकाने
जो मति सुनहु[3] आय कुहाये सो नियान हम साथे आये ॥
जबलगि जिय न भागहिं दोऊ स्वामिन जिय कित योगिन होऊ
उवे अगस्त्य हस्ति चबगाजा नोर[4] घटै घर आवैं राजा ॥
बर्या गयो अगस्त्य की दीठी[10] ॥ परे पलोन तुरंगन[11] पीठी ॥
बेधों राहु छुडाऊँ सूरू[12] ॥ रहै न दुरव कर मूल अगरू

बहु सूरज तुम प्राणि[13] बदन ज्यान मिलाऊ सोय
तस दुरव मह सुरव उपने[14] एनि माँझ दिन होय

लीन्ह पान बादल औ गोरा तोहि[15] लै दउं उपम तुम जोरा ॥
तुम सौं[16] बंधन न सरवर कोऊ ॥ तुम हनुमंत अंगद[17] सम दोऊ
तुम अर्जुन औ भीम[18] भुवारा तुम बल बीर सो मंदन हारा ॥
तुम टारन भारन जग जानी ॥ तुम सौं पुरुष औ करन[19] बखानी
तुम अस मोरे बादल गोरा ॥ काकर मुख हेरौं बंद छोरा
अस हनुमत राघव बंद छोरी तस तुम छोर मिलावहु जोरी

जैसे जरत लंक घर साहस कीन्ह भीउ[20] ॥
जरत खम्भ तस काढ़ा कै पुरुषारथ जीउ ॥

रामलषन सम दैत्य सहारा तुमही घर बैल भद्र भुवारा ॥
तुम दोनौ[21] औ पिता गोरेऊ[22] ॥ तुम लरवोई[23] पूवर सहदेऊ ॥
तुमहु युधिष्ठिर औ[24] दुर्योधन तुमहु भीम नकुल[25] दोऊ सम्बाधन

नाम मंची १ खून २ शीर ३ रण ४ हनुमान ५ बलभद्र ६ चारबर ७ नाम करबत ८ बहादुर
निमाह १० चारजामा ११ घोड़ा १२ सूर्य १३ जरूर १४ चंद १५ बेदा १६ कान १७ जोड़ीमि
लादो १८ बहादुर १९ बराबर २० २१ नाम पाण्डवों २१-२०-२३-२४-२५
२८-३१-३२-३३-३४-३५-३६ देखना २६ बहादुरी २७ बलभद्रका
बराबरी किया ३० ॥ ॥

तुम राघव[1] परशुराम[2] औ योधा ॥ तुम परतज्ञा[3] औ हत बोधा ॥
तुमहु शत्रुहन भरत[4] कुमारा । तुम कंसहिं[5] चाँडूर[6] सँहारा[7] ॥
तुम प्रद्युम्न औ अनिरुध[8] दोऊ । तुम अभिमन्यु[9] बोले सब कोऊ
तुम सरपूज न बिक्रम[13] शाके । तुम हरिचन्द[14] हमीर[15] सत[16] माके ॥

जस अति संकट पाँडवन[17] भयो भीम[18] बद छोर
तस पर बंश[19] पर काहहु राखलेहु ब्रह्म मोर ॥

गोरा[20] बादल बीरा लीन्हा ॥ जस हनुमंत अंगद बल कीन्हा
साज सिंहासन ताना छातू । तुम माथे युग युग अहिवातू
कमल चरण भुइँ धर दुख पावहु । चढ़ सिंहासन मंदिर सिधावहु
सुन सूरय कमलहि जिय जागा ॥ केसर बरन[21] पवन हिय लागा
जनु निशि[22] मुँह अबदीन्ह देखाई । भा उदोत[23] मसि[24] गई बिलाई ॥
चढ़ी सिंहासन झमकत चली । जानहु चाँद दुइज निरमली[25] ॥
औ संग सखी कुमोद[26] तराई[27] ॥ ढारत चँमर मंदिर लै आई ॥

देख दुइज सिंहासन शंकर धरा ललाट[28] ॥
कमल चरण पद्मावत लै बैठारी पाट[29] ॥

खण्ड बयालीस वाँ गोरा बादल गवन

बादल केर जसोदी माया ॥ आय गही बादल के पाया ॥
बादलराय मोर तुइ बारा ॥ का जानेसि कस होय जुझारा[30]
बादशाह भूमिपति राजा ॥ सन्मुख ह्वै न हमीरहि[31] छाजा ॥
छत्तिस लाख तुरी[32] जेहि साजहिं । बीस सहस हस्ती[32] दल गाजहिं

श्री रामचन्द्र जी १ नाम महाशूर वीर २-६-७-१८ कौल ३ भाई श्री रामचन्द्र ४-५ मारना ८ बेटा श्री कृष्ण ९ पोता श्री कृष्ण १० बेटा अर्जुन ११ बराबरी १२ विक्रमादित्य १३ नाम राजा १४-१५ सच बोलने वाले १६ राजा युधिष्ठिर १७ उसी तरह इस वक्त में मदद करो १९ नाम मंत्री २० रंग २१ रात २२ रोशन २३ सियाही २४ साफ २५ कोंका बेली २६ नखत २७ माथा २८ तख्त २९ लड़ाई ३१ घोड़ा ३१ हाथी ३२

जबहीं आय चढै दल उटा | देखत जैस गगन घन घटा ॥
चमकहि खड्ग जो बीजु समाना | घुरहि गलगाजहि निसाना
बरसहिं सेल बान घन घोरा ॥ | धीरज धीर न बाधै तोरा ॥

जहाँ दलपती दलमलहि तहाँ तोर का काज
आजु गवन तोर आवै बैठ मान सुख राज ॥

मातन जानेसि बालक आदी | हौं बादल्ला सिंह रन बादी ॥
सुनु गर्जै जूझ अधिक जिउ तपा | सिंह जात कहु रहै नहिं छिपा
तब गरजै गोजन गाज सडेला ॥ | सोंह ग्राह सो जरौं अकेला
को महि सोंह होय मैमन्ता ॥ | फारौं सूंड उखारौं दन्ता ॥
जरौं स्वाम सकुरे जस टारा | औ बैल जस दुर्योधन मारा ॥
अंगद कोप पाव जस रारवा ॥ | टेकौं करक छतीसो लारवा ॥
हनुमत सरस जंघ पर जारौं ॥ | दहौं समुद्र स्वामि बद छोरौं ॥

जो तुम मात जस सोदौ माहिं न जानौ बार ॥
जहँ राजा बल बाधा छोरौं पेढ पतार ॥

बादल गवन जूझ कहँ साजा | तैसहिं गवन आय घर बाजा ॥
लिये साथ गवने कर चारू ॥ | चन्द्र बदन रच कीन्ह सिंगारू
माग मोति भर सेंदुर पूरा ॥ | बैठ मयूर बाक तस जूरा ॥
भौंहैं धनुष टकोर परीखी ॥ | काजर नयन मार सर तीखी ॥
घालत कच बेंची टीका सना ॥ | तिलक जो देख दहुँ जिउ तजा ॥
भरि कुराढ लै डोलै दुइ अवेना | पूरि पूरि धुनहि सुनि सुनि पिय गवना
नागिन अलक झलक उर हारू | भयो घूटगार कंत बिनु भारू ॥

शब्दार्थ १तलवार २बिजुली ३परछा ४-१२गोला ५तीर ६-२३बड़े राजा ७ छोटा लड़का ८पूँछ ९-११हथियों का हलका १०सामने १३मस्त १४मालिक का काम करो १५नाम महापुरुषों १६-१७फौज १८राजा १९पहुँचा २०मोर २१कमान २२कटीली २३नाम नखत २४काम २५पीर २७बाल २८छाती २९ ॥

गवन जो आयो पँवर[1] महँ पिय गवने[2] परदेश
सखी बुझावहिं किम[3] अनल[4] बुझै सो केहि उपदेश

मान गवन जस घूँघट काढ़ी ॥ बिनवै आय बार[5] भइ ठाढ़ी ॥
तीखी[6] हेर चीर गहि ओढ़ा ॥ कंत न हेर[7] कीन्ह जिय पोढ़ा ॥
तब धन[8] कीन्ह बेहँस[9] चँष[10] दीठी[11] बादल[12] तबहिं दीन्ह फिर पीठी ॥
मुख फिराय मन अपने रीसा ॥ चलत न तिरिया कर मुख दीसा[13]
भामिन[14] भेष नारि के लेखे ॥ कस पिउ पीठ दीन्ह मुँह देखे ॥
मग[15] पिय दृष्टि[16] समानो चालू ॥ हुल[17] से पीठ गढ़ाऊँ सालू ॥
कुच[18] तोंबी अब पीठ गडोऊं गहेसि जो[19] हक काढ़ रिस धोऊं

रहुँ लजाय तो पिय चलै कहौं तो कहि मुहिं डीठ
ठाढ़ तेवानी का करों भारी दोऊ बसीठ[20] ॥

लाज किये जो पिय नहिं पाऊं ॥ तजौं लाज कर[21] जोर मनाऊं ॥
कर हठ कंत जाय जेहि लाजा घूँघट लाज आव केहि काजा
तब धन बेहँस[22] कहा गहि फेटा नारि जो बिनवै[23] कंत न मेटा ॥
आज गवन हूँ आई नीहां[24] ॥ तुम न कंत[25] गवनो रन माहां ॥
गवन आव धन[26] मिलन किताई कौन गवन जो बिछुड़े साईं ॥
धन न नयन भर देखा पीऊ पिया न मिल धन सो भर जीऊ
तेहि सब आस भरा है केवा[27] भवर न तजै[28] बास रस लेवा

पावन धरा ललाट[29] धन विनय सुनहु हो राय
अलक[30] परा फंद वार ह्वै कैसहिं तजै न पाय

दरवाज़ा १ जाना-सिधारना २ किस तरह ३ आग ४ ड्योढ़ी ५ कटीली निगाह से देखा ६ खींचना ७ देखना ८-१३ औरत बादल की ९ हँसना १० १३ आँख ११ नाम मंत्री १२ औरत का शगून बद समा गया १४ शायद १५ निगाह १६ पीठ देखत सकीनकी १७ छाती १८ खींचा कि दिल का दुख निकल जावे १९ शोख़ २० दोनों छाती २१ हाथ २२ अर्ज़ २४ ख़ाविन्द २५-२६ कमल २७ छोड़ना २९ माथा २९ बाल ३०

छाँड़ फेट[1] धन[2] बादल कहा | पुरुष गवन धन फेट न गहा[3] ॥
जो तुइँ गवन आय गजगामी[4] | गवन मोर जहँवाँ मोर स्वामी ॥
जब लग राजा छूट न आवा | भावै बीर[5] शिंगार न भावा ॥
त्रिया भूमि[6] खड्ग[7] की चेरी ॥ | जीत जो खड्ग होय तेहि केरी
जेहिं घर खड्ग मूठ तहँ गाढ़ी | तहाँ न अंड न मूछ न दाढ़ी ॥
तब मुँह मूछ जीठ पर खेलौं | स्वाम काज इन्द्रासन पेलौं
पुरुष[2] के बोल टरै नहिं पाछू | दशन[9] गयंद ग्रीव[10] नहिं काछू

तुइँ अबला[11] धन कुबुध[12] बुध जानै कहा जुझार[13]
जेहि पुरुषहिं[14] हिय[15] बीर रस भावै तेहि न शृंगार

जो तुम चहो जूझ पिय बाजा | कीन्ह शृंगार जूझ मैं साजा
यौवन आय सौंहिं[16] ह्वै रोपा | पिघला बिरह काम दल कोपा
भयो बीर रस सेंदुर माँगा ॥ | राता[17] रुधिर खड्ग जस नाँगा
भौंह धनुष नयन सर[18] साँधे | बरन[19] बीज काजर बिष बाँधे
दय कटाक्ष[20] सौं सान सँवारी | औमुख सेल भाल अनयारी[21]
अलक[22] फास ग्रिंव[23] मेल असूझा | अधर[24] अधर सों चाहहिं जूझा
कुंभस्थल[25] कुच[26] दोउ मैं मंता ॥ | पेलौं सौंह[27] सँभारहु कंता ॥

कोप शृंगार बिरह दल टूट होय दुइ आध ॥
पहिलै मोहिं संग्राम[28] कै करहु जूझ की साध[29]

कैसहुँ कंत फिरै ना फेरी ॥ | आग परी चितौर धन केरी
उठी सो धूम[30] नयन गरबानी | लागे परे आँसु भहरानी ॥

कमर १ औरत २ पकड़ना ३ हाथी की चाल ४ लड़ना ५ ज़मीन ६ तलवार ७ मर्द ८ दाँत हाथी के ९ गरदन कछुवा की १० नादान ११ कम अक़िल १२ लड़ाई १३ मर्द १४ दिल १५ सामने १६ लाल ख़ून १७ तीर १८ पलक बिजुली की तरह १९ तिरछी निगाह २० नोकीले २१ बाल २२ गर्दन २३ होंठ २४ हाथी मस्त २५ छाती २६ मुक़ाबिल २७ लड़ाई २८ इरादा २९ धुवाँ ३० ॥

भीजे हार चीर हिये चोली | रही अछूत कत नहिं खोली
भीजे लाग चुवें कंठ मुंडन ॥ | भीजे भवर कमल शिर फुंदन ॥
चुइ चुइ काजर अंचरा भीजा ॥ | तबहुं न पिय के रोवं पसीजा ॥
छांड़ चला हिरदय दय दाहू ॥ | निठुर नाह आपन नहिं काहू ॥
सबै शृंगार भीज भुइ चुवा ॥ | छार मिलाय कंत नहिं छुवा

रोये कंत न बहुरे तेहि रोये का काज ॥
कंत धरा मन जूझ रन धन साजी सब साज ॥

खण्ड तेंतालीसवां गोरा बादल बर्णन

मंते बैठ बादल औ गोरा ॥ | सो मत कीज पर नहिं भोरा
पुरुष न करै नारि मत काची ॥ | जस नौ शाबा कीन्ह न बाची ॥
चढ़ा हाथ इस कंदर बैरी ॥ | सकत छाड़ के भई बदेरी ॥
सजग जो नाह मार बल काधा | बुधक हिये हस्ती का बांधा ॥
देवतन चले आय अस आटी | सुरजन कंचन दुरजन माटी ॥
कंचन जुरै भये दश खांड़ा ॥ | फूट न मिलै छार कर भांड़ा ॥
जस तुरकहिं राजा छल साजा | तस हम साज छुड़ावहिं राजा ॥

पुरुष तहां हीं छल करै जहं बल कैसो न आंट
जहां फूल तहं फूल है जहां कांट तहं कांट ॥

सोरह सै चंडोल सवारी ॥ | कुंवर सजोयल तहं बैठारी ॥
पद्मावत कर साज बेवानू ॥ | बैठ लुहार न जानै भानू ॥
रच बेवान सौ साज सवारा | चहुं दिशा चमर करहिं सब दारा
साज सबै चंडोल चलाई ॥ | सुरंग उहार मोति बहु लाई ॥

सारी १ छाती २-४ कुरती ३ जलन ५ खाविन्द ६-८ धूर ७ औरत ९ सलाह १० नाममंत्री ११ हंसी १२ मर्द १३ नाम शाहज़ादी १४ नाम बादशाह १५ उसको छोड़दिया १६ होशियार १७ अक़िलमंद १८ हाथी १९ दोस्त २० सोना २१ दुशमन २२ माटी २३ पहुंचना २४ बहादुर २५ सूर्य्य २६ चारों तरफ़ २७ औरत २८

भय संग गोरा[1] बादल बली ॥ कहत चले पद्मावत चली ॥
हीरारतन पदोरथ[2] झूलहिं ॥ देख बेवाने[3] देवता भूलहिं ॥
सोरह सै संग चलीं सहेली ॥ कमल न रहा और को बेली ॥

राज छुड़ावन रानि चलि आप होय तहँ ओल
तीस सहस[4] तुरि[5] खींच संग सोरह सै चंडोल

राजा बंद जेहि के सौंपना ॥ गा गोरा[6] ता पहँ अगमना[7] ॥
टका लाख दश दीन्ह अकोरा[8] बिनती[9] कीन्ह पाय गहि गोरा
बिनवा[10] बादशाह सो जाई ॥ अब रानी पद्मावत आई ॥
बिनती[11] करै आयहूँ देहिली ॥ चित्तौर की मोसों है कीली[12] ॥
बिनती[13] करै जहाँ है पूंजी ॥ सब भंडार[14] की मोसों कूंजी
एक घड़ी जो अज्ञा[15] पाऊं ॥ राजा सौंप मंदिर महँ आऊं ॥
तब रखवार[16] गये सुलतानी ॥ देख अकोर[17] भये जस पानी ॥

लीन्ह अकोर[18] हाथ जो जीउ दीन्ह तेहि हाथ ॥
जो वह कहै करै सो कहीं छाड़ नहिं माथ ॥

लोभ पाप की नदी अकोरा[19] सत[20] न रहै हाथ जो बोरा ॥
जहँ अकोर तहँ नेक[21] न राजू ॥ ठाकुर केर बिना[22] शहिं काजू ॥
भाजिउ घिव रखवारी केरा द्रव्य लोभ चौंडोल न हेरा[23]
जाय शाह आगे शिर नावा ॥ ऐ जग सूर[24] चाँद चलि आवा ॥
औ जानवन्त सब नखत[25] तराईं सोरह सै चंडोल जो आईं ॥
चित्तौर जेत राज की पुंजी ॥ लै सो आय पद्मावत कुंजी ॥
बिनती[26] करै जोर कर[27] खड़ी लै सौंपों राजा इक घड़ी ॥

राजमंत्री १-६ जवाहिरात २ चंडोल ३ तीस हज़ार ४ घोड़ा ५ पहिले ७ रिशवत-नज़राना ८-१०-१८-१९ अर्ज़ ९-१०-११-१३-२६ कुंजी १२ ख़ज़ाना १४ हुक्म १५ दारोग़ा १६ ईमान २० राज अच्छा नहीं २१ ख़राब २२ तलाशी लेना २३ सूर्य २४ सखी-सहेली २५ हाथ २७ ॥ २ ॥

यहाँ वहाँ के स्वामी[1] दोहूँ जगत मोहिं आपू[2]
पहिले दरश देखावन्टपतव[3] आऊँ कैलाश

अज्ञा[4] भई जाय इक घरी ॥ छूछ जो घरी फेर बिधि[5] भरी ॥
चलि बेवान[6] राजा पह आवा संग चौंडोल जगत सब छावा
पद्मावत के भेष[7] लोहारू ॥ निकस काट बंद[8] कीन्ह जोहारू[9]
उठा कोप जस छूटा राजा चढ़ा तुरंग[10] सिंह[11] अस गाजा ॥
गोरा बादल[12] खाँड़े[13] काढ़े ॥ निकस कुँवर चढ़ चढ़ भये ठाढ़े
तीष[14] तुरंग रागन[15] शिर लागा ॥ कौन जुगत कर टेकै बागा
जो जिय ऊपर खड़ सँभारा ॥ मरनहार सो सहँ[16] सहिं मारा

भइ पुकार शाह सों शशि[17] औ नखत सो नाहिं
छल कै ग्रहन गिरासा ग्रहन गिरासी छाहिं ॥

लै राजा चितौर कहँ चले ॥ छूटो मिरग[18] सिंह[19] कर बले ॥
चढ़ा शाह चढ़ लाग गुहारी ॥ कटक[20] असूझ परी जग कारी
फिर गोरा बादल सो कहा ग्रहन[21] छूट पुनि चाहै[22] गहा ॥
चहुँ दिश[23] आवा लोपत भानू[24] ॥ अब यह गोय यही मैदानू ॥
तुइ अब राजा लै चल गोरा ॥ हौं अब उलट जरौं[25] भाजोरा ॥
वह चौगान तुर्क कस खेला होय खिलार रन जरों अकेला
तब पाऊँ बादल अस नाऊँ जब मैदान गोय लै जाऊँ ॥

आज खड्ग चौगान गहि[26] करों शीश[27] रन गोय
खेलों सौंह[28] शाह सो हाल जगत महँ होय

तब अगमन[29] ह्वै गोरा[30] मिला ॥ तुइ राजा लै चल बादला[31]

मालिक १ उम्मेद २ राजा ३ हुक्म ४ ईश्वर ५ चंडोल ६ सूरत ७ बेड़ी ८ सलाम ९ घोड़ा १०-१४ शेर ११-१६ नाममंत्री १२-३०३१ तलवार १३ आसमान १५ हज़ार १६ चाँद तथा पद्मावत १७ हिरन १८ फ़ौज २० राजा २१ फेर २२ चारों तरफ़ २३ सूर्य्य २४ मुक़ाबिल २५ पकड़ना २६ शिर २७ सामने २८ आगे २९

पिता[1] मरे जो सारी साथें ॥ मीचे[2] न देय पूत के माथे ॥
मैं अब आयु[3] भरी औ भूंजी ॥ का पछताव आय जो पूंजी ॥
बहुतहिं मार मरों जो जूझी ॥ ताकहं जन राखहु मन बूझी
कुंवर सहस[4] संग गोरा[5] लीन्हीं और बीर बादल[6] संग कीन्हीं ॥
गोरहि[7] समुद्र मेघ अस गाजा चला लीन्ह आगे कर राजा ॥
गोरा[8] उलट खेत भा ठाढ़ा ॥ पुरुष[9] देख चाउ[10] मन बाढ़ा ॥

आव कटक[11] सुलतानी गगन[12] छिपा मसि[13] माँझ
परत आव जग कारी होत आव दिन साँझ ॥

होय मैदान परी अब गोय खेल हार वह काकर होय ॥
यौवन तुरी[14] चढ़ी जो रानी ॥ चली जीत अति खेल सयानी
कट[15] चौगान गोय कुच[16] साजी ॥ हिय[17] मैदान चली लै बाज़ी ॥
हाल[18] सो करै गोय लै बाढ़ा ॥ गोली दुहूं पैच कै काढ़ा ॥
भइ पहार वै दोनों गोरी[19] ॥ दृष्टि[20] नेर पहुंचत सुठ दूरी ॥
ठाढ़े बान चलहिं अस दोऊ ॥ सालहिं[21] हियें[22] न काढ़े कोऊ ॥
सालहिं तेहि जा नेसि है ठाढ़ी सालहिं तासु चहै उठ काढ़ी ॥

मुहमद खेल प्रेम का गहिर कठिन चौगान ॥
शीश[23] न दीजे गोय जिमि[24] हल न होय मैदान ॥

फिर आगें गोरें तब हांका[25] ॥ खेलों करों आज रन शाका[26]
हों खेलों धौलागिरि[27] गोरा ॥ टरों न टारे अंग न मोरा ॥
सोहल[28] जैस गगन उपराहीं ॥ मेघ घटा मोहिं देख बिलाहीं ॥
सहस[29] शीश शंकर सम[30] लेखों सहसहिं नयन अन्धि भा देखों

बापकी जगह राजा साथ है १ मरना बेटे का न देखैगा २ उमर ३ हज़ार ४-२६ नाम मंत्री ५-६-७-८ मर्द ९ चाह १० फौज ११ आसमान १२ सियाही १३ घोड़ा १४ कमर १५ छाती १६ सीना १७ हलचल १८ तबाछाती १९ निगाह २० सूराख २१ दिल २२ शिर २३ बराबर २४ खलकारना २५ बहादुरी २६ नाम पहाड़ २७ नाम नखत २८ बराबर ३०

चारहु भुजा चतुर[1] भुज आजू ।। कंस[2] न रहा और को साजू ।।
होंहि[3] भीम अस रना गाजा ।। पाछे घालडंकौंद[4] राजा ।।
होय हनुमत यम कातर धाऊ[5] आज स्वामि सं करैं नियाऊ ।।

है[6] नल नील आज हौं देऊ समुद्र महिं मेंड़[7] ।।
कटक[8] प्राह करटे कों[9] है सुमेरु रना बेंड़[10] ।।

उनई[11] घटा बहु दिसा आई[12] ।। छूटहिं बिनि मेघ झुरलाई[13] ।।
डोले महि देव जस[14] आदी ।। पहुंची तुर्क बाद कहु बादी[15] ।।
हाथन गहे खड्ग हरवानी[16] ।। चमकहिं सेल बीजु कै बानी
साज बान जनु आवै गाजा[17] ।। बाँसुक डरै पूरीं[18] जनु बाजा[19] ।।
नेजा उठे डरै मन दून्दू[20] ।। आवहिं पाछु जान कब हिन्दू ।।
गोरें साथ लीन्ह सब साथी जस मैमत्त सूंड बिन हाथी ।।
सबमिलपहिल उठौनी लीन्हीं आवत आय हाक सब कीन्हीं

रुंड मुंड अति टूटहिं साहि बख्तर औ कूड़ ।।
तुरी[22] होहिं बिन काधे हस्ति[23] होहिं बिन सूंड़ ।।

उनवत आय सेन[24] सुलतानी जानहु परलै आव तुलानी ।।
लोहे सेन[25] सूझ सब कारे ।। तिल डूक कहू न सूझ उघारे ।।
खड्ग फोल[26] लाद तुर्क सब काढ़े ।। हरी बीजु[27] अस चमकहिं ढाढ़े ।।
पोलवान गज[28] पेल सो बाँके ।। जानहु काल करहिं जिय[29] माँके
जनु यम कातर[30] करहि सब भवां ।। जिय पै चीन्ह[31] सर्ग अपसवां
सेल साँप जनु चाहै डसा ।। लीन्ह काढ़ जिय मुख बिष बसा

चारहाथ १ नाम राजा दैत्य २ नाम महा शूरबीर ३ मद्द ४ महाबीर जो ५ नाम कोल्हू ६ मालिक को बचाऊं ७ नाम बन्दर जिन्होंने पुल समुद्र में बाँधा था ८-९ फ़ौज १०-२५-२६ नाम पहाड़ ११ चारों तरफ १२ तीर १३ पैदादूरी १४ बराबर १५ तलवार १६ बिजुली १७ १८-२७ नाम राजा साँप १९ पूरीं २० दून्द्र २१ घोड़ा २२ हाथी २३ पहुंची २४ हाथी मस्त २५ लेने वाली २६ चाँदना २७ चासमान पर जे जाना ३१ ॥-॥

तिन्ह सामहिं गोरा[1] रन कोपा | अंगद[2] सरस पाउँ भुइँ रोपा ॥

सपु रुख[3] भाग न जाने भुइँ जो फिर फिर लेइ ॥
सूर[4] कहैं दोकर[5] स्वामि काज जिउ देइ ॥

भइ बगमेल सेल घन घोरा ॥ | औ गज[6] पेल अकेल सो गोरा ॥
सहस[7] कुँवर सहसहुँ सत बाँधा | भार पहार जूझ कहँ बाँधा ॥
लाग मरैं गोरा के आगे ॥ | बाग न मोर घाव मुख लागे
जैस पतंग आग धस लीन्ही ॥ | एक मुवै दूसर जिय दीन्हीं ॥
टूटहिं शीश[8] उधर धर[9] मारी ॥ | टूटहिं कंधहि कंध निरारी[10] ॥
कोई परहिं रुधिर[11] ह्वै राती[12] ॥ | कोइ घायल घूमहिं मदमाती
कोइ घर खेह[13] कीन्ह ह्वै भोगी | भस्म चढ़ाय बैठ जस योगी ॥

घरी एक भारथ[14] भइ अस वारहिं मेल ॥
जूझ कुँवर सब बैठे गोरा रहा अकेल ॥

गोरें देख साथ सब जूझा ॥ | आपन काल[15] नेरे भा बूझा ॥
कोप सिंह[16] सामहिं रन मेला ॥ | लाखन सों ना मरै अकेला ॥
लियो हाँक हस्तिन[17] की ठटा ॥ | जैसे सिंह[18] बिदारै[19] घटा ॥
जेहि शिर देइ कोप तरवारू ॥ | सैं घोड़े टूटहिं अस वारू ॥
टूट कंध शिर परैं निरारी[20] ॥ | माठ मजीठ[21] जानु रण ढारी ॥
खेल फाग सेंदुर छिरकावे ॥ | चाचर खेल आग रण लावे ॥
हस्ती[22] घोड़ धाय जो धूका ॥ | औ तेहि दीन्ह सो रुधिर[23] भभूका

भइ अज्ञा[24] सुलतानी बेग[25] करहु यह हाथ ॥
रतन जात है आगे लिये पदारथ[26] साथ ॥

नाममंत्री १ नाम बन्दर २ बहादुर ३-४ हाथ ५ हाथी ६ हज़ार ७ शिर ८ धड़फेकना ९ अलग १०-२० ख़ून ११ लाल १२ राख १३ लड़ाई १४ मौत १५ शेर १६-१८ हाथी १७ २२ फाड़ना १९ लाख २१ लोहू २३ हुक्म २४ जल्द २५ तथा पद्मावत २६

सबै कटक मिल गोरो छेका ॥ गूँजत सिंह जाय नहिं टेका ॥
जेहि दिशा उठै सोइ जनु खावा पलट सिंह तेहि ठाउँ न आवा
तुर्क बोलावहिं बोलै नाहां ॥ गोरे मीच धरी जिय माहां ॥
मुवे पुनि जूझ जाज जग देऊ ॥ जियत न रहा जगत महँ केऊ ॥
जन जानहु गोरा सो अकेला ॥ सिंह की मूछ हाथ को मेला ॥
सिंह जियत नहिं आप धरावा ॥ मुवे पीछ कोऊ घिसयावा ॥
करै सिंह मुह सौंह जो दीठी ॥ जब लग जिये देय नहिं पीठी ॥

रतनसेन जो बाँधा मसि गोरा के गात ॥
जब लग रुधिर न धोऊँ तब लग होय न रात ॥

सुरजा बीर सिंह चढ़ गाजा ॥ आय सौंह गोरा सों बाजा ॥
पहलवान सो बखाने बली ॥ मदद मीर हमज़ा औ अली ॥
मदद अयूब शीश चढ़ कोपी ॥ महाभारथी नाउँ अलोपी ॥
औ तायाँ सालार सो आये ॥ जेहि कवरो पाँडव बंद पाये ॥
लंधौरे देव धरा जेहि आवे ॥ औ कोमाल बाद कहँ पावे ॥
पहुँचा आय सिंह असवारू ॥ जहाँ सिंह गोरा बरयारू ॥
मारेसि साँग पेट महँ धसी ॥ काढ़ेसि हुमुक आँत भुइँ खसी

भाट कहा धन गोरा तुइँ महि रावन राउ ॥
आँत समेट कर काँधे तुरी देत है पाँउ ॥

कहेसि अंत अब भा भुइँ परना अंत को नित्त खेह शिर भरना
कहि के गरज सिंह असधावा सुरजा शार्दूल पहँ आवा ॥

फ़ौज १ नाम मंत्री २ शेर ३-५-८ तरफ़ ४ मौत ६ ऐ बादशाह बे मरे हाथ न आऊँगा ७ सामने निगाह ९ सियाही १० बदन ११ खून १२ लाल १३ नाम पहेलवान १४-१५-१७ सामने १५ शेर १८ बड़े बहादुरों का नाम मिटानेवाले १९ नामसि पहसालार २० नामदेव २१ नाम राजा २२ ज़बरदस्त २३ घोड़ा २४ आखिर २५ हमेशा २६ राख २७ शेर सुर्ख २८ ॥ ÷ ॥

सुरजैं[1] कीन्ह साँग पर घाऊ ॥ परी खड्ग[2] जनु परा निहाऊ[3] ॥
बज्र की साँग बज्र का डाँड़ा ॥ उठी आग तस बाजा खाँड़ा ॥
जानहुँ बज्र बज्र सों बाजा ॥ सबही कहा परी अब गाजा[4] ॥
दूसर खड्ग[5] कंध पर दीन्हीं ॥ सुरजैं वह ओड़न[6] पर लीन्हीं
तीसर खड्ग कूड़ पर लावा ॥ काँध गरज[7] हत घाव न आवा

तस मारा हत गोरें उठी बज्र की आग ॥
कोउ नेरे नहिं आवै सिंह[8] सेंदूरा[9] लाग ॥

तस सुरजा कोंपा बर[10] बंडा ॥ जान सेंदूर केर भुजडंडा ॥
कोप गरज मारेसि तब बाजा ॥ जानहु परी तुरत शिर गाजा[11]
टाटेर[12] टूट टूट शिर तासू ॥ सैं सुमेरु[13] जनु टूट अकासू
धमक उठा सब स्वर्ग[14] पतारू ॥ फिर गइ दीठ[15] फिरा संसारू ॥
भा परलै अस सबही जाना ॥ काढ़ा खड्ग[16] स्वर्ग[17] नियराना ॥
तस मारेसि सैं घोड़े काटा ॥ धती फाट शेष फण नाथा ॥
अति जो सिंह[18] बरी है आई ॥ शार्दूल[19] सो कौन बड़ाई ॥

गोरा परा खेत महँ सुर[20] पहुँचावा पान ॥
बादल[21] लैगा राजा लै चितौर नियरान ॥

पद्मावत मन रही जो झूरी ॥ सुनत सरोवर[22] हिय[23] गा पूरी ॥
अद्रा[24] महँ हुलास[25] जस होई ॥ मुख सुहाग आदर भा सोई ॥
नयन जो कुमेद[26] निलीन्ह अँगूरू ॥ उठा कमल अस उगवा सूरू[27] ॥
पुरइन पूर सँवारी पाटा[28] ॥ औ शिर आन धरा सिर छाता
लाग्यो उदय होय जस भोरा ॥ रयनि[29] गई दिन कीन्ह अँजोरा[30] ॥

नाम पहेलवान १ तलवार २-५-१६ निहाई ३ बिजुली ४-११ ढाल ६ उछल तलवार पर तलवार परी ७ शेर ८-१८ शेर सुर्ख ९-१९ ज़बरदस्त १० खुपड़ी १२ पहाड़ १३ आसमान १४-१७ निगाह १५ देवता २० नाम मंत्री २१ तालाब २२ छाती २३ नाम नखत २४ खुशी २५ कोकाबेली २६ सूर्य्य २७ तख्त २८ रात २९ रोशनी ३० ॥

अस्त अस्त कै पाई कला ॥ | आरौं बली कटक सब चला ॥
देख चाद अस पद्मिन रानी | सखी कुमोद सबै बिकसानी

गहन छूट दिनेर कर पूंपिा सा भयो मिलाव
मंदिर सिंहासन साजा बाजा नरवर धाव

बिहँस चाद दय मारा सेंदूरू ॥ | आरत करन चली जनु सूरू ॥
औ गोहन पूंपिा नरवत तराईं | चित्तौर की रानी जहँ ताईं
जनु बसंत ऋतु फली जो छूटी | की सावन महँ बीर बहूटी ॥
भा आनन्द बाजा पंच तूरा ॥ | जगत रीत है चला सेंदूरा ॥
अति सुदंरा मन्दिर बहु बाजे | इन्द्र पूंछ सुन पूछ जो लाजे
देख कंत जस रबि परकासा | पद्मावत मन कमल बिकासा
कमल पाय सूरय के परा ॥ | सूरय कमल आनि पूंिा धरा

सेंदुर फूल तँबोल सो सखी सहेली साथ ॥
धनि पूजी पिय पाय दय पिय पूजी धन माथ

पूजा कवनु देउं तुम राजा ॥ | सबै तुम्हार आव मोहिं लाजा
तन मय योबन आरति करऊं | जीव काढ़ न्योछावर देऊं ॥
पंथ पूर कुर दृष्टि बिछाऊं ॥ | तुम पग धरो पूंपिा मैं लाऊं
रारवत पाय पलक नहि मारौं | बर नहि सो रंज चरन नहि झारौं
हिये सो मंदिर तुम्हारो नाहा | नयन पंथ आवहु तेहि माहां
बैठो पाट छत्र नव फेरी ॥ | तुम्हरे गर्ब गर्वी हौं चेरी ॥
तुम जिय मैं तन जो लहि मया | कहै जो जीव करै सो कया ॥

जो सूर्य्य शिर ऊपर तब सो कमल पूंिा छात
नाहित भरी सरोवर सखी पुरइन पात ॥

राम रामकर १ कल २ फौज ३ कोका बली ४ खिलना ५ २५ सूर्य्य ६-८-१३ चाँद ७-१०
साथ ९ लाल ११ आवाज १२ रोपानी १४ पद्मावत १६ राहु १७-२५ निगाह १८ पाँउ १९ पूंिा २०
पलक २१ धूर २२ दिल २३ खाविंद २४ तमू २६ गरूर २७ मुहब्बत २८ बदन २९ तालाब ३०

परस पाँय राजा के रानी ॥ पुन आरत बादल[1] कहँ आनी
पूजे बादल के भुज दराडा[2] ॥ तुरी[3] कें पाँउ दाब कर[4] खराडा
यह गज[5] गवन गर्ब[6] सो मोरा तुम राखा बादल[7] औ गोरा ॥
सेंदुर तिलक जो आँकुश रहा तुम राखा माथे तो रहा ॥
काज पूयाम[8] तुम जिय पर खेला तुम जिय आन मजूसा[9] मेला ॥
राखा छात चँमर औ दारा ॥ राखा छुद्र[10] घंट झनकारा ॥
होय ध्वजा हनुसत तुम पैठी ॥ तब चितौर लै आये बैठी ॥

पुनि पाजे[11] मत्त चढ़ावा ने[12] तबि छाई खाट ॥
बाजत गाजत राजा आय बैठ सुख पाट[13] ॥

तस राजे रानी कंठ[14] लाई ॥ पिय मरजिया नारि जनु पाई ॥
सँगे[15] राजा दुख उगसारा[16] ॥ जियत जीव ना करों निरारा[17] ॥
कठिन[18] बंद तुर्कहिं लै गहा ॥ जो सँवरों जिय पेट न रहा ॥
घन[19] गढ़ ऊपर मुहि लै मेला ॥ साँकर औ अन्धियार दुहेला[20] ॥
छिन छिन[21] जीउ सडासहिं[22] आँका औनित डोम छुधावहि बाँका
पीछे साप रहैं चहुँ पासा ॥ भोजन सोई रहे पर स्वासा ॥
पास न तहँ वाँ दूसर कोई ॥ नजनों पवन पानि कस होई ॥

आश तुम्हारी मिलन की तब सो रहा जिय पेट
नाहित होत निरास जिय कित जीवन कित भेंट ॥

तुम पिय आय परे अस बेरा ॥ अब दुख सुनों कमल धन[23] केरा
छोंड़ गयो सरवर[24] महँ मोहीं ॥ सरवर सूख गयो बिन तोहीं
केल[25] जो करत हंस उड़ गयऊ ॥ भानु[26] निपट सो बैरी भयऊ ॥

नाम मंत्री १-७ बाजू २ घोड़ा ३ हाथ ४ हाथी की चाल ५ गरूर ६ खाविंद ८ संदूक ९ नाम ज़ेवर १० हाथी ११ ज़ेर अंदाज़ १२ तख़्त १३ गले लगाई १४ अकेले में १५ खोलना १६ अलग १७ भारी क़ैद १८ पेचदार क़िला १९ बहुत २० घड़ी घड़ी २१ शीशा गर्म २२ पद्मावत २३ तालाब २४ खुशी २५ सूर्य्य २६ ॥ ✝ ॥

गइ तज[1] लहरें पुरयन पाता ॥ सुयो धूपशिर अहो न छाता ॥
भयो मीन[2] तन तड़पै लागा ॥ बिरह आय बैठो होय कागा ॥
काग चोंच तस सालहि[3] नाहां[4] ॥ जस बंद तोर घाल हिय[5] माहां ॥
कहों काग अब तहँ लैजाही ॥ जहवां पिउ देखै मोहिं खाही ।

काग गिद्ध नहिं ऐसो गढ़ का मारे बहु मंद
यह पछतायें सठ मरो गयो न पिय संग बंद

खण्ड चवालीसवां वृत्तांत देवपाल

तेहि ऊपर का कहों जो भारी बिषम पहाड़ परा दुख भारी ॥
दूती इक देवपाल पठाई ॥ ब्राह्मन भेष छलै मोहिं आई ॥
कहे तोर हों आहि सहेली ॥ चल लैजाउं भंवर जहँ बेली ॥
तब मैं ज्ञान[8] कीन्ह सत बाँधा वह कर बोल लागि बिष साधा
कहूं कमल नहिं करत अहेरा[9] ॥ जो[10] है भंवर करे सें फेरा ॥
पांच[11] भूत आत्मा ने वारयों[12] ॥ बारहि[13] बार फिरत मन मारयों ॥
रोय बुझायों आपन हियरा[14] ॥ कंत न दूर अहै सुठ नियरा ॥

फूल बास घिव छीर[15] ज्यों नीर[15] मिलाये मिठाइ ॥
तस नुक्ता[17] घट जेंवरी हिय दुख नाहिं कहाइ ॥

सुनि देवपाल राय कर चालू राजा कठिन पराहिय सालू[18] ॥
दादुर[19] पुनि सो कमल कर भेरवा गीदर मुख न सूर कर देखा ॥
अपने रंग जस नाचि मयूरू[20] ॥ तेहि सर[21] साध करै तम[22] चूरू ॥
जब लगि आय तुरुक[23] गढ़ बाजा तब लगि धरि आनौ तौ राजा ॥

छोड़ना १ मछली २ सूराख ३-१८ खाविंद ४ छाती ५ कौवे और गिद्धि का दखल न था ऐसा किला रच्छा का था ६ टेढ़ा ७ बिचारा ८ शिकार ९ देखता १० देखना सुनना-बोलना-सूँघना-छूना ११ रोकना १२ दरवाज़ा १३ दिल की आग १४ दूध १५ पानी १६ नुक्ता यह कि बदनने खाया और दिल दुखी परंतु ज़ाहिर न किया १७ मेढक १९ मोर २० नाज़ २१ चिरौटा २२ बादशाह पहुँचे २३ ॥ ✤ ॥

नींद न लीन्ह रयनि[1] सब जागा ॥ होत बेहान आय गढ़ लागा ॥
कम्मलनेर[2] अगम[3] गढ़ बाँका ॥ बिषम[4] पंथ चढ़ जाय न झाँका
राजा तहाँ गयो लै कालू ॥ होय सामहिं रोपा[5] देवपालू ॥

दोउ लड़े होय सनमुख लोहे भयो असूझ ॥
शत्रु[6] जूझ[7] तब न्योरे[8] एक दोउ महँ जूझ ॥

खण्ड पैंतालीसवाँ देवपाल लड़ाई

जो देवपाल[9] राउ रण गाजा ॥ मोहिं तुहिं जूझ एकाछा[10] राजा
मेलेसि आय साँग बिष भरी ॥ मेट न जाय काल की धरी ॥
आय नाभ पर साँग जो बैठी ॥ नाभ बेध निकसी नृप[11] पीठी
चला मार तब राजा मारा ॥ टूट कंध धड़ भयो निरारा[12] ॥
शीशी[13] काट के पैरी[14] बाँधा ॥ पावा दाउँ बैर जस[15] साँधा ॥
जियत फिरा आयो बल भरा ॥ माँझ[16] बाट होय लोहे[17] धरा ॥
कारी घाउ जाय नहिं डोला ॥ रही जीभ यम[18] गहे को बोला

सुध बुध सब बिसरी बार परी मँझ[19] पाट ॥
हस्ति[20] घोर को काकर घर आनी गइ खाट

खण्ड छियालीसवाँ बैकुण्ठ बासी राजा

तौलहि स्वास पेट महँ अही ॥ जौलहि दशा जीउ की रही ॥
काल आय देख लाई साँटी[21] ॥ उठ जिय चला छाड़ के माटी
काकर लोग कुटुम्ब घर बारू ॥ काकर अर्थ द्रव्य[22] संसारू ॥
वही घड़ी सब भयो परावा ॥ आपन सोइ जो परसा खावा ॥
रहि जे हितू[23] साथ के नेगी ॥ सबै लागि काढ़न तेहि बेगी[24]

रात १ नाम मुल्क २ जहाँ जाना मुशकिल है ३ टेढ़ी राह ४ आया ५ दुशमन ६ लड़ाई ७ आखिर ८ नाम राजा ९ अकेले १० राजा ११ अलग १२ शिर १३ शिकार बंद १४ जैसा बैर किया १५ राह में १६ हथियार बन्द १७ मौत ने पकड़ी १८ मुरदा की तरह तख्त पर १९ हाथी २० छड़ी २१ दौलत २२ दोस्त २३ जल्द निकाला २४ ॥

हाथ झार जस चलै जुवारी ॥ तजा[1] राज होय चला भिखारी
जब लग जीउ रतन सब कहा भाबिन जीवन कौड़ी लहा ॥

गढ़ सौंपा तेहिं बादल[2] गये टेकत[3] बसुदेव ॥
छोड़ी राम अयोध्या जो भावै सो लेव ॥

पद्मावत पुनि पहिर पटोरा[4] ॥ चली साथ पिय के होय जोरा ॥
सूरज छिपा रयनि[5] ह्वै गई ॥ पूनू शशि[6] सो अमावस भई ॥
छोरे केश[7] मोति लर छूटी ॥ जानो रयनि नखत सब टूटी ॥
सेंदुर परा जो शीश[8] उघारी ॥ आग लाग चहि जग[9] अँधियारी
यही दिवस[10] हौं चाहत नाहां[11] चलो साथ पिय दैगल बाहां ॥
सारस पंख नहिं जिये निरोर[12] ॥ हौं तुम बिन का जियों पियारे
न्योछावर कै तन छहराऊं[13] ॥ छोरहों[14] संग बहुर[15] ना आऊं ॥

दीपक प्रीत पतंग ज्यों जन्म निबाह करेउ ॥
न्योछावर चहुँ पास ह्वै कंठ लाग जिय देउं ॥

खण्ड सैंतालीसवां सती होना पद्मावत और नागमती का

नाममती पद्मावत रानी ॥ दोउ महा सत सती बखानी ॥
दोउ[16] सौत चढ़ खाट जो बैठी ॥ औ शिव लोक परा तहँ दीठी[17] ॥
बैठो कोई राज औ पाटा[18] ॥ अंत[19] सबै बैठे पुनि खाटा ॥
चन्दन अगर काढ़ सर[20] साजा ॥ औगत[21] देय चले लै राजा ॥
बाजन बाजहिं होय अगोता[22] ॥ दोउ कंत लै चाहैं सोता ॥
एक जो बाजा भयो बिवाहू ॥ अब दुसरे ह्वै और निबाहू ॥
जियत जलै जो कंत[23] की आसा ॥ मुवे रहस बैठै इक पासा ॥

छोड़ना १ नाम मंत्री २ बैकुण्ठ गये ३ सारी रेशमी ४ रात ५ पूरन मासी का चाँद ६ बाल ७ शिर ८ दुनियाँ ९ दिन १० खाविंद ११ अलग १२ बिथराना १३ राख १४ लौट १५ पद्मावत- नागमती १६ नज़र १७ तख़्त १८ आख़िर १९ चिता २० दाह २१ कड़का २२ खाविंद २३

आज सूर[1] दिन अथयो आज रयनि[2] शशि[3] बूड़ ॥
आज नाच जिय दीजिये. आज अगिन हम जूड़

सर[4] रच दान पुन्य बहु कीन्हा ॥
एक जो भाँवर भयो बियाही
जियत कंत[5] तुम हम गल लाईं ॥
लै सर[7] ऊपर खाट बिछाई ॥
और जो गाँठ कंत तुम जोरी ॥
यह जग काह जो अथहि[6] नयाथी
लागी कंठ आग दै होरी ॥

सात बार फिरि भाँवर लीन्हा
अब दूसर ह्वै गोहन[5] जाही ॥
मुये कंठ नहिं छाड़हु साईं ॥
पौढ़ी दोउ कंत गल लाई ॥
आदि[8] अंत लहि जाय न छोरी
हम तुम नाँह[10] दोहू जग साथी ॥
छार[11] भई जर अंग[12] न मोरी ॥

राती[13] पिय के नेह की स्वर्ग[14] भयो रतनार[15] ॥
जोरेउ वासो अथवा रहा न कोइ संसार ॥

वै सहगवन[16] भई जित जाई ॥
तबलग सो औसर ह्वै बीता ॥
आय शाह जो सुना अखारा[18] ॥
छार[20] उठाय लीन्ह इक मूठी ॥
सगरे कटक[22] उठाई माटी ॥
जोलहि ऊपर छार[23] नहिं परै ॥
भाद हवा[25] भा जूझ असूझा ॥

बादशाह गढ़ छेका आई ॥
भये अलोप[10] राम औ सीता ॥
ह्वै गइ रात दिवस[19] उजियारा ॥
दीन्ह उड़ाय पिरथवी[21] झूठी ॥
पुल बाँधा जहँ जहँ गढ़ घाटी
तौलहि यह तृष्णा[24] नहिं मरै ॥
बादल[26] आय पवर[27] पर जूझा ॥

जून्हर[28] भई सब स्त्री पुरुष[29] भये संग्राम ॥
बादशाह गढ़ चूरा[30] चितौर भा इसलाम ॥

सूर्य्य १ रात २ चाँद ३ चिता ४-७ साथ ५ खाविंद ६-१० अव्वल से आखिर तक आया था ९ राख ११ बदन १२ लाल १३-१५ आसमान १४ जब खाविंद के साथ जल गई १६ गायब १७ हाल १८ दिन १९ खाक २० दुनिया २१ फौज २२ माटी २३ हवस २४ कोई बाकी न रहा उस भारी लड़ाई में २५ नाम मंत्री २६ दरवाज़ा २७ मरना २८ तथा राजा २९ तोड़ा ३० ॥

मैं यह अर्थ पण्डितन बूझा ॥ कहा कि हम कुछ और न सूझा
चौदह भुवन[1] जो हत उपराहीं ॥ सो सब मानुष के घट[2] माहीं ॥
तन चितौर मन राजा कीन्हा ॥ हिय[3] सिंहल बुधि पद्मिन चीन्हा
गुरू सुवा जेहिं पंथ[4] देखावा ॥ बिन गुरु जगत[5] सो निरगुन पावा
नागमती यह दुनिया धन्धा ॥ बाँचा सोई न यह चित बंधा ॥
राघव दूत सोई शैतानू ॥ माया अलाउदीं सुलतानू ॥
प्रेम कथा यह भाँति बिचारू ॥ बूझ लेहु जो बूझहिं[6] पारू ॥

तुरकी अरबी हिन्दवी भाँषा जेती आहि ॥
जामें मारग प्रेम का सबै सराहै ताहि ॥

मुहमद कवि यह जोर सुनावा सुना सो प्रेम पीर का पावा ॥
जोरे लाय[7] रक्त ले गये ॥ प्रेम प्रीति नयनहिं जल भये ॥
औ मैं जान गीत अस कीन्हा की यह रीति जगत[8] महँ चीन्हा
कहाँ सो रतन सेन अब राजा ॥ कहाँ सुवा अस बुध[10] उपराजा
कहाँ अलाउदीन सुलतानू कहँ राघव जेहि कीन्ह बखानू[11]
कहाँ स्वरूप पद्मावत रानी ॥ कुछ न रही जग रही कहानी ॥
धन सोई यश[12] कीरत[13] तासू ॥ फूल मरै पै मरै न बासू ॥

कै न जगत यश[14] बेचा कै न लीन्ह यश[15] मोल
जो यह पढ़ै कहानी हम सँवरै दोइ बोल[16] ॥

मुहमद बृद्धि[17] बैस जो भई ॥ यौवन[18] हत सो अवस्था[19] गई ॥
बल जो गयो कै क्षीन[20] शरीरू ॥ दृष्टि[21] गई नयनहिं दै नीरू[22] ॥
दशन[23] गये कै बचा कपोला[24] ॥ बैन[25] गये अनरुच दै बोला ॥

सात परदा आसमान-सात परदा ज़मीन १ भीतर २ छाती ३ राह ४ दुनियाँ ५ बूझ सको ६ बोलो ७ ख़ून जिगर पीकर ८ दुनियाँ में निशानी ९ अक़िल बताई १० तारीफ़ ११ नेकनामी १२-१४-१५ करनी १३ दुआय ख़ैर १६ बूढ़ी उमर १७ जवानी १८ उमर १९ दुबला बदन २० निगाह २१ पानी २२ दाँत २३ गाल २४ आवाज़ २५ ॥ ८ ॥

बुधि[1] जो राई दै हिय[2] बौराई	गर्ब[3] गयो तरिहत शिर नाई ॥
श्रवन[4] गये ऊंच जो सुना ॥	स्याही गये शीश[5] भा धुना
भवर[6] गये केशहि दे भुवा ॥	यौबन[7] गयो जीत लै जुवा ॥
जो लहि जीवन यौवन साथा	पुनि सो मीच[8] पराये हाथा ॥

बृद्धि[9] जो शीश[10] डुलावै शीश धुनहि तेहि रीस[11]
बूढ़ी आयू[12] होहु तुम कै यह दीन्ह अशीश

अकिल १ दिल २ गरूर ३ कान ४ शिर ५-१० बाल ६ जवानी ७ मौत ८ बूढ़ा ९ गुस्सा ११ उमर १२ ॥ ✢ ॥

इति श्री पद्मावत भाषा मलिक मुहम्मद जायसी कृत समाप्तः

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
सभाविलास	सहस्र रजनी चरित्र	बाला बोध	कायस्थकुलभास्कर
तुलसी शब्दार्थ	राबिन्सन् का इतिहास	विद्यार्थी की प्रथम पु॰	कायस्थ धर्म्मनिरूपण
भजनावली	सीताहरण	किताबजंत्री	तथा छोटा
प्रेमरत्न	सतीविलास	गणितकामधेनु	मथुरासभा
युगल विलास	सौदागरलीला	लीलावती	भाषातत्वप्रकाश
चित्रचन्द्रिका	मुतफ़र्कात	पटवारियों की पु॰ ४भा॰	मार्कण्डेयपुराण
बारहमासा बलदेवप्र॰	शनिश्चर की कथा	वैद्यकभाषा	ज्योतिष
मनोहरलहरी	ज्ञानमाला	निघण्ट	मुहूर्त्तगणपति
गंगालहरी	गोपीचंद भरतरी	अमरविनोद	मुहूर्त्त चक्र दीपिका
यमुनालहरी	कथा श्रीगंगाजी	वैद्यजीवन	मुहूर्त्त चिन्तामणि स॰
जगद्विनोद	अवधयात्रा	औषधिसंग्रहकल्प-	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड स॰
शृंगारबत्तीसी	भरतरीगीत	वल्ली	मुहूर्त्तदीपक
राग	दान लीला व नाग लीला	अमृतसागर बड़ा व छोटा	वृहज्जातक सटीक
रागप्रकाश	दोहावली रत्नावली	वैद्यमनोत्सव	जातकालंकार स॰
लावनी	गोकर्णमाहात्म्य	ज्योतिषभाषा	जातकाभरण
किस्सा वगैरह	श्रीगोपाल सहस्रनाम	जातकचन्द्रिका	होरामकरन्द
नानार्थनौसंग्रहावली	कथासत्यनारायण	जातकालंकार	संस्कृत उर्दू टी॰ स॰
ब्रह्मसार	हनुमान बाहुक	दैवज्ञाभरण	मनुस्मृति
शिवसिंह सरोज	जनकपच्चीसी	ज्ञानस्वरोदय	विष्णुहारीत
भक्तमाल	हरिहरसगुण निर्गुण	इन्द्रजाल	महिम्नस्तोत्र
इन्द्रसभा	पदावली	संस्कृत की पुस्तकें	व्रतार्क
विक्रमविलास	वनयात्रा	लघुकौमुदी	याज्ञवल्क्यस्मृति
बैतालपच्चीसी	कायस्थवर्णनिर्णय	सिद्धान्तचन्द्रिका	संस्कृत भाषाटीका
सिंहासनबत्तीसी	बिहार वृन्दावन	अमरकोषतीनोंकास	अमरकोष
पद्मावतीखंड	समरबिहार वृन्दावन	पञ्चमहायज्ञ	याज्ञवल्क्यस्मृति
शुकबहत्तरी	कल्पभाष्य	निर्णयसिन्धु	संध्यापद्धति
बकावलीसुमन	दरसी	संग्रहशिरोमणि	व्रतार्क
चहारदरवेश	अक्षरावली	भगवद्गीता सटीक	भगवद्गीता टी॰ ह॰ वं॰
किस्सा हातमताई	स्वयम्बोध	दुर्गापाठमूलतथास	भगवद्गीता टी॰ आ॰ गि॰
अपूर्व्व कथा	ज्ञानचालीसी	विष्णुभागवत	गीतगोविंद
किस्सा गुलसनौबर	दोहावली	अपराधभंजनस्तोत्र	कथा सत्यनारायण
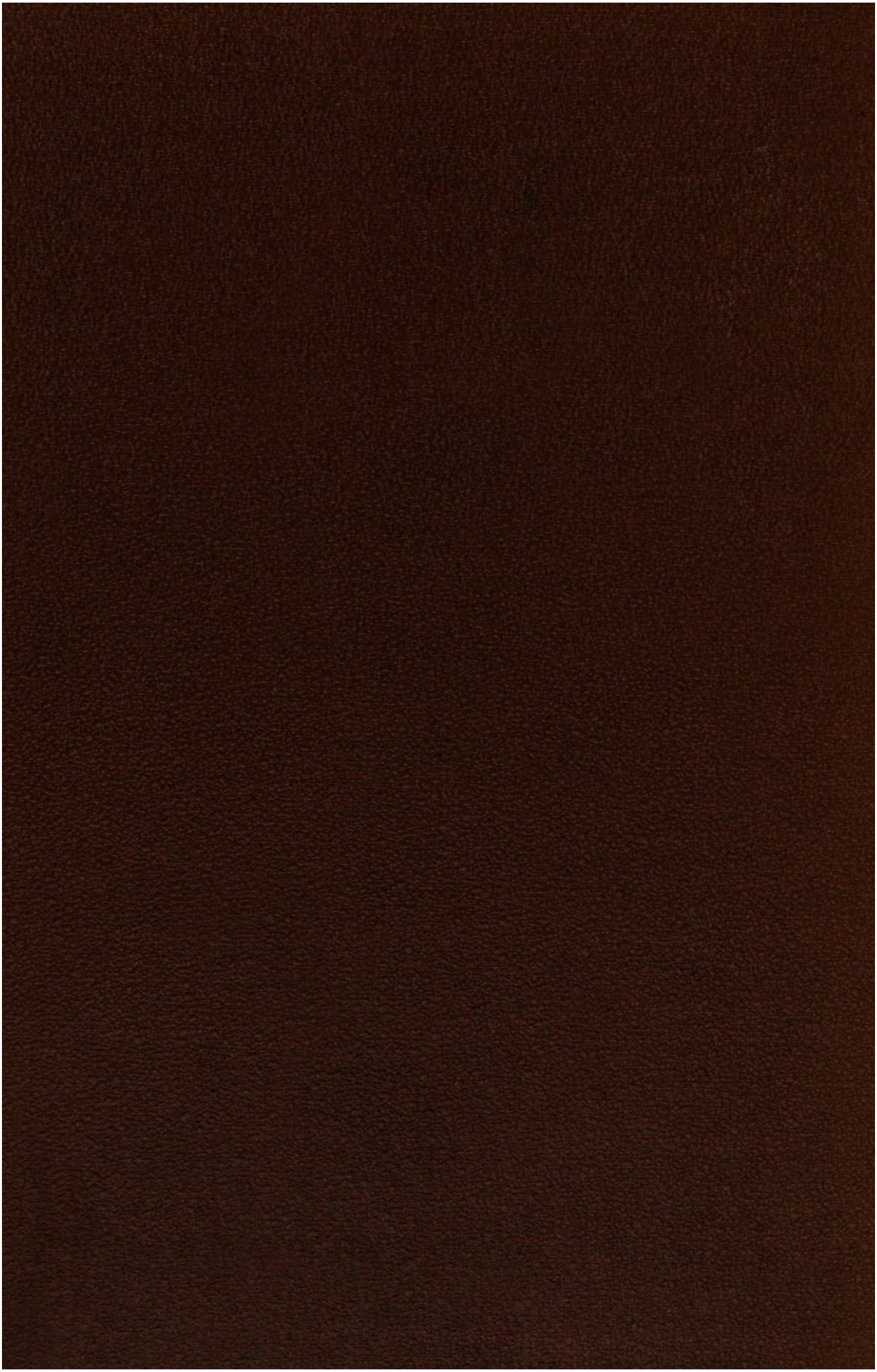
नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
परमार्थसार	परमार्थसार	बालकाण्ड	१८६६ ई०
पराशरसंहिता	पदार्थज्ञानविटप	अयोध्याकाण्ड	सेकंडस्टाम्प सन् १८६६
पाराशरी सटीक	भोजप्रबन्धसार	आरण्यकाण्ड	सेकंडस्टाम्प अदालत अ
लघुजातक	भाषाशब्दव्याकरण	किष्किन्धाकाण्ड	सन् १८६७ ई०
षट्पंचाशिका	१भाग तथा २भाग	सुन्दराकाण्ड	मजमूआ सेकंडअवध
सामुद्रिक	भाषातत्ववीपिका	लंकाकाण्ड	लगाम २६ सन् १८६८ ई०
गरुड़पुराण	भाषाचन्द्रोदय	उत्तरकाण्ड	पुश्ताबारी २६ सन् १८६
रामविवाहोत्सव	भूगोलतत्व	खुटका १भा० २व ३	ई० बंगीरह
शीघ्रबोधस०	भूगोलदर्पण	हिदायतनामासुदर्रिसा	सेकंडस्टाम्प दलावेजात
सरिश्ते तालीम की	इतिहासतिमिरनाशक	न	सन् १८६८ ई०
पुस्तकें	१भाग २व ३भाग	पशुचिकित्सा	सेकंडास्टुकधारान म०
संस्कृत	ध्रुवधरेणीय भूगोल	पट्टा बख़्तकौची	क़ब्ज़ा अवध २४ सन्
ऋजुपाठ १भा० २व ३	इंग्लिस्तानका इतिहास	तथा क़बूलियत	१८७० ई०
धात्वर्थावं	हितोपदेशिका	रजिस्टरवारिंग एवरि	सेकंडचोपायों का मज़
नागरी कैथी	बालाभूषण	ज तुलबा मदर्सह	सूलत बेजा सन् १८७
वर्णमाला १ भाग	पद्यसंग्रह	रजिस्टरहाज़िरीपाठशाला	ई०
व २भाग	भाषाकाव्यसंग्रह	राजनीति	सेकंडमजमूआज़ाबि
तथा कैथी फ़ारसी	कवित्तरत्नाकर १भा०	क़ानून कैथी	ता फ़ौजदारी १० सन्
नागरी	तथा २भाग	पटवारियों के क़ायदे	१८७२ ई०
हरूफ़मुफ़र्दात	मंगलकोष	उर्दू कैथी महाजनी ति	सेकंडमाल गुज़ारी
अक्षरारम्भ	अंकप्रकाश	कट के लाडूसन्स का	मग़रबी व शिमाली
वर्णमकाशिका २भा०	गणितप्रकाश २भा०	सेकंड २ सन् १८७८ ई०	२६ सन् १८७३ ई०
तथा २भाग	तथा २भा० ३व ४	नागरी	तरमीम मजमूआ०
सूर्य्यपुरकी कहानी	गणितक्रिया	सेकंडलगानमग़रबी	ज़ाबिता फ़ौजदारी
धर्म्मसिंह का वृत्तांत	क्षेत्रप्रकाश	व शिमाली १० सन्	२१ सन् १८७४ ई०
शिक्षावली	क्षेत्रचन्द्रिका २भा०	१८५८ ई०	नक़ावी के क़ायदे स०
शिशुबोध	सकीन्स हायरा	दूंडियन बिनल कोर्ट	वाल व जवाब पुलि
पत्रहिंगेपिराणी	रेखा गणित १भाग	मजमूआज़ाबिताफ़ौ	अवध रुहेल खंड रेल
पत्रदीपिका	तथा २भाग	जदारी सेकंड २५ सन्	वे का दस्तूरुलअमल
विद्याचक्र	बीजगणित २भाग	१८६१ ई०	दूति
विद्याकुसुम	रामायण तुलसी कृत	सेकंडविस्टरी २० सन्